रमल नौरत्न

رمل نورتن

जिसमें

पासों के बनाने की विधि और सर्वप्रकार की
शकलों में सम्पूर्ण प्रश्न भेद शुद्धिक ज्ञान वर्ष
क्रिया पहिले घर से सोलह घर तक के हुक्म
वर्षाचक्र और अनुभूत रमलमत आदि
पद्य में रचित हैं

सम्पूर्ण गणकों के लाभ के लिये

पहली बार

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापागया
मारची सन् १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् फरवरी सन् १८८२ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको ख़रीदारी की इच्छा हो वह छापेखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्योतिष भाषा	४- चौथे हिस्से में	मन व मोक्ष धर्म व	रामायण शब्दार्थ को
जातकचन्द्रिका	शान्ति पर्व्व दानध-	दान धर्म	रामायण का इतिहास
जातकालंकार	र्म अश्वमेध आश्र-	११- अश्वमेध आश्र-	रामायण मानसदीपिका
देवज्ञाभरण	मवासिक पर्व्व	मवासिक मुशल	रामायण कवितावली
ज्ञानस्वरोदय	मौसल पर्व्व महा-	पर्व्व महाप्रस्थान	रामायण गीतावली
रमलसार	प्रस्थान स्वर्गा-	स्वर्गारोहण	सटीक
इन्द्रजाल	रोहण पर्व्व हरिवं-	१२- हरिवंश पर्व्व	विनयपत्रिका बा० मो०
भाषा (इतिहास)	श पर्व्व	रामायण रामविलास	विनयपत्रिका बा० शि०
महाभारत	महाभारत पर्व्व	रामायण तुलसीकृत	नाटक
१- पहिले हिस्से	अलहदा भी हैं	रामायण सटीक मय	प्रबोधचन्द्रोदय
में आदि पर्व्व सभा	१- आदि पर्व्व	मानसदीपिका कोष	रामाभिषेक
पर्व्व वन पर्व्व	२- सभा पर्व्व	आदि	आनन्दरघुनन्दन
२- दूसरे हिस्से में	३- वन पर्व्व	तथा जिल्द बंधी	वेदान्त
विराट पर्व्व उद्योग	४- विराट पर्व्व	तथा मोटे अक्षरों की	योगवाशिष्ठ
पर्व्व भीष्म पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	मय तसवीर व क्षेपक	आनन्दामृतवर्षिणी
द्रोण पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	रामायण तुलसीकृ-	सांख्यतत्त्वकौमुदी
३- तीसरे हिस्से में	७- द्रोण पर्व्व	सातों काण्ड	काव्य
कर्ण पर्व्व शल्यप-	८- कर्ण पर्व्व	१- बालकाण्ड	सूरसागर
र्व्व गदा पर्व्व सौप्ति-	९- शल्य पर्व्व गदा	२- अयोध्याकाण्ड	कृष्णसागर
क पर्व्व ऐषिक प-	पर्व्व सौप्तिक पर्व्व	३- आरण्यकाण्ड	विश्रामसागर
र्व्व विशोक पर्व्व	मय ऐषिक व वि-	४- किष्किन्धाका-	प्रेमसागर
स्त्री पर्व्व शान्तिपर्व्व	शोक व स्त्री पर्व्व	५- सुन्दरकाण्ड	व्रजविलास बड़ा व छोटा
में राजधर्म आपद	१०- शान्ति पर्व्व रा-	६- लंकाकाण्ड	कृष्णप्रिया
धर्म मोक्षधर्म	जधर्म व आपद ध-	७- उत्तरकाण्ड	विजयमुक्तावली

लावनी

तरह तरह के प्रश्न इसीमें कोकशास्त्रहै विस्तारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलीमें इस्का भेद सबसे न्यारा ॥१॥ एक ग्रंथयो पढ़के मित्र ध्यान दो बूझोसारा ॥ धन दौलत नित संग रहेगा निश्चय तुमजानों प्यारा ॥२॥ बड़े बड़े राजों महराजों में चमत्कार होवे भारा ॥ पढ़ोग्रंथ यो चित्त लगाके यही वचन मानो म्हारा ॥३॥ जो तू चाहे माल खजाना दुनीका पढ़कर ले सहारा ॥ रमल शास्त्र प्रत्यक्ष कलीमें इस्का भेद सबसे न्यारा ॥४॥

श्री गणेशाय नमः ॥

अथ रमल विषय

ज्योतिषसार चिन्तामणि

लिख्यते

दोहा

जाको हर गनपति सुमिरि भाल चन्द्र सुखकन्द
ताके चरन हिरदे धरहुं मंगल होय अनन्त १॥
जाहीतें दुर्गा कही अपनी इच्छा पाय।
ताके सुमिरन करतही सब संकट कटि जाय २॥
आदि रूप जग मात है सकल सृष्टि को सार।
ताहि ध्यान उर धरतही उतरत भव के पार ॥३॥
गुरु चरनन हिय में धरहु हरष सहित प्रनाम।
विघ्नहरन मंगलकरन पूरी होय सब काम ४॥
जहां माहिं प्रकाश है अविनाशी है नाम।
ऐसे उर जगदीश को बहुविध करूं प्रनाम ५॥

जो कोविद हैं निगमके भाषाके कवि भूप।
गणपति को करि दंडवत ज्योतिष रचूं अनूप ६॥

दोहा फारसी में रमल पांसा जिस्में सार।
ज्योतिष कितावसिंकहूं विद्या रमल विचार ७॥
सोलह शकलें प्रथम हैं तिनसे वर्णन होय।
हानि लाभ सुख अरु नहीं गुरु गणपति कहैं सोय ८॥

द्वितीय दोहा

पांसे दोय बनायके उत्तम मध्यम देख।
अनुस्वार दो खानमें ताहअंक सब लेख ६॥
कह किताव सरकाबकी विद्या रमल विचार
रमल शास्त्रको मत लहूं कहूं ग्रंथ विस्तार १०॥

चौपाई

चौकी चार चार कर लीजे॥ वीचमें एक सुवा ही दीजे
अनुस्वार चहुं ओरहि देहो। ताको भिन्न २ अब लेहो॥
एकहि ओर वेद नभ दीजे। ताह अदस्त नेत्र गिन लीजे॥
एकहि ओर लोक नभ लाओ। ता नीचे दुत नेहि बनाओ॥
अंक छानवे सब गिन लीजे। तासों सकल थोडु माहिं दीजे
मेष राशि पै जद रवि आवे। धातु सहित पांसा ढलवावे॥
आगे क्रिया सकल उसरवो। षोडश शकल काढ़ चित धरवो

क्रिया जायचे की उरधरहो। नष्ट श्रेष्ट ताही सों कहो॥
चक्र हे दिख पाँसे हि बनावे। प्रश्न सकल ताही सों गावे॥
याहि समान और एक धरियो ताहि आेघ पाँसे हे भरियो॥
लेख संक सारी ताही जब आवे। ताको फलित अधिकाही पावे

पाँसे की क्रिया

o o o o	o o o o	o o o o	o o o o
o o	o o	o o	o o
o o o	o o o	o o o	o o o
o o o	o o o	o o o	o o o

दोहा

विष्णु रूप हियसें धरो गुरु को कीजे ध्यान।
शारदा देवहि मनायके पाँसे फेंक सुजान ११
जग का रज कल्याराहित प्रगटो आय स्वरूप।
धनतरू कूं उपदेश दियो काढ़ो तुम अंधकूप १२
उत्तम मध्यम देखके काज अकाज विचार।
भई शासना वृत्तकी ज्योतिष है ये सार ॥१३

चौपाई

अंगुरी चारि खासि पसराई। अनुस्वार को रूप दिखाई॥

नामतरीक कहि पुरुष बताया। मारग और गोय सकल कहाया॥
याही तुल्य बेद नभ दीजे। भाग देय जमाल पुन कीजे॥
मात पिता प्रगटे यासे हीं। चौदह पुत्र धन्वंतर करे हीं॥
तासों सप्तम पुत्र बनावो। पुन कन्या ही अबजन वावो॥
एकही आकल नपुंसक कीजे। ग्रह अरु मास राशि ध-
रीजे॥ अंतहि उत्तर धन्वंतर दीना। तुमहीं आप अनुग्रह कीना॥
जो तुम आप हि मोहिं बताया। सो सब रूप हिये निज आ-
या॥ तुम प्रताप हिय माहीं धरो। तमको नष्ट छिनक में क-
रो॥ बुद्धि प्रकाश करो हिय माहीं। जगको संकट काटो जाहीं॥

दोहा

वाह काल नभ में गयो प्रगटाया जो रूप।
धन्वंतर बुद्धि विचार के षोड़श किये स्वरूप॥
सरस्वती हिय में भयो ब्रह्मा विष्णु महेश।
जगत हेतु विचारची नहीं योह निज लेश॥

चौपाई

प्रथम तरीक शकल जो आई। ताहै निकट और सक-
लाई॥ ताको जरब देवो कबिलोई। नाम जमाल क-
हो तुम सोई॥ त्रिय सुख चार रेख जहँ देखो।
नाम जमात कवीश्वर पेखो॥ मात पिता तब प्रगटे आई।

चौपाई

निज द्विज भवन कहूं चित लाई। निज घर बैठ सहाव लयाई॥ दैहीयान भवन तन जानो। कबजुल दाखिल धन घर मानो॥ कबजुल खारज सहजही लेहो। श्रातलजमात सुहृद घर देहो॥ सुत घर फरहा काबल दीजे॥ शत्रु भवन उकला को दीजे॥ जाया भवन कहे ईकीसा। श्रौर मृत्यु घर हमरा दीसा॥ धर्म भवन सें ब्याज लगावो। नसरतुल खारज राजहि पावो॥ नसरतुल दाखल श्रायु घर दीजे। उतबेतुल खारज ब्यय में लीजै॥ त्रयोदश भवन न को पहिचानो। चौदहवां घर उतवेतुल जानो॥ तिथ घर ईजत माकूं लीजे। षोडश भवन लरी कहि दीजे॥ बाकर शाकल जान बलवाना। श्रौर भवन में हीन नदाना॥५॥

दोहा

दिये भवन सुरवा बने निज निज दिये देराय।
याके मह हिय में धरो कोविद कवि सरसाय २२॥
याही यंत्र विचार के निज घर बैठे श्राय।
पैजलाव फल भाय हो वृथा कछू नहिं जाय २३
द्वादस भवन लहिया तले षोड़श लों परयंत।

निश्चयभवनहि कीजिये सोउ आपननिश्चंत ॥२४॥

चौपाई

अग्नि बात वारि अरु धरणी। ये चारहीं कवि कीन्हि बरणी ॥ तुक्कता प्रथम अग्नि का जानो। दूजे बात कवीश्वर जानो ॥ तीजे वारि कीजिये भाई। चौथे भूम कवीश्वर गाई ॥ जो जो भूमि तत्व की देखो। बहि पर आप कवीश्वर पेखो ॥ जहांसे तुकता चाले भाई। तबहीं टीका कीजिये भाई ॥ दोनोंको कवि भाग लगावे। शकल निकाल प्रश्न बतलावे ॥ पुनःजायचा सकको हितसे। किया विचार यह विधि चितसे ॥ यासों फलभाखे कवि लोई। ताके प्रगट मनोरथ होई ॥६॥

अथ क्रिया जायचे की

लिख्यते

दोहा

शुद्ध होय अस्नान कर हिये सरस्वति ध्यान।
पांसे फेंको समझके षोडश रूप बखान ॥२५॥

चौपाई

शून्य शून्य जो सम जहँ देखो। कविता आय रेख तहँ पेखो ॥ जो नभ भूमि पड़े कब कोई। तो तुम शून्य धरो

हिय जोई ॥ दोनों पांसे देहु मिलाई । एकहु रेख जहांलों आई ॥ प्रथम शकल का उर्द्ध लगावो । पुन द्वितिय को नीचे पावो ॥ तीजे तोक शकल कालेहो । चौथे वेद श- कलका देहो ॥ याहि प्रकार पंचम कर लीजे । षष्ठम स- प्तम अष्टम कीजे ॥ प्रथम द्वितीय कुभाग लगावे । ता- नीचे हि नवम घर पावे ॥ वेद तोक कू जब जो दीजे । तानीचे हि दशम पुनकीजे ॥ पंचम षष्ठम भाग लगा- वो । ताहि अधस्त एकादश पावो ॥ सप्त अष्ट भागहि कर दीजे । तानीचे द्वादश कर लीजे ॥ नवम दशम को भाग लगावो । तेरह शकल महा सुख पावो ॥ द्वाद श और एकादश लीजो । शकल चतुर्दश नीचे कीजो ॥ त्रयोदश और चतुर्दश लेहो । शकल पंद्रवीं तासों क- हवो ॥ तिथि अरु प्रथम को भाग लगावे । शकल सो- लवीं तासों पावे । याहि क्रियासों जायचा कीजे । दु- रव सुख क तुरतहि काहि दीजे ॥ शुभ वा अशुभ प्रश्न ज- रलावे । जा घर प्रश्न सोई फल पावे ॥ नेष्ट श्रेष्ट श- कल जो होई । वा सम कहो न रारवो गोई ॥ ७ ॥

इति श्री कवि शरणपति शिष्य धीरज गिर विरचितायां रमल विषय ज्योतिषिं कला सरि प्रथम प्रभायो १ ॥

अथ सोड़श शकल प्रकाश

लिखते

चौपाई

ॐ लहियान शकल प्रथमहीं सुनिये। जाको ईश बृहस्पति गिनिये॥ शीलस्वभाव पुरुष फल देई। उ-त्तम प्रकाति राशिधन लेई॥ दूजीराशिमीन पहिचानों। वारबृहस्पति कवि तुम जानों॥ आशि दसजान उदय जब होई॥ सोहीयान मास जो सोई॥ ८॥

दोहा

ख्लावान चित कहतहैं दिशा पूर्व पहिचान
ऐअरू पै दो वर्णले कवि तू आप बखान २६

चौपाई

ॐ कबजुल दाखल शकल बनाओ। शीलस्वभाव स्त्री फलपाओ॥ भूमि प्रकृति यसन गुण गावे। य-निहूस राशि सिंह जो पावे॥ दिनकर वार इसी का जानो। कह सुर कवि गुरु वारहि मानो॥ मासजमादुलो-वल पावे। दक्खन दिशा प्रश्न बतलावे॥ इस्थिर कारज उस्का पावे। के और जै दो वर्ण मिलावे॥ चर इस्थिर संज्ञा दो लेई। तत्व काट इस्का फल कहई॥

∴ कबजुल खारज नष्ट बतावे। पुरुषस्वभाव पावक हियलावे॥ मेषराशि वाकी अबलेई। मंगलवार पूर्वदिशि देई॥ नाशका हालजो चाँद बतावे। कबजुलख्वारज उस्कापावे॥ और अक्षर इसकाही लेहो। और लकार सी मिलके देहो॥ ८॥

दोहा

यहि प्रकार विचारही दीजे वर्ण मिलाय॥
कवि कोविद चितधारके प्रश्नशकल सुखगाय ४७

चौपाई

☰ नासजमात शकल सुनलीजे। बुधहै ईश गुणहि चित दीजे॥ सबसों ताहु मित्रता राखे। स्त्रीरूप रमल कदि भाखे॥ चित्त प्रकृति सौम्य शुभ मानो। कन्या राशि दिवस बुधजानो॥ खीलोंबलका मासजो लेई। एक ओर चित इस्थिर लेई॥ दक्षिण दिशा अंक मेंलेही। वादिधि नास तुरत कहि देही॥ अंक के नाम शोधके लीजै। नासजान शीघ्रहि कहिदीजे॥ ∵ फरहा नाम पुरुष सब कहहीं। बात प्रकृति रमल सब लहहीं॥ शीतलजानस्वभावहि लीजे। भृगुहै ईश शुक्रदिन कीजे॥ वृषहि लग्न दिशि पश्चिम जानो।

रवी प्रुसानी भास थिछानो ॥ मार्ग नीत घति उकला क
हिये । लै श्मौर जो दो वर्गाहि लहिये ॥ २० ॥

दोहा

उकला का दिवो बीद है खोटा चित अति जान ।
सुश्मि प्रकाति ईश्र शनि मकर कुम्भ घरमान २५ ॥

चौपाई

दिवस शनैश्चर अरु बुध कीजे । शशि रज्जल अरु मा-
रग लीजे ॥ स्थिर जय सुभाव जो लहिये । हसिरादि-
शा वात उकलहिये ॥ अंक नकार ताहिके लाओ । ध-
प्रननास जवकावि जन गावो ॥ चित्त प्रकाति उकला की
कैसी । साबित रहै शक्कसी जैसी ॥ मन्न शकल क-
हिको विद् गावै । नाम इनकीस सुरकान बतावे ॥
नष्ट शकल सब कविहि बतावै । स्त्री रूप ईश्र श-
नि गावै ॥ सुश्मि मिज़ाज बार शनि लेई । मकर कुम्भ
राशि दो श्मई ॥ रज्जल इन्दु इसीका जानो । हसिरादि-
शि ग्रह सुस्थित मानो ॥ वर्ग सकार वकार मिलावो ।
तासो नाम उसीका पावो ॥ जो विधि नम बारी मोह
श्माई । सो श्मब शकल शिष्यु मैं गाई ॥ २१ ॥

दोहा

३ अव्वल इसरा कहत है कदकोविद चितलाय
नेष्ट पुरुष अति चित रहै बात प्रकृतहिय पाय २९

चौपाई

सोमई इसा मंगल दिनकहिये । मेष राशि पश्चिम दि-
शि लहिये ॥ अवध मास जो बात बतावे । जे अरु के दो
वर्ण मिलावे ॥ नवम शाकल अजतिय सुनिये । शी-
लस्वभाव स्त्रि बपु बुनिये ॥ नारि प्रकृति ईश्वा शशि
जानो । कर्कहि राशि सोम दिन मानो ॥ मास मुहर्रम
का कह दीजे । उत्तर दिशा प्रश्नकी लीजे ॥ कहकार ।
बात करे बिपरीता । अक्षर देरे लहै बिनीता ॥ ३ दश-
वीं नस्तुल खारज जानो । शीलस्वभाव पुरुष बपु
मानो ॥ अथ प्रकृति कहै कबसारे । मद्दि है इसको वि-
ह कह भारे ॥ आदित्य बार राशि सिंह जानो । और ह-
हस्पति बी कहि मानो ॥ मास सफर पूरब दिशि कहि-
ये । खारज अक्षर देते लहिये ॥ ३ शाकल ग्यारवीं
खमें कहहूं । नस्रतुल दाखिल सुन शिशु लहूं ॥ शी-
ल स्वभाव इस्त्रि बयजानो । बार प्रकृति मीन घर
मानो ॥१२॥

दोहा

ईशबृहस्पतिसोमदिन और बृहस्पतिजान।
साहजीकादहुस्थिरसदन उत्तरहैसदूमान॥२०॥

चौपाई

एकलवारभीअबतुमसुनिये। ः उतवेतुलखारज
नामजोगिनिये॥ नरएकलकोविपुरूषहि जानो।
अयप्रकृति कहै कविगानो॥ भौमग्रही मंगल दिन
जानो॥ मेषराशिरजनब शापिरमानो॥ दिशा पूर्वकवि
कोविद कहही। के अरु जै दो अक्षर लहही॥ ः त्रियो-
दशनकी कहै तिवलोई। खोरा चित्त इस्त्रि बपुसोई॥
चित्त प्रकृति जलकी मम मानो। भौम इसे वृश्चिक घ-
रजानो॥ मंगलवार उत्तर दिशि लहिये। साहब मास ब-
लो बल कहिये॥ कहै कुछ और करै बिपरीता। अक्षर
ये जो दोय बिनीता॥ ः चतुर्दश उतवेतुल शाबिवल।
जानो। शील स्वभावस्त्रीफलमानो॥ भुक्त प्रकृति ई-
श भृगु कहिये। वृषहै राशि शुक्र दिन लहिये॥ रवि-
लोंबलकामास बतावो। दक्षिण दिशि का बिज घर।
पावो॥ वर्णविचार नाम कहदीजे। दे अरु से दो अक्ष
रलीजे॥ ः इज्तमाय शाकल अब कहहूं। नारा

दिशा घर उस्का लेहूं ॥ जात नपुंसक इस्की गाऊं । काही पुरुष काहिं स्त्री पाऊं ॥ वायु प्रकृति बुद्धि गुरु जानो । मिथुन राशि तुस अरुतुल मानो ॥ बुद्धवार इस्को ही कहिये । रविलों चन्दका मास जो लहिये ॥ पश्चिम दिशि उस्का पहिचानो । बदन मुसे अक्षर जानो ॥ ग्राबि ख़ि शक्ल ज्ञान उसमें लिये । प्रश्नोत्तर तब हीं कुछ कहिये ॥ २३ ॥

दोहा

जासों उतपति सब भई सो तरीका कू जान ।
शीतल स्वभाव इ स्त्री कहें इस बंद हिय मान ॥ २४ ॥

चौपाई

कर्क राशि जल प्रकृति ह्स जानो । सो है सिन्ध्राय सोम दिन मानो ॥ उत्तर दिशा सादित सब नाहीं । ये अक्षर इसका लेहीं ॥ षोडश शकल लक्षण जब आवे । तब दो रंग रूप सब पावे ॥ प्रथम तरीक को शब्द हि पाया । तासों षोडश नाम बताया ॥ जो ये भेद गुरोंसे पावो । अनमन्त काल शीघ्र बतलावो ॥ मूक प्रश्न शिष्य प्रश्न जो कहियो । विद्या सीख विचरते रहियो ॥ शकल विचारो अपने मनसे । रूप रंग सब लेहो

दोहा

सबसों प्रीतहि दोकरे कामकरै चल त्याग ।
अतिहि प्रतिष्ठावरवहीनरष्ठ कर्मचित लाग॥४६॥
अतिहुलास चितमेंरहे करै मेल की बात ।
भवे रंग गेहूं कहो करे अधिक का साथ॥४७॥

चौपाई

डाढ़ी मुँह पै अतिनर सोहै । जो देखे ताका चित मोहै॥ उतबेतुलखारज आगे जानो । द्वादश घर वाका पहिचानो॥ राखे माल सौदागरि काजा । औरहु अश्व रहे घर साजा॥ जप तप ईश्वर को अतिसेवै । शील स्वभाव श्रेष्ठ वहु सोहै॥ बाग बगीचे मन अति लागे । अथवा उसी क्रियामें पागे॥ और श्वानसों प्रीति बढ़ावै । भारी शब्द अति मुँहको पावै॥ पक्षी सुरेसों अतिहित राखै । नीचे अधर कवीश्वर ताके॥ जैसे होंठ वृद्ध के रहहीं । तैसे इसजन के कवि कहहीं॥ दीरघ शिर अस्थूल बतावै । ये लक्षण रमलहि कथिगावै॥ मुँह अति खुला कहै कवि सोई । ये लक्षण सब बहु विधि जोई॥

दोहा

त्रियोदश घरकी शकलहैं नामनकी सु जान ।

प्रश्नरूप अब भाखहौं विद्याके अनुसार ५०॥

इतिश्रीकविगदाधर विरचितायां रमल विषय ज्योतिष चिंतामणि

मध्ये षोडश शकल प्रश्न

अथ शाखी खण्ड लिख्यते

दोहा

तनकी नासा अस्थि है धनकी पुनि अनुजान

सहज भवन लिखि अष्ट है सुहृद सोलवीं मान ५१

दाराभवन दीनवस है अष्टमको द्विग जान।

सप्तसदी एकादशा अष्टम द्वादशा जान ५२

चौपाई

धर्मभवन की नाशा हि लीजे। कर्मभुवन की तन धर की जे॥ लाभभवन आधा यहि दानों। द्वादश की अष्टम घर मानों॥ त्रयोदश का तन घर लीजे। और चतुर्दश का पुनि दीजे॥ तिथि घर सहज भवन को देखो। षोडश घर को उत्तम पेखो॥ जा घर प्रश्न शकल कहि देखे। ता घर शाखी निश्चय पेखे॥ नेष्ट श्रेष्ठ वाही कूं जाने। जैसा हो तैसा पहचाने॥ शाखी चक्र। खंद दिखलाऊं। लिखि कर अंक सकल सुनाऊं॥ ५३॥

अथसाक्षीचक्रम

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
८ १३	७ १४	६ १५	१६	९	१०	११	१२	५	१	४	८	६	७	३	२

दोहा

प्रथमभवनसेदेखिये जीवकुसुखदुखहोय
खेंचजायघादीजिये उत्तरदाहिनेसोय ५३।
नेत्रभवनसेदेखिये दूजेलाभअरुहान।
पैजबांधफलसाथहो क्रियासकलउरम्यान ५४
लोकभवनसेलीजिये कुलजनस्वजनसोंप्रीत
वेदबाराहीदोयकी खबरजतावे नीत ५५।।
वेदसदनचितधारकै कीजेकाज अकाज।
बागतड़ागजमीनसब भवनग्रामसुखसाज५६
बाराभवनसेलीजिये कीजेपुत्रविचार।
मित्रकोइहहितकारणौ ताकूबीनिरधार५७।
जादूचोरबिमारही चौथालेहोगुलाम ।
झगड़ामध्यमभवनसे देखोसुन्दरवाम५८।।
भवनसातवेंमोंकहो गोपपदारथ होय ।
तकरारझगड़ाइस्तरी इनकाहैघरसोय५९।।

शकल अंक करतहं धरदेई॥ प्रथम चक्र की उम्हत लावो। द्वादश शकल सकल तुम पावो॥२७॥

दोहा

प्रथम शकल के अंक जो रतन खराड में देय।
जो संख्या आवे भवन दशा दिवस कर लेय ६६॥
प्रथम क्रिया के जायचे प्रथम खराड में देय।
द्वितिये पुन तृतिये करो तीन खराड कर लेय ६७
प्रथम जायचे को उम्हत प्रथम भवन में लाव।
चक्र दूसरा लीजिये पर आद वेद अभाव ६८॥
यापांसा कूं जानले वर्ष पत्र कर लेय ॥
जो संख्या हो शकल की मास दिवस धर देय ६९॥

अथ सूक्ष्म वर्ष फलम

चौपाई

शक बारसें सावित होई। लाभ अधिक सुख पावे सोई॥ मंगल कर्म वर्ष में कहही। यश पुराय वहु बिधि के लहही॥ द्वितिये धन की वृद्ध बतावे। सर्व हुलास ब-हल कविगावे॥ तृतिये यात्रा सों हृद कहिये। तीर्थ देव को दर्शन लहिये॥ चौथे मध्यम शकल कवि गावे। पंचम नष्ट कलेश बतावे॥ जो षष्ठम से साबि-

अथ प्रथम घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

लहियान नस्रतुलखारजै पड़ै प्रथम घर आय
ताहामें मकबूल है कोविद कहैं सरसाय॥७२॥
कब्जुल्दाउलवेतुलखारजै इज्जत मानजो होय।
काम करे जिस दाबको सरंजाम सब होय॥७३॥

चौपाई

नस्रतुल दाखिल प्रथम जो आवे। कारज विचार देर होजावे॥ जोई क्रिया प्रथम घर पावे। तो सब कारज हर कलगावे॥ फरहा आकल महा शुभ होई। कुछू होय कुछ हरकत होई॥ तरीक न कीजो तन घर देखे। आधा काज कवी अवर पेखे॥ ज्याजआकलप्रथम महिं घर आवे। चिंता अधिक देर बोपावे॥ दूसरा प्रथम कबीजो आवे। कारज बीच हरकत लावे॥ तनहीं सब नका फल मैं पाया। महत कविन ने जो मत गाया॥२७॥

अथ द्वितीय घरका हुकुम

चौपाई

धन घर जो लहिया नहिं आवे। नस्रतुल खारज दूजी

पावे॥धनकी प्राप्ती शीघ्र बतावे। ब्याव्री संग उसी के लावे॥ ∴ उतबेतुल ख्वारजन कीजे होई। फाका कीरै फ़कीरी जोई॥ देश देशमें फिरिके आवे। धनकी ला-भकहीं नहिं पावे॥ ∴ कावजुल दाखिल खे घरथावे ∴ उतबेतुल दाखिल जो आवे॥ द्रव्य अधिक सो शी-घ्र बतावे। चिंता शोच हिये नहिं लावे॥ इनकी शक्-ल जो तन घर देखे। धनकी हानि महा जो पेखे॥ जो कु-छ हाथ कहींसे आवे। शत्रु क्लेशहिं संग लगावे॥ ∴ फरहान कीजो उकला होई। आधा माल हाथ लगे सो-ई॥ ∴ ब्याज शाकल था हुमरा लावे। ∴ काहू जन से आशा धनपावे॥ ३०

दोहा

करे सवाल जो आनके भेजा सैं एक मास।
आवेगा लेके कछू याछोडूं मन आस ७४॥

इति द्वितीय

अथ तृतिय घरका हुकुम
लिख्यते

दोहा

भाई बन्धु जवांई का करे प्रश्न जो कोय।

पावे। पूंछे पुत्र अस्न जो कोई। पंचम अष्टम नरव दार। सोई।। पुन पंद्रम सप्तम को दीजे। दाखिल नेक जो पुत्र कहु दीजे।। या सों जीत शकल दहिं आवे। फरहा रुख जो आप दिखावे।। पुत्र होयगा निश्चय कहिये। शोच विचार कछू नहिं लहिये।। ३४।।

इति पंचम

अथ अष्टम घर को हुक्म

लिख्यते

दोहा

कैसे जावे रोग यों कहियो तुम सतभाय।
कस्ट जाय या जीवते कहो सकल सत बात ७९।।
अष्टम घर सों देखिये खारज नेक जो होय।
रोग जाय जीता वही कहत सकल कवि लोय ८०

चौपाई

दाखिल नेक जो बैठे आई। खारिज नसर शकल जो पाई।। रोग जाय कुछ बिलम लगावे। जीव आराम सुध कर पावे।। मुनकलेब शकल जो आवे। व्याध जाय या दूजे पावे।। साबित शकल अष्टम में होई। व्याध न जाय महा दुख जोई।। जो अष्टम में हुमरा आवे

चौपाई

तन घर शकल नेकजो आवे। या चौथे घर दाखिल पावे ॥ सो अति प्रीति हेत से होई। महत ग्रंथ थे कहें स-ब कोई ॥ गउ बच्छा का मर्म बिचारै। तो सप्तम घर। योंही पुकारै ॥ पावक तनै शून्य मिल लीजे। आवी खा-की प्यारे कीजे ॥ अनिल अग्नि शून्य जब आवे। तो जीव-त अच्छुत हि बतावे ॥ आदी खादी अधिक जो होई। निश्चल मरे कहैं कवि लोई ॥ जो सासे को पूंछे कोई। सुन घर देख कहैं कवि लोई ॥ सादिल नेक दाखिल घ होई। सो का होय नफ़े का सोई ॥ मेस शकल कोई य-हँ आवे। दाखिल खारिज कोई पावे ॥ सुन्दकीन श-कल जो होई। तौबी नष्ट कहैं कवि लोई ॥ जो कहै जा-जजाउं स्त्रक पासा। करे प्रीति वा होय निरासा ॥ ते स-प्तम अष्टम घर देखे। नेक शकल आवे शुभ पेखे ॥ जो दूजे घर नेक हि पावे। अष्टम नेक शकल जो धावे ॥ जाहर करे प्रीति बहु तेरी। देना कछु न करे कबि हेरी ॥ सुन घर नेक शकल जो आवे। अष्ट श्रेष्ठ कोई जो पावे ॥ प्रीति करे नुकसान जो पावे। महत कवीश्वर यों मत गावे ॥ जो कछु लेय किसी पै जाई। द्वितिय नेक दाखिल

जोपाई॥ खारिज नेक अष्ठ जो आवे। जो मांगे सोई वो पावे॥ जो कसीहूँ तिये खारिज होई। अष्ठम दारिव-लपुनि जो जोई॥ तो दुख देय नहीं सुन मीता। हारा आ-वे जाय जो जीता॥ दुःख कलीव शकल नहं आवे। खा-रिज की आज्ञा वो पावे॥ साबित शकल जहां तुम देखो। दाखिल नेक उसी को पेखो॥ ३६॥

इतिसप्तम

अथ अष्टम घर का हुकम

लिख्यते

चौपाई

अष्टम खारिज नेक जो आवे। तो डर कहै महा दुख पावे॥ जो कोइ पूछे यम डर होई। याका कहो अविराम जो सोई॥ जो खारिज क्यों नाश हि देखो। आनंद खू-र्ति कहीं नहिं पेखो॥ दाखिल नख साबित जो होई। वह दुख कहै महा दुख ओई॥ मरण दुख्ख देह को जानो। सहत कवियों का यों मत मानो॥ ३७॥

दोहा

जोकोइ पूछे आयके याकी मृत्यु जो होय
सो कहियो यों नहिं मरे जो पूछहु सोय॥ ८३॥

संकट अतिपावे॥ जोहराकसी नवें जो होई। नि-
श्चय फाँसी लगकी होई॥ जो कोइ पूंछे विद्या आवन।
मर्मजो घर वाको है पावन ॥ जो दाखिल अब शकल।
जो देखे। विद्या बहुत उसी को पेखे॥ खारिज नेक का-
सी जो आवे। विद्या पढ़त नहीं मन लावे॥ साबित नह्स
दाखिल कसी आवे। अस अति होय विद्या पर पावे॥
खपत परीक्षा जो कोइ चहही। नवें भवन से याको क-
हही॥ अब शकल कोई जो होई। अच्छा खब्त काहे
कहि सोई। नह्स शकल कोई जो आवे। खोटा वाको
पढ़ता वे॥ ८६॥

इति नवम घरफल

अथ दसवें घरका हुकुम

लिखते

दोहा

बादशाह अरु राजका करै कोई रुजगार।
वाको दिगम्बर सेकहो ऐसत ग्रंथ विचार॥ ८६॥
दाखिल नेक आवे कसी दसवें घर में आय।
कार होयगा शीघ्रही पण्डित देहु बताय॥ ८७॥

केपावे। रहै न रहै शाहको पेखे। ... येदो शाकल दशौं घरदेखे॥ दाखिल नेक विरुद्ध घर होई। महीणा कहही कविलोई॥ बादशाह या राजा कहै। मेहरवान हम पै भी रहे॥ दाखिल नेक शाकल कभि आवे। मेहरवान राजाको पावे॥ बादशाह के क्या है मनमें। दाखिल नेष्ट पड़ी किस घरमें॥ बलकी भरी शाकल जहँ देखे। दशावें नेक दाखिलही पेखे। बढ़े राज यों निश्चय जानों। येष्ट कविन का यह मत मानों॥ पड़े नेस घर जोये आई। तौ तियहुष्ट मंत्रि पुनि पाई॥ जो सवाल कोई ये कहै। अभिप गवन या दुःस्थिर रहै॥ ... दशावें शाकल कभीये आवे। राजा दुस्थिर गद्दी पावे॥ ... जोये शाकल कभी दिग आवे। साबित रहै हवज कुछ लावे॥ ४०॥

इतिदशम

अथ ग्यारहवें घरका हुकुम

लिख्यते

दोहा

जो पूछे प्रच्छक कोई मनमें लाभ उम्मैद।
आवे हाथ या नामिले कहो शाकल सब भेद ४१

खारिजल खाखित में कही लाभभवन जो होय।
लाभ होय अतिही घना करे मित्रता सोय ८८॥

चौपाई

॥ ॥ जो ये शकल ग्यारहवें देखे। तौरी ला-भ अरी हूं पेखे॥ खारज कोई कभी न्हां आवे। लाभ दरख पने नाहिं पावे॥ ८९॥

इति एकादश

अथ बारहवें घर का हुक्म

लिख्यते

दोहा

बारे घर जो शकल को सम संग करे अनीत।
खावे करेगा मित्रता काहो दुश्मनी अनीत ९०॥
दाखिल घर जो देखिये बारे शत्रुतासीत ॥
खारिज नेका आवे नहीं तो कहिये अनीत ९१

चौपाई

बंद पड़ा राजा को कोई। तो हि छुटे यों कहिये सोई॥ दाखिल ये ग्रह खारिज आवे। छूटे सहि घर देर लगा-वे॥ खारिज नेक सभी न्हां होई। मुक्त शीघ्र पुनि दीखे सोई॥ मुनकलीब कबहूं जो देखे। छूटि जाय पुन

नहि

कैदकू पेखे॥ मुनकलीव नेस कभी होई। बोड़े षेत खायगा सोई॥ दाखिल नेक मांजित कभी आवे। बंध पड़े वोह सार जो खावे। बंध सध्य मरजावे सोई। रमला चार्य्य मतज्ञ जो कोई। चतुष्पद हु कूं कोई लावे। सौदा हो याती बनावे॥ दाखिल नेक द्वादशा में होई। आवे हाथ मुबारिक सोई॥ जो कहि नस दाखिल तुम देखो। आवे हाथ न मुबारिक पेखो॥ जो कभी शकल द्वादशा में होई। खारज नेह समुन्कलीव याकोई। हाथ ना आवे सब कवि कहई॥ ५२॥

इति द्वादश

अथ त्रयोदशा और चतुर्दशा घर का हुकुम लिख्यते

दोहा

नाते निस्बत जो कहै त्रयो दश घर पहचान।
दाखिल नेक जो देखही इच्छा पूरी जान ६२॥
पावक तत्व महाति की बिच घर आवे सोय।
शीघ्र काज वो होयगा कहै कवी रवरजोय ६३॥

चौपाई

जल पृथ्वी की जो कभि आवे। कारज बीच देर वो

लावे॥ अष्टम त्रयोदश भाग लगावे। श्रेष्ठ होय।
कारज शुभ आवे॥ ४३॥

दोहा

दूरे संबाल जो आयके मुलाकात के हेत।
चौदह भवन सो कहो कवी अमारा समेत ४४
हारिवल नेक आवे सोई मुलाकात शुभ होय
खारज बैठे जो अवाल कासर कुब्ध कहिजोय ४५

चौपाई

हारिवल नेक वहां पर आवे। कारज वाको मध्य बतावे॥ खारज नेस कवीश्वर देखे। मुलाकात कतहूं ना पेखै॥ ४६॥

इति त्रयोदश चतुर्दश

अथ पंद्रहवें और सोलहवें घर का खुलास लिख्यते

दोहा

सञ्जर का घर पंद्रहवां नेक न हसके देख।
जो जमाल आवे कभी हारिवल खारज पेख ४८
तिहि घर को जो माहहै महा नष्ट दुख पाय।
खोटा सब कवि कहत हैं ग्रंथ मह त्समझाय ४७

थोड़ा घर है मोसका और घरा माहि जान।
मूक प्रश्न या सों कहै थोड़ा फल ये मान ८८॥

इति थोड़ा फलम्

चौपाई

वर्ष मध्य केतक जल होई। पूछे आय प्रश्न कर जो कोई॥ ⁝ ⁝ ⁝ ⁝ पांसा फेंक जाय सो देखे। जो ये शाकल प्रथम अति पेखे॥ अति घन वर्षै कह कवि तोई। थोड़ी पड़े तो थोड़ी होई॥ लहियाने दूजे घर होई। वर्षै वर्फ कहै कवि लोई॥ आवे पंच मेघ का नाहं। ताको नसरा चित सों लेहूं। यंत्र लिखूं सों निश्चय जानो। दूजे घर का प्रश्न बखानो॥ जो यह कब्ज धनाहि घर होई। ताका फल जानो कवि लोई॥ ⁝ लहियानै खेती अति सूकै। कबजुल दाखिल जल अति हूकै॥ ⁝ कबजुल खारिज जल अति होई। खेती थोड़ी कहै कवि लोई॥ थोड़ा मेघ जमात बखाने। ⁝ अकरा नाज कवीश्वर माने॥ फरहा सम सम बार बतावे। ⁝ उकला निपट यही कवि गावे॥ वर्षा खराड़ कहै इन कीसा। खेती बहुत नाज बिस्वे बीसा॥ हुमरा कम वर्षै कवि लोई। व्याज होय।

वर्षा अतिसोई। नखुतरवारिज बर्षे थोड़ा। नखुत दासिल जल अति जोड़ा॥ अतिवेरवारिज सूक्षम बरसै। होयखुशीपररहता डरसै॥ ⁝ नकीहोयतो जलअतिसाने। खेतीडूबजायकविजाने॥ ⁝ अ-तवेदा बिल्लदूजीहोई। मेघखेती अतिहोकवि लोई॥ इज्जतसाह जोअन घरपेखे। जल बहु होय शीत सं-सालेखे। होयतरीक कहैं सब लोगा। राजप्रजा स-ह सुख संयोगा॥ ४५

दोहा

ग्रंथांतरको औरमत सोमैं लिखूं बनाय।
दूजे घरसे देखिये और प्रगट हो जाय दर्द॥

अथ वर्षा चक्र

लिख्यते

उदाहरण

• — — —	— • — •	• — • —	— — — —	• — •	• — — •	— — — •	— • — —
वर्फ पड़े दृक्षज-लै	गर्मी ब-लहोय-केफिर मेह वर्षे	गर्मी से-हसे	मेहबर्षे गरमी धू-पपड़े	धूमधूमी तपड़े	शीतधू-पपड़े	पवनग-र्मीहोय	पवनग-र्मीहोय

॥·।	··॥	॥··	···।	·।··	।···	।··।	····
श्रौरबस्तीहोय	धूपसेगर्मीहोय	बादलघनसेरहै	धूपपवनमेघथोड़ा	बादलरहे श्रांतहोय	मेघहोयकेवर्षै	शीतहोयमेघवर्षै	धूपमेघहोय

येचक्रमहाबरूनकाहै

अथ मुष्टिका प्रश्न
लिख्यते

दोहा

जोकोइ पूछे आयके मुठीबंद महराज।
भलाहमारे हाथमें कौनचीजहै आज १००॥
प्राकवेद घरसे कहो तिनको जरब लगाय।
धातमूलयाजीवहो तासों फल बतलाय १०१

चौपाई

चारोंशाकल प्रथम जो आवे। तासें जो बलवंतहि पावे॥ वाही शाकल रंग कहदीजे। और प्रकृति वाहीसों कीजे॥ ग्रंथांतरका बीमा लेहू। दूजे घरसे

अथ जमीर प्रश्न लिख्यते

दोहा

प्रथम शकल का आतशी दूजे का हो बात ।
तीजे जल का लीजिये चौथे पृथ्वी जात १०२॥

चौपाई

शकल जनाय कहैं कवि लोई। जैसी प्रकृति सो वैसी होई ॥ जहां जहां बैठे वह आई। तहां तहां जमीर जो पाई ॥ प्रथम हिं शकल जहां जो आवे। वा घर सेजो प्रश्न बतावे ॥ लहियान जहां तहां होई। वा जमीर कहो कवि लोई ॥ पुनि एक और जमीर जो लिये। उस्तुत गुरवते ही गिन लहिये। घर पीछे वो बाट लगावे। जहां जो ठीक जमीर बतावे ॥ प्रथम शकल अरु पंद्रह ताई। तुक्के गिने कवीश्वर पाई ॥ द्वादश का कवि भाग लगावे। बाकी रहै सो शकल हि पावे ॥ वा घरसे जमीर कह दीजे। तकरार करे तो वह भी लीजे ॥ पुनि घरतो अरु पंद्रह ताई। तुक्के महत कह तक दिखाई ॥ वामें नौका भाग लगावे। रहै शकल जो प्रश्न बतावे ॥ पुनि जमीर एक औरहि कहिये। तुक्का बला पंद्रहवाँ लहिये ॥ जहां टिके वा सों कह

दीजे। शाकल एक रूप कहदीजे॥ जहँ पंद्रहवीं शाकलजो आवे। वहां सो नुक़ा आय बतावे॥ जहां टिके वहँ सो कहदीजे। शोच समझ कर प्रश्नहि लीजे॥ प्रथम भाव में शाकल जो आवे। वाके घरे कौनसी पावे॥ पुनि वाकी तकरार जो देखे। ये घर देख प्रश्न कविपेखे॥ कहै रमल सो कुल्लहि दीजे। शोच समझ कर अनुभव कीजे॥ ७७॥

दोहा

प्रश्नउमहत आगले दूजे बात सिताव।
तीजे जलको लीजिये चौथे खाक हिपाव॥ ७८॥

चौपाई

एक शाकल अब वाकी लावो। कविया विधि से शाकल बनावो॥ दोनोंकू कवि भाग लगावें। शाकल निकाल जमीर बतावे॥ पञ्चम आग षष्ठ जल कीजे। सप्तम वाय अष्टम आग लीजे॥ एक शाकल वाकी कर लेहो। उमहत सो एक कर देहो॥ दोनोंको कवि भाग लगावे। निकसे सो जमीर बतलावे॥ जो ये शाकल कहीं नहिं आवे। ताको प्रश्न कवी बरणावे॥ ७८॥

दोहा

उसहत संज्ञा कहत है तनधन सहज सुहृद्द।
सुत शत्रू मुनि नागही नाम बनात सिद्द॥१०४

बाकी शाकल अवतारहै सुनहो कवी सुजान।
सहत कवों का मत यही सत्य हिये करमान॥१०५

अथ नाम काढ़ने की विधि
लिख्यते

दोहा

शून्य गिने सब चक्र के षोड़श भाग लगाय।
शाकल जौनसी पाइये तासों नाम बताय॥१०६

चौपाई

जो पुन रत्ता कहिं जादे देखे। वा घर का अक्षर वो पेखे॥ केचित मत एक और बतावे। महत गुणी सब का दिजन पावे॥४८॥

दोहा

नाम बरस दिग रुद्र घर द्वादशवीं कवि लेय।
या सब अक्षर लीजिये नाम होय कह देय॥१०७॥

चौपाई

जो यह शाकल बली कहिं होई। तो अक्षर निश्चय

करजोई॥ जो कमजोर शकल कहि आवे। तो अक्षर वाका नहिं पावे॥ ५०॥

अथ नाम निकालने का चक्र लिख्यते

अफ	कज	अल	मा	तज	न	शव	जक
रू	दत	रुस	जक	मेज	दश	स	अ

दोहा

याही यंत्र को देखकै अक्षर लेहु निकाल।
शकल जौन बलवन्तजो ताको लीजे हाल ५१॥

चौपाई

चौकि चित एक और बताऊं। अब्द रमल चार्यौ कोगाऊं॥ कहें प्रमारा शकल कवि सारे। जो को·

विद ज्योतिष कविभारे ॥ प्रथम शाकल से षोड़श ला ई । न्यारे अक्षर सब घर माई ॥ ताही अक्षर लिखूं क बिलोई । जाके समझ नाम कहो सोई ॥ जा घर शाकल जान बलवाना । वा घर अक्षर लेय निदाना ॥ विद्या रमल गरीयात की जानो । एक ध्यान कर इसको ठानो । चितते एकचित्त होजावे । पुनि अशुद्ध कभू न हिं थावे ॥ विद्या रमल अतीय रवीना । पढ़कर किस्तू न होय अधीना ॥ आगे चक्र लिखूं चित लावो । अक्षर शुद्ध काढ़ समझावो ॥ ५१ ॥

दोहा

चतुराई अरु ज्ञान से अक्षर लेव निकाल ।
एतही यंत्र विचार के लिक्खा शाकल हवाल ॥ ७६

अक्षरनिकालनेकायंत्र

अफ	अबे	अजीत	अदा	अहे	अवा	अने	अहे
अबे	अजी	दाल	अहे	अवा	अजे	अहे	अतो
अजी	अदा	अहे	अवा	अजे	अहे	अतो	अये
अदा	अहे	अवा	अजे	अहे	अतो	अये	अका
अहे	अवा	अजे	अहे	अतो	अये	अका	अला
अवा	अजे	अहे	अतो	अये	अका	अला	अमी
जे	अहे	अतो	अये	अका	अला	अमी	अनू
[illegible]	अतो	अये	अका	अला	अमी	अनू	असी
अतो	अये	काफ	अला	अमी	अनू	असी	अअ
अये	अका	लाम	अमी	अनू	असी	अअ	अहे
अका	अलाम	मीम	अनू	असी	अअ	अफे	अस्त
अला	असीम	नून	असी	अअ	अफे	असा	अका
अमी	नून	असी	अन	अफे	असा	अका	अरे
अनू	सीन	अन	अफे	अस्वा	अका	अरे	असी
असी	अन	अफे	अस्वा	अका	अरे	असी	अते
अन	अफे	अस्वा	अका	अरे	असी	अते	असे

अथ शाकलों की संख्या का चक्र लिख्यते

शकल	फल	शकल	फल
।·।।	बलरहित तरुण	····	[illegible]
।।।·	स्त्री	।··।	नपुंसक है
·।।·	स्त्री है नपुंसक या गर्भ	।···	पुरुष है पर वृद्ध
··।·	लड़का है मासूक	·।··	स्त्री है बालयौवन
।।।।	नपुंसक स्वरूप है	···।	पुरुष यौवन
·।·।	स्त्री वैरी है	।।··	पुरुष यौवन
।·।·	पुरुष अधवृद्ध प्रशांत	··।।	पुरुष यौवन
·।।।	पुरुष यौवन जवान	।।·।	स्त्री अधवृद्ध है

दोहा

आगे प्रश्न जो कहे अवस्था केती होय ।
वर्ष मास दिन हीं कहो समझ पड़े तुम जोय १२२

चौपाई

पांसा गेर जायचा कीजे । तुके शाकल जफर के दीजे ॥ तिनमें षोड़श भाग लगावे । बाकी रहे घर पीछे पावे ॥ जहां टिके वह शाकल विचारो । जाके अदद देख

(बाकी)

पधारो ॥ जेते अस्त्र धाकालके आवें । तेते शब्द अव-
स्थापावें ॥ कसरे वर्ष अब्द नतलावे । आयल वर्ष ना-
सहियतलावे ॥ आदल अस्त्र दाहो दिनरैना । महत्त क-
बोंकायोंहै कहना ॥ ५३ ॥

दोहा

याविधि बुद्धि विचारिकै निश्चयकालजोहोय
हरसुमिरणाहियमेंधरो युक्तपदारथसोय ११३

चक्रम

८६	६०	८६	१२	१८	५८	५०	३६	६०	६०	८२	पूर	३६	४१	१९	८१
४८	४५	९२	३६	४३	४३	४४	४०	३०	८५	३५		४०	६१	३८	८०
२८	१२	८२	१९	३०	३०	३०	१५	११	२०	१०		१०	९	३०	१२

दोहा

चोरीको पूंछे कोई उठे जो घरसें देख ।
चोरकूपल्लांसे कहो सप्तम से धन पेख ११४ ॥
पुनि पूंछे कोई आयके चीजजो आवे हाथ ।
कहो कृपाकरनाथतुम जासेहोय सनाथ ११५

चौपाई

अष्टम द्वितिये शकल जो आवे। दाखिल नेक कभी न्हां पावे॥ तो घर आवे खैघर मिंता। किसी बात की करो न चिंता॥ खारिज नसु शकल न्हां पेखो। वर्ग चोर दाबी खबर देखो॥ जो पूंछे अच्छुककब कोई। माल धरा या खर्च किय सोई॥ साबित शकल अष्टम घर आवे। माल ससूचा कवि गुरा पावे॥ जो खारिज न्हां पड़े या आई। माल खरच उन किया गुसांई॥ इस ऊपर के घर कू कवि कहिये। दशवीं शकल कू छिन लहिये॥ शकल ग्यारहवीं को उर आनो। ... कर कियो सा कहिय मानो॥ स्व घर माह चोर कह देई। ... हि अर गयो जो लेई॥ चौथे सप्तम दाखिल आवे। ... स सय चोर आप घर पावे॥ शहर मध्य चोर अब कहो। या कहीं बाहर कूं अब रहो॥ दशवें चौथे दाखिल आवे। चोर शहर में बार न पावे॥ जो खारिज ... शकल कूं देखे। चोर शहर से बाहर पेखे॥ सप्तम शकल करे सकरारा। चोर शहर में कहो कवि भारा॥ चोर पास तें कहो धन आवे। या कहि तस्कर खर्च में लावे॥ द्वितिये अष्टम को कवि देखे। दाखिल नेक।

शाकलकूं पेखे ॥ तो धन चोर यासते आवे ॥ खारिजन-हस होमूल गवांवे ॥ ५४ ॥

अथ प्रश्नसम्बन्ध का

लिख्यते

दोहा

मिले श्रेष्ठ सम्बन्ध मस या कोइ नीचो होय ॥
कहो बिधी से शाकल तुम मैं पूंछूं हं तोय ११६ ॥

चौपाई

श्रेष्ठ सनेक शाकल कोइ आवे ॥ खारिल होय अधि-कोल पावे ॥ मिले श्रेष्ठ सम्बन्ध जो वाकू ॥ अति सु-न्दर बर करो जो ताकू ॥ खारिज नहस शाकल कभी आवे ॥ रूप देखि कुरूपहि पावे ॥ सुन्कलीव नेहस कवि देखो ॥ वाहि समय फल वाका पेखो ॥ सुन्कली-व नेक कवि होई ॥ शील स्वभाव श्रेष्ठ कहो सोई ॥ खा-रिज सुन्कलीव कोइ आवे ॥ देर बहुत भरके बर पावे ॥ जो घर धन को कवि सब गावे ॥ वो घर इस प्रश्न में लावे ॥ ५५ ॥

दोहा

सम्बन्ध मिले ताको नहीं नीके करो बिचार ।

के गिनलावे। शून्यरहै तो सत्य बतावे॥ अक रहै तो अ-
सतबताबे। शोच समझ कवि के समझावे॥ ११६॥

दोहा

बसे पुर्व जो विदेश में प्रच्छक पूछे आय।
मारग में दरियाव है संज्ञा दोय बताय॥ ११९॥

चौपाई

शकल प्रथम जो घर में आवे। पुनि वैसे संचार जो पा-
वे॥ जेते घर पानी के त्यागो। तेती संज्ञा कवि चित पा-
गो॥ नहिं करे कहीं तकरारी। वैसे भवन उलंघ हित
कारी भवन उलंघे लीजे। संज्ञा करके कवि कहदीजे॥ ७॥

पांचसात दिन की अवधि

दोहा

पंचसात जो कोस को गया विदेशी मीत।
कौन समय आवे वहीं शकल बिना कहो मीत॥ १२०॥

चौपाई

∴ कबजुल दाखिल पंचम होई। याका फल समझो
कवि लोई॥ चार घड़ी दिन रहे सो आवे। संध्या तक क-
वि अवधि बतावे॥ अन्त्तुल खारिज जो कवि आवे।
∴ पहर रहे दिन चार घड़ी पावे॥ ∴ जो कती फरहा आवे

हांई । नस्र तुल खारिज का फल पाई ॥ ⠿ नस्र तुल दा-
खिल जो कभि देखो । प्रात्तसों पहर चढ़े दिन पेखो ॥
इज्जतमाह ⠿ पंचम घर पावे । बुधके दिना किसी समय
आवे ॥ ⠿ जो जमात आवे कबिलोई । सांझको एक
पहर लौ सोई ॥ ⠿ ज्यजल शकल आवे कविमीता । प्रातसे
एक पहर कर चीता ॥ दुसरा शकल कभी क्वां धावे ।
मंगल दिना किसी समय आवे ॥ ⠿ शकल तरीक क-
वीश्वर देखे । दुपहर बाद सहत गुरी पेखे ॥ ⠿ जो
उकला पंचम घर धावे । संध्यासे चौ घड़ी ...
जोये शकल आवे दूनवीसा । अर्धराति तक
दीसा ॥ ⠿ जो लहियान शकल कवि होई । प्रातसों
एक पहर लौ सोई ॥ ⠿ नस्र तुल दाखिल जो कवि आ-
वे । संध्यासों एक पहर लतावे ॥ ⠿ नकी शकल को
भव कविलोई । चार घड़ी दिनसों सामलो होई ॥
⠿ कब्जुल खारिज बैठे आई । प्रात सों एक
पहर लों गाई ॥ ⠿ उत बेतुल खारिज जो आ-
वे । मंगल रात कवीश्वर पावे ॥ ⠿ ⠿ नस्र तु-
ल खारिज गया अब आवे । प्रगट में हरज कवी-
श्वर पावे ॥ ४८ ॥

दोहा

यापकारमेरोगके निश्चय दिनकर लेय।
पांसा फेंक बिचारके अवधि शकल कहदेय १२३

अथ अवधि बिचारणा यंत्र
लिख्यते

१	३	६	१०
१५	२१	२८	३६
४५	५५	६६	७८
९१	१०५	१२०	१३६

गुप्तयानी गड़े हुये धनका मिलना न मिलना

दोहा

द्रव्यगड़ोहै भुम्मसें जानत हैं हम नाह।
प्रगट होय कोइ यत्न से कहिये अवपराह १२४

चौपाई

प्रथम अष्टम ग्रह दो देखे। दाखिल नेक शकल लहां

और कुवाँ घरको मध्य कहियेपानी मीठा वाको लहि-
ये ॥ जो तकरार आतिस घर करे। पनियाँ खारा वाको
भरे ॥ जो तकरार अष्टम घर करे। आवे बास पानी अ-
तिसरे ॥ जो अष्टम में करे तकरारी। पानी पीवे होय
बिमारी ॥ ⁞ लोकभवन में जो वे आवे। नंगे पड़े दो-
रैनकू पावे ॥ जो इनकी सिवेह घर होई। घरमें साँपक
हो कबि लोई ॥ द्वादश घरों को तकरारा। मारा साँप
कहै कबि सारा ॥ जो उकला हि बेह घर होई। चूहे घर-
में कह कबि लोई ॥ मुसल्मान कूँचे का बिभिन्ना। घर-
में वावर कहो निशिदिन्ना ॥ ≡ ∴ जो ये शकल बेह घ-
र आवे। कालूतर या मुर्गी पावे ॥ ∴ ⁞ जो ये शकल
बेह घर आवे। फूल पड़े ता घरमें पावे ॥ याकहि छुब-
अ दाँ इकार रावे। या कुलकुल कौ शौक जो राखे ॥
∴ ⁞ जो ये सदन बेह में आवे। बकरी घरमें निश्चय
पावे ॥ या महाल घरमें कोइ होई। यमना चार्य कहै
मत सोई ॥ ∸ ∵ ⁞ इन घरमें ये शकल जो आवे। या
सात वित कहि नेक जो पावे ॥ रखिल काज़ दुकल जो
राखै। नालर खारिज का कवि भाखै ॥ यामें लिखा
सांच कर जानो। महत्त किताब का यो मत मानो ॥

आगे अक्षर लिखूं बनाई। जासे प्रगट नाम होजाई॥ ६१

दोहा

अक्षर लिखूं सो सुनिये यामें झूठ न होय।
जो आवे सो समझमें नाम कहो तुम सोय॥ २६

चौपाई

क्रियाकहूं सोउरसे लीजे। दुसरी पांचवीं को कवि लीजे॥ तीसरी चौथी को पुनि लेहो। दशवीं पांचवीं को कवि देहो॥ छटीं सोलहवीं को अब लेहो। सातवीं औरु आठवीं देहो॥ और आठवीं को तुम मानो॥ और बारहवीं नवीं बखानो॥ पुनि एकादश द्वादश लेहो। त्र्योदश और चतुर्दश देहो॥ पंद्रह और सोलहवीं जानो। याका भेद इसी में मानो॥ अक्षर काढ नाम कहदीजे। बड़े ग्रंथका यों मत लीजे॥ ६२॥

दोहा

विद्या रमल अनूप है को कर सकत बखान।
हानि लाभ जीवन मरण यामें लीजो जान॥ २७॥
जो चित हित सेती पढ़े ज्योतिष रमल बिचार।
धन दौलत बहुती बढ़े फेंके पासा सार॥ २८॥

अथ त्रयोदशादिषोड़शापर्य्यन्तनिर्णय

लिख्यते

दोहा

अथ सभवन से लिखलो फल देखो सो होय।
पिछले चारों भुवन हीं मिले आदि से सोज॥२९॥

सोरठ

३ त्रिलास ११ दृष्टी तवीत संज्ञा। ९ नवमें शुभ दृष्टी तसलीस संज्ञा॥ द्वा१० अरु ४ दृष्टी तरबीस संज्ञा मुकाबला ७ सप्तम दृष्टि दक्षा॥१॥

अथ दृष्टिचक्र

लिख्यते

शुभ दृष्टि ३	शुभ ५	शुभ ९	शुभ ११
ऊर्ध शत्रु ४	ऊर्ध शत्रु	पूर्ण शत्रु	..
नजीक दृष्ट २	नजीक दृष्ट ६	दूर दृष्ट	..
शत्रु अ	स्थान	जाणो	..

दोहा

प्रश्नभवन सों देखिये द्वादशघरको भाव।
पिछलाबीनासबकहो कहे रमलयोस्वभाव ४३०
तातमातु अरु पुत्रको निज भ्राताको देख।
लाभहानिअरुरोगकूं भिन्नभवनसेपेख ४३१
सकलभवन वलदेखिये सो मैं लिखाविचार
यंत्रदेखनिश्चयकरो कूवतसदननिहार ४३२

अथकूवतयंत्र

१	१	३	४	१	६	७	८	२	१	१४	९	१०	१४	१५	२
२	२	६	३	२	५	५	१०	५	५	११	८	५	१२	६	३
४	१५	८	६	३	१०	८	३	३	९	६	६	७	३	१	४
६	९	१२	१६	९	१२	१३	७	..	९	५	१२	६	५	११	१६
८	४	...	१३	..	११	२	६	..	१०	१२	..	१३	२	...	..
..	११		१	..	१४	१२	१	.	..	..	..	..	..	..	..
.	.	.	.	.	.	.	१	.	.	.	.	.	.	.	.

अथ नाम संज्ञा लिख्यते

दोहा

प्रथमभवन उत्तादहै दूजे मायल जान ॥

तीजेमायलही कहो याकूस शकालबखान१२३
तासहिं संज्ञा थंद्धो लिक्हूं दूद बिचार।
आगे सत्पद देखियो हूस्ऐं हूल अचार॥१२४॥

यंत्रोलिख्यते

उम्हात	मायल	आयल	० ०
१	२	३	० ०
४	५	६	० ०
१०	११	१२	० ०

दोहा

तनधनसहजसुहृदकूं नामकहै उमहात।
सुतरिपुजायामृत्युको मायलसकलबखान१२५
नवमदशमएकादशौ द्वादश घर पहिचान
मुतवल्लरात संज्ञाकहैं कवित आपबखान१२६
त्रयोदशऔरचतुर्दशौ तिथिषोड़शघरलाय

संज्ञानामबतातहैं रमलाचार्य्यकोभाय १३७॥

अथ आतसीबादीआबीखाकी

प्रकृति लिख्यते

चौपाई

जहां आतसी शकल विचारो। आतस्रूप हियमहैं दृढ़ि धारो॥ जोबादी पावैकबिमीना। कहोबनासपतीम-नचीता॥ जोबादी पावोतुमसोई। संज्ञाजीवबतावो सोई॥ खाकीशकलकहींजोआवे। पृथ्वीकीसबजिन-सबतावे॥ ६३॥

दोहा

इनको निश्चय जो करे मूक प्रश्न का भाव।

रमलाचार्य्यको सबकहे सुनउरधरो कविराव १३८

अथरमलाचार्य्यमतवर्णनम् प्रतकरना मुहूर्त

दोहा

रमलसमय आवे तभी पांसा फेंक सुजान।

मूलजायवा नारि के जाको सबै बिजान १३९॥

चौपाई

दल भद्र विश्व सकलको लेहो। जासोंशकलनिका [illegible]

लकै देहो॥ वेदचतुर्दशकूं तुम लीजे। तासों शकल नि-
कालके कीजे॥ पुनि सप्तम और तिथकूं लेहो। दिगम्ब-
र षोड्श में पुनि देहो॥ याहि क्रिया सों शकल ये लेही।
चारों प्रथम थाह कर देही॥ ६४॥

दोहा

चारों प्रथम बनायके नाम धरो उमहात ।
जासों कीजे जायचा पहर कहो दिन रात ६४॥

चौपाई

जासों सकल हवाल बतावो। जो हो रूप प्रकृति ज-
तलावो॥ इसी क्रिया से पुनि पुनि कीजे। पंद्रह दिन गि-
नकर कहि दीजे॥ उड़ जायचा तासे होई। योंवी मह-
तकबों मतलोई॥ ६५॥

८ अष्टम घर सों देखे दूसरे में चर होय आठवें में थि-
र होय तो करज से छुट जायगा सम और चर दूसरे में थि-
र होय तो चौथे में चर होय तो नहीं छूटेगा जो यों पूछे
मैं करज दूं मुझको नफा होगा या नहीं तब दूसरे आठ
वें को जरब करे शकल निकाले जो शुभ स्थिर होय तो
नफा होयगा जो स्थिर अशुभ होय तो जमा जायगी

औ स्थिरहोयतो थोड़ामिले कुस्वभावहोयतो हिंदिया कहिये ॥ मंत्र ॥ ओं नमो भगवती कूष्मांडनी सर्वनि-मित्त प्रकाशनी एह्येहि त्वरत्वरे वरवरे हिलहिल मातंगिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा ॥

अथ केवल प्रश्नविद्या

लिख्यते

भूतं भविष्यति प्रश्नं विज्ञानं ज्योतिषां कृतं । आयुप्रश्नं निरंधं च किंचित्तु सत्सतं परं ॥ १ ॥ उच्चरितं फलं नाम प्रश्नाद्यक्षर वसेनतु । अवर्गा घटकं तेषां मायाप्राज्ञैर्विचिन्तयेत् ॥ २ ॥ प्रश्नाक्षरं तिविसुत । तारकाकार विश्रुतं । वन्हिभिर्भ्रहरे ज्ञानं प्रोक्तं सत्वरजस्तमः ॥ ३ ॥ सत्वे सिद्धि द्याकार्य्यं रजसा रज पूजितं । तामसा निष्फलं कार्य्यं इत्येवं प्रश्न लक्षणं ॥ ४ ॥ तेषः फलं कल्पनीयं ध्वजे धूमश्च सिंहच । श्वानेवृषखरो हस्ती ध्वांक्षे चैवाष्टकं तथा शुभाशुभ मिहंस्फुटं ॥ ५ ॥

अथ प्रश्ननिर्णय

ध्वजकुंजरसिंहेषु वृषेवास्तीति निश्चितं । धूम्रेश्वानेखरे ध्वांक्षे नास्ति प्रश्नस्तु निश्चितं ॥ ६ ॥

अथलाभप्रश्न:

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शीघ्रलाभो भवेद्ध्रुवं। धांक्षे श्वानेखरे धूम्रे लाभस्तत्काल दुष्करा॥७॥

अथधातुमूलजीवप्रश्नं

ध्वजे धूम्रे धातुचिंता गजे सिंहे च मूलकं। श्वाने वृषे खरे ध्वांक्षे जीवचिंता भवेद्ध्रुवः॥८॥

अथमुष्टिज्ञानमाह

ध्वजे पत्रेतु विज्ञेयं धूम्र पुष्प तथैव च:। सिंहे फलं च विज्ञेयं श्वाने काष्ठादिकं स्मृतं॥९॥ वृषे धान्यं तथा प्रोक्तं खरे रत्नानि गद्यते। गजे जीवं च विज्ञेयं ध्वांक्षे पुष्प तथा स्मृतं॥१०॥

अथधान्यानि

गोधूमान्नं ध्वजे दद्यात धूम्रे चैव तिलस्तथा। पीत वर्ज्जं च सिंहे च श्वाने चैव तु वालकं॥११॥ वृषे च तंदुलं प्रोक्तं खरे च चराकं तथा। गजे गुड़ घृतं ज्ञेयं ध्वांक्षे च यवनं तथा॥१२॥

अथप्रवासीप्रश्न

सिंहे वृषे ध्वजे चैव गजे च कुशलं वदं। ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे नास्तीति कुशलं वदेत॥१३॥

अथ प्रवासीचरस्थिरप्रश्न

ध्वजे गजे स्थिरंचैव श्वाने सिंहेच चंचलं । वृषे धूम्रे प्रवासी स्यात् खरे ध्वांक्षेच कष्टकं ॥१४॥

अथ प्रवासीआसालमो प्रश्नः

ध्वजे धूम्रे समीपस्थं दूरस्थं गजसिंहयो । वृषे खरे च मार्गस्थं ध्वांक्षे श्वाने पुनर्गतिः ॥१५॥

अथ प्रवासी निर्णयः

ध्वांक्षे ध्वजे स्वल्पदिनं प्रोक्तं धूम्रे सप्तदिनं तथा । एकविंशति सिंहेच श्वाने मासं तथैवच ॥१६॥ वृषेतु सार्द्धमासंच खरे मास द्वयं तथा । निगदितं परिडतादीशां ध्वांक्षेच अथनं तथा ॥१७॥

अथ मुष्टि वर्ण ज्ञानं

कौसुंभेच ध्वजेज्ञेयं धूम्रे श्वेतं तथैवच । लोहितांगंच सिंहेच श्वाने पांडुनीलकं ॥ पीतवर्णं वृषेज्ञेयं खरे च कृष्णवर्णकं । गजे श्यामंच वर्णास्यात् ध्वांक्षेच मिश्र वर्णकं ॥१८॥

अथ धातुज्ञानम्

ध्वजे सुवर्णकं ज्ञेयं धूम्रे रूप्यं तथैवच । सिंहे ताम्रंच विज्ञेयं श्वाने लोहं तथैवच ॥२०॥ वृषे कांस्यं खरे नागं

(क्रमशः)

कथितंच गजेस्वतं। ध्वांक्षेपित्तल विज्ञेयं कथितं गर्ग कोत्तमैः॥२१॥

अथ भूषणा ज्ञानम्

ध्वजे चाभूषणां बुद्धौ सुखे भूषणा धूम्रके। कराहस्थ भूषणां सिंहे श्वाने कर्णायोस्तथा॥२२॥ वृषेहस्तस्य विज्ञेया अंगुलीभूषणां खरे। गजे चकटि स्थंच ध्वांक्षे पादादिकं तथा॥२३॥

अथ नष्ट लाभा

ध्वजे गजे वृषे सिंहे गतलाभं सुनिश्चितं। ध्वांक्षे धूम्रे खरे श्वाने नष्ट हानि सुनिश्चितं॥२४॥

अथ दिसु नष्ट वस्तु ज्ञानम्

ध्वजे पूर्व गतं चैव सिंहे च दक्षिणो वच। श्वाने नैऋत्य मेवास्तु पश्चिमे वृषसंतथा २५॥ वायव्यां खरभे। तथोक्तं उत्तरे कुञ्जरे ज्ञेयः ईशाने ध्वांक्षे मेवच॥२६॥

अथ चौरजातिमाह

ध्वजे च ब्राह्मणाश्चैव धूम्रे क्षत्रीतथैवच। सिंहे वैश्य स्तु विज्ञेयं श्वाने शूद्र तथैवच॥२७॥ वृषे भाराक विज्ञेयं खरेच सेवकं तथा। गजे दासीतु विज्ञेयं ध्वांक्षे नायिकं जिको॥२८॥

विंसतिप्रोक्तं गजेव्योम यतिस्तथा। धूम्रे वर्षमिदं ज्ञे-
यं मित्याखुमच विचिन्तयेत॥२५॥

अथ शत्रुगमागमप्रश्न

ध्वजे गजे वृषे सिंहे शत्रूणां शीघ्रमागमः। श्वाने
खरे तथा धूम्रे ध्वांक्षे चपुनरागमः॥३६॥

स्थायिजायजयप्रश्न

गजे ध्वजे वृषे सिंहे स्थायि नो जय संभवः। खरे श्वा-
ने तथा धूम्रे ध्वांक्षे चजयजादुनः॥३७॥

अथ वृष्टीप्रश्नः

धूम्रे गजे वृषे श्वाने वृष्टिरभवति चोत्तमा। सिंहे
ध्वजे विल ख्येन ध्वांक्षे खरेन वृष्टिय:॥३८॥

अथ दिनानि

धूम्रे सप्तदिन प्रोक्तं वृषे दश तथैव च। श्वाने च
विंशति ज्ञेया ध्वजे च सप्तविंशति॥३९॥ सिंहे गा-
जे च व्यासादि खरे ध्वांक्षे रितस्तथा। वर्षाकालाच
विज्ञेयं कथितं गणकोत्तमैः॥४०॥

अथगर्भनक्षत्र

अश्वनी आदिरणकं नक्षत्रं गर्भसंज्ञकं। तस्मा
त्पंच नक्षत्रं गर्भपातस्य चिंत्ययेत्॥४१॥ गर्भ

घाते यथा वृद्धि हानिर्भवति निश्चितं । गर्भवृद्धितथा वृद्धितथा भवति चोत्तमा ॥ ५२॥

अथ स्त्रीलाभप्रश्नः

ध्वजे गजे सिंह वृषे च लाभो जयासुशीलाच स्वरूपिताच । श्वाने खरे ध्वांक्षे च धूम्रके च कार्यस्यहानिः कलहस्तथैव ॥ ५३॥

अथ व्योहारप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे व्यवहारशुभप्रदा । ध्वांक्षे श्वाने खरे धूम्रे कलहश्चाशुभप्रदा ॥ ५४॥

अथ नौकाप्रश्नः

ध्वजे कुंजरसिंह वृषे च कलहप्रदा । ध्वांक्षे धूम्रे । खरे श्वाने नौका बूड़त निश्चितं ॥ ५५॥

अथ जारदाज्यप्राप्तिप्रश्नः

गजे ध्वजे निरः प्राप्ति वृषे सिंहे च शीघ्रताः । श्वाने खरे तरः प्राप्ति कलहं भात्रजैः सहः ॥ भोग विचारेण कथित सूक्ष्म दृष्टिभिः सहः ॥ ५६॥

अथ अधिकारप्रश्नः

ध्वजे गजे विरः प्राप्ति वृषे सिंहे च शीघ्रता । कल

हृश्चरवरे श्वाने नास्तीभि ध्वांक्ष धूम्रके॥४७॥

अथग्रामप्राप्तिप्रश्नः

ध्वजे गजे वृषे सिंहे ग्राम प्राप्तिर्न निश्चितं। श्वाने खरे तथा ध्वांक्षे धूम्रे नास्तीति निश्चितं॥४८॥

अथबन्दीमोक्षप्रश्नः

धूम्रे श्वाने खरे ध्वांक्षे बन्दि शीघ्रं प्रमुच्यते। वृषे ध्वजे गजे सिंहे बन्दी कष्टेन मुच्यते॥४९॥

अथकालनिर्णयः

गजे ध्वजे स्थिरं कार्यं त्वरितं वृषसिंहयोः दीर्घकालं खरे श्वाने ध्वांक्षे धूम्रे प्रसिद्धतः॥५०॥ पुनः ध्वजे सप्तदिनं कार्यं। सिंहे पक्षं तथैव च। वृषे मासश्च विज्ञेया गजे मासत्रियं तथा॥५१॥ श्वाने खरे त्वयमासे धूम्रे ध्वांक्षे च वर्षकं। एवं कालं वदेत् प्रश्नं सर्वकर्माणि चिंतयेत्॥५२॥ प्रश्न अक्षर सिदं ग्रंथं विप्रराजेन निर्मितं। चांगदेवमिसां भक्त्या त्वत्प्रसादात्करोम्यहं॥५३॥

अथकेरलकाचक्रलिख्यते

सू	मं	शु	बु	बृ	श	चं	चं	स्वामी
ध्व	धू	सिं	श्वा	वृ	ख	ग	ध्वां	आयु

नातरडूबेगासमझ दार बात सांची करदो मानिये ॥
बुधऔर मंगल उत्तरजाय होय दंगल लेखा औरबातें
छोड़दिशाशूल को पहिचानिये ॥ कुल्ला ऐतवार प-
श्चिमसतनाहोसदारआहेहोय नरनार रहे अ-
पनीमतमानिये ॥ हरदेव आर्दील मुझे
सतका येदीन दक्षिणजाय साल
छिनकियाज्योतिषसेवरदानये १

समाप्तम्

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शीघ्रबोध सटीक	भाषा लघुव्याकरण	सुन्दरकाण्ड	लगान १९ सन्
लघुजातक	१ भाग तथा २	लंकाकाण्ड	१८६० ईसवी
षट्पञ्चाशिका	भाषातत्त्वदीपिका	उत्तरकाण्ड	पुरस्तादारी २६ सन्
सामुद्रिक	भाषा चन्द्रोदय	गुटका १ भा० २ व ३	१८६६ ईसवी
गरुड़पुराण	भूगोलतत्त्व	हिदायतनामा गुर्दावरान्	ऐक्ट स्टाम्प दस्ता-
राम विवाहोत्सव	भूगोल दर्पण	पशुचिकित्सा	वेज़ात सन् १८६९
सरिश्ते तालीम	इतिहासतिमिरनाश	पट्टा व क़बूलियत केथी	ईसवी
पुस्तकें	क १ भाग २ व ३ भा०	तथा क़बूलियत	ऐक्ट ताल्लुक़दारान्
संस्कृत	अवधदेशीय भूगोल	रजिस्टर दाख़िल ख़ा-	मुताल्लुक़ अवध २६
ऋजुपाठ १ भा० २ व ३	इंगलिस्तान का इतिहास	रिज मुत्फ़र्रक़ा मदर्सा	सन् १८७० ई०
धात्वर्णव	हितपत्रिका	रजिस्टर मालगुज़ारी पाठशा-	ऐक्ट चौपायों का
नागरी केथी	बालभूषण	क़ानून केथी	मदाखलत बेजा १
वर्णमाला केथी १ भा०	पद्यसंग्रह	पटवारियों के क़ायदे	सन् १८७१ ई०
व २ भाग	भाषाकाव्यसंग्रह	उर्दू केथी महाजनी	ऐक्ट मजमूआ ज़ा-
तथा केथी फ़ारसी	कवित्त रत्नाकर १ भा०	टिकट के वास्ते मसव्दा	बिता फ़ौजदारी १०
नागरी	तथा २ भाग	का ऐक्ट २ सन् १८७०	सन् १८७२ ई०
तोहफ़ मुफ़ीदात	मंगलकोष	ईसवी	ऐक्ट मालगुज़ारी
अक्षरारम्भ	अंकप्रकाश	नागरी	सरकारी व ज़िला-
वर्णप्रकाशिका १ भा०	गणित प्रकाश १ भा०	ऐक्ट लगान सरकारी	ओं १९ सन् १८७३
तथा २ भाग	तथा २ भाग ३ व ४	व शिक्मी १० सन्	ईसवी
सूर्यपुर की कहानी	गणितक्रिया	१८५९ ई०	तरमीम मजमूआ
धर्मसिंह का वृत्तांत	क्षेत्रप्रकाश	इंडियन पिनलकोड	ज़ाबिता फ़ौजदारी
शिक्षावली	क्षेत्रचन्द्रिका २ भा०	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-	११ सन् १८७४ ई-
शिशुबोध	सफ़ील दायरा	जदारी ऐक्ट २५ सन्	सवी
पत्रहितैषिणी	सरल गणित १ भाग	१८६१ ई०	तक़ावी के क़ायदे
पत्रदीपिका	तथा २ भाग	ऐक्ट रजिस्टरी २० स	सवाल व जवाब
विद्याचक्र	बीजगणित १ भाग	न् १८६६ ई०	पुलिस
विद्यांकुर	रामायण तुलसीकृ-	ऐक्ट स्टाम्प १ सन्	अवध रूहेलखं-
पदार्थविद्यासार	बालकाण्ड	१८६२ ई०	ड रेलवे का दस्तू-
पदार्थज्ञानविटप	अयोध्याकाण्ड	ऐक्ट स्टाम्प अदालत	रुल्अमल
भोजप्रबन्धसार	आरण्यकाण्ड	२६ सन् १८६७ ई०	इति
राजनीति	किष्किन्धाकाण्ड	मजमूआ ऐक्ट अवध	

श्रीगणेशायनमः॥

अथ श्री चिंतामनि कवि रचित भाषा कवि

॥*॥कुलकल्पतरु लिख्यते

॥अथ कवित्त॥

श्रीराग नायक सुंडको अगन गह्यो सुर सिंधु
लोल रह्यौ छवि॥काढ़ति अंकुश पान अ
मृत कर लुंठित अंगनि मैं उरझ्यो छबि॥सो
नौ रत्नमय नालकौ अंकुर दंत की दीपति
सौं कहै कवि॥कुंभ सिंदूर लसै मनि सुंदर
मानौं उदय गिरि ऊपर लै रवि॥१॥जैसे पु
न्नागलि की चित्तनाहि लोचन कानन पै
न उघारतौ॥दिगनि कौं नित देत अभय पा
न लै कर सौं कल्पद्रुम डारतौ॥श्रीगिरिजा
हरजू कोदुलारोयहै गजानन जो निज चि
त्त तौ॥लाभि सदा मनि सिंधुर आनन
सुंदर केहरि को असवारतौ॥२॥दोहा॥जेसुर
बानी ग्रंथहैं तिनको समुझ विचार॥चिंता
मनि कवि कहत है भाषा कवित विचार॥
१॥वर्नत्महारस मै जुहै कवित कहावे सो
इ॥राजत पद्य है भाँति सौं तुकबानी मै होइ॥
२॥छंद निबद्ध सुपद्य कहि गद्य होत बिन

छंद ॥ भाषा छंद निबद्ध सुनि सुकवि होत १
सानंद ॥ ५ ॥ मेरे पिंगल ग्रंथमें समुझो छंद
विचार ॥ रीति सुभाषा कवित की वरनत बुध
अनुसार ॥ ६ ॥ सगुणा लंकारन सहित दोष
रहित जो होइ ॥ शब्द अर्थ ताको कवित कहत
विबुध सब कोइ ॥ ७ ॥ जो रस आगेके धरम
ते गुन वरने जात ॥ आतप को ज्यौं सूरता दि
क निहचल अवदात ॥ ८ ॥ सबै अर्थ तनु व
रियै जीवित रस जिय जानि ॥ अलंकार १
हारादि ते उपमादिक मन आनि ॥ ९ ॥ श्लेषा
दि गन सूरता दिक से मानो चित्त ॥ वरनो री
ति सुभाव ज्यौ वृत्ति वृत्ति सी मित्त ॥ १० ॥ प
द अनगुन विश्रामसौं सज्जा सज्जा जानि
रस आस्वादन भेदजे पाक पोंका से मानि
११ ॥ कवित पुरुषकी साजु सब समुझ लोक
की रीति ॥ गुन विचार अब कहतहौं सुनो
सुकवि करि प्रीति ॥ १२ ॥ प्रथम कहत माधु
र्ये पुनि ओज प्रसाद बखानि त्रिविधै गुन
तिनमैं सबै सुकवि लेत मनमानि ॥ १३ ॥ जो
संयोग सिंगारमैं सुखद द्रवावै चित्त ॥ सो
माधुर्य बखानियै यहहूं तत्व कवित्त ॥ १४ ॥

कोइ॥ हमसों तुमसों भलीविधि द्वंदजुद्ध पुनि होइ॥ ४७॥ काथा मध्य जो कहि गये परम रामकी उक्ति॥ वेनन उद्धत रीति विन वामें ऐसी युक्ति॥ ४८॥ जहं समता जो पद निमें वर्द्ध वृद्ध नुप्रास॥ शब्द अलं कारन विषें तिनको प्रगट प्रकास॥ ४९॥ समता को उदाहरन॥ कवित्त॥ चिंतामनि काच कुच भार लंक लचकानि सोहै ननवा छविखान की॥ चपल विलास मद आलस वलित नयन ललित बिलोकनि लसनि मृदु वानकी॥ नावा मुक्ता हल अधर लाल रंग संगली नी सन्धि संध्या राग नवल प्रभानिकी॥ वदन कमल पर अलिज्यों अलक लोल अमल कपोलनि झलक मुसक्यानिकी॥ ५०॥ सौकुमार्य अप रुष वदन श्रुति कटु दोष अभाउ॥ उज्जल वध्यनु कांति बहु गाम्य अभाउ गनाउ॥ सौकुमार्यको उदाहरन॥ सवैया॥ कामनि मंदिर की छवि वृंद छपाकार की छवि पुंजनि पोस्यो॥ पाइकै स्वच्छ मनोहर चांदनी चापुलै मैन महा वल रोस्यो॥ सुंदरिको मुख चंदको छाडि चकोरन चंद

मयूषन चोर्यो॥चंद सिलानिनै नीहभा९
सो सुसवे नियको विरहा विनि सोयो॥
५१॥दोहा॥शब्द अर्थमे लहना नैगुनकी
निधि जानि॥अब वरनन प्राचीन मन१
दूनै अर्थ गुन मानि॥५२॥प्रौढ सुव्याधि
समास पुनि ओज प्रसाद बखानि॥पुनि१
माधुर्य उदारता सुकु मारता जुजानि॥५३
अर्थ व्यक्त पुनि औरहै कांति श्लेष बखा
नि अवे षम्य है भांतिकी अर्थ दूरि सो जा
नि॥५४॥वरनी एक अफोनिहै अर्थ दूष्ट
यह कोइ॥अन्यछाया जानि पुनि अर्थ दू
ष्ट दूनहोइ॥५५॥प्रौढ़ाकोल०॥वाक्य रच-
न पद अर्थ में एक प्रौढ यह सोइ॥वा-
क्यअर्थमे पद रचन प्रौढ दूसरी होइ॥५६
पदार्थ मे वाक्यार्थ कथन॥अत्रि नयन सं-
भव सदा संभु मौलि छत वास॥पति वित-
हित नियवध सिख्यो कत यह नीति वि
लास॥५७॥उज्वल वेष विलासिनी उज्व
ल जाकी छांह॥कंत हेत संकेतको चली
चांदनी मांह॥५८॥वाक्यार्थ मे पद रचना॥
यह स्यामा सावन निसा सखी मिलीहै जाहि

६५॥स्वामि प्राय ग्रोजको उदाहरन॥कबि
त्त॥ हौंतो हौं अनाथ तुम नाथनके नाथहौ
जू दीन तुम दीन बंधु नाम निजुकीनोहै
हौंतो हौं पतित तुमपतित पावन बेद पु
रान बखान कछू बाढ्यो नाँनदीनो है॥कब
कारी सेव हौंजो कहा मेरी सेवा रीझे आप
हीतें आपरीके चिंतामनि लीनोहै॥अब तु
मे मेरी रक्षा करवेही परी राम राववेही मोहि
नितु नातो जोरि दीनोहै॥६६॥दोहा॥जहाँ
अधिक पद परत नहिं बिमला त्यवाजु प्र
साद॥सुनों अधिक पद दोषको यह अभा
व अबिवाद॥६६॥अर्थ गुन प्रसादको उ
दाहरन॰दो॰कुंदनदरपन तुलित तनु बसन र
कुसुंमी रंग लसत लाल मनि बेलिसी लो
ल बाल सब अंग॥६७॥नयो उक्त वैचित्र
को सो माधुर्य निहारि॥यह अलपी गुन र
दोषकी इहाँ अभाव बिचारि॥६८॥चोपी च
रचा ज्ञानकी आछी मनकी जीति॥संगति
सज्जन की भली नीकी हरिकी प्रीति॥६९॥
मंगल मय कोमल अरथ सुख मारता बखा
नि॥असंगल्य अश्लीलको यह अभाव मन

आनि॥७०॥करि लीजै उत्तम क्रिया हरि
पद प्रीति विशेष॥रहत सदा उत्तम पुरुष
याजायकी रति सेष॥७१॥ अर्थ वीज अ
नामका उदाहरन सो जांनि॥नाम दोषको
सुजन सुनि कुही अभावै मानि॥७२॥मो
हि मैन चंडाल यह अदय महा दुखदेत॥
सुंदरि सो तोपर सदय भलो भाग कृत हेत
७३॥जाको ऐसो रूपहै तैसो वरनो होइ॥स्व
भावोक्ति अलंकार यह अर्थ व्यंग जोकोइ॥
७४॥कवित्त॥लालसों जटित लसै ललित
लटन वीच लाल मुख लटकन ललित ल
लाटको॥वडी वडी आंखें नीकी नाक मध्य
झलकत वडी मुक्ता हूल अतुल छवि ठा
टको॥चिंतामनि सोहतहै आनि अभिराम
तन हूली पर स्याम मन हरन निराटको॥
चेरी हम तेरी वडु भागिनि जसोदा किलका
नि लखि दोदाकी वटोही सोहै वाटको॥७४
दोहा॥रसनध्वनि गुनि मूल धुनि व्यंग जहां
रसहोइ॥सोतो दीप्त रस रूप वह कोन वखा
नन सोइ॥७५॥रस धुनि गुनी मूल व्यंग
को उदाहरन॥ आगे कही वाक्य भेद निज

य विषें॥क्रम कौटिल्य जो अप्रगट उपमां
दिकका जुक्ति॥जो बदलो यह अर्थकी न
हं स्लेष की उक्ति॥७६॥कवि चातुरी विचि
त्रता यह गुन क्यौंकरि होइ॥अक्रम भंग
अभाव यह अ वे अन्य गुन कोइ॥७७॥
अस्लेष गुनको उदा हरन॥कवित्त॥एक
पलका पे बैठी सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि
के छबीलो लाल आयो रति केलि घर
चिंतामनि कहै आनि बैठो प्रीतम पे काहू
सों कछून कहि कै सकात दुहूंके डर॥सुख
के मनाइबे कों ऐकको दिखायो नांहं वि
परीत रतिको स्वरूप लखि चित्रपर॥जोलों
वह सकुचनि आंखें मूंदि रही तोलों प्या
रे प्रान प्यारीके उरोज कर पर॥७८॥वैध
र्थको उदा हरन॥दोहा॥अरुन उदय रवि
होत है अरुने अपवत आनि॥संपति वि
पति बडेन को एकै क्रमसों जानि॥७९॥
अर्थोग्र अर्थको उदा हरन॥दोहा॥चंद दि
पत रमनीय रुचि सरद विमल नभस्यां
म॥मानो कौस्तुभ मनि लसत हरिउरमें
अभि राम॥८०॥अन्य छाया जोनि को उदा

हरन॥दोहा॥चाप मुकुट पट तडित बग पांति मुकत मै दाम॥कनक लता लखिऊनयो आइ दुतै घन स्याम ८१

इतिश्री चिंतामनिकवि रचितें कवि कुल कल्प तरौ प्रथमं प्रकरणं१अथ अलंकार:

॥दोहा॥

शब्द अर्थ गति भेदसौं अलंकार द्वै भांति अलंकार आदिक शबद अलंकार की पांति॥१॥वक्रो कति अनु प्रास पुनि कहि ला टा नुप्रास॥जमक स्लेषो चित्र पुनि पुन रुक्ति वेदा भास॥२॥सात शब्द अलंकारये तिनमे शब्द जोहोइ॥ताहीतें पर्जाय पद्दारिये न भासै कोइ॥३॥अलंकार ज्यौं पुरुष के हारादिक मन आनि॥प्रासो पम आदिक कवित अलंकार ज्यौं जानि॥४॥लक्षो कति नुप्रास ल॰॥औरु भांतिको वचनजो और लगावै कोइ॥कैस्लेष कै काकसो वक्रो कतिहै सोइ॥५॥स्लेष वक्रोक्तिकोउदाहरन॰दो॰ रुपनृप भानु सुता निरखि परत जामुनै ससु भैन॥सिवइ जीवन चातुरी वन कीन्हा गृह मैन॥६॥काक वक्रोतिको

रा कीदेहै॥१४॥अथतनि भेद॰दो॰माधुर्यौ विंजन व
रन उप नागरि को होइ॥मिलि प्रसाद पुनि ९
कोमला पुरुषा वोज समोइ॥१३॥वैदर्भी पंच
ल जो गौडी धरम नवीन॥रीति वाहन कोउ
उन्है इनि जेहै रसी न॥१४॥उपना गरिका॥
इनिको उदाहरन॰दो॰छवि मनंद रति रंगके छवि
न अंग सुकुमार॥मग पग मंद गयंद गति थ
कति लसति कुच भार॥१५॥कोमलाको उदाह
रन॰दो॰कोहूँको बिसराति काहो वह मुसक्यानि अ
नूप॥लग्यो भरी हियरा लग्यो ललित लालको
रूप॥१६॥खान पान परिधान सब आनन वि
लसै वाल॥यों मोही तुमको निरखि तुम नि॰
मोही लाल॥१७॥पुरुष इतिको उदाहरन॥घ
नाक्षरी॥उदय रविकारन तमरासि संहरन स
न ध्यानको धरत तमरास पाटै॥परम किर
पाल प्रभु पलको पाइन परत प्रीति करि पुंन
के पुंज पाटै॥नामके जापसौं अमाप संपति
करै प्रबल परताप की रीट राटै॥विघन अति
सघन अघ सघन बंकाट निपट बिकाट संकट
कटक प्रकट काटै॥१८॥लाटानुप्रासको ल॰दो॰
नाम पदैके भेदतें दीन्हो जोपद देइ॥सो लाटानुप्रासहै

समुझ सकौ नै लै हू ॥१९॥ लाटा नुप्रासको उदा
हरन ॥*॥ तोमैं दोष कछू नहीं होतन कौं
पर तोष ॥ दोषजु देखत आपुमैं पूहै निदाषो
दोष ॥२०॥ जमकको उदाहरन ॥ अरथ होत अ
न्यारथको बरननको जहं होइ ॥ फेर स्रवन
सो जमकहि बरनत यौं सब कोइ ॥२१॥ जम
कको उदाहरन ॥ चंदन सुख दलमन परसि
चंदन जोट अमोंन ॥ कुंदन रद तनु छबि निर
खि कुंदन रदन समान ॥२२॥ फूली पौनिपु
नी सुरभि कोकिल गावन ॥ करहै लाल लह
लहे लही छबि बन ॥ मोहत कौविद बानी
पंच महन धन ॥ मुदित सुमन सोहै मधुप
गन ॥२३॥ पद अभिन्न भिन्ना रथको बाहन न
हीं अलेष ॥ याको देत उदाहरन सु नहु सुक
वि सुवि सेष ॥२४॥ सरस रसी दरसन बिरह
बीषम ऋतुको धाम ॥ जीवन वारें अलपैहै
सुधि लीजै घन स्याम ॥२५॥ हा हा वृद्धि बा
लम बिरह बक्त भयो बरजोर ॥ घनी सही
धनकी धमक धरकै नहीं कठोर ॥२६॥ चौ
पर खेलत है कहौं जागहै जीति सुभाइ ॥ ला
ल जानहै हाथमैं अभी चुकै यह दाइ ॥२७

कवित्त॥ वसन दिसाहै और वासन कपाल कर विषे खाइ रहै पैन होत हिय हानिये चिंतामनि कोहै ऐसी रीति होइ दूसरो कौन कोऊ रीत मांने जाको सांची बात मानिये नांघन पहार पर गहन जलीको वेष सांप सूल संगपैन संका उर आनिये॥ भसम लगा वे रहे रहे सूल धरें सदां जाके सिरजादूंधन ताकी रही सूल जानिये॥ २८॥ बहु आदि दै कार वरन काम धेनु है आदि॥ चित्र लछ न बहुत विधि वरनत सुकवि अनादि २९ जोर घोर पर पीर हर सर वर धर धर धीर मेर सूर पर दैर कार सार कार अर नर धीर॥ ३०॥ खड्ग बंध कपाट बंध कामल बंध अस्व ग ति गोमूत्रिका बंध इत्तने बंध या दोहामे देखि ये॥ दोहा॥ एक छंदसे छंद बहु काम धेनु है सो इ॥ बहु छंदन भारतीछंदु यहो कहत कवि को इ॥ ३१॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥ चा रुसरो रुह नैन ए मोहन पेषिय सांवरो देह सुहाई॥ साजत नैनीन चैनजे जोहत सेखि ये सेष अजादे गनाई॥ सीपति सो गुन जेम न मोहन लेखिये तीमन को बल भाई॥ सुंद

रता जिन मैनजे सोहत देखिय रूप उदार

कान्हाई॥ ३४॥ सर्वतो भद्र॥ मनिनै निनही

कारिकै मनि तामैं जपै यौं काहीहै भली स

बसौं॥ गनिनै हिनही भरिकै अलि कामैं

हयैयौं सहीहै चली नवसौं॥ जानिनै चिन

ही धरिकै अनिही रति नामैं चहीहै नली

अवसौं॥ धरिनैं तिनहीं अरिकै तिन नांमैं

लपै यौं गहीहैं गली जवसौं॥ ३३॥ दोहा॥

भिन्न पदन मैं एक सौं जहां अर्थ आभास॥

चिंतामनि कवि कहतसौं पुन रुक्त वदभास

३४॥ तन सुवरन कंचन मुलित घन बादर

सम बार॥ ओबे सरसी नीरसी सुंदर रूप उ

दार॥ ३५॥ सब्द चित्र द्वत ए सबै अधम का

वित पहिचानि॥ जेतहैं ध्वनि हीननैं अर्थ

चित्र सोमानि॥ ३६॥ सघना भिन गुन्या स

मुभ शब्द अर्थ भिन जानि॥ अलंकार द्व

हि विधि गये विद्या नाथ बखानि॥ ३७॥

इतिश्री मत चिंतामनि विरचिते का

वि कुल कल्प तरौ शब्द अलंकारनि

रूपनं नाम द्वितीयं प्रकरणं २॥

शिव गिरि पर गज मुख मुदित गरजत गि

रिजा पौर॥एक विनायक कारन हैं एकवि
नायक और॥ १ ॥जामैं मंजुल भांतसौं स
मता वरनी होइ॥वर्ण मान कछु वस्तु उ
पमा कहिये सोइ॥ २ ॥सो पुनि श्रौती आ
रथी द्वै विधि चित्तमें ल्याय॥पूरन लुप्ता भे
दतें दोऊ दुविध गनाय॥ ३॥ज्यौं आदिक
पदको दिये श्रौती उपमा जानि॥सदृस तुल्य
पदको दिये होति आरथी आनि॥ ४॥उप
मा जो उप मेय पद उपमा वाचक होइ॥अ
रु साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ॥ ५
अथ श्रौती पूर्णा उपमा को उदाहरन॥नाह वनाई
विरहतें आइ अचानक गेह॥दृग वीज्जुवी
वेलि ज्यौं उमडि दरस जल मेह॥ ६ ॥ श्रीयु
दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविके
वसैं गा॥श्रीपति आपही भूपति है अरु दे
खि महा छवि शोभा लहैं यौं॥लालन के भा
मिनिको मंदिर सुंदरी वंदन सौं झलकैं यौं॥
लाल ललाकन सौं जवरे विलसैं मुनियांन
भरे विज्जुवाल ज्यौं॥ ७॥अथ पूर्णोपमा को उ
दाहरन॥दोहा॥वल कल चीर जटा धरें गं
गा जल के तीर॥राम लखन दोऊ जने मधे रि

भिनको मूल ॥८॥ जहाँ एक है तीनिको लोप
चारिमें होइ ॥ चिंतामनि कवि कहत है लुप्ता
कहिये सोइ ॥ उपमान लुप्ता ॥ चिंतामनि मनु
जगत में ढूँढ फिरौ चहुओर ॥ तोसम मोह
न मोहनी कौनि मतनि सिरमौर ॥१०॥ उप
मेय लुप्ता ॥ सुललित खंजन से चपल बस
त रहत बेचैन ॥ तिन पर निवछा वारि करै त
न मन सब कछु देन ॥११॥ धर्मलुप्ता ॥ बदन
चंदसो तरुनिको और सुधासे बैन ॥ चांद्रि
क सी हाँसी लसै हंसी करसै नैन ॥१२॥ वाच
क लुप्ता ॥ सजल जलद अभि राम तनु त
डित ललित पट पीत ॥ नंद नंदन ससि चं
द मुख चोरत चित नव नीत ॥१३॥ जितय
कहिय उपमेय जहँ सोउपमान अनेक ॥ सोमा
लोपम जानिये भिन्न धर्म कै एक ॥१४॥ अ
भिन्न धर्ममालोपको उदाहरन ॥ कवित्त ॥ सरद
मैं जलकी ज्यौं दिनतैं कमल की ज्यौं धनतैं
ज्यौं थलकी निपट सरसाई है ॥ घनतैं सांव
न की ज्यौं दीपतैं रतन की ज्यौं गुनतैं सुजान
की ज्यौं परम सुहाई है ॥ चिंतामनि कहै आ
छे अच्छरनि छंदकी ज्यौं निसा नाम चंद

की ज्यौं दृग सुख दाई है॥ नगनैं ज्यौं कंचन बसैं तैं ज्यौं बनकी यौं जोबननैं तनकी नि- काई अधिकाई है॥१५॥ भिन्न धर्म मालोप माको उदाहरन॥क॰ मालती ज्यौं मोदकौं बढा वति सहज बास सुधा ज्यौं जिवाइवेकी जतन धरति है॥ चिंतामनि च्यारौ वोर वारति उ ज्यारी प्यारी चंद्रिका ज्यौं मेरो चित चाइन भरति है॥ कररागी ज्यौं मंदचाल चलति मयं- क मुखी मंद राज्यौं मोहि सदा मोहितक रति है॥ प्रानज्यौं सुंदरि नेकु हियेतैं टरति नाहिं नादज्यौं नवेली नैन कोर विहरति है ९६॥ दोहा॥ इत साधारन धर्म बुधजन दै भांति गनाइ॥ वस्तु और प्रति वस्तुसों ग्राम बिंबोज बनाइ॥१७॥ एक अर्थ है शब्दसों ज हं कहिये द्वै बार॥ कहीवस्तु प्रति वस्तु यह भावस्तु बुद्धि विचार॥१८॥ एक शब्दसों अर्थ जुग जहां बखान्यौ होइ॥ तहां बिंब प्रतिबिंब यह भाव कहै कवि कोइ १९ वस्तु प्रवस्तु भाव.दो- निज तनुतैं पिय तनु परसि ज्यौं सुख अधि क उदोत॥ आपुनतैं पिय पर सखी अधिक प्रेमत्यौं होत॥२०॥ बिंब प्रति बिंब॥ ताह कवा

द्विपद बिन गनो प्रतिय माना ठौर॥२०॥जाति
क्रिया गुन द्रव्य की जो है अध्यवसाइ॥ताको
विषय सुनो इहै चौविधि द्विविध गनाइ॥※॥
२१॥चौविध चिंतामनि कहै अध्यवसाइ बना
इ॥जामे द्विविध सुजोगए विद्यानाथ गनाइ
२३॥ताके भाव अभाव को वाच्या गम्यो जानि
हेतु वाच्यता गम्यता वाच्या द्विविध बखानि॥
२४॥तेजात्यादि सरूपके हेतु हिके फलरूप॥
अध्यवसाइ विषय सु यों भेद बहुत जे आरू
प॥२५॥वाच्या उतप्रेक्षा विषय हेतुको फा-
ल जित होइ॥वाच्यौं होइ निमित्त जित ग-
म्य तहां नहिं सोइ॥२६॥जाते वाच्य स्वरूप
की उत्प्रेक्षाही मांह॥वाच्य गम्यता अर्थको ब
रनी विद्या नांह॥२७॥उपात्त गुनि निमित्त जा
ति भाव स्वरूप उत्प्रेक्षा॥दोहा॥विसद रूप हि
य रामकुल विलसत वाम उतमंग॥जनु ज
मुना जल पूर पर झलकत गंगतरंग॥२८॥
उपात्त क्रिया निमित्त जाति भाव स्वरूप उ
त्प्रेक्षा॥दोहा॥जमुन पुलिन पर हीर मनि
जड़ित किंकिनी कांति॥फैलति बोलति मधुर
जनु बाल मराल की पांति॥२९॥अनुपात्त

दो॥ ४५॥ जाति हेतूत्प्रेक्षा॥ श्री गिरिजा के ध्या
न तें लौन होत मन सूरि॥ पटनाव विधि अ-
वलौकि जनु होतु अंध्यारी दूरि॥ ४६॥ जाति
भाव हेतूत्प्रेक्षा॥ नही सहा नहिं काल्य मग
बहु कारि हिये विचार॥ जनु सजान प्रतिपा
लो कान्ह लियो अब भार॥ ४७॥ जाति
फलोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कालिंदी जल गोपिका
न्हात सुख छबि अधि काल॥ कान्ह भौंन सु
न रूप लखि जनु फूलै जलजात॥ ४८॥
जाति भाव फलोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ चंदमुखी यों
चंद्रिका सें कीन्हो अभिसार॥ जनु छीर धि-
रूपि देवता कीन्हो अधि संचार॥ ४९॥ क्रि-
या स्वरूपोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कुटिल चूरनी आ-
पने ललें मन अटकाइ॥ जनु बंदावन आ-
रामन हटको हरि को आइ॥ ५०॥ क्रियाहे-
तूत्प्रेक्षा॥ दो०॥ सुंदरि भौंहें धनुष धर लोमन र
काम अभंग॥ लोचन बान हनें मनौं व्याकुल है
लिये अंग॥ ५१॥ क्रिया भाव हेतूत्प्रेक्षा॥ दो०॥ बा
हिनीं मृगलोचनी ललित भई पियराइ॥ निज
छवि अनदेखे मनौं बदन कमल कुम्हिलाइ ५२
क्रिया फलोत्प्रेक्षा॥ दो०॥ कटी पीन जनु बदन

कलाया नंदमैं यह काम कियौं दियाहि॥६८॥उ-
क्ता स्पदा स्वरूपोत्प्रेक्षा॥दोहा॥मुख विधु लखि
कुचकोक जुग यह विरहाग प्रकास॥दोत्र्य-
लि जनु लई उन दुखन सधूम उसास॥६९॥
अनुक्ता स्पदा हेतूत्प्रेक्षा॥दोहा॥धरत न अंज-
नगभ मनौ तमलीपत जनु अंग॥स्याम स्या-
म स्वरूप धरित कैंधौं स्याम कौ संग॥७०॥सि-
द्धास्पदा हेतूत्प्रेक्षा॥दोहा॥सुंदरि भूमि धरैम-
नो लाल निहारे पाइ॥मुख समता छुइ मनौ
विधु लखि कमल रिसाइ॥७१॥सिद्धास्पदा फ
लोत्प्रेक्षा॥दोहा॥कुच जीवन कौ हेम गिरि
शृंगनि सौं संनद्ध॥भार गहन कौ कनक जनु
दामन बद्ध निबद्ध॥७२॥असिद्धास्पदा फलो-
त्प्रेक्षा॥दोहा॥सूरज सनमुख जल बसत सह-
त सदा दुख कंज॥सुंदरि पग साम्यकौ
करत मनहुं तप कंज॥७३॥प्रतीप मौलो त्रे-
हाको उदाहरन॥कवित्त॥ अलि मनो हर दंप-
तिके अलिंगन पर वारियत त्रिभुवन सुख-
मा सुदेखहे॥चिंतामनि कहे कवि कैसे कहि
सके कोऊ अद्भुत अनुरूप रचना अलेखहे॥
स्वरन लताहे तमाल सुर नक संग धन स्या-

म संग थिर दामिनि विसेषहै॥राधाजूकोदेषि
देव वनिता वखान लीहैं हरि उर निरख पला
न हेम रेखहै॥७४॥स्मरनालंकारकोल॰
दोहा॥सदृश वस्तु अनवे सदृश वर थानको
ज्ञान॥स्मरन बोलत विबुध जन समझौ सु
कवि सुजान॥७५॥स्मरनालंकारको उदा
हरन॥दोहा॥दृगन सुधा वरखत सरद राका
चंद निहारि॥सुधि आवत वा वदनकी जाप
र हौं वलि हारि॥७६॥जहँ विषई अरु विष
यको वरन्यौं होइ अभेद॥अलंकार रूपक
तहां समझौ सुजन अखेद॥७७॥जो अति
सोहित विषयको उपकारक जो होइ॥विष
ईसो रूपक कहत यों वरनत कवि कोइ॥७८
पुनि दूनसो वयव अरु निर्वय वस्तु प्रकार
है विधिसा वयव पुनि त्रिविधि वरनत वि-
मल विचार॥७९॥सरववस्तु विषयका प्रथ-
म वरनत सुकवि विचारि॥एक देस विवर
न अपर परं परित निरधारि॥८०॥निरवय
को पुनि द्विविध गन केवल माला रूप॥इन
के देस उदा हरन सुनिये सुजन अनूप॥८१
सर्व वस्तु विषयको उदा हरन॥कवित्त॥को

ललित अलक मुख चंद पर तनकी यहीं अगोट॥ दिहसौंहैं चंचल नयन मीने अंचल वोट॥ ८९॥ निरवय माला रूपक को उदा हरन॥ दोहा॥ दर पसिरी कंदर पकी धनकी सहज मसाल॥ भागनि की अधि देवता कौन धन्यही बाल॥ ९२॥ परनामलंकार॥ दोहा॥ लखि विषई विशयात्मके कारन प्रकृति उपजोग रूपवाते परनाम जो मिन्न कहत कवि लोग॥ ९३॥ ब्रज वासिनतैं जगत पर और सभा तिन जानि॥ कलपद्रुम तिनको भयो आपु आत्मा आनि॥ ९४॥ जहां विषै बिषई सुभगवा वि संमत मन नाहि॥ सो संदेहास्पद होत है कवि २ संदेह तहांहि॥ ९५॥ प्रथम कहत निश्चय गरभ निस्च यांत पुनि जांन॥ अलंकार संदेह यह सजन द्विविध मन आंन॥ ९६॥ दर्पन धोखो ललित चित ससि धौं बिनै कलंक॥ अंबुज धौंन बिलास यौं तिय मुख लखि मन संक॥ ९७॥ निश्च यांत को उदा हरन॥ सवैया॥ खंजन हैं धौं उडात न अंबर मांजहै धौं थिरता नहिं चीं है॥ भृंग है स्यामल स्वेतन वदुधौं मीन है नैनन मोदजु दीन्हैं॥ कामके बान धौं पांच २

सुनेहमय आव चाथल ह्वै चिन कीन्है॥ नैनन
चैन करे निरखें अलि नैननि नैन रसालि नु-
लीन्हैं ॥९८॥ दोहा॥ जहाँ होनुहै पहलि मैं अ
प्रकृतिहि कौं ज्ञान॥ भ्रांति मान यासौं कहत
पंडित सुकवि सुजान॥९९॥ फटिक महल
चढि बिधु मुखी देखन श्री नंद नंद॥ काहौ
सखीसौं हरि चलौ ऊपर आयो चंद॥१००॥
अपन्हुत॥ विषई को आरोप के करि जो वि
षय निषेध॥ ताहि अपन्हुत कहत हैं धर्म-
हि समुझि सुमेध॥१०१॥ कवित्त॥ वारन मत
बिदारो महा तम देखि महा तमकी अधिका
ई॥ अंकमैं मारि गह्यौ कर सायल जानत लो
क कलंक कराई॥ मानतकै से बचे मृग लो-
चनी कान्ह समीप बसैनो भलाई॥ आवत ऊ
पर मेरहि मंद सौं इंद नहीं पमुनीद है माई॥१०२
उल्लेख को लक्षन॥ दोहा॥ कहुं गाहक के
भेद कछु विषय भेदसौ होइ॥ एकहि को उ-
ल्लेख बहु कहि उल्लेख जुतोइ॥१०३॥ नाम
भेद उल्लेख को लक्षन॥ दोहा॥ दीन दया र
जनकौ जलधि सकल कामिनी काम॥ कहत
भक्त जान कलप तरु रामहि रिपुजम नाम॥१०४

विषय भेद उल्लेख को उदाहरन॥दोहा॥कारु
न स्याम को कल्प तरु पूरन अखिलव साथ
दीन दया निधि सब जगत मुखमा सिंधु अ
गाध॥१०५॥श्लिष्ट श्लेष को उदाहरन॥सो॰
जीवन दायक देखिकै ब्रज वासी घन स्याम
कीन्हहि भक्त मुकुंदानीकिहर कामिनी का-
म॥१०६॥पर नाम।उल्लेख ए दोऊ रूपका
माँहि॥भिन्न अंस हात रूप तो मंमट बरनैं
नाँहि॥१०७॥अति शयोक्ति को लक्षण॥दोहा
प्रौढउक्ति जो कविन की अतिशयोक्ति है सो
इ॥भिन्न अर्थ हात भेदतें भिन्न ताही जोसो
इ॥१०८॥जहाँ न्यान उप मेयको उपमा नहि
में होइ॥ प्रस्तुति को जो अन्यथा कहैं इतैं का
वि जोइ॥१०९॥जो यह यों तो होइ जो यावि-
धि के अभि धान॥कारज पहिले ही कहे पी
छे कहे निदान॥११०॥अतिशयोक्ति ए चारि वि
धि मंमट कथन उदार बरनत चिंता मनि १
सुकवि निज मतिके अनुसार॥१११॥अ-
तिशयोक्ति यथा क्रम उदाहरन॥सवैया॥पूर-
न मंडल वेलिके मूल लग्यो अक लंक मयं
कत वैयोहे॥नील सरोज भरे मधु बिंदनलै-

सरनारको ढंर सबैयौहै।।डोलतुहै तिल मूल के पौनकु धूकी लखे छवि कोन छवीयोहै।।मो हके द्वारमैकाहू महा सुकृती जनको जनु पुन्य पक्योहै ।।११२।। * ।।डोलनि बोलनि आन काहू लटकी काहु आन सुभा यहि जोऊ।। आन काहू परिहास बिला सहै आन हसी मृदु सुधि हि सोऊ।।आनकाहू दृग कंज चितै निहै आन काहू द्युति दांतनि सोऊ।।ऐसीकें वोपर है तनमैं मान लागै जहाँ कारना कर दोऊ।।११३।।सखितो समहोन को सारदा सौं कमला मिलिकै ए स्वरूप धरै।।पुनि ताही स्वरूप मैं चंद मुखी सब चंदिका आपनी चंद भरै भति तापर जोतप कोरि करै पुनि तातप पै जो बिरंचि दरै।।तिहुंलोक की सुंदरता हरिकै तबतासी जो वाहि करैतो अरै।।११४।।दोहा लोक कामिनिन के मननि लखि छवि घन घन स्याम प्रेम उमग पहिले भइ पीछे भयो काम।।११५।।चलेप बिप्र धन बल उकुत जो काहु औरकी होइ।।याहि सभा सो कांति काहत पंडित संमट कोइ।।११६।।अति पवित्र जलवास तन कुमुदिननित अधिकाइ।।फूली

है पति रेवती दुज पतिको पति पाइ॥२१७॥प्र
स्तुति बरनि विशेष तन वाही जाथल होइ॥अ
प्रस्तुति गमिता सभा सोना काहे ए कोइ॥२१८
जोन अलिंग देत थन कुम दिन को आनंद
निसा बदन चुंबन करत उदित भयो जब चं
द॥२१९॥श्लिष्ट विशेषन होत कहुं कहुं साध
रन जानि॥उपमागर्भित होत कहुं सज्जन
गमभन आनि॥२२०॥कहा मुदित अतिही
भई पतिको आगम जानि॥प्रगटै चारु मयं
क रुचि निसा बदन मुस क्यानि॥२२१॥जा
को रूप स्वभाव अरु क्रियाजु जैसी होइ॥ ※
ताको तैसोई कथन सुखमा दोति काहि कोइ॥
२२२॥कवित्त॥ जसु मति मैया होऊं भैया बडे
हैं सदा चिंतामनि बैरिनके उरनमें सालिहैं
सब बरषन गोपकुल हरषन लाख लाख बसवन
ब्रजभूमि प्रति पालिहैं॥ललित ललाट पर लटकी
हैं लटैं मानो चंदन कमल पर मधुकर आलिहैं
देख लाल पलकाकी पाटी को पकरि खरे खेल
त हंसत किलकात हांस हांसिहैं।२२३॥दूसरो उदाह
रन॥कुलही ललित बिलसति बार।दो॰।प्रगटित वस्तु
छ॥दूयै जोवनाइ कछु काज॥ब्याजो कति तासों

कहत पंडित सुकवि समाज॥१२४॥ कीन्हें ल-
खि पुलकित कहति कालिंदी तट नारि॥ ज-
लतरंग सीतल कहा सजनी बहति बयारि॥१२५
संग अर्थ को शब्द बल है वाचक पद एक॥ त-
हां लखोकति होतिहै यों कवि करत विवेक॥
१२६॥ समुझि हिये पति आगमन उमग्यो अ-
ति आनंद॥ लख्यो निशा मुखचंद ललि सानन
ति मुखचंद॥१२७ जहां कछू बिन होत कछु र-
म्य अरम्य जु बाल॥ बुध जन मन सो बिन उ-
कति अलंकार कहि जात॥१२८॥ अन्य बि-
धान बिन होतिहै विद्या विमल अनूप॥ बिन
दोषन को कवित यह नाहि गनत कवि भूप
१२९॥ निंदत नृपति विवेक बिन चरचा को
है साथ॥ दान बिना सब मानको बिना दान
को हाथ॥१३०॥ प्रस्तुति में जह और सों गुन-
के साम्य निहारि॥ एक रूप लखि नि ये सो
सामान्य विचारि॥१३१॥ चंदन लेपन मुकुत
हार धर्यो सुभ तन चीर॥ लसति चंद्रिका मि-
लि गई मनो संतव को खीर॥१३२॥ निज गुन
तजि जा आस गुन गहै औरनिको सोइ॥ त-
ल कारन हुन सजो कवि जन संमत होइ॥०

१३३॥ तिय मंदिर को दूरिहा पतिको भाग्य उदो-
त॥ तनकी दीपति सौध गृह सब सुवरनकी
होत॥१३४॥ और वस्तु गुनको ग्रहन जहं न का-
रै कछु वात॥ ताहि अन्त गुन कहतहैं जो का-
वि मति अधिकात॥१३५॥ गंगा जल उज्ज-
ल जमुन जलु छवि अं त समेत॥ दुहूं म-
ध्य मज्जन कारनु हंस सेत को सेत॥१३६
सो विरोध अवि रुद्धमे जहं विरोध अभि-
धान॥ सुनो जाति गुन क्रिया अरु द्रव्य मा-
हं सज्ञान॥१३७॥ जाति जाति दिकन सों
गुन गुनादि सों जानि॥ क्रिया क्रिया अरु
द्रव्य सौं द्रव्य द्रव्य सों मानि॥१३८॥ यों विरो-
ध दश भांतिसों मंमट गये बखानि॥ तिनको
हेत उदा हरन सुकवि लेहु मन मानि॥१३९
जाति जाति विरोध॥ दोहा॥ अभिनव नलि-
नी दल कमल सैवल मृदुल मृनाल॥ अन-
ल भये या वालको बिरह निहारे लाल॥१४०
परवत मै मारवन भये माखन मृदु प षान
ल लित पल्लवित वे सिद्रुम सब फल फू-
ल निदान॥१४१॥ जाति गुन सों विरोध॥ गो-
पद सुहमी कानक मय गिरि सर वप कोमि-

ना॥तेमुद मंबु कान होतुहै भयो सखिनके चि
ना॥१५२॥जाति क्रिया सों विरोध॥दोहा॥जे
जन साधत साधुजन वचन सुधाको पान
जन्म मरन भय रहित ते सोइ पावत कल्या
न॥१५३॥गुनसों गुन विरोध॥कहां चहा
वनिहै सखी चंदन चंदन संग॥सीतल सव
उपचार सखि जारत मेरे अंग॥१५४॥गुन
सों द्रव्यसों विरोध॥दोहा॥प्रेम मगन मुनि
जन कहत सुजान धन्य बनाइ॥मैं चक
ली उपमा तमा लोचन गोचर पाइ॥१५५
क्रिया क्रिया सों विरोध॥दोहा॥लखिके सु
खपरि सुवासै निज मुख होत निहाल॥लोच-
पोल चुंबन करत निज मुख चुंबत लाल
१५६॥क्रिया द्रव्यसों विरोध॥कवित्त॥वारान
विदित न्याय मत प्रसिद्ध यह छोटे जगम
ध्य परमान तैं नहै कछुक॥ताहीके समान
नरच्यो सवही को मनु ऐसी रची है विरंचि
तुम रचना कछु अपूर्व॥चिंतामनि कहै
ताहि और भांति करतु है मैं नवल वन यावे
लाइ धै रे मुहे लख॥पौनम के बिछुरत मार
मार बानन सों करतु है मार मेरे मनको हना

रहूवो॥दूव्य दूव्य सों विरोध॥कवित्त॥मालती
के फूल मालतीके पल्लही मारे फूलनकी
माल मीड़ा मारे सुकुमारीको॥चिंतामनिकहै
है बरानहीन अंग अंग औरई बरन होत अ-
निल विचारीको॥ भयेहैं जलज बाल सरके
जलज बाल गिरि गिरि मूल लसैं जपै गिरि
धारीको॥ भयोहै निसाहू ससै कान्हके वियोग
सीतश्मान वृष भानकी दुलारीको॥१४८॥वि-
शेषको लक्षण॥दोहा॥विन प्रसिद्ध आधारजो
कौन अधेय बखानि॥एकहि की दूक वासो
थित अनेक थल आनि॥१४९॥एकवस्तु के
कालजो होइ असंक्यो गौर॥त्रिविध विसे-
ष विचारिके कहत सुकवि सिरमौर॥१५०॥
देव लोक वासहु भये जिनको उत्तम बानि ॥
रहति रसावति सकल नन सोधन वार विनमा
न॥१५१॥वह मनमैं वह ध्यानमैं वहै वचनहूं
मांह॥वसत तिहारे वास वह हम पावे किननां
ह॥१५२॥रचल उदार सुचार छवि नाहि चतुर
सिरमौर॥नई सिरी रति दूसरी रची सारदा औ
र॥१५३॥ जो अधार आधेय की अन रूपता
नहोइ॥होऊ कौ आधिक नाम अधिक अ-

संज्ञान सोइ॥१५५॥पृथु अ[illegible]का लंकार को
उदा हरन॥दोहा॥जाहि जसोदा गोदमें ली
न्ह मोद अखंड॥ताबालक के उदर मे लखे
सकल ब्रह्मांड॥१५६॥दूसरो उदा हरन॥कल
प अंत जाके उदर सकल चराचर रूप॥नंद
नेहनी गेहमें ताहि सुबालक रूप॥१५७॥*
अन्यच्च॥दोहा॥कलप अंत जाके बसत जग
त सकल सबि भाग॥तेहिरि अंग असात नहि
राधेको अनुराग॥१५८॥बिभावना अलंका
रको लछन॥दोहा॥कारज उतपति की जहां
कारनकी प्रति षेध॥सोसब कहत बिभावना
पंडित सुकवि सुमेध॥१५९॥बिभावनाको
उदा हरन॥दोहा॥बान धनुष सब फूलके
सेना अबला संग॥कोन हेतु है जीतिको जीत
तु जगत अनंग॥१६०॥बिसे षो क्तिको ल०
दोहा॥जो अखंड कारन मिलै कारज कछू न
होइ॥तासो बिसे षो क्ति कहत पंडित सब
कवि कोइ॥१६१॥कवित्त॥मंडप मृनाल ज-
ल जालनके पातनके सेजहू में बिछे जलजा
तनके पातहैं॥करी नीरै गुलाबके नीरकी अ
नूपनदी सिकता कपूर चूर अति अवदातहैं॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल विरहिनीको सी-
तल अपार उपचार अधिकातहैं॥एते परभृति
फल विरह अगिनि पीरे पीरे होतपेन सीरे होत
गातहैं॥१६२॥असंगतिको लछन॥दोहा॥हेतु
और थल मैं कहूं काज और थल होइ॥अलं-
कार ग्याता कहत होति असंगति सोइ॥१६३॥
आजु चलाए नैन सर मोपै ताकि ताकि नांह॥
सखी लखौ आचरजु यह छिदे सौति उरमांह॥
१६४॥कहि विचित्र सुविरुद्ध फल पावन कोउ
होग॥अलंकार सुन बीन यह बरनत पंडित
लोग॥१६५॥गनपति प्रभु सुनिये वचन बोलत
बिमल सुभाइ॥सबते ऊंचो होनकों नवत तिहा
रे पाइ॥१६६॥जहां विमल है बात कछु करत
परस परकाज॥अलंकार अन्योन्य यह बरनत
सब कबि राज॥१६७॥अन्योन्यको उदाहरन दो-
लाहि छपा चनि चांदनी समुझो बडो उपकार॥
बिपुल करतिहै चांदनी सुंदरि को अभिसार॥
१६८॥जो संजोग दै बातको जथा जोग नहि हो-
इ॥विषम अलंकार कहत यह कवि पंडित
सब कोइ॥१६९॥कातीकोन त्रिया फलै पुनि
अनर्थ कछु होइ॥जोकारज गुरानिया ते कीज

और विधि सोइ॥१७०॥यों विसद्ध नारेरिवको
विषम कहन कविनाह॥अलंकार कारानको
देख्यो ग्रंथन माह॥१७१॥प्र॰ विखम को उदा
हरन॥दोहा॥किलसि रीख कोमल अमल काम
ल मुखी को अंग॥किलकर्कस वारह रतननी
रवन लषन अनंग॥१७२॥मदन सिली मुखके
डरन सेयो वन घन कुंज॥भये महा दुख दानि
उन दुगुन सिली सुख पुंज॥१७३॥स्री हरिजू
अरसी कुसुम स्याम लिहोर ध्यान॥विसद होत
मन मुनिनको बिमल सुद्ध विज्ञान॥१७४॥तीस
विषम कोउदा हरन॥दोहा॥मोतन तापतिरे
सदा मोतन सीतल संग॥लिहीले उपज्यो विरह
जारत मेरे अंग॥१७५॥समको लक्षण॥दोहा॥
होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग॥द्वि
विधसु वरनेत सत अमल जोग कहत कवि लो
ग॥१७६॥संजोग समा लंकार को उदा हरन॥
सवैया॥वेहूनके छिन लेत उसासन ए उनको हि
त होतिहे पीरी॥सुंदरता हरि राधिका कीलखि
औरकी सुंदरता विधि कीरी॥वेहुत नंद कुमार
छले वृष भान कुमारिए रूप गहीरी॥जो यह जो
री मिले सखि होहिं छलो अखियां सखियां-

नकी सीरी ॥१७७॥ दूसरो उदा हरन ॥ दोहा ॥ प्रगा
ट भई संसार में निंदा वाही लोग ॥ ताके आदर
कारन को प्रगट भये खल लोग ॥ १७८ ॥ दो प्र
कार तिन होइ को अप्रकृत को कोइ ॥ तुल्य ध
र्म इक वार ही तुल्य जोगता होइ ॥ १७९ ॥ मंड
ल विधु नंदा किनी वृष वाहन सव गात ॥ स
ह्रा सदा शिव त्व सासि सवे वाल अव दात १८०
प्रकृति और अप्रकृति को धर्म एकाही वार
कारक की वहु क्रियन में दीपक उक्ति उदार ॥
१८१ ॥ प्रस्तुत अप्रस्तुतिन को सद्रस धर्म संजो
ग ॥ गम्य होइ अगम्य जिन तिन दीपक वुध
लोग ॥ १८२ ॥ श्री राधाके अधर रस स्वादन और
सुहोइ ॥ दाख सिता मधु सुधा र हरिको भाव
त नाहि ॥ १८३ ॥ लोभी जन धन लाभ अरु तिय
जन संग सकाम ॥ साधु सदा श्री रामको ना
म लहत आराम ॥ १८४ ॥ देह लसनि मन गेह
पुनि लसत सिरी संपन्न ॥ जल अरु बिन कवि
न ए नीके लगे प्रसन्न ॥ १८५ ॥ पूरव पूरव कारे
जो उत्तर को उप कार ॥ माली दीपक होत यह
समझो बुद्धि उदार ॥ १८६ ॥ कवित्त ॥ लसे अली
चल वेनन मे मन तोमहं जीवन मे यह जानी ॥

ता यह जोबन बीच बनाई अनूपम रूप बाला यहि थानी॥ताही अनूपम रूप बालामें मनो रथ मैन महा सुख दानी॥ताते बढ्यो मन मो· हनको मनको मिलवेको मनो रथ रानी॥१८७ दोहा॥आवति कू न सुनि जानिहै ललित दि· खावति गात॥मृग नैनी हेरति हंसति कहति मधुर बाहु बात॥१८८॥सदृस धर्म तुलकजो शब्द भेद सो होइ॥कवित रबाई बात मेंप्रति वस्तू पमे सोइ॥१८९॥प्रति वस्तूपमाकोउदा ह· हरन दोहा॥जो हरिके हियरा लगी तरनि सीस मनि सोइ॥तिय गन ऊपर उरबसी सबनि सरा· ही कोइ॥१९०॥माला मयप्रति वस्तूपमा॥ दोहा॥सीसनिमेलेंसै सुदान अब दाने केला· स॥रबो ललको हियो थव लेससिसिरपर बास॥१९१॥मेरुथ लतिही तुंग विधु सील· द बिना उपाइ॥सज्ज समुद गंभीर अरु ख· सन सुभाइ गनोइ॥१९२॥जहं विंब प्रति विंब· की भाव सबन में होइ॥कहत सुकवि दृष्टांत है तुमहु ताहि सब कोइ॥१९३॥जहा तुलित द्वै वस्तुको शब्द भेद अभि धान॥सो विंबप्रति विंब मय भाव कहत सज्ञान॥१९४॥अलंका

दृष्टांत में सदृस धर्म कोहोदू॥विहै यनहुकोहि
दू पुनि बिसेष्य मे होदू॥१९५॥लाल तिहारे
लोचन ही वात हिये हुलसात॥ललनि दलनि
अवलोकतहि पदमिनि पदमिनि कात॥
१९६॥वैधर्मते दृष्टांत॥दोहा॥काहू दस हंमी
नको रह्यौन रहत निदान॥भरद मारतहीं
होतु है प्रगट वकाल को ध्यान॥१९७॥अन
होनी जग वस्तुको कछु सबंधजु होइ॥ उ-
पमा पर काल्पक दूते निदर्सना कहि सोइ
१९८॥कित अवला हम अलप मति कितय-
हु जोग अगाध॥कैौंकर कौरै पपील का अ-
चल उचावन साथ॥१९९॥अलि खंजन
वंधूक दुति अधर अधर लखि लाल॥ धरी
नई दुति इंदुकी कांत वदन मै वाल॥२००॥
अपने अपने हतुको जोजा संवध ज्ञान॥हो
त क्रियाते निदर्सना ताहू कहत सुजान॥२०१
कवित्त॥ उज्जल स्वछ सुहत प्रभानि थिरै
गुन वंत अनूपमजौंहे पाइवे उन्नत सोपद उ-
त्तमसोहत है निरखे मन मोहे॥सो यह वात
विचारि कहे मन देखौ विचारि मतो सबकोहै
मंजुल जो मुकता हल हार सो नारिके ऊंचे उ-

होत हैं विमाल ससंक कलाद॥ २१०॥ एक वाक्य सें होत है जो षल अर्थ अनेक॥ ताको अर्थ श्लेष कहि कवि जन करत विवेक॥ २११॥ दृग लीर्ष मन सुख होत अति मद तम दुख मिटि जात॥ जह दीपति दुति देवता दरसन पावे प्रात ॥ २१२॥ साभिप्राय विसेषनन कथन सुपर कर जान॥ याको लत उदा हरन सुकवि लेहु मन आन॥ २१३॥ कवित्त॥ हौंतो हौं अनाथ तुम अनाथन के नाथ हो दीन तुम दीन बंधु नाम निज्जु कीन्हो है॥ हौंतो हौं पतित तुम पतित पावन वेद पुरान बषानो कछु काहु नवीनो है॥ दाव करी सेवा जो हौं कहौं मेरी सेवा रीझो आपही ते आपनो के चिंता मनि लीनो है॥ अब तुम्हें मेरी रक्षा करिबेई परी राम रावरे ही मोहि निज्जु नातो जोरि दीन्हो है॥ २१४॥ जहं विशेष अभि धानकी इच्छा कथन निषेध॥ चिंतामनि कवि कहत है सो आछेप निषेध॥ २१५॥ वर्द्ध मान विषय निषेध को उदा हरन॥ दोहा॥ कहौं न काहू निडर सों हौं काहू की बात॥ विन विचार कर काज अब मरौ जु मरिहौ प्रात॥ २१६॥ उक्ति विषय निषेध आछेप को उदा ह-

रन॥दोहा॥प्रेम निहारे चंद्रिका चंदन कमल
मृनाल॥अनल भये वा बाल को काहू न का-
हियै लाल॥२१७॥स्तुति निंदा मिसि और अ-
स्तुति निंदा होइ॥चिंता मनि कवि कहत हैं
व्याजस्तुति है सोइ॥२१८॥कवित्त॥जाको कृ-
पा कोरे माको हंसोरे छडावै कोहे चिंतामनि भां-
ति यह भली मन भाई है॥पापी सुकृती न सेसे
सबै गति कोर इन्हें जानै को कहां ते भ कौन-
धौं बडाई है॥माया मोहे सबही को रीहे व्या
ध गनिकाधे कीरति सकल जग ऐसी कछ-
छू गाई है॥रूप जाति गुन कहा वे जगत पति
जगत की प्रभुता धौ कौन गुन पाई है॥२१९
अस्तुति मिस निंदा मानस तो लीजि यगु पर-
षि सुभाइ लषि तुम पिय सुज्जान सिरोमन
प्रकास हो॥जिनको हू चुरायो मन मानिक ति-
हारो सो वहे नष दुति हिये पावत हुलास हो॥
चिंतामनि कोहे कठोर कुच उर बीच ताही तुम
बांधे निसि माहे भुज पास हो॥ताको सब मा-
नि लेत कहां लौं भलाई कहौं ऐसे स्याम सुं-
दर सुधाई के निवास हो॥२२०॥अप्रस्तुति
प्रसंसा को लछन॥दोहा॥अप्रस्तुति के कथ-

न बिनु प्रस्तुति जान्यौ जाइ ॥ अप्रस्तुति पर संससो सज्जन सुनौ बनाइ ॥ २२१ ॥ कारज के प्रस्ताव मे कारज को अभिधान ॥ कारन के प्रस्ताव मै कारज कथन सुजान ॥ २२२ ॥ अप्रस्तुति सामान्य जो तहं बिसेष कहि जाइ ॥ ताहु बिसेष प्रस्तुति कहैं सामान्यौ सु बनाइ ॥ २२३ ॥ कहूं सदृस प्रस्ताव मैं सदृस अभिधान ॥ अप्रस्तुति लंकार के पंच भेद पहिचान ॥ २२४ ॥ ॥ यथा क्रम उदाहरन ॥ दोहा ॥ सकन तजी कुलकानि तजि लखि गुरु लाज समाज ॥ सैवे टगी हरि मुख निरखि सदन तज्यौ रह काज ॥ २२५ ॥ इहां आतुर बैठी खड़ी कैसी नही है बैठी है तोहि कछू सुधि नाही यह कारज प्रस्ताव मै हरि मुख दरसन को कारन कह्यौ कारन के प्रस्ताव मै कार्ज कान अधर बिंब बरनत रहे लाल उकति करि कौन आजु ललीका बरन्यौ चहत रहत लाल गहि मौन ॥ २२६ ॥ इहां सखी मंडल मै नवोढा के अधर बिंबा स्वादन नायक कियो यह प्रस्ताव मे बिंबा स्वाद ते लौकिकानुभाव बरन्यौ नाही जात बुद्धि मौंध भयो यह कार्ज कह्यौ सामान्य के प्रस्ताव मे बिशेष को कथन

हो. जल कन कमल निपात मैं उन मन मुकुता मानि । कर परसत लषि लीन भउ सोचत कहि निज हानि ॥ २२७ ॥ विशेष के प्रस्ताव मैं सामान्य को कथन ॥ दोहा ॥ जासों आपन मित्र की कि‍ये जाइ उपकार । वह कुलीन वहै धनी वहै धन्य संसार ॥ २२८ ॥ जहां तुल्य अभिधान तहं तीन प्रकार विसेष ॥ श्लेष समासो क्ति अप्पर लक्षना मूल कलेष ॥ २२९ ॥ श्लेष मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहि मनि अधिक सनेह कर करौ लाख विधि कोइ ॥ कहूं प्रकासत जगत मैं बिन गुन दिया न होइ ॥ २३० ॥ समासोक्ति मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ हसा जो ये कबलों नहीं होतुन आदर नेह ॥ हंसा जा गे जा दीप मैं सबै करत है नेह ॥ २३१ ॥ सदृस प्रस्ताव मैं सदृस कथन ॥ दोहा ॥ कित लित ललित वसंत मैं फूली लता अतूल ॥ फूल नहीं अलि के हिये बिना मालती फूल ॥ २३२ ॥ वाच्यरु वाचक भाव की रीति तजे कछु भंति ॥ पेच लिये सो सब कहत पर्यायोक्त जुक्ति ॥ २३३ ॥ साम अर्थ जो विंजना सो प्रतापहित होइ ॥ पर्यायो कतिताहि को कहत विबुध

सव कोइ ॥ २३४ ॥ जिरविकान्हको रूप लखित
जीवासकी प्रीति ॥ सुंदरता उन सद मदन मन
मन सुध बुध नीति ॥ २३५ ॥ प्रस्तुति कारज ते
जुहे प्रस्तुति कारन ज्ञान ॥ पन्नी यो कांति कहि
तयों विद्या नाथ सुजान ॥ २३६ ॥ दरकी अंखि-
या मल गली लाली अति चित चैन अलसो-
हैं से ललित हैं आनु लखो हैं नैन ॥ २३७ ॥ य-
ह रचिवे कौ एरचे ऐसी कहि कछु बात ॥
जुवा हेप उप मानकी सो प्रतीप कहि जात ॥
२३८ ॥ उप मानो उप मेय यह करे अनादर का-
ज ॥ इहां प्रतीपै कहत हैं पंडित सव कवि राज
२३९ ॥ रचि मधुराई अधर की सुंदर वदन वना-
इ ॥ सुधा सुधा निधि कौं रचे विधि वृथवे भ-
व पाइ ॥ २४० ॥ गरभ धरत मन जानिहो एक
तरुनि सिर मौर ॥ रूप वती अति जगत में तो-
सी रति है और ॥ २४१ ॥ जुहे साध्य साधन क-
हिन सोवरनत अनु मान ॥ तर्क न्याय मूलक
सुतो अलंकार सज्ञान ॥ २४२ ॥ भौंह भाव जहं
तिय करे तहीं परति है वान ॥ इनके आगे सर
मदन लीन्हे वान कमान ॥ २४३ ॥ हेतु वाक्य-
के अरथ के अर्थ पदन को होइ ॥ काव्य लिंग

तासों कहत हेतु बखानत कोइ ॥२५४॥ हरि
उर निर्मल नील मनि हर जन तिला समान ॥
ध्वनि बिंबत द्युत राधिका कमला कांति निधा-
न ॥२५५॥ पदार्थ को हेतु ताको उदाहरन ॥ *
दोहा ॥ साध्य असाध्य नहीं कही पावन पावत
ताते ॥ है स्वर्न संपन सुख वालस जास अमो-
लहै माल ॥२५६॥ नील बसन पावस निसा
भली लख्यो नंद नंद ॥ नैन काहू मोग लखतिहै
नाशु उघार मुख चंद ॥२५७॥ स्लेष मूल को
उदा हरन ॥ दोहा ॥ पाप मतंग प्रदान तिन सं-
तनजो निज माहि ॥ चिंता मनि जिनके बसत
पंथा मनु उर माहि ॥२५८॥ कारन परस परसो
मथन जो सामान्य विशेष ॥ सो अर्थान्तर न्या-
स कहि लखि पंडित मन लेष ॥२५९॥ विसे-
ष परि मान को उदा हरन ॥ दोहा ॥ मूढ़न की
मति मंद ना तियन साधु करि देत ॥ लखत
रस पति कमलिनी मधुपन को मधु देत ॥
२६०॥ रिसानिको भानि बूझ बिन बूझहु लेत
रिझाइ ॥ नीको कोनी को लगे सब विधि स-
नै रसाइ ॥२६१॥ क्रम पान को अन्वय जहां
बरनै नाम क्रम होइ ॥ यथासंख्य सो अलं-

हात सुमति कहत सबकोइ ॥२५२॥ सुंदर बदन
कमल कुच लसत सुधा बैन मृग नैन ॥ बिंब चंद
लसै कोकसुत मनी कमल से ऐन ॥२५३॥ ए
क वस्तु के क्रमतें और मई जो होइ ॥ ताको का-
हियै यह कहा अर्थो पनिह कोइ ॥२५४॥ सुंदरि
की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक
की जोती कहा चंप कली की जोति ॥२५५॥ ए-
क वस्तु जो अनेक थल प्रापत एक हि बार ॥
नियमित कीजै एक थल पर संख्यालंकार ॥
२५६॥ एक वस्तु जो एक ही ठौर नेम जो होइ ॥ पर
संख्या तासों कहत कवि पंडित सबकोइ ॥२५७
पूछे पूछे तोस्या पुनि ताते भिन्न जु और ॥ परिसं-
ख्या द्वैविध पृथक कहत सुमति सिर मौर ॥२५८
वर्जनीय जु वस्तु जो काहू कहूं शब्दगत होइ ॥ क-
हूं अर्थ बल पाइये यह विधि होऊ दोइ ॥२५९
पूछौ अन पूछौ कथन काहू वस्तु को होइ ॥
ऐसो औरन हेत यह परिसंख्या कहि सोइ ॥२६०
परिसंख्यालंकार मैं कहत शब्दगत होइ ॥ क-
हूं अर्थ बल पाइये जो सम नाही कोइ ॥२६१॥
मम्मट आचारज इहां ऐसो कियो विवेक ॥ प-
रिसंख्यालंकार को समुझौ पंडित सर्व ॥२६२॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या को उदाहर-
न ॥ दोहा ॥ कोन सुखी जो राम को नहि संपति
रस लीन ॥ कोन सुखी जो रामतें विमुखन सं-
पति हीन ॥ २६३ ॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि
का परि संख्या ॥ दोहा ॥ कहा से इये पुरुष को
सब दिन सज्जन संग ॥ कहा ध्येय है कहत म-
नि व्यापक ब्रह्म असंग ॥ २६४ ॥ शब्द गत वर्ज
नीया अप्रश्न पूर्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ भूष-
न की रति नहि रतन धन विद्या नहि वित्त ॥
लोचन रुलनिन नैन जुग समभात सज्जन
चित्त ॥ २६५ ॥ अर्थ गति वर्जनीया अप्रश्न पू-
र्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ कुटिल लाई तेरे कुचन
कार पग कोलव राग ॥ नैननि चलिता कठिन
ता कुचनि भाल में भाग ॥ २६६ ॥ शब्द गत व-
र्जि नीया प्रश्न पूर्विका श्लेष मूल परि संख्या ॥
दोहा ॥ कौन नेह बिन होसके दीपन सुजन स-
माज ॥ कौन संक सन बार नहि मनुज राम के
राज ॥ २६७ ॥ प्रश्न पूर्विका अर्थ गत वर्जनीया
श्लेष मूल परि संख्या ॥ दोहा ॥ कोविन गुन र-
ति हार बिन जो तीको मुखचंद ॥ कोन मंदगति
अवथवैं बात बाल सानंद ॥ २६८ ॥ शब्द गत व

जै नीया अपूरन पूर्वि का श्लेष परि संख्या दोहा॥
तिथ छवार मंगल विना कैसे कहिये कर कोइ॥
विसमय रस नहि देल वचन जित हरि घर
न्या होइ॥२६९॥ अथ गत वर्न नीया पूर्वि को
श्लेष मूलक परि संख्या॥ दोहा॥ मीन मरीच
मय द्वारिका हरि नगरी अवदात॥ सुनी दिगु
न वर बाहि मे जामे तमकी बात॥२७०॥ उत
र सुनि जहं प्रश्न को अटका रही तें ज्ञान॥ का
हु पिछा उत्तर कथन प्रथमो तर सन्मान २७१
वसन कहो कैसे पथिक पति मेरो पर देस॥
लाहु अंध वहिरी ननंद वैठे काल वाको लेस
२७२॥ कवित्त॥ सुंदर कों मन मोहे जू दूत वैठी
हो वैठी कहो स वजीकी॥ बात कहे सुनि हो
कहि सपीत की बतियां सुखदायक नीकी॥ अ
वो दूते मिलि आरसी दखिये हे हम नीके कि
हो तुम नीकी॥ नीकी भई जु जो हो तो कहो हम
कैसे के हैं हि वरा वर पीकी॥२७३॥ दोहा॥ सि
खवन पठये तुम जु दूत ऊधो सब गुन धाम॥
निरगुन कुविजा संगतें वे सुत बल सो स्याम
२७४॥ एक सिद्ध कर संग मिलि औरो साधन
रे ष॥ होइ अनेक समुच्च या अलंकार यह रे

अद्यापि दैंत॥२७९॥ क्रिया क्रिया जोरा स-
मुच्चय को उदाहरन॥ दोहा॥ औध नगर ते
निकसि कै वन बसि रघुकुल राज॥ स-
त्य पिता को बचन अरु कियो देव गन काज॥
२८०॥ दूजे कारन के मिले कारज जु ह्वै होइ
सो समाधि वरनत विबुध सरसात ह्वै जान
होइ॥२८१॥ हरि चाह्यौ पर पुरन को मान
परी लखि बाम॥ भई तडित घन स्याम में
निरखि तडित घन स्याम॥ जहं कहियै पर त-
त्व सम भावी भूत जुवात॥ अलंकार कारता वा-
हत तासो विवा कहि जात॥२८३॥ दियो हुतो
जावक जु यों प्रगट देखियै पाइ॥ अंग भूषन है
सबै भूषित लगे बनाइ॥२८४॥ जा उपाय काहू
करी काहू जु अन्यथा बात॥ ता उपाइ जो ते सि-
ये कै कियो व्याघात॥२८५॥ ज्यावति है तिय
नैनही नैन जु ज्यों यों काम॥ जीतति विषम
विलोकननि बाम लोचनी बाम॥२८६॥ कामका-
म एक अनेक मे एकहु माह अनेक॥ है प्रका-
र पर्याय यों सत कवि करत विवेक॥२८७॥
सवैया॥ छोडि दई तनु तानु जिते रहे तकै का-
ह सेवन लाइवे॥ पादन चंचल ताजुरजो अ-

वै किये बिसे षन माउ ॥ यदा पुरुष पर कोटि
काहि सखा दली वनाउ ॥ २९५ ॥ व्याज व्याज स्तु
ति वाम जो रूप बल बहु रूप ॥ सहित विलास
विलास जो मनमथ वान स्वरूप ॥ २९६ ॥ व्या
ल जहां नहि कंज नहि कंज जहां नमि संद
नाहि मिलिंदका समय जो रह नल जिलसानं
द ॥ २९७ ॥ जहं समास लग अर्थ को कहलो
वरन्यौ होइ ॥ चिंतामनि पर यत्न वह वरनत
है कवि लोइ ॥ २९८ ॥ वांसु दियौ तन जोवनहि
जोवन तनकौ जोति ॥ उप कारल उन मनकी
रीति परस्पर होति ॥ २९९ ॥ काहा कहौं हौं
कौन सौं आई हौं इह काहु ॥ सुधि बुधि ह
रि सब हरि लई दीन्ही बिरह बलाइ ॥ ३०० ॥
जाइ लियौ नहि वैन जहं परसौं प्रबल बिचा
रि ॥ ऐसौ कौ अपकार जो भूल नीकौ निरधा
रि ॥ ३०१ ॥ रूपहु पहली तुम हरौ वह तुम र
सौं मक मैन ॥ जोतिय चाहति है तुम्हैं ताहि देत दु
ख मैन ॥ ३०२ ॥ होइजु कौनौ अर्थ लै सूक्षम अर्थ
प्रकास ॥ सूक्षम नाम प्रसिद्ध यह अलंकार सु
ख वास ॥ ३०३ ॥ कवित्त ॥ कहू किंसुक फूल पा
लानिसौ पूजत प्रभु लखे वृष भान दी ॥ मुसका

वो निषेद्ध्यजु परस्य रहै संसिलष्ट विवेक ॥ २२० शब्दा लंकार अनुप्रास यमकी एकहि ॥ दोहा शिव गिरिपर गज मुख मुदित गरजत गिरिजा पोर ॥ एक विनायक करत है एक विनायक सोर ॥ २२१ ॥ चाप मुकुट पट तडित बग पांति मुकत मनि दाम ॥ कनकलता लखि ऊनयो आइ इते घन स्याम ॥ २२२ ॥ संकर पुनि इनकी इते अंग गिला बखानि ॥ आपुहि को विस्राम को पावत जे नहि आनि ॥ २२३ ॥ कनकलता इह अति सयोक्त संबोधन मे ताको उपमाकारि उपस्था पित जो अर्थसो याको उपजीव्य है याते अर्था लंकार को संकर है ॥ दोहा ॥ कहुतभले छात मे जहां अर्थन निश्चित होइ ॥ वो है मे संकर वही वरनत है सब कोइ ॥ २२४ ॥ कवित्त ॥ होंसो तुम्हे पहि चानलि हों वल बातन के वहु पंच वने हो ॥ औरके भाल भयो छति यां कुच कुंकुम छाप छपा यन रहो ॥ वाहू सों रंनि ही वोलहुगे मनि पीतम जाकि पारे जब जेहो ॥ मोहनी मंत्रसे वेननि मोहि के मोहन मोहि कहा वह कोहो ॥ २२५ ॥ ✻ ॥ यामे मोहनी मंत्र तुलित जे वचन हैं तिनकर मोहि-

वो कारन ताहे यह कारनते विद्य मान ताहू यह कारि की वैसीं सला हते अर्थालंकार की सृष्टि है या कवित्त की वस्तु सो यामे मोहनी मंत्र तुल्लित के बचन हैं तिन कार मोहिवो कारनता है यह कारन को विद्य मान ताहू यह कारि की वैसीं सलाह ते अर्था लंकार की सृष्टि है याक वित्त की वस्तु सों कवित्त प्रथम ॥ तेरे कपोल से ह्वै कुन सोऊ जु कंचुकी की कारि आरसी वोपे अंग ॥ प्रभा ए अनूपम मैन बधू के मदा ही गुमान लि लोपे ॥ याद लन द्युति चंदिका लालची चाहे चकोर भये दृग तोपे ॥ वारक तो विधुवंधुमुखी हसि नेकु बिलोकि बिलासिनि मोपे ॥ ३१६ ॥ दुहां प चार्थाति शक्ति प्रथम चरन मे ॥ वितरेक दूसरे चरन मे ॥ पर नामा तीसरे चरन मे ॥ रूपक चौथे चरन मे या सत है ॥ दोहा ॥ एक के दोऊ जने हैं नहि कारन अनंग ॥ प्रति विंबित आ पुहि लषत ए दोऊ दुहु अंग ॥ ३१७ ॥ * ॥ * ॥ श्री राधाकृस्न की एकत्ता साध्य है अरु एकां गमे उभया व लोकन हेतु है याते साध्या साध न अनु मान है के अनंग करत विचारते अंग ते भिन्न करत तात पर्य यह मायाप्रतिविंबित

चैतन्य उभयन है आपु आत्मा एकै है माया स
बको छोडे शुद्ध चैतन्य है आपु आत्मा एकै
है माया सबको छोडे शुद्ध चैतन्य है महाफ्रि
ष है सो उभयत्र एकत्व साधक है ताते अनु-
माना लंकार है अरथा पृष्ठ से औरो अलं-
कार संभवित है अन्यो अन्या दिका याते ए-
क को निश्चय नाही ताते संकर है ॥ दोहा ॥
कछुन सुपरि मा मृदुलता बिसद बरन जुत फू
ले ॥ नृपच मेलिहि तवात अलि सब बेलिन
के तूल ॥ ३०८ ॥ * ॥ इहां बिसेषणगत समासो
क्ति है के अप्रस्तुति प्रसंसा है ताको निश्चय ना
ही ताते संकर है ॥ दोहा ॥ अस्फुटि जो एक हि
विषय पद अर्थो लंकार लहै व्यवस्थाको नुनि
संकर समुझ बिचार क॰ मोर किरीट लसै नमन
पद नील व ला हक रंग हरे हैं ॥ गोपके कंध
धरे भुज दंड अनूप बिलास कालानि धरे हैं ॥
कान धरे नव मंजरी मंजुल वंजुल कुंजन ते
निकरे हैं ॥ सुंदर मार हुते सुकुमार सो बैलवि
नंद कुमारवरे है ॥ ३०९ ॥ दोहा ॥ छबि छलका
ति तन सहज की तापर ललित बिलास ॥ कुंद
न पर संदर लगत ज्यों मनि चंद प्रकास ॥ ३१०

यहां उपमा लंकार को कति अनुप्रास को संकर है ॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ नाम अर्थालंकार निरूपनं त्रितीयं प्रकर्णम् ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रस को जु दूत दीखि परे अपकर्ष ॥ दोष कहत है ताहि को सुने घटतु है हर्ष ॥ ॥१॥ स्रुति कटु च्युत जो संसकृत अर्थ जुक्ति असमर्थ ॥ निहतारथ अनुचित अरथ औ रजु होइ तिरर्थ ॥२॥ और अवाचक त्रिविधि पुनि दूत अस्लील विचारि ॥ संदिग्धो अप्रतीति पुनि ग्राम्य नेयार्थ निहारि ॥३॥ क्लिष्टौ बहुरि बखानिये बिरुद्ध मति नाम जानि ॥ शब्दन को ए दोष हैं सुजन लेहु मन आनि ॥४॥ कानन को जो कटु लगै स्रुति कटु दोष सुजान ॥ संसकार च्युत होइ तो च्युत संसकृत मान ॥ जो नहि प्रोगी लख कविन कान्ही भाषा जान ॥ मथुरा मंडल ख्यात ये श्रीपरिपक्व बखान ॥६॥ स्रुति कटु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ धन्य भयो हात आज हों सफल भई है दृष्टि ॥ दरस तिहारो पाइ को हिये भई सुखदृष्टि ॥७॥ कान्ही भाषा को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कान्ही लसति सांवरी सो मुहि लागी नीकि ॥ व-

यह कोकिला सोपुनि तहं तू पेष॥ रिसहा प-
हौ हे सखी तुही बोल पुनि लेष॥ १७॥ अश्ली-
को उदाहरन॥ दोहा॥ वि मारग देवति उहां पा-
ह परी हौं आइ॥ तू तवबोसी करहि जो बिर-
ह पीउ मरिजाइ॥ १८॥ संदिग्ध को लछन॥
दोहा॥ जहां होतु संदेह है सो संदिग्ध बखानि
ग्राम्य हीन मे जो कह्यो अपतीति सो मानि॥
१९॥ संदिग्ध को उदाहरन॥ दोहा॥ कूदत
जाको होतु है ये बिरहे मनु लाइ॥ अति सुंद-
र सुंदर बन्यो हरि देख्यो किन आइ॥ २०॥ अ-
प्रतीति को उदाहरन॥ दोहा॥ तो चित्त मे चितु
है सखी तू क्यों बैठी रूठि॥ तै निजु मान कि-
यो अदू ज्यों सरवाट की मूठि॥ २१॥ ग्राम्य को
लछन॥ दोहा॥ होत गंवारी पद जहां ग्राम्य
कहत हैं ताहि॥ चिंता मनि कवि कहत है सुक-
वि तजत हैं वाहि॥ २२॥ ग्राम्य को उदाहरन॥
दोहा॥ चुची जंभीरी सी बनी गोल लाल है गा-
ल॥ जाके नैन बिशाल वह गरे लगे कब बाल
२३॥ नेयार्थ को लछन॥ जहां निधिरूढि की ल-
छना सो नेया र्थ बखानि॥ चंदहि हनत चपेट
सो तेरो मुख मृदु बानि॥ २४॥ क्लिष्ट को उदाहरन

जाको अर्थ कहे बिना जान्यो ई नहि जाइ ॥ कै-
बोलेसते जानिये सो है क्लिष्ट बनाइ ॥ २५ ॥ द्र-
व्य नाम दृग हीन पद आसन रिपु पदमास ॥
फूल खवान ताको सुहृद लीन्यो दूखद तासु ॥
२६ ॥ विरुद्ध मत कृत को लक्षन ॥ दोहा ॥ सो वि-
रुद्ध मत कृत जहां जान्यो जाइ विरुद्ध ॥ ऐसो
कवित न कीजिये है यह निपट अशुद्ध ॥ २७ ॥
विरुद्ध मति कृत को उदाहरन ॥ दोहा ॥ बडे प्र-
वीन सुबुद्धि हैं सदा अकारथ मित्र ॥ कहा औ-
र संसार में ऐसो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अब
वाक्य दोष गनाय लिखें हैं ॥ दोहा ॥ प्रति कूला-
क्षर होत है अरु हत वृत्ति बखानि ॥ न्यून अधि-
क पद कथित पद पतत प्रकर्षी मान ॥ २९ ॥
पुनि समाप्त पुनि रात कहि चरनां तर पद हो-
इ ॥ पुनि अभवन्मत जोग कहि अकथित वा-
च्यो कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अस्थान स्थ पद संकी-
र्नौं निहारि ॥ गर्भित और प्रसिद्ध हत भंग्ग क्र-
म निरधारि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमत अपार थे
वाक्य दोष ए मानि ॥ कवि चिंता मनि कहत
हैं सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ प्रति कूला क्षर
को लक्षन ॥ दोहा ॥ अक्षर रस अनुकूल नहि प्र-

किधौ आपुहि चपा हाम ॥ एक लखी वह कामि
नी दूजी मन मथ वाम ॥ ५२ ॥ कथित पद ॥ *
दोहा ॥ जो पद दीन्हो है कह्यो वहै बहुरि कैजाइ
तौ कथित पद है तहां कविजन सुनहु बनाइ
५३ ॥ कोमल मुख वह कमल सों निरखि नेन वि
ते हास ॥ गोरी कोमल देह है सोहत ललित र
बिलास ॥ ५४ ॥ प्रजात प्रकर्षन लछन ॥ दोहा ॥
जो आदर अरु सोभि है तैसे जो निव है न ॥ चिंता
मनि कवि कहत है प्रजत कर्ष सो ऐन ॥ ५५
श्याम चूनरी चपल चष चोवा चरम कन चार
चतुर चंद वदनी चली गोरे पहिरि के हार ॥ ५६
समाप्त पुनरात्ति ॥ दोहा ॥ जहं वाक्यार्थ समाप्त के
है बहुरि विसेषे देइ ॥ सो समाप्त पुनरुक्ति है
जानि सुजानि लेइ ॥ ५७ ॥ बड़े बार लोइन बड़े
छीनी दरि बर नारि ॥ दच्छिन दिसि मे साबरी
वह सोहति सुकुमारि ॥ ५८ ॥ जहं जो उत्तर अर्ध
पद पूरब अन्वित होइ ॥ अर्धो तर गत पद सुयों
दूषित भाषा कोइ ॥ ५९ ॥ जामे अन्वय बनत
नहिं सो अभव न्मत जोग ॥ चिंता मनि कवि
कहत यों सुकबिन करे प्रयोग ॥ ६० ॥ वे मन
मोहन रहते रची सबाल सो माहि ॥ जो वह

गोरी सखि मिलि देत नैन सिय राहि॥५३॥ *
अनुक्त वाच्यनीय॥दोहा॥जो अवश्य कथनी-
य सो कहें जहां नहिं होइ॥ उक्त अनुक्त वा-
च्यनीय यह दोष कहत है कोइ॥५३॥ जो पा-
ई नहिं मैं निका पाई काम वधून॥ सो कहला-
ल लहू निरखि त्यकात लषत मदून॥५४॥ ज-
हां होइ संकीर्ण पद सो संकीर्ण बखानि॥
एक वाक्य मे और जहं सो गर्भित पहिचा-
नि॥५५॥ पीजे पान तवाइ पै पानी बेलि
पानि॥ पिय हिय ठाउं रावरे सुखहि मिला-
उं आनि॥५६॥ गर्भित॥दोहा॥ औरन के अ-
पकार ते खलसों कहूं मिलाय॥ तुम्हहि सि-
खाउं काहू जनि दिये परम संताप॥५७॥
जो पद जा थल चाहिये सो नहिं त्यथल होइ
दूषन अस्थानस्थ पद कहत सुकवि जन
कोइ॥५८॥ तू कुल लावत मदन यह नकार
अस्थानस्थ पद॥ दोहा॥ ज्यौं पद अस्थानस्थ पद
यौंहीं अस्थ समास॥ कोल क्रुद्ध की उक्ति मैं
कोकिल की उक्ति प्रकास॥५९॥ मेरे आगम मा-
नयौं कहि यत पिक श्रुति वंत॥ अलि हुंदि-
त हांतोत कलित आयौ अली वसंत॥६०॥

प्रसिद्ध हत बोलः॥ दोहा॥ श्रुति रस आदि प्रसि
द्ध जहं तहां दीजिये सोइ॥ और भांति कोई कि
ये तो प्रसिद्ध हत होइ॥ ६१॥ वा मृग नैनी को
सुनत नूपुर को निश्वान॥ पंच वान अभि
मान सों ताने वाने कमान॥ ६२॥ पूर्व मनु बा-
देन प्रस्तुय मानो द्यःप्रभा दन्मत्र विधिलः॥
प्रगुन्य मान प्रतिनिर्देस्य॥ छंद॥ ॥ उद्देस्यप्रति
निर्देस थल मै प्रथमही जो दीजिये॥ पुनि जा-
ह कहिवे परे तो वहे नाथल लीजिये॥
जो कथित पद की भांति ते पर्याय पद तिन
कीजिये॥ तो होइ प्रक्रम भंग दोषसु सत्य जा-
न पती जिये॥ ६३॥ अकृन उदित रवि होत है
अस्तै अथवत आइ॥ संपति बिपति बडेन
को एकै क्रम लीव जाइ॥ ६४॥ अकनतु दैवि-
कस्त है लाले अथवत आइ॥ ऐसो जो कहि
ये तो प्रक्रम भंग है जाइ॥ ६५॥ जिन विरंचि
जगती रची तिन न रची तू बाम॥ और लटक
औरे ध्वनि औरे दुति अभिराम॥ ६६॥ ✳
और लटक आने ध्वनि ऐसोन कहिये सोइ॥
नमत दूसरो अर्थ जहं अमत परा रस होइ॥
चिंता मनि कवि कवित है रचेन सत जाहिको

नु संध्यान नाहि अंगाहि की बहु जुगि॥८५
अ गितिनि को पुनि विपर्जय अनु मित
बर जन जानि॥चिंता भनि कवि कहत है
ए रस दोस बखानि॥८६॥प्राच्य कथित सं-
चारी अस्थाई रस॥दोहा॥संका दुरजन
के हिये वाके हिये उछाह॥अरि सा-
हत वीर रस अनुरागी नरनाह॥८७॥*
विभाव की क्लेसते व्यक्ति॥काकी सब सु-
धि बुधि गई बाहिन कहुं बिस्राम॥निसि
बासर रोवति रहति कछून भावै काम ८८
प्रतिकूलोक्ति॥दोहा॥*॥प्यारी हंसि कै
बात कहि डारि गरे मै बाहि॥रोस छोड म-
ति मान करि जोबन घन की छाहि॥८९
अतिशयोक्ति॥दोहा॥भली भई बहुतै अ-
ली लागी घर मे आगि॥मेरे कर की गागरि
लीन्ही साजन मागि॥९०॥मुख्या नन सं-
ध्यान॥दोहा॥मै चौपर खेलन लगी निसा
समै मै आजु॥बैठी सखी समाज मै भूलि
गए ब्रजराज॥९१॥अंगको बिस्तार॥दोहा
कालिंदी सुंदर नदी सुंदर पुलिन सरूप॥
वृंदावन घन छांह तकि कुंजनि रूप अनू

प॥८२॥ प्रसिद्धि विपर्ययः॥ दोहा॥ लिख
त नैन सहस्र सौं सुंदरता सखि देष॥ रंभा
की मघवा दुखित लागत होत निमेष ८३
अनुचित वर्ननं॥ दोहा॥ बिरहिनि नैननिमे
सइमि काजर लसै नवीन॥ दिन देखे पियको
रहे मनो स्याम मुख कीन॥ काहूं कर्न अवतंस
हुत याहि पहन को ठान॥ सं निधान हूत्या हि-
के बोध हेत सुजान॥८५॥ जहां हेत पर सिद्ध
है तहं नहि तन सोख॥ सब अदुष्ट अनु बार
न मैं हूजै नहीं अतोख॥८६॥ चिंता मनि
गोपाल की वर्नन कौ रुचाहु॥ जिन्हें दिखायौ
चिंत्यते दोषौ गुन है जाहु॥८७॥ इति श्री
चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ
दोष निरूपणं नाम चतुर्थ प्रकर्ण॥ * ॥४
दोहा॥ पद वाचक अरु लाछणिक व्यंजक
त्रिबिध बखान॥ वाच्य लक्ष्य अरु व्यंग पुनि
अर्थौ तीनि प्रमान॥१॥ बिन अंतर जा सब्द
कर जाको होत बखान॥ सो वाचक पद होत-
है कहत सुकवि परमान॥२॥ लच्छक तावौ
कहत जो होत लछना जुक्त॥ चिंतामनि क
वि कहत है यह प्रमान है उक्त॥३॥ मुख्य र-

थके बाध अरु जोग लक्षना होइ ॥ होत प्र-
योजन पाइकै काहू रूढि हित सोइ ॥ ४ ॥ गंगा
घोषक है तहां होत तीरको बोध ॥ सीतलता
पावनता तहां प्रयोजन सोध ॥ ५ ॥ तहां विं-
जना वृत्ति वह होत लक्षना मूल ॥ जहां प्रयो-
जन जानियै कहत मध्य अनुकूल ॥ ६ ॥ ❁
जहं अभिधा अरु लक्षणा अति कछु भि-
न्न प्रकार ॥ होइ अर्थ को बोधतहं कवि ब्यं-
जक व्यापार ॥ ७ ॥ शब्द अनेको एकरुचि अ-
ति कछु भिन्न प्रकार ॥ होइ संजोगा दिक
गनन इत अवाच्य कोसार ॥ ८ ॥ तहां व्यंज-
ना वृत्ति इत यह मे मट तत्व है ॥ चिंतामनि नि-
ज ग्रन्थमे कवि इत बरनन आनि ॥ ९ ॥ संजोगा-
दिक जोगनो प्रथम एकसों जोग ॥ चिंतामनि का-
वि कहत इत बरनो बहुरि विजोग ॥ १० ॥ अरौ
अवारन चिन्ह सुनि ॥ दोहा ॥ ❁ ॥ आनहि इन्द्रते
चिन्ह सुनि आन शब्द सह संग ॥ सामर्थ्यौ औ-
चित्यमो देससमे पर संग ॥ ११ ॥ औरै आभरन
आदि ते शक्ति नियंत्रित रीति ॥ एक
अर्थ मे औरकी व्यंजन ते परतीति ॥ १२ ॥
शंख चक्र जुत हरि तजो शंख चक्र करि आनि

ध्वज के नीको लगी लागन सखी की रस बतियां
चिंता मनि पल पल पर प्यार चढ्यौ उपज्यौ
वियोग ब्यापी विथा दिन रतियां ॥ मोद ही-
ते जहां तहां पियको देषन लागी इंखि खे-
लि बोलि तहां लख्यौ है सब तियां ॥ याही
समै आये बेई सांचे आपु आपुही ते नवल
लपटि गुलागी लालन की छतियां ॥ २४ ॥ अ-
र्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ साखी है सखि
यां सबै अबहो भई अचेत ॥ मै मनु दीन्हो आं
पनो दै दूत पाउ न देत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंजक ॥
वर्तिष्य मान सुरति गोपना ॥ कवित्त ॥ ग्रीष
म मै बापी कूप सर वर सूखे सब जल नदी
भिरनाते आवतु नगर मै ॥ जहां जात आवत
लगत कांट भारन के होत जैहो हौंही पानी
पीवति हौं घर मे ॥ अति दूर हीते भरी गागरि
लै आवति हौं छूटत पसीना कंपे अंग घर घर
मै ॥ कहति हौं पुनि सासुननद कौन मोपै
जाउंगी तो अजगी भरि दुप हर मै ॥ २५ ॥ इति
श्री चिंतामनि विरचिते कवि कुलकल्पतरौ
शब्दार्थ निरूपणं नाम पंचमं प्रकरणं ५
दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम ए त्रिविध कवि-

त पहिचानि ॥ तिनको लछन ॥ उदाहरन हेत
लेहु मन आनि ॥ १ ॥ वाच्य अर्थते बाहत मनि
व्यंग अधिक जहँ होइ ॥ सो जानत उत्तम क-
बित यह जानत कवि कोइ ॥ २ ॥ उत्तम व्यंग
प्रधान गन अप्रधान गन व्यंग ॥ सो मध्यम
पुनि अधम गन द्विविध चित्र अव्यंग ॥ ३ ॥
वाच्य लछते भिन्न जो कवित सुनैते अर्थ
भासैते सब व्यंग कहि बरनत सुकवि समर्थ
॥ ४ ॥ उत्तम काव्यको उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखि
निसि तें पतिसों जिती रति रन मदन प्रसाद ॥
सुंदरि जय दुंदुभि रच्यो कल किंकिनी निनाद
॥ ५ ॥ कवित्त ॥ कीन्हो मधु पान सुधि बाकु चैन
रही मन भाई को अंबर स्याम वोढ़ो चितवा
इकै ॥ चिंता मति कोहे लाल लोचन ललित
सोहे लाल आप कोहे एल जोहैं अलसाइकै
हमसों दुरी कसे रासे कहि आवन सो दी-
न्हो मन भावन हरस भोर आइकै ॥ रहो नव-
ल नायका रसिकनिसि चांदनी की ऐसे हा-
ल आर ग्वाल बाल को सुनाय [illegible] ॥ ६ ॥ * ॥
दोहा ॥ एको द्विविधि सब वाच्य धुनि सगुन विव
छित वाच्य [illegible] उत्तम काव्य [illegible]

वि पंडित राख्य ॥७॥ कहना की जु ध्वनि जहं
वाच्य अर्थमें होइ ॥ सो अविवक्षितवाच्य है
कहत सकल कवि लोइ ॥८॥ अत्यंत तिरस्कृ-
त वाच्य अर्थान्तर संक्रमित वाच्य द्विविध मू-
ल ध्वनि बरनते आगे कहत वाच्य ॥ अत्यं-
त तिरस्कृत वाच्य को उदाहरन ॥ दोहा ॥
कल्पानल सों पुनि किते कारी किये बहुत उप-
कार ॥ ऐसो काम करो सदा जीवो बर्ष हजा-
र ॥९॥ अर्थान्तर संक्रमित वाच्य ॥ दोहा ॥ तो-
सों यह हम कहत हैं सकल सँभारि मति जा-
हि ॥ कीजै काम बिचारि कै भलो आपनो
चाहि ॥१०॥ वाच्य अर्थ सु विवक्षित वाच्य
द्विविध पहिचानि ॥ लक्ष्य अलक्ष्य क्रमालि
सों व्यंग्य सुमन में आनि ॥११॥ प्रति शब्द
काल लक्ष्य क्रम व्यंग्य सुद्विविध बखानि ॥
शब्द अर्थ जुग शक्ति भव तीनि ध्वनि भेद
सुजानि ॥१२॥ शब्द शक्ति उद्भव व्यंग ॥*
दोहा ॥ अलंकार की वस्तु जहं व्यंजना शब्द-
ते होइ ॥ शब्द शक्ति उद्भवहु यह बरनत
है सब कोइ ॥१३॥ शब्द शक्ति मूल व्यंज
ना कार को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मधु मोहित

अलि मंजरी मंजु मौलि छवि जाल॥ पद्म
राग पल्लव ललित रजत तल लस माल १४
इहां नायक अरु आम्रकी उपमा नोपमे
यते उपमा लंकार व्यंग्य है॥ शब्द शक्ति मू
ल व्यंग्य वस्तु को उदाहरन॥ दोहा॥ चौपर
खेलत है कहा जुगहि जीति सुभाय॥ ला
ल जातहैं हाथते अरी चुकै यह दाव १६।
इहां शब्दशक्ति सों नायक अनुनयोक्ति
है है जो लाल चलि यह व्यंग्य॥ दोहा॥ द्वैऊ
पद गत वाक्य गत जो गनि चारि प्रकार॥
अर्थ सक्ति भव भेदको करत विबुध विस्ता
र॥१७॥ अर्थ शक्ति उद्भव ध्वनि भेद॥*॥
दोहा॥ स्वत संभवी सुकवि को प्रौढ उक्ति
पर सिद्धि॥ कविनि बद्ध वक्ता हुकी प्रौढ उ
क्ति पर सिद्धि॥१८॥ त्रिविधि अर्थ व्यंजक
छविधि वस्तु अलं त्रिन रूप॥ त्योंही व्यं
ग्यह भेदसों द्वादस भेद अनूप॥१९॥ मेरी
बातनि आजु उन दियो कान छवि खानि॥
सुनत तिहारो नाम के मुख वाली मुसुकानि
२०॥ इहां नाम श्रवनांतर मुसकानि रूप व
स्तु करि तुम्हे वह चहति है मिलैगी वह वस्तु॥

ली नारि ॥२३॥ इहां स्वभाव उत्तिकरि मोपर स-
कामैहै इहवस्तु ध्वनित होतिहै ॥ स्वनसंभवी अ-
लंकार करि अलंकार को उदाहरन ॥ दो ॥ कोवरजे उनदु-
हुनको कौन धरावै धीर ॥ दोऊ प्यासे जेठके
दोऊ सीरे नीर ॥ २४ ॥ इहां नायका अरु नाय
का को अरथसजेठ मास पिपा सित अरु जेठ
मासको सीतल जल इन सौम्य भेदन रूप
नति रूप अलंकार करि दोऊ परस पर निर
वधि प्रेम पात्रहैं ताते समालंकार ध्वनित होत
है ॥ कवित्त ॥ कर वास गिरि कोमल कमल
करते उतारि धरि लाल भैरौ मनु अकुलात
है जीवैगो सो जीवै जो मरैगो वह मरै मोसो
कैसे निरख बालक कौ क्लेस देख्यौ जातहै
मेरी कही करानतो निकसि मारौगी कहि-
चली जहां करिका मिलान कौ निपातहै ॥
जहां कोंदे गोपी गोप गन संग नंद रानी तहां
रहकी वकी अचल अधि कातहै ॥ २५ ॥ ✳
कवित्त ॥ दोऊ जन दुहूकौ अनूप रूप निर
खत पावत कहूं छवि सागर कौ छोरहैं ॥ चिं
तामनि केलि के कलानि के विलासनि सौं दे
ऊ जने दोहुन के चितन के चोरहैं ॥ दोऊ ज-

धांति भले चंड कर मंडलते चंड कर माल सो॥
२९॥इहां कवि प्रौढोक्ति उपमा लंकारके भले
कालिक सूर्य्य मंडल साते निकरि कि रनि
मंडल जैसे जगति को संहार करत है ऐसे
मंडलित श्रीरामके धनुषते सर इंदनिकरि
करि करि सिंधुकी सेनाको भले कीन्हो यह
वस्तु द्योतित होतिहै कविनिबद्ध वक्ता प्रौढो
क्ति सिद्धि वस्तुकरि॥वस्तु व्यंग्य धुनिको उदा
हरन॥दोहा॥मै समुझो यह आजुही है अनं
त बलवंत॥सो सुत मारो इंद्र जित जितिक-
ल भरन अनंत॥३०॥अंतक बलवंत है यह
कथन रूप वस्तु करि रावन के अंत काहू को
भय नाही यह वस्तु द्योतित होतिहै॥कविनि
बद्ध प्रौढोक्ति सिद्ध वस्तुकरि॥अलंकार व्यंग
ध्वनिको उदाहरन॥कवित्त॥जबते आगुन रै
ल्याये जानुकी लंका बीच भये ताही दिनते भ
यंकार निमित्तहैं॥परी सेना समुद के तटमे अ
संख्य कपि रिक्षनके वाटका वदत उत्त निन-
है॥ जौलौं राम लखन तेरे तेज बानन सौं
भये लंका पुरी केभ भट भिन्न भिन्नहैं॥
तौलौं रघुनाथ ढिगजानुकी पठाइ दीजे ऐसे

वस्तु अभिव्यक्त होतिहै॥३३॥कवि निबद्ध
वक्ता प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकार ध्वनि को उ-
दाहरण॥कवित्त॥अमल अमोल मुकता
हल को हारतें सोहै लसि अमोल मुक्ता हल
के हारसी॥चिंतामनि चारु चीर सुल्यो छी-
र फेन सम सरद जुन्है यासुख सुखमा के
सारसी॥जागत हमारी पर रीझिहै हमारी प्या-
री राधा रिझवार सारदा को अवतारसी॥
धवल पुलिन मध्य जमुना कीधार ध-
सी दुरद रदन परपर जनु आरसी॥३४॥ह-
हां मान पर हरि श्रीकृस्न को देखि प्रनयको-
प करि अप्रसन्न हृदय श्री राधा को सनमु-
खि श्रीकृस्न उनको मन उदास को स्तुति
कीन्ही सरस्वती अवतार को साम्यहै सा-
भिप्राय विशेषन कहे की प्यारी हमारी रा-
धा रिझवारि रीझिहै ए बातें सुनि रीझि
के को उनमुख भई सोई उन जुगि कही
धवल पुलिन पर यमुना की धार धसी
दुरद रदन अरपर मानो आरसी॥यह उत्प्रे-
क्षा लंकार कह्यो प्रसाद को और हेतु कह्यो
ताते समाधिलंकार कार्य कारनांतर जोवात

यह समाधको लक्षनहै ताते। श्रीराधाजू प्र
सन्न भई अधर सुधा रसुधा प्रसाद दीन्हो
ताते अलंकार व्यंग्यहै॥ यह स्वतः संभवी
के उदाहरन मैं जानिबो॥ दूसरो कवित्त॥ उम
डि घुमडि घन अंबर अडंबर लौं वाहू लग अते
घन घटा घोर घिरिहै॥ चिंता मनि कोहू चि
त चिंता जिनि करौ कोऊ काहालौं विचा
रो धौं विचारो दूंदु चिरिहै॥ एकको काहू है
कोटि धरा धर धरे रहो जौलौं कोटि विधि-
को उपज फिरि फिरिहै॥ जानो जानि बडे र
पर मान भारी गिरिहै सोमेर कारपर परमान है
न गिरिहै॥ २४॥ इहां परत द्रव्य पर मान र
कारि दिखायो यह विरोधालंकार करि नंद
पुत्र जे आपु तिन कहा अघटन घटना प
टीयत्व साधारन धर्म करि आपनो नारी
को नारायण साम्य व्यक्ति करत भये हैं॥ शब्द
अर्थ शक्ति उद्भव अरथ बारह भेद विचा-
र॥ सो पद वाक्य प्रबंध गत छतिस भये ति-
नि हारि॥ २५॥ सिद्ध कहत सब सकल फल
देत तुरंत ज्यों नाम॥ व्यापक अस गुन भूप
जसु धवल कियो श्रीराम॥ २६॥ इहां व्याप

हेली॥तैसे फूल रचीजिनमाल गुहै मनिमे
रिये कंठमे मेली॥माल दैहौंमुहे द्रुमवेलि बीची
यह हास विलास की वेली॥मोहि दता हूं म
वेली कितै वह पूरन इंदु मुखी अलवेली
४९॥सवैया॥वेलसे चाह करोजन वेलीकीरा
खी कहूं जावकी लौं रतिचेटी॥मीत अशोक
विलोकी कहूं जिनहै जग रूपकी रासि लमे
टी॥पीत दुकूल लसे पट भूषनश्री मिथिला
महिपालकी वेटी॥सुंदर रूप धरे जनु दामि
नि राजत दामिनि दाम लपेटी॥५०॥तैं मृग
देखी कहूं मृग लोचनी बोलि कितै अब जा
इ छपी है॥छाडि छवीली घने पीर कानन
छाती विछोह के ताप तपी है॥तैं नहिं जान
त तेरे छुटे पलु तेरो जीवन मोह तपी है॥चौ
लिते हरिकै याको गुमान जो बोलि कुरंग
मे जल पीहै॥५१॥ऐसे सबै वनको मृग अं-
गन पूछत जानकी जीको पुकारै॥व्याकु
ल है मुरझाइ गिरे उछलै मनि नैनन नीर
की धारै॥दुक्ख महा रघुवीर लहैं जनु मूर
छा आवति जाति अपारै॥लछमन वे उपचा
र जो भ्रुव भाई को दीनन हारि सम्हारै॥५२॥

मेरी भई यह भांति दसा कृत रैन छपी जो अ
जौ नहि आई॥राम जू ऐसे कह्यो कदलह
न सीताजु ऐसी करी निठुराई॥बाघन बीच
मृगीसी भई सु कहा मृग लोचनी आपदा
पाई॥मैं जिनको अपराध कियो तिनरा
कास ईदल घेरि कै खाई॥४३॥इहां दूसरेक
बित्तते अंत को कवित्त छोडो प्रबंध कोऊ
न माह व्यंग्य है॥उभय समुद्भव को उदाहर
न॥दोहा॥लसै हारके मध्य रवि सोभो च
रे विसाल॥ह्वियेराखिवो योग्य है यह मनि
नायक लाल॥४४॥इहां वाच्य अरु व्यंग्य
अर्थ के उपमानो पमेय॥भावते उपमा
लंकार व्यंग्य है सलक्ष्य भेद यों कहे एका वा
लीस॥दोहा॥असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि
आनि रसा दिक चित्त॥दुतै आदि पदलक्ष्य
के तिन्हे गनावत मित्त॥४५॥प्रथ महि रस पु
नि भाव गनि तिनको पुनि आभास॥भावसां
ति अन भाव को उदै बखानि प्रकास॥४६॥भा
वसंधि पुनि सबलता भावन की मन आनि॥
असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनके भेद बखा
नि॥४७॥अर्थांतर रस स्वर रूप निरूपनं॥*

गनि विभाव अनु भाव अरु संचारी नमिला
इ॥ जित थाई है भावसो सोरस रूप गनाइ॥
४९॥ काछुक यथा काम अधिका यहतीन
हु को काम कोइ॥ व्यंजन कोन लख्यो परै
तौ अलख काम होइ॥ ४९॥ भाव लछन॥
दोहा॥ मन विकार कहि भावसों बरनवान
नारूप॥ विविध ग्रंथ करता कहत ताको रू
प अनूप॥ ५०॥ जो नहि जाति विजाति सों
होइ तिरस्कृत रूप॥ जब लग रस्तु तब ल-
ग सुथिर थाई भाव अनूप॥ ५१॥ काव्यो-
दित रामादि सुख दुख थल भव जात॥ मन
विकार संचारि तजि यह थाई थिर बात॥
पावै ल्यावै आपने रूपहि औरु अखेद॥ जो
विरुद्ध हू भाव नहि रहि विछेपका भेद॥ ५-
५४॥ सो थाई है समुद सो जब लगि रस आ
स्वाद॥ तब लगि यह वह रहत है जो थाई अ
वि वाद॥ ५५॥ प्रथ महि रति अरु हास पु-
नि बहुरि सोक गन क्रोध॥ पुनि उत साह
जुगुप्स पुनि विसमय सम नर बोध॥ ५६॥
यह थाई नव भेद जो ताको जु है निदान॥
कारज सह कारी जगत कवि तामे कहि आन

५७॥सनि विभाव अनु भाव पुनि संचारीय
हु लाय॥विभाव नादि अवलोकि कै व्यापा
रन अभि राम॥५८॥तिन तिहुकै अवलो-
किकै कीरि व्यापार गनाइ॥विभावना अनु
भावना संचार ना वनाइ॥५९॥सव जन सा
धारन त्रिविध व्यापारन सो तीन॥सहृद
य ह्रिय विर भावको व्यंजन धरम नवीन॥
६०॥साधारन व्यापार वल सव साधारन हो-
इ॥नियत प्रमातहि मै यदपि तहां अपर मि
ल होइ॥६१॥महा नंद उल्लास वह सुहाती
सेवत कोइ॥रसखान सुखदजु ग्रंथमै रस
नि रूपना सोइ॥६२॥रत्या दिक वो हेतु जे का
ज और सह चारि॥जगमै तेई लकत मै आ-
न नाम निर धारि॥६३॥विभाव नादि को
लौकिक व्यापार निरूपित॥लै विभाव अनुभाव अरु
संचारी धरि चित्त॥६४॥साधारन व्यापार
सौं सवा साधारन जानि॥लै विभाव अनुभा
व अरु पुनि संचारि वखानि॥६५॥थाई सा
माथहु कौ ह्रिय वसल वासना रूप॥व्यंग्य वि-
भवा दिकनि मिलि रसहै लसत अनूप॥६६
प्रथम कहत श्रृंगार के विभा वादि इत आ-

नि॥ आगे सिंगार सलन के कीहहौं सिंगार जा-
नि॥६७॥थाइ हेतु जग मध्य जो कथित म-
ध्य सुधि भाव॥ आलंबन उद्दीप तो द्विवि-
ध प्रसिद्ध गनाव॥६८॥नायका ल०॥दोहा॥
आलंबन शृंगार को तिय नायका बखानि
बालनि प्रवीन लिलाखिनी सुंदर ताकी खा
नि॥६९॥कवित्त॥बरन मैं विधि आंनि गो-
री की नजानी जाति गोरे गात दोरी सारी के-
सरि के रंग की॥चिंतामनि कहै वात चंद्रिका
सी हासी लसे निसि नखतावली मुकता पां-
ति मंग की॥मानौ ओस बुंद लाल बिंब पर बि-
लसतु अधर की आभा मुकता हल के सं-
ग की॥पग परवो सरंग आंगन अनूप ओप
आंगन मै ठाढ़ी मानो अंगना अनंग की७०
दोहा॥ दिव्य अदिव्य कहे सुकवि दिव्या दि-
व्य विचारि॥त्रिविध नायका जगत मैं मं-
थन बहु निहारि॥७१॥दिव्य देव तिय जानि-
ये नारि अदिव्य बखानि॥ अमर नारि भुव
अवतरी दिव्या दिव्य सुजानि॥७२॥नरवते
दिव्य तिया बरन सिखते विबुध अदिव्य॥
नरवते सिखते बनिये जो तिय दिव्या दिव्य ७३

ह्हांनख सिख वर्नन जानवौ ॥ दोहा ॥ प्रथम २ सुकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि सामान्या समुझिये यों कवि लसत बखानि ॥ ७४ ॥ स्वकीया लछन ॥ दोहा ॥ जो अपनेही पुरषमै प्रीत वंत निरधारि ॥ काहतस्वकीया नायका लछन सुकवि विचारि ॥ ७५ ॥ सील सुधाई लाज जुत गुरजन सुकवि विचारि ॥ प्रीतम को चित हांनिसो काही स्वकीया नारि ७६ कवित्त ॥ चिंता मनि सखी कोऊ सीख देति काहे जब समता के जानिहो पीतम सो जायसैं जीवको वारने काहि वरज्यो चहे लजाइ काहि पैन सखी काछू सह चरी तियासौं ॥ गुरजन २ संमत सकल आचरन वाको वरनत होत २ लाह चाहिए सौं ॥ पीउ जाने गुरजन हूंमे नवाल जाने गुरजन जाने काहा वोलि जाने पियसौं ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ मुग्धा मध्या प्रगलभा तीन भेद निरधारि ॥ सुभग स्वकीया नारिके लाकवि ग्रंथ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जोवन अंकुरित सो मुग्धा वर नारि ॥ दुहू वहि क्राम संधिमै लव लव संधि निहारि ॥ ७८ ॥ उवन चहल जीवन लखी सुंदरि वाला निकेत ॥ मंद मधु

किल कूक सुनै उमगै मनि और सुभाउ भ
यो अब ही को ॥ फूली लता द्रुम कुंज सुहात
लगे अलि गुंजत भावत जी को ॥ कारन कौ
न भयो सजनी यह खेलु लगै गुडियान
को फीको ॥ काहे ते सांवरो अंग छबीलो ल
गैहिय ह्वेत नैननि नीको ॥ ८४ ॥ विदित जो
बनी काहू की पूरब पुन्य लता सुतौ बेलि
अपूरब ह्वै उलही है ॥ सोने सो जाको स्वरू
प लखै घर पल्लव कांति कहा उमही है ॥
फूल हंसी फल हैं कुच जाहि के हाथ लगै
सु कृती सो सही है ॥ आली कियौं सुनि कै
बतियां सुरसा दूतिया मुख नाइ रही है ॥
८५ ॥ विदित काम ॥ कवित्त ॥ काम बालानि
की चोप चढ़ी चित अंग अनूपम रूप भ
ई है ॥ केसरि सो थो सुहान लग्यो मनि चं
दन केलि बनाइ दई है ॥ भौंह उचाइन चा
हु कै नैन कछू मुरि कै मुसक्यानि लई है
मोहन सों ठिलागी अठिलानि सो बैसउ नी-
की ठौनि नई है ॥ ८६ ॥ केसरि बारहि बार
उतारत केसरि अंग लगावनि लागी ॥ आइ
है नैननि चंचलता दृग अंचल बाम छपा

वन लागी॥ दूलह के अवलोकन की वाम्म दानि भरो रुचि आवनि लागी॥ बोलत ऐसी नवा ते बतियां मन भावन की मन भावन लागी॥८७॥ नवोढा लक्षण॥ दोहा॥ जो लज्जा भय पर धीन रति सो तिन वोढा सोइ॥ रतिमे पतिहि पत्याइ कछु लिस्ब्र अत बोढा र होइ॥८८॥ नोल वधू के रति समै लज्जा अति अधिकाइ॥ अति सुख दायक होति तब जब कछु पतिहि पत्याइ॥८९॥ सवैया॥ रावतिजो नहिं तासु है नैन सुवैन काहु थि बसै मिलि भाखै॥ बांह गहे सिसिकारि भजे पकरे कासों हग नीरनि नाखै॥ यौं न वोढा वधू लखकी वेकौं सो अपने मनमें अभिलाखै॥ एक छिनौ थरिबौ थिर ज्यों जल बिंदु पुरैनि के पात मे राखै॥ ९०॥ बालके मिलन आस राइ चित्र साल लाल लाल बात पल एका धीरज न हैं॥ सखी सब ल्याई नवला को छल बल लखि छबी लौ छबीली के सकल अंग हेरे॥ कोरी ओर बरी प्यारी सखी सेज ऊपर सु आखिन के ऊपर है आस यों हर हेरे॥ चारु ओर नव्य म-

शुकार ग्रकुलाने मानौ छल की सरोजन
के ऊपरहै लहेरै॥ ८१॥ विश्र ब्ध नवोढ़ा॥
सवैया॥ लालकी दीठि बचाइ के ब्बालवि
से न्बैहै दूरि प्रदीप की बाती॥ पीके हियेह
रव सुंजखो सूतौ पूछतही कछु बात
सुहाती॥ लागत ही तन मै पतिको कर चं
द मुखी न्चित चौंकि सकाती॥ सोईहै ग्रा-
इकै पीतम साथपै सुंदरि हाथ छपाइ कै
छाती॥ ८२॥ सोइके मेरी प्रतीतिलै देखो-
ले भाजिन जांउगी योंही डरो जिन॥ नेकु
दया करौ काहे खि ग्रावत रातिकी भांति
सो ग्रंग भरो जिन साप तिहारे हौ पोढ़ि
रहौ पर छाती के ऊपर हाथ धरो जिन॥
जो कछु की केसो काल्हि परो पिय पायप
रों कछु ग्रानु करो जिन॥ ८३॥ कोमलको
प॥ सवैया॥ ग्रोर तियाकी छुई छतिया
पिय नेल वधू सो कहूं लखि पाई॥ ग्रां-
खि ग्ररोरखे है ग्रंचल ग्रोट हगंचल ताकि
के भौंह चढ़ाई॥ ग्रंवर ग्रोट छपाइके ग्रं
गन पौढ़ि रही पलका रिसवाई॥ मेरी तू प्या
री है प्रानहुते मुंह चूमि लड़ाइये कांठलगा॥

है॥८४॥मध्या लक्षन॥दोहा॥जातिय के हिय होतुहै लाज मनोज समान॥ताको मध्या कहत हैं सिंगार सुकवि सुजान॥८५॥सवैया॥ पेखो चहै पियको बिनओट बनै न कछू बि न घूघट खोले॥भावेन संग छुयो पतिको सकु चैनकरै कछु काम कलोले॥च्याहति र बात वाहौन कहौ पर जातरहौन रहै अन बोले॥भूलतु है मन प्रान पियारी को लाज म नोजके बीच हिंडोले॥८६॥दोहा॥कहि आ रूढ़ो जोवना आरूढ़ मदना जानि॥पुनि विचि त्र सुरता कछू प्रगलभा बचना मानि॥८७॥ आरूढ़ जोवना मद उदा हरन॥सवैया॥मन नैन बिसाल रसाल चितौन पै लाज सुभाव र लए अपनो॥कचला बेलचै कुच भारसौं लं वा सवै तन कंचन रंगगनो॥पगपैंजन औ बि छिया झलकैं कल किंकिनि नेवरनादघनो यह पूरनजोवन चंदमुखी चली आवति मं द गयंद मनो॥८८॥अरूढ़ मदना मध्या॥* कवित्त॥अवलोकनि मे पलकौं न लगें पल- कौं अवलोकि बिना ललकैं॥पतिके परिपूर न प्रेम पगी मनि और सुभाउ लगैन लकै॥ति

पकी बिहसैहि बिलोकनि मे मनि आनंद आल
नि यों झलकै ॥ रसवंत कविगन की रसु ज्यों आ
रद रानके ऊपर है छलकै ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥
चैतकी चांदनी की यों चंद अवलोकन ते छीर-
निधि छोरिको पूरन पूर उमगो ॥ चिंता मनि र
कोहै मन आनंद मगन है कै बिहरत दंपती अ
रूप प्रेमसों पगो ॥ अध खुली अखियां सुरति
सुरखि रसबस मानो और अध खुले कमल-
नि मै रखो ॥ प्यारी के सुढाल तन स्रम जल
बिंद सोहे कनक लता मैं मुकता फल मनो
लगो ॥ १०० ॥ प्रगल भा जोवना यथा ॥ सवैया ॥
ऐहै प्रवीन महा सिगरी परिहास कै लच्छन ल-
खगुनैगी ॥ मोसौं सखी रिहि बोलन की चतुराई
कौ बैन बिचारि चुनैगी ॥ ठेका रहौ मति बोलौ
आबै जानि पाहुन पैंजनि औन उठेगी ॥ जानती
हैं सगरी सखियां मेरे नेवर की झन कार सुनै-
गी ॥ प्रौढा कौ लक्षन ॥ दोहा ॥ केलिकला मैं चतुर
अति प्रीतम सौं अति प्रीति ॥ लाजत जैहै मद-
न बस प्रौढा की यह रीति ॥ * ॥ प्रौढा भेद ॥
दोहा ॥ प्रौढा जोवन प्रगलभा मदन मत्त पुनि
जानि ॥ कोहू पति प्रीति मती सुरति मोद परवस ॥

मानि॥१०३॥प्रौढजोबना प्रगल्भा ॥सवैया॥
कोटि विलास कटाक्ष कलोल बढावै हुलास
न प्रीतम हीतर॥यों मनि याहै अनूपमरूप
जो मेनका मैन बधू कहि दूतर॥सुंदरी सारी
सुपेद मै सोहत यों छवि ऊंचे उरोजन कीतर॥
जोबन मत्त गयंद को कुंभलसे मनु गंग तरंगनि
भीतर॥१०४॥आंखिनि मूंदि वेके मिसि आनि
अचानक पीठि उरोज लगावै॥ क्योंहू कहूं मुस
क्याइ चितै अगराइ अनूपम अंग दिखावै॥
नाह छुई छल सौं छतियां हंसि भौंह चढाइ
अनंद बढावै॥ जोबन के मद मत्त तिया हित
सौं पतिको नित चित्त चुरावै॥१०५॥ रतिप्री
ति मती को उदाहरन॥सवैया॥लीनसी ह्वै त
न प्रीतम के सुभरै अतिआनन सौं जियको॥
मनि आपुहि ते मुख चुंबन कौ सु हरै मन मोह
न के हियको॥छन मान बिलासति है छनदै
मुछना छनदै सुख यों पियको॥रति केलि बि
लासिनि छोडिकै और नभावै कछू लछमी ति
यको॥१०६॥रत्या नंद परवसा॥सवैया॥प्रीतम
कौ रति रंग समै सुमनो रसको बरसा उनई है॥
ऐसे भुजा भरि भेंटि रही जनु दै तन की कोरए·

कालई है ॥ सुंदरि मोहन के मुखसों मुख लाइ अ-
नंद में लीन भई है ॥ ऊंचे उरोज लगाइ हिये जनु
अंगन बीच बिलाइ गई है ॥१०७॥ दोहा ॥ मध्या
प्रौढा मान में कवि मनि त्रिविध बखानि ॥ धी
रा और अधीर लखि धीराधीरा मानि ॥१०८॥ व्यं-
ग्य कोप प्रगटै जुतिय मध्या धीरा होइ ॥ को-
प बचन बोलत प्रगट मध्य अधीरा होइ ॥
१०९॥ मध्या धीरा ॥ सवैया ॥ सांझ ते चंद को-
हंत उयो सन मेरो है साथ रहे तुम न्यारे ॥ बैठि
बची मनि मंदिर बीच लगे सब दीप प्रकास
अध्यारे ॥ ख्यालहि पाइ सुधा मय पारना नैन
चकोर रहे मोहन प्यारे ॥ दौन अनूपकला प्रग-
टो अकलंक कला निधि मोहन प्यारे ॥११०॥ म
ध्या धीरा ॥ कवित्त ॥ काहें जागे रैन आस निपट
उनीदे हौ जू सोइ रहौ प्यारे बिछौ आछौ पर-
जंक है ॥ खेलत हौ चांदनी में ग्वालन के संग काहू
ग्वालन को नाम लीजो काहा काहू संक है ॥ योंही भले
मानि लेउ गाहली कलंक हौ को देख्यो कहूं चिंताम
नि रति हू को अंक है ॥ पीत रंग अंबर सुनील रंग भयो
लाल भूठो हौ गुपाल तुम्हें काहे को कलंक है ॥ ११४
दोहा ॥ बचन सहित के संग कहि कोप प्रकासै नारि

मध्याधीराधीरतिय [illegible] कह्यो विचारि
११२॥ उदाहरन॥ सवैया॥ रातिदिहै सजि लाल कहूं
रसिहूहां हुं दुवाल बियोगलहैं [illegible]
हय होत सरोस तिया कुम देन कहै हैं॥ लाल
भये इत को रति आनि कै यों अंसु वानवो बुं
द रहे हैं॥ [illegible] मनौ सिथिले बिबुरे
जन दाडिम बीज रहे हैं॥११३॥ दोहा॥ प्रौढा
धीरा लेहु नहिं कोपै धरै प्रकास॥ पति को
अति आदर करै रतिते रहै उदास॥११४॥ सा
वहि [illegible] उदाहरन॥ सवैया॥ बोलति काहे
न बोल सुने मधुरी बतियां मन मोहन भावें
बोले कहा कछु चित्तमे है दुख चित्त चढ़े कछु
लागती हावें॥ ठाढ़े हैं लाल बिलोकि नबाल
क्यों तेरी बिलोकनि को अभिलावें॥ लाल भ
ई बिन काजहि आजु रहे सो कहा मेरी दूख
ती आवें॥११५॥ सादर धीरा॥ सवैया॥ आजु
कों पलकाते धरी पुहमी पर माथे हमारे न
पाइ धरो॥ कह बोलो सखीन सों संभ्रम सों हं-
सि बोलि हमारे न ताप हरो॥ बिनजाल हो पान
न आन को मान सों आन भुजा भरि अंक भरो
दुखदेत सबै बिन आदर ज्यों यह आदर आप

नो दूरि कीनी॥११६॥सत्रु हास धीरा॥सवैया॥
बोलोगी बैनतो कानन चैननबोलोगी बैन अ
नंद भईहौ अंचल सों मुख मूदि रहो तव आ
नमै जो धरि चित्त लईहौ॥बैठति काहे न
हौ ढिग सुंदरि मोको हई सुख रास हईहौ।
मोहि गनौ निज दास मनो तुमकों विन काज
उदास भईहो॥११७॥जावक रंजित भाल र
किये मन भावन भावती गेह सिधारे॥दूरिते
भौंह कमान चढ़ाइकै सुंदर नैन कटाक्ष तेड़ा
रे॥आइकै वालम बांह गही ढिग चंद मुखी
मुकि कै भभकारे॥चंपक मालसी कोम
ल वाल सुलालकै मैली की मालसों मारे
११८॥दोहा॥प्रौढ़ा धीरा धीर तिय बोले धी
र अधीर॥चिंता मनि कवि कहत है समु झा
त वुद्धि गंभीर॥११९॥कवित्त॥मेरी कहा च
लीहौन आपली कहति वात वड़ी भली कीयेकछू
काहूसो निवाहिजो॥मोहि तजि गए जाइ वाकों
सुकरम कियो यह कौन धर्म तजत अवाहिजो॥
चिंतामनि कहै क्यों न वाकी सुधि लेत जाइ जाको
मनकै व्याकुल करि ताहिजो॥जापै राति मानि
प्यारे आए हो हमारे घर एको घरी करौ वाकी

प्रीति कौ सुलाहि जो॥१२०॥दोहा॥जहां होति है द्वैतिया तहीं रीति यह जानि॥मुग्ध है अ-भिंक्र घट व्यारे ते ज्येष्ठ कनिष्ठा जानि॥१२१

कवित्त॥एक पलका पै बैठी सुंदरि सलोनी दोऊ चाहिवे छबीलो लाल आयो रतिकेलि पर॥चिंता मनि कहै दिग वैठो आनि पीतम पै काहू सों कछू न काहि सकत दुहूं के डर॥सुख के मनाइवे कौ एक कौ दिखायो लाह विपरीति रति कौ सरूप लिखि चित्र पर॥जौ-लौं सकुचन वह आंखें मूंदि रही तौलौं प्रान प्यारे प्यारी कौ चुम्बन पर रच्यो कर॥१२२॥प-रकीया कौ लच्छन॥दोहा॥प्रीति करै पर पुरु-ष सों परकीया सो नारि॥ऊढ़ा और अनूढ़ गति सोई द्वै भांति विचारि॥१२३॥ऊढ़ा होइ बि-वाहिता अबिवाहिता अनूढ़॥परकीया द्वै भां-ति की जानत जगत अमूढ़॥१२४॥ऊढ़ा कौ उ-दाहरन॥सवैया॥अति सासु भरै ननदी स-त रातल है कुल कान की हानपरी॥घर बाहि-र सों वलि वैर बढ़ौ सु अजौ तुमकौ नहि जा-नपरी॥मलि मांझ गली तुम बांह गही हौ छु-ते कौन अही यह बान परी॥वह बात कही

हुती कानन में सुनी कानन कानन आन परी १२५॥ दोहा॥ सुरत गोपना चतुर कहि कुलटा बहुरि बखान॥ कहत ललिता सुकबिजन अनुसैना उर आन॥१२६॥ सुरत गोपना को उदाहरन॥ कबित्त॥ ग्रीखम मैं सूखी कूप सरवर सरवे सब जल नहीं भिर नाले आवत नगर मैं॥ तहां जात आवत लगत कांटे भारन के होत जेहीं होंही पानी पीवति हौं घरमै। अति दूरि हीते भारी गागरि लिआइबे सों छूट पसीना अंग कांपै थर थर मैं॥ कहति हौं पुनि सासु ननद सुबोल मोपै जाऊंगी तो आऊं मैं भर दुपहर मैं॥१२७॥ दोहा॥ बरनत सुकबि जु नायका द्विविध चतुर सिरमौर॥ बचन चतुर कहि एक पुनि क्रिया चतुर पुनि और॥१२८॥ बचन चतुर को उदाहरन॥ कबित्त॥ एहो तुम कोहो नेकु धरे ध्यान रहो देखो चिंता मनि बागन मै को पै लहलही है भनु भलो परम है है देव आरचनकाज सुंदी चमेली की बाली कछू कल ही है॥ बाग मैं अध्यारी डरु लागतु है जात उत ताते हौं कहति तू हां को लोग और नहीं है॥ कैसे करि जाऊं फूल ले

नहीं अकेली इहांतो आछे आछे फूलनकी
वेली फूल रहीहैं ॥१२९॥ किया चतुर को उ
दाहरन ॥ सवैया ॥ कैसेहु देव वधूनमें कोउ न
होइ तौताकी वरावरि वाछें ॥ सोहांतिहै नखते
सिखलों मनि अंग अनूप सिंगारनवाछें ॥
सील वढाइ जनाइ विनै चलेसासु औ नंद
जिठानीके पाछें ॥ नैनके सैननि मोहनकों
मुरिकै मुसक्याइ विलोकति आछें ॥
१३०॥ दोहा ॥ जहां प्रीति परपुरुषकी प्रग
टित जगमें होइ ॥ ताहि ललिता कहत हैं
चिंता मनि कवि लोइ ॥१३१॥ सवैया ॥ लोक
की लाजमें काज कहा मन मोहनते कुल
कानि डगीहैं ॥ वोलैं कहा हम वावरी हैं वह
सांवरी सूरति देखि ठगीहैं ॥ जानति नंद जि
ठानी औ सासु चहूं दिसि मेरे दवारे जगीहैं
जाने सो कोउ हजार कहो हम नंद कुमार
के प्रेम पगीहैं ॥१३२॥ दोहा ॥ वहु पुरु षनि
की केलिको जाके मन अभिलाख ॥ कुलटा
तासों कहत हैं सव सुजान कवि लाख ॥१३३
सवैया ॥ छैलनि गैलमें आवत देखिकै झां
कि झरोखनि रीझि रिझावै ॥ चंचल अंचल

डारे रहै अंगराइ अनूपम रूप दिखावै॥ ला-
लूट की गति नैनन की निरखै निरखै बिन
चैनन पावै॥ जोवनके मद मत्त तिया तजि
काम की केलिसु औरन भावै॥१३५॥ अ-
नु सैना॥ दोहा॥ संकेत स्थलके नसत भावि
स्थान अभाव॥ मीत गयो हो ना गई जो पीछे
पछि ताव॥१३५॥ होइ अनु सैना त्रिबि ध
बिधि बरनत सबका बि राइ॥ कामते देत उ-
दा हरन सब सज्जनन सुनाइ॥१३७॥ प्रथम॥
कवित्त॥ रुद्दे है सजीव कोउ कछिगो इ नवेहै
त अधरस लेत कौन ठाट ए ठाटत है॥ सिगरे
बाराई इहै इनके कहा सुभाइ औरनको तो हाइ
हाइ हियरा फाटत है॥ चिंतामनि सज्जन इहां है
तिन्है पूछदेखो आगेन्या उन्है है वेतो इनको डाट
त है॥ देखइहि देस आली खर निरदई लोग हरे
हरे रूख अरहरके काटत है॥१३८॥ दूसरी सवैया॥
आली अटारी चौबारे त्यौ मंदिर वे ब्यौ सन सुहावन
नीके॥ खेलन को तुमको थन ठौर है जैसे उ-
ते सुख पावै गी नीके॥ हैमनि सुंदर लोग उ-
जा गर नागर नेह पगे परतीके॥ ज्यौं इहां
त्यौं लसु सरि तिहारी मैं बाग वड ढिग है

सिखीके ॥१३९॥ तीसरी ॥ सवैया ॥ आपने भी
त परोसी सों सुंदरि सूने चौबारे सनेह दरखा
नी ॥ हां उन बोलि कपोत की बान अटा पर
आनि दूखारन ठानी ॥ आगालै है भरता यह सा
नि मनोजके बान लगे यह रानी ॥ आइ गा
यो तनमे परसे दुपती पति संग खरी अकु
लानी ॥१४०॥ मुदिता ॥ सवैया ॥ है दिन को
पथ तीरथ न्हान को लोग चल्यो मिलि कै
सिगरोई ॥ सासु बहू सों कह्यो यों रहौ घर
और रहे नहि राखिब कोई ॥ सुंदरि आनंद
सों उमगी यह चाहति ही सु भयो अब सोई ॥ प्रेम
सों पूरन दोऊ जने घर आपु रही को रह्यो
नन दोई ॥१४१॥ दोहा ॥ परकीया अविवाहि
ता सुतो अनूढा नारि ॥ सब ग्रंथन को देखते
कवि मन कहत विचारि ॥१४२॥ सवैया ॥ *
जामे कछू मनि सोचु न कोचन आछियै
सोतो कछू लरकाई ॥ आवत हीं दृग नैनको
रस मोहन के बसि को लल चाई ॥ देख वि
ना कल नेकु नहीं अरु देखें तो गोकुल गाव
च बाई ॥ जामे हंसे हू कलंक लगे यह कौन
धों बैस बिखा लिनि आई ॥१४३॥ दोहा ॥ *

काहि स्वाधीन प्रिया बहुरि बासक सज्जा जा
नि॥ बहुरि बिरह उत्त कंठिता बिप्रलब्ध पु
निमानि॥१४४॥ पुनि खंडिता बखानि ये
कलहंतरिता नाम॥ पुनि कहि प्रोषित
भर्तृका अभिसारिका सुवाम॥१४५॥ सोस
ब भेद तिहून के भेदन हू के होत॥ जे जैसे
संभवत ते तैसे लहत उदोत॥१४६॥ सो स्वाधी
न प्रिया कही जाको नाह अधीन॥ सुतो सदा
आनंद मय बरनत सुकवि प्रवीन॥१४७॥

मुग्धा स्वाधीन पतिका उदाहरन॥ सवैया॥
ऐसी छवि मोहि दिखाइ भरी वहै सो छ
वि पाइ कही सुर अंगनि॥ चलि नौलवधू
मनि नैन चकोर से ज्यावै कहा है सुधारस
सींचनि॥ अंदर लाल मैं यों मुख ज्यों प्रतिबिं
बत चंद्र सरस्वति बीचनि॥ मानो उदै गिरिकं
दरा अंदर इंदु रह्यो कर बिंद मरीचनि॥*
१४८॥ मध्या स्वाधीन पतिका॥ सवैया॥ फू
ल्यो फल्यो मृदु बाग बन्यो मनि मंदिर की ग
ति त्यों चटकीली॥ प्यारे यों प्रेम की खानि खु
ली अँखियाँ बिलसैं मुसक्यानि रसीली॥ कां
चन के रंग अंग लसैं पिय ते रही रंग रगी

है रसीली॥ मै रहौ संग विहा कारिहे अब लाजसों काजु काछून छबीली॥१५८॥२ प्रौढास्वाधीन पतिका॥सवैया॥ आपुहीण हून देत महाउर वेनी हुंहै अरु वेनी बुलावै आपुही वीरी वनाइ खवावै अनेका विला सनि रीझि रिझावे॥तेरी सखी सनि आपने मित्र सों ते रहौ प्रेमकी वातें चलावे॥ तोते१ त्रिलोकमें को वड भागिनि जोलिय योंपिय कोवस पावै॥१५०॥ देखैन कैसों सुख मान घनो सनि जासुख मानमौ सोर भयौहै॥ सांवरो संदर जोसिगरी छपलाजिन को चि त चोरिलयौ है॥ आपने आइ अटामें सहू घन वोरि अटान को सोर भयौहै॥ नंद कि सोर भयो दलको वोर सुतो सुख चंद चकोर भयौहै॥ सामान्य स्वाधीन पतिका॥ दोहा॥ या पर नेह निवाहुतू हैयह लिपट ललाम तन धन मन सब तोहिहै सुही वारी सब वाम १५२॥ पियको आगम जानिकै अंग सिंगा रै वाम॥ सौध सेज संदरि रचै वासक सज्जा नाम॥१५३॥ मुग्धा वासक सज्जा॥ सवैया॥ मंदिर सुंदर धूपै सुधा मय जोन्हकी जोति

जहां अधिकानी ॥ प्यारी सिंगारी प्रवीन स
खी भनि मोतिन की सुखमा सर सानी ॥ से
ज रची पद्म पोनसौं आपिय आगम वेरी
जैवे नियरानी ॥ हेरी अली सौं चली हंसि
नोल वधू मुखकी लल वादू लजानी ॥ १५४
मध्यावा: ॥ सवैया ॥ मंदिर धूप करे से सुमं
दिर इंदिरा देवी प्रसन्न निहारति ॥ सेज सं
वारे दुवाल मैं आपु रुकंतहि आपुन अंग
सिंगारति ॥ फूलनि हार सुगंध रच्यौ जन
भैरसे ओर सखी को सुधारति ॥ इंदुमुखी
पिय आगम औसर बैरति केलि की साज
संवारति ॥ १५५ ॥ प्रोढ़ावा: ॥ सवैया ॥ चंदन
लीप्यौ मनोहर भौनसौं धूप्यौ भले अगरी
द्रव धूपनि ॥ इंदु कला सित सेज रची पिय
आगम सुंदरि सेद सरूपनि ॥ अंग सिंगार
धरे गहने जवने मुकता मनि वृंद अनूपनि
धाम मैं ऐसो रखुल्यौ वह मंदिर मंदिर मा
नो खुल्यौ रस कूपनि ॥ १५६ ॥ परकीयावा
सकसज्जा ॥ सवैया ॥ सेज रची मनि मंजु प्र
सूननि आवहीसुख पाइहै जोपी ॥ देखत
सो भग धाम बनी जिन काम वधूहकीदीपति

सखी नभ रथीन सौं श्याम को काम हितो मकुला
यौ जो मन बीच विचार करै उनको इन मोहि
वियोग दिखायो ॥ जानति हौं न कहा गति है
मेरे प्रानन को पति कै विलमायो ॥१६१॥
प्रौढा वि:उ० ॥ सवैया ॥ आजु विलंब भई
काहु काज मे औरे पै प्यारे को चित्त न जैहै
कोकपदी वहु जाति वडी तुम पीउ तुम्हा
रे प्रभात मे ऐहै ॥ आनंद व्हैहै री कोमकउरे
जन नैन सरोजन सौं सुख पैहै ॥ तेरो क-
ह्यो सब व्हैहै सखी यहु पूरन चंद जो जीव
न दैहै ॥१६२॥ जीवति कौं अब भारत मा-
र बडे दुख जामिनि जाम बिताई ॥ देखे बि-
ना जुग सौं पल जातु सुजान के प्यारे
हौं त्यौं नल फाई ॥ हौं लखि हौं मुसक्यात
मनो हर श्री मुख चंद कवै सुख दाई ॥ आ-
द परौ धौं कहा गुर काज जो बालम आ-
जु विलंब लगाई ॥१६३॥ परकीया वि:
सवैया ॥ इंदु उदै पहिलेही संकेत मैं आ-
गेही दूती यहै ठहरायो ॥ नागरि आइनि
कुंजके भीतर नागर नेकु विलंब लगायो
तौलग वाके हजार विचार भए अति

को मेन जगायो ॥ चौंकि लखे नहि लाल सौं
प्रभु गोकुल चंद छिते छिल मायो ॥ १६४
समान्या वि॰ उ॰ ॥ सवैया ॥ जाइ दरी चलि
ल्याइ उन्हें यह बोलवो ताहि उहै तजि आप
हि ॥ आगम तेरो तुम्हें रहे मेरो हौं चाहति
एक निहारे मिल्यो पहि ॥ लालको मोहि उ-
ताल मिलाउ कहाव रहे उर चाह अभाप
हि ॥ मोतिन हार मनोहर हो वह मेटे सो
मेरे वियोग सतापहि ॥ १६५ ॥ विप्रलः ॥ ल
क्षण ॥ दोहा ॥ जाहि बोलि संकेत पियजा
य आन तिय पास ॥ ताहि विप्रलब्धा वधू
कहि कवि करहिं प्रकास ॥ १६६ ॥ मुग्धा
विप्रलब्धा ॥ सवैया ॥ पीतम भीतर जानि स-
खी निजपौलिके मंदिर केलि पठाई ॥ पीउ
गयो गृह मध्य छुपे मग और पै इंदु मुखी
इत आई ॥ जोवन चंदकी चांदनि मै मग पे
म को चाहि हिये अकुलाई ॥ सेज निहारि
के सूनी सरूप गुमानके मंगकी भीति लखाई
१६७ ॥ मध्या विप्रलब्धा को लक्षण ॥

॥ सवैया ॥

इंदु मुखी मनि इंदुकी रैनि बाढ़ गुर सेवनहीं

न मुख छबि जगमगी है॥ चमेलिन की १
चाली सौं रचना अनूप रची मंदिर मैं चंद
की उदोत जोति जगी है॥ वह लौं अधपूले
फूल हंसत हैं याहि जानु जग की ठगनी १
काहू भले ठग ठगी है॥१७१॥ खंडिता लक्ष
न॥ दोहा॥ आन वधू रति चिन्ह धरि आ
वै जाको पीउ॥ प्रात घरै सो खंडिता यह
रसिकन को जीव॥१७२॥ मुग्धा खंडिता॥
सवैया॥ आन वधू रति चिन्ह धरे इत प्रात
है प्रीतम आगम कीन्हो॥ आलीके हाथमैं
आरसी दै मनि नोल वधू अलि भीतर ली
न्हो॥ बोली सखी यह रूपकी देख कहां य
ह वेष उपद्रव कीन्हो॥ यामूल नैनी पल्या
ली रगी को कहा चित्त लाल को दुख १
दीन्हो॥१७३॥ उत्तमा॥ कवित्त॥ जोपै प्रान
प्यारे चितचाहन तिहारे काहो तुमही यों
कहा गति मेरी तौ विहारी है॥ नेह रस भरे
डीठि राखिये अधीन हौं मैं स्याम रुचि प
रजात काम रुचि हारी है॥ चिंता मनि लौं
लौं लह लहे जो लौं सींचि यतु अनसीची
कुम्हिलानी मालती निहारी है॥ ऐसी पा

यथाई मरजा उगी वारने जाउंजीवनि हमारी हंसि बोलनि तिहारी है॥१७४॥मध्याखंडि ता॥कुंकम लेपसों कीन्हेसवै तनु लाल ही दीपति पुंज उज्यारे॥दूखव हरे हम सीं चक्क ईन के फूले सलोचन बोल विचारे॥बाहि र आइते नारिनि की खुली नीविनके हैं वंधा बन वारे॥आइ प्रभात दिखाइ दई तुमली जिय भिन्न स प्रान हमारे॥१७५॥प्रौढाखं. डिता॥आन अंगना के अंग संग चिन्ह १ धरे आयो पीउ जोउ दूखित जो अ राध दो षमें॥कोप रंच राई पर वोपसी चढाई भ यो मोहन को मनु प्रेम कोरी भितो समै॥रे नि मग देखि जगी पीतम पै आइ परी नीर भरी अखियां अनन आति रोसमैं॥ऊपरहि आई जल लहरि आइ वालकेअलि मानौ कोकानद को रसे॥१७६॥परकीया खंडिता दोहा॥स सपने कौ रंक निधि समुझि आ जु पछिताहि॥भली कराति इनसों सखी जो तू चितवति नाहिं॥सामान्याखं॥दोहा॥१ आन चिन्ह लखि कंठते लीन्हो हार उतारि लाल नैन करि हाथ सों गमन बतायो नारि

१७८॥ रिसते पिय अपमान करि पुनि पी
छे पछिताइ॥ कलहंतरिता कहत हैं ताही
सों कविराइ॥ १७९॥ मुग्धा कल॰॥ सवैया॥
लाजन मे पहिचानि सो मे पुनि हौं पहिले
पियको न पत्यानी॥ पेन्च सों आलिन दी
न्हो मिलाइ भई मन प्यारे को प्रेम बिका
नी॥ कालि अकेलियै सेज मैं सोइकै आपु
न याते कहूं मैं सकानी॥ प्रात पियै सै म
नी है वहां ते सुरूठि गयौ उठि कै पछितानी
१८०॥ मध्या कलहंतरिता॥ सवैया॥ कान्ह
र सैल लखी अधरा पर प्यारे को प्रात मे बात
बखानी॥ काहू विलोकै बिभाति वधू कहै
सो सुनि कै सजनी मुसक्यानी॥ नाथ के हा
थ दई उन आरसी वैतो लजाने सुमै यह
जानी॥ पीउ गए उठि कै जब ते तनु तापनि
ते अतिही अकुलानी॥ १८१॥ प्रौढा क॰॥ कवित्त॥
मृग मद चंदन सुरभि अंग आवै पिय पा
न प्यारे तेरे भौन गौन मेरे आगौरी। ताको
आन वधू अंगराग परम लजानि तें कियो
कहल सब सह्यो बड भागरी॥ तोहि हसी
जानि अगमन उठि गयो पीउ कहा धौं कर

त जो आवे बहु जागरी॥ अवनैनन मों हैं ता
नि मानि करि बैठी बात लागी पछितान॥
मन मैन बान लागेरी॥१८२॥ परकीयाको
दोहा॥ प्रेम किया कुल कानि तजि पट्यो
बिसन रसाइ॥ गयो लाल सो हाथते कह्य
लेउं पछिताइ॥१८३॥ सामान्या कौलहंतरि
ता॥ दोहा॥ भई विपुल धन वंत ह्वौं जाको
पाइन से इ॥ तासों विधि अनुताप यह
मोहि महा दुख होइ॥१८४॥ प्रोषित भर्तृ
का को लक्षण॥ शृंगार मंजरी यथा॥ प्रोषि
त यह आवर्थ का नितलिं बालमवासहि
कहत आन॥ सो जामे सो प्रोषित विचार
यह प्रिया प्रोषित भर्तृका जान॥१८५॥
※॥※ प्रवत्स्यत भर्तृका औरजानि॥ प्रव
त्स्यत प्रिया पुनि और मानि॥ प्रोषित भर्तृ
का और रुका॥ योंतीनि भांति याको विवेक
१८६॥ बडे साहिब अपने ग्रंथ माह॥ निर्णय
कीन्हो कवि बुद्धि नाह॥१८७॥ दोहा॥ प्रिया
बासके हेतु कहि ताप धरै सो होइ॥ काहै
सो प्रोषित भर्तृका समुझ लेहु सब कोइ॥
१८८॥ याके भेद कहत॥ दोहा॥ प्रथम प्रव

कह्योहै॥ चित्रलिखी सी ह्वै गई न चली वपु मा
नो कलेसन सों भखीहै॥ जैसे कोऊ लाल १
आलिंगन कीन्हो मलाल दुहु मुखसों ज्वा
ल्योहै॥ मूरत दूषणपनो निशिमें पियको १
तिय आली गारी पचायोहै॥१९५॥ परकीया
प्रवत्स्यत पतिका॥ दोहा॥ लोचन चूआति
लाल यह पुरिनिती सों हरि॥ तिय कह्यो
सखि छुनहूँ चह आसुहि चूरि॥१९६॥ १
सामान्या प्र॰॥ दोहा॥ सखी कारन सूनको
उचित सुभरन होवे पन्न॥ सुंदरि बहुत गा
हकको पुनि कैके यत्न॥१९७॥ बादत पी
उ पर देसको अपने आविन देखि॥ प्रव
त्स्यत पतिका नाम ताहि नयो भेद यह ले
खि॥१९८॥ मुग्धा प्र॰॥ दोहा॥ यह मुग्धा
अन समझ को राखे अंजलि जोरि॥ नि
ठुर होत सकार यह नई दुलहि याहोरा॥
१९९॥ मध्या प्र॰॥ सवैया॥ लाल विदेस
की काज तजी सब सुंदरि हैं हिये अकु
लानी॥ चाहै कह्यो अहो प्यारे रहो सब ला
ज तें नाही मुख बानी॥ तो लगि सों अंसु
वान भयो यह काज भयो पुरला अधिका-

नी॥नैननिके जल पूर बढ्यो मृग लोचनी
दुक्ख समुद्र समानी॥२००॥प्रगल्भा प्रव-
त्स्यत॥सवैया॥मंगल साज पयान कीये
हुते प्यारे दियो पहिलो पग भूपर॥देखत
लाल अलज्ज भयो निकटे मह आनन
को जैसे कूपर॥ता सम व्याकुल सुंदरिकै
असुवां परे टूटि उरोज दुहूं पर॥प्यो अव
ओट चढावे मनो द्रुग मोतिन माल महे
शकोंऊपर॥२०१॥परकीया प्रवत्स्यैासवै
या॥सुंदरि मंदिर के ढिग मंदिर सुंदर कौ-
प्रस्थान बनायो॥झांकि झरोखे के नारिसं
देस पठायो वही यह देल पठायो॥बाकी
लगी ते चिठीजुलईउन बांचि प्रवास उदोत
जो पायो॥आपनो आनन चंद मुखी वह
द्योस को आनन चंद दिखायो॥२०२॥सा
मान्या प्रवत्स्यत पतिका॥दोहा॥लालच
लत लखि लाल उर बोली तिय सजि नेहु
अपनी प्रतिमा लाल यह लाल निसानी
देहु॥२०३॥जाको पति परदेस को काढयो-
तु दुखित नारि॥प्रोषित पतिका होति है
पंडित कहत विचारि॥२०४॥मुग्धा प्रोषि

जो छतियां लगिकै वतियां सुनिलै छति-
यां अब सालन लागीं ॥ २०७ ॥ परकीया ॥
प्रोषित पतिका ॥ दोहा ॥ सुसह होत पति
को कछू ललित दिरघ बतिपात ॥ काव-
रे है प्यारो सखी मोहि कछू नसोहात २०८
सामान्या प्रोषित पतिका को उदाहरन ॥
दोहा ॥ कोइ कहति है आइहै मेरो धन सोपा
स ॥ सुंदरि पिय मग ललन को कीन्हो वास
निवास ॥ २०९ ॥ अभिसारिका लछन ॥ दोहा
सुभ वेख धरि जोन्ह मै करै जु तिय अभि
सार ॥ सोकौ रसा अभिसारिका सकल र
सिक रुचि सार ॥ २१० ॥ कवित्त ॥ तन सब
सुवरन दरपन समता मैमैन अधिकाई
जो गुराइ गहिराई है ॥ ताम है पूर चंद्रिका मा
लका सोंही सारी सेत सुखमा समूह सर
साई है ॥ आभरन जोई मुकुता पाल विमल
दुति अंग अंग तारागन लेइ जनु आई है
चली इंदु मुखी उत ढूंढ़ अधिदेवता सी
सुकाती लिहारो कोऊ दरसन पाई है ॥ २११
तमोभिसा ॥ स्याम वेख धरि तम समय चलै जु पि
य पै नारि ॥ वह कहियत अभिसारिका स-

ज्ञान लेहु विचारि॥२९२॥सवैया॥मेचकरंग
कै अंगको रंग कुरंग नद द्रुवदं कि उज्यारी॥
चोवके रंग रंगी पगिया पहिरे तन नील र
अनूपम सारी॥ है रविकी मग है निकरी
सु अंध्यारी जैवे तुलसी अति कारी॥बागमें
आनि रमी मन मोहन प्यारेके संग म नोह
र नारी॥२९३॥ दिवा भिसारिका॥दोहा॥व्या
ज प्रगट अभिसार जो दौस करे वर नारि॥
सो कहि दिवा भिसारिका सुज्ञान लेहु विचा
रि॥२९४॥तन सिंगार आईजु करि बागवि
लोकन काज॥पिय मिलाप लहि आपयह
सफल भयो सब काज॥२९५॥दिवाभिसारि
का॥सवैया॥कातिक पुन्य महा नदी न्हान
कों तिय संग सखी मन भाई॥न्हाइकैनी
के सिंगारि कै आगनि बाग बिलोकनि काज
सिधाई॥कुंजनकुं तमें मित्र मिल्यो धनिमा
नि उते दिन राति वढाई॥लोग मिले भेरनेह
रयो घर प्रातमें आई यों बात बताई॥२९६
उ त्तम मध्यम नीच ए तीनि भांति करि जा
नि॥इनके लछन उदाहरन कहत लेहु मन
आनि॥२९७॥जोपै प्रानप्यारे कछू चाहिन ति

हौर कवित्त पीछे लिख्यौहै ॥ पिय हाल हि-
त अरु अहित में कारे हिता हित नारि ॥ छि
वि चिंता मनि कहत है सो मध्यमा विचारि
२१८ ॥ सवैया ॥ पाछेजो प्रीति करी सोल
री अब आनि परी तुम्हे औरन की रस ॥ है
मनरीति नई सी लई तुम ऐसी कही अपि
काइ कहौ काव ॥ योवन काज करे अथा
वाद है जैसी हुती सुतौ तैसी हुती तब ॥ आजुते
राजु करौ बलि जाउं सो काम कहा हमसों तुमसो
अब ॥ २१९ ॥ दोहा ॥ हितौ करत लखि नाहकौ अ
हित करै जो नारि सो अधमा है ताहुको कवि-
न कहत विचारि ॥ २२० ॥ कवित्त ॥ चिंता म-
नि होइ कोऊ नीकौ को अनैसो लेभा सेई
पावै जामे प्रीति पति की उदोति है ॥ तहीं यों
विचारि दूरि करि मोती हार गरे पहिरे तौ
कहा छवि पावति योति है ॥ कहा कीजै न
कु तहे पीके उर बसी न तौ कौती हैन लिये
उर बसी कैसी जोति है ॥ कौन है निकाई रं
ग बेठी मुख नायकौ री नायका दिमाहू तें
निकाई नीकी होति है ॥ २२१ ॥ कवित्त ॥ स्वा-
म सर सिज आंग राचे सर सिज मानो

रच्यो सिरपर घनस्याम रंग घनेराग॥ चिंताम
निकहै मानो वदन कमल पर मधुकर पुंजम
नो प्रगटत परभाग॥ पीठपर वैठीतन सहज
सुगंधलोभ मानो अलि अवलि विसारिकै
चमेली वाग॥ वेनी मृगनैनी की यों मंडित सु
मनि रूप निधिकी रचीहै मनो दहामनिध
रनाग॥२२२॥ स्यामाजूके सनेहकी स्यामता
मैरीझिमै स्यामता मै सवरीझि रह्योजगुहै॥ चिं
तामनि कहै जु और वचनकी दौरमैन ऐसो
कछू सुखमाको समूह अदगुहै॥ पाटीद्वै सिं
गार घन घटनके वीचमै मयूष सीसफूल
वाल रविलाल लगुहै॥ सेंदुर सुभग तिय मांग
रंगभरे अलि मानो पियमनुके गमागमको
मगुहै॥२२३॥ स्यामाजूके सुंदर सकल अंग
पेखि स्यामलि पायो ससिसैन मैनको अलंक
है॥ वृषभान नंदनीके नैननिहारि हारिमानि म
हा दुखखन कुरंग भयो रंकहै॥ चिंतामनि कहै
लालमनि वेंदी भाल लयोन अलंकृत कीन्हो
परजंकहै॥ दीपति वितान महा मंगल निधानम
नो मंगमिलत अगार आठेको मयंकहै॥२२४॥
अलि प्रफुलित यहि देखिवेई दिखाऊगी हो केलि

स्वर वर अर बिंदु जो अलि इंदु है॥ यों कहु है सर वर अर बिंद जो अलि इंदु है॥ यों कछु है
वंत अलि मधुर अधिक छबि कवि चिं
ता मनि ज्यों नवन रिंदु है॥ सरद की पूनो
की निसाको महा नीको कहा पीको सो
लगत याके आगे यह इंदु है॥ सुंदरी जू सु
रति के सुंदर वदन आगे सुंदर लगत हैं मै
इंदु नार बिंदु है॥ २५॥ याही की ले सुभ देस
करत है गंध वंध ऐसो काम साह जिको सौ
रभ चमेली को॥ अंग मनो नाना रंग फूल
नि की रासि उन अंगन मै विमल विला
स अल वेली को॥ चिंता मनि चंपक कु
सुम होय अभि राम दिव्य रूप काम काली
आनंद के कली को॥ जाके अव लोके सब
दूरि होत दुख सोहै नैननि को सुख मुख
कोमल नवेली को॥ २६॥ मोहन मोहन
मंत्र देवता विराजे राधा यासों देव वधू इंद
वोसे अक सतु है॥ मुख विधु विंब पर रच
ना रची विरंचि जामे वडो सुखमा समूह
सर सतु है॥ चिंता मनि सु ललित अल का
वला है लसे भाल पर मृग मद विंदु बिलस
तु है॥ वृष भान नंदनी की भौंहें अति सोहें

ऐसो अरथ गुविंद जाके वस मै वसतु है॥
२२७॥ जाकी नासिका मै तिल फूल भाव
प्रकासकरति लख्यो विधियों जोतिला१
तमामा सोभा घर॥तेरी छवि देखि वाकी
ऐसी छवि छीन होति मुख दुति दीन जै-
सो प्रभात को सुधा कर॥ चिंता मनि काहे
काहा चंपक सुमन इन लै लात कीन्हो मु-
बाती हल प्रभानि भर॥काहा अति रिजु१
नौल नायक रिझायो रीझी नाक नाय-
की है तेरी नाककी निकाई पर॥२२८॥अम-
ल कपोल प्रति विंवन सहित मनि जटित
ताटंक चारि चारु छवि धाम है॥चिंता म-
नि वदन मयंक रथ रचि राचि मीन नहे-
मंजुल है महा रथी काम है॥सारी जरता-
री हेम पंजर मै खंज मुख सुखमा सरोव-
र कै सरसिज स्याम है॥चाहे नैननैन जाने
कैसो चैन होत वैन कहांलौं काहैगजैसे
नैन अभि राम हैं॥२२९॥चिंता मनि का-
है तारा इंदु नील आसननि सहा विलस-
ति प्रति विंवित बिहारी हैं॥सोहै नैन मैन१
वान खंजनसमछ मानो मंजुल अंजन गु-

मोद मंदिरन विर
नंगुफित निहारीहै॥ मोद मंदिरन विर
नावली की छज्जनकी छवि अवलो क
नि रुचिर रुचि हारीहै॥ द्वार मेलागीम
न मृगकी दावरि मनो थनी वावी वरनी ए
तरुनी निहारीहै॥ २३०॥ सोहै अंग चिलाम
नि नगन जटित दिव्य कंचन की वेली कै
लै सुंदर नवेली के॥ सकल जगत पर एका
सुछली हो तुम नायकान वन ऐसी नाय २
का नवेली को॥ एक ठौर देखो छवि आप
की नहू की प्रति विंवित है आए रूप आन
हवे केलीको॥ मुकरन आरसी से अमल
अमोल काहि गोरे गोरे गालहै कपोल अ
ल वेलीको॥ २३१॥ अह निसि चरचा सखि
न संग स्यामा जू की स्याम सुमिरन और
काज सव नाखेहै॥ वृख भान नंदनी केना
ह नद नंदन पै न्हिला मनि नेह काहा तोमैं
नात भाखेहै॥ गोविंद के चरित अठारहो
पुरानन मे सुनि हियो भरि पुनि अभिला
खेहै॥ सुबरन रेख नव अंक दुहू काननमे
दृगु नित दृष्टु लिधि मानो लिख राखे हैं
२३२॥ केसोर सो अंग नाग वेसरि की छवि

यह हरति छबीली आप सरन को चेतुहै॥ चिंता मनि काहे अल बेली अक लंक सुखी सरद मयंक अंखियन सुख देतुहै॥ ललित कनक मय कलप लतामे लग्यो सुधा मय बिंब फल सुखमा निकेतुहै॥ लाल यों कहत धन्य जीवन मुकतये ध न्यजो मधुर ऐसे अधर को लेतुहै॥२२॥ह य भान नदनी की रदनि की कांति कहि चिंता मनि काहे ऐसो काही ते प्रवीनोहै॥ सुंदर श्रीजको वास रचना रची बिरंच या ते उन बिरंच वधू संग लीनोहै॥ हरि गुन सुनिवाको आपने समीप जी मन पाकोसु मन सुललित थल दीन्होहै॥ सुललित मं दिरके मंदिर के द्वार कर तार कुविंद राज आ करन कीनोहै॥२४॥ सवैया॥ जानु भयो का हते तबते तिय एक लखी मनि आजु अन् लमें॥ दामिनि ज्यों जमुना प्रतिबिंबित यों भा लमें तनु नील दुकूलमें॥ देखत ही सुख देखे बिना दुख जाड़ परी कितते उत भूलमें॥ ठो ढीमें स्यामल बिंदु गुपाल मनो अलि बा ल गुलाब के फूलमें॥२५॥ सारी सुपेत प

वाह मनो सित फैल रह्यो तनु सोनेके भूप-
र॥जोरी जुरे चकई चकवा मनो यों रविरा-
जतहै कुच ऊपर॥कांठते ऊपर आनन की
छवि यों बरनै कविरोक काहू पर॥दिव्य धुनी
मधुनी मधि कंचन कंचु लसै जनु कंचु-
के ऊपर॥२६॥✱॥श्री नंद नंदन कीकि-
तिया गुर लाज पहार कजारन पेलिकी॥का-
न्ह कसौटी के सोने की रेखसी मेचक अंग-
न ऊपर मेलिकी॥मैन महा धन साधन सो
हाति स्याम तमाल अलिंगन केलिकी॥पी-
न बिलासिनि बाहु लसै मृदु मारकी मनो भु-
ज कंचन बेलिकी॥२७॥दूरिते दीपति देख-
तही प्रति पछ चथून के होलरजाहै॥चारु प-
योद घटान के बीच मनो बिजुरी की जुरी अ-
नुजाहै॥योंछ बिसों अधि काति मनो हरि
राधिका की अग राति भुजाहै॥कामके कौ-
न अलंकृत अंकित मैन की मानो किजै की
धुजाहै॥मेरुके स्रृगते गंग की धार धसी उर
है सुभ हार धसेहैं॥चंदकी चंद्रिका मे सिव
है जनु यो सित कंचुकी बीच बसेहैं॥कीचन
हीं बिंब नारि के तार को यों मति पीन उतंग

लसैहैं ॥ तो उर सौं उर नाह धसे कैधसे कुच
आपु समाइ धसैहैं ॥ २४८ ॥ बाल पन की
निकासी भई बलवारो अयान दे आदि
भुजाय ॥ जोवन को विधरानु दियो उन
आन किये सब काज सुहाय ॥ चूचक मे
चक वे मनि छत्रन के कलसा करि कात
नु ठाय ॥ देवता हे रति मैनके हैकुच सोने
केहै मठ मानो उठाय ॥ २४० ॥ कवित्त ॥ द
ष भान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि
कहा सवसु नारि दृजनके । चिंता मनि लाल
दर सन हेत लल वात सुवरन संभु जुग
सोहत सुलज्ज के ॥ मैन रति मंगलके सुव
रन कुंभ केधोंकेधोंकुंभ कुच जुगल जोवन म
द गज्ज को ॥ खगकेधों कुंभ केधों श्रीपाल सु
दामके धों श्यामजूके मोहनको सोभन गुच्छ कंज
के चिंतामनि सोहैं कुच कंचन कलस चारु
नव गन पति कुंभ रोचन के रंगको ॥ विम
ल वदन इन्द्र राज सचि गुर कीन्हो सेवत
विमद जाहि जान इसंग को ॥ हरिजूकी
प्रीति हेत जग उलहायो पायो जोवन नरे
स राज राधाजूके अंगको ॥ २४२ ॥ सवैया

और तिलोक मे कोन त्रिया अति रूपवती वृष भान ललीतें। चोरभये क्यों भयोन चल्यौ उत जोवन राज प्रताप छलीतें॥ मैन महा वली सोंपि दियो मनु छूटन पावतु क्यौं त्रिवलीतें॥ श्री नंद नन्दन मोहन हेत विधाता रची मनौ पाज कलीतें॥४३॥ को महा मूढ छवीले कै अंगन जाय परयौ ज्यों समारो वहीर मैं॥ ठाने अनठान अधीन जो आपते ताहि को आनि सकै पुनि तीरमें॥ जोवन पूर विलासत रंग उठै मनमोद उमंग समीरमें॥ सैल उरोज ते कूदि परयौ मनु जादु प्रभानदी भौंर गंभीरमें॥४४॥ जोवन को आगमन समुझ के पद छोडि चंचलता चारु चाव पद चाहि धाई है॥ जघन पुलिन लागि आई थिरताई चारु छोडि पग चाहि के उर जतट आई है॥ पानिपमे त्रिवली तरंग नाभि भौंर रूप नदी मध्या नंगने प्रकासी यौं निकाई है॥ चंचलता थिरता उतारन कारन रोम राजी नील मनि सेत रेख उल ह्वाई है॥४५॥ कोट कटाछ तुरंगम हे पुतरी असवारन की छवि छाजे॥ मत्त गयंद के कुंभ उरोज विलो

कृत मानस धीरज भाजे॥ श्री मनि चारु र-
थंग लिखें हैं पत्ति विलासन ते जनु साजे॥
सुंदरि ये चतुरंग चमू नृप मंजुल मध्य अनं
ग विराजै॥ २५६॥ कवित्त॥ सोहत छवीले
अंग धीरति नंदनी को हेरि मंद मुसक्यानि
चारु चहुँ कूलन है॥ चिंता मनि इंदिरा के मं
दिर अनूप अरविंद तो प्रभात हूँ में सकात खु
लन है॥ सेत सारी हरी से निहारी नेकु सनमु
ख सुख निरखि मन सकात डुलन है॥ सरद
मे पुगदल नीर निघटत मेरु मही पर मानो
मंदाकिनी को पुलिन है॥ २५७॥ अभि नव उ
दित मदन रवि रथ चक्र पर पंथी वाल द
शा निशामय वेली को याही को सुर दसनस
म भात घन स्याम खंडन विरह वैरि सेना चे
रि मेली को॥ चिंता मनि याते कहावे चक्र चि
त्रचित भयो है लखि चक्रपानि मेली को
अंगरंग क्रम के मानो कुच कुंभ है भवाडू धरे
जोवन कुलाल चक्र नि तंबन बेली को॥ २५८
सो भाव के सदन अवतरे हो मदन तुम देखिये
ललित रूप रीति रतिकेली की॥ * ॥ चिंता
मनि चाहत गुंजरत भौंर आस पास अंबन-

मे साह जिका वासुहै चमेलीकी॥ दीपनिकी
दीपतिसी दीप जब बसन बोट कदलीकोमू
लसी कमंजुल नबेली की॥ सुर पति सुख
हूतें सुख सरसैगो उर पर सेगो लाल फूल
अल बेली की॥ २४८॥ खिला मनि सोहत
सुभग हेम खंभ चारु जोबन मदन मद पुं
डरीकवासनी॥ सोनेकी तरवारी द्वै कामकी
चरन नख चंद फूली अंगुली बंधुक वासी
बानसी॥ जेहरि रतन जोति छित्र रंग अंग
अवरसो वह मित गोपन निदान सी॥ राधा
जूकी जंघा मकरध्वज प्रधान कैधौं सिरि
को निधान राजै गभिति निधान सी॥ २५०॥
सवैया॥ यौं मनि मैन महीप प्रताप लिया
तनबेर सुभाउ गिलेहैं॥ आनन पूर निशा
करके ढिग बार घने तम आइ हिलेहैं॥ वे
सुखमा के समूह कछु अंगुरी पखुरीन प्र
कास खिलेहैं॥ छोडि सदा को बिरोध कहा
कर कंजन सौं नख चंद मिलेहैं॥ २५१॥ क
वित्त॥ बरनत इनको सदाही मुनि चिंताम
निकीन्हो जो मुदित मन महा मोद मदतें॥
नाह मनु मत्त मोद उल हावे नीके अभिन-

व ललित कल पलता छदतें॥ स्यामकेहैं सं जीवनि वेलके पल्लव ए ज्याद लियेजो वचाइ विरहा गिनि हूदतें॥ महा उर रंग रंगे रंगत हैं लाल उर राधिका के चरन अधिक कोक नदतें॥ चिंतामनि तेई काहे चंद्मुखी याकी वडी वडी छवि छाती जिनि सौतन की दहीहैं॥ चंद मुखी औरें को कहि सकत याके आगे अर्ध रात चंद हू प्रात सचि न्याहीहै॥ विमल वदन देखि याको तुमहू तो चंद मुखी कहि कान्ह मोह नदी अवगाहीहैं॥ निरमल दसननष्चारु सुंदरि के चरन अंगुरि यन सेवत सदाही हैं॥ ४५३॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कविकुल कल्पतरौ श्री राधावर्णनं पन्चम प्रकरणम्

॥ अथनायकावर्णन

दोहा॥ सकल धरम जुत निवुल धन विक्रम पूरोहोइ॥ ताकौ नायक कहत हैं कवि पंडित सवकोइ॥ १॥ प्रथम धीर पद दै गनो नायक ए निरधारि॥ कहि उदोत उद्धत वहुरि ललित संत ए चारि॥ २॥ महा संत गंभीर अ

र क्रिया सिद्ध जो होइ ॥ अवि का मन धीरादि
मन यो उदात कहि सोइ ॥ ३ ॥ धीरा उदात
लक्षण ॥ कवित्त ॥ पिता राम राज अभिषे
क को बुलाय पुनि वन को पठाये नहीं बद
ल्यो बदन रंग ॥ प्रबल बैरी को भैया सर न
हि आयो तासों कारना निकेत आपु रहे मि
लि एक संग ॥ हन्यो इंद्र जीत कुंभकरन औ
रावन ए एक एक तिहूं लोकन के जेता अ
भंग ॥ इंद्रादिक देवतानि बरनी बडाई आ
इ नेकु नव नाही कहूं प्रगट्यो गरव अंग
४ ॥ दोहा ॥ प्रबल गर्व मत्सर सहित चंडवि
कथन होइ ॥ मायावी जो जगत मे धीरो
द्धत है सोइ ॥ ५ ॥ सवैया ॥ याहि यो उग्र सु
भाउ पर्यो सब छत्रिय बार इकै संघारे ॥
गर्भ लगे इन छत्रिन के कुल खंडित की
न्हे भयंकर भारे ॥ तैं जगके गुरु संकर को
धनु तोर्यो कहा मन मोह बिचारे ॥ राजकुमा
र यो तीखन धार पर्यो हौं न काहु उबारिहै रे
हे ॥ धीरललित लक्षण ॥ दोहा ॥ सुंदर अ
ति मन हरन गन सुखी काम्ह सो होइ ॥ क
ला सज्ञ निहि चित रहइ धीर ललित है

सोइ ॥७॥ सवैया ॥ मोर किरीट लसे चप-
ला पट नील बला इक रंग हरेहैं ॥ गोप के
कंध धरे भुज दंड अनूप बिलास प्रभा-
नि भरेहैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल
मंजुल कुंजन तें निकरेहैं ॥ सुंदर मार हु
तें सुकुमार सौं वे लखि नंद कुमार खरेहैं
॥८॥ धीर प्रसांतको लक्षण
दोहा ॥ विप्र सखा गोविंद को धरम ज्ञान
निविष्ट ॥ इंद्रिय विषयनतें विरत सो प्रथा
न अति शिष्ट ॥ ९ ॥ शृंगारी नायक बहु
रि चारि भांतिके जानि ॥ प्रथम कह्यो अन
कूल पुनि दक्षिण नाम बखानि ॥ १० ॥ बहु
रि धृष्ट पुनि सठ कह्यो लक्षण फिरि अ
नुरूप ॥ बरनत ए शृंगार के आलंबन सु
ठु रूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया मेरमें सो अनु
कूल बखानि ॥ सबमें सम बहु नारि रत सो
दक्षिण मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूलको उदा
हरन ॥ सवैया ॥ प्रीतम औ रवधू सो मिल्यो
मनिजाने सबै गुन दोख बिसरै ॥ मै सब
को ते उपाय रचो पिय को सह औरन तिया सु
हा पैसे ॥ मेरो विचार अचा विचच्छन १

मोपैन्हु ऊलटै है हसि हेरवै॥ पावै काहौ वि
त दूसरी बात चकोर जो चंद्रमा को समले
रवै॥ १३॥ दक्षिण को उदाहरन॥ दोहा॥ स
व अपने मन सुरव लरवत होत सवाल सा
नंद॥ कालनि कलित मनि अति ललित
प्यारो पूरन चंद॥ १४॥ धृष्ट लक्षण॥ दोहा
पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गेह
कहै धृष्टति य धन्यतें तासों कोरे सने
ह॥ १५॥ रिसनि निकारी गेहतें निपट नि
ठुर करि जीउ॥ वार वदलै हेरवै कहा सं
ग सोवतु है पीउ॥ १६॥ सठ लक्षण॥ दोहा
॥ छुपि तियको विप्रिय करै वाहिर प्री
ति दिखाइ ऐसो नायक होइ जो सठ करि
वरन्यो जोइ॥ सठ को उदाहरन॥ सवैया॥
प्यारी कहो हमसों निसि वासर मो कछू
प्रीतिकी रीति निहारी॥ केहूं कृपा करि रे
मोहि चहै मनि हौं तो उपाइ घने करिहा
री॥ कैसे छपै हमसों जो छपाइ भयो नि
त औरके संग विहारी॥ औरकहूं हियर
अंतर की हमसों सुरवकी पिय प्रीति तिहा
री॥ १८॥ अथ शृंगार लंबन॥ हारन प्रत्यंग-

वर्णनं॥सवैया॥पीली उख्या री नलैसु
रह्यो तम माया निसाको सहायन को॥कु
रहंद सुधा मकरंद भरे अक लंवा अनू
प सुभायन को॥अंगुरी मनि नीलके पा
सिनको मनो अंक परे सुभ दायन को॥उ
र अंतर सुंदर आनि उये नख इंदु गुविंद
के पायन को॥१९॥तेरे नहोइ संतोष त
ऊ जो रहे तिहुं लोक की संपति कौ मिलि
ही खिलिवे मकरंद सुधा भर वेलि संतो
ष की रासन मे खिलि॥लीहि सुहातु है रा
त घनो मनि राग लसे जिनि मैं तिनिमै
हिलि॥चाहै जो सीतल ता हियरे हरिके
पग मंजुल कंजन सौं मिलि॥२०॥कान्ह
की ऊरु लखे जग को कदलीन के मूल
ल की छवि लाजै॥यौं वल खानि उदंड
लसै लखि दिग्गज सुंडन के मद भाजै
जो हरि के हर रोमको कूप अखंड वनी व
र भंड समाजै॥ता गुर भार के धारन को
मनो नील महा मनि खंभ विराजै॥२१॥
खेलमे सैल उठाइ लियो वलकी अधि
काई सुयौं दरसै॥कर ऊपर सोहत भूंग

दो दधिके जल फेरे॥ जे इनको पल ध्यान ध
रैं मन तेन परैं कवहूं जम घेरे॥ राजे रमार
मनी उप धान अभै वर दानि रहे जन नेरे॥
हैं वल भार उदंड भरे हरिके भुज दंड सहा
य मेरे॥ २६॥ कान्ह को कंवु जु कुंकुम रं
जित भागनतें मनहूं मन आनो॥ श्री कम
ला वलयावलि अंकित सुंदरता जग ऊपर
जानो॥ हैं रस नीय त्रिरेख मनो अव तामै ल
सी मुकतालि वखानो॥ एक निवास के नेह
मिले सुभ संख सौं सूतिन को सुत मानो॥
२७॥ लखि लोचन नील सरोज मिलेहैं प्रका
सत प्रेम प्रमोद घनो॥ मनि कानन मै मुकु
ता झलकें उठिहैं परिचार मनो अपनो॥ मुस
क्यात सदा नंद नंदन को मुख यों सुख मा
को समूह गनो॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत
चांदनी सांवरी सुंदर चंद मनो॥ २८॥ कान्ह
के अंगन की छवि देखत नीकोन अंग लगै
आरसी को॥ ऐसी मनो हर मूरति मै मन
लागतहै मनु धन्य जसीको॥ सोहै सुभाव
कपोलनि मै नंद नंदनको मृदु मंद हसी २
को॥ नील महा मनि आरसी माहं मनो भा

नव दाहक जोहैं ॥ मानिनि के मन को धौं जु
री सर नैननि मैन कमान मनोहैं ॥ बेदनिदी
ने बिचार यहै सदा सेइये नंद कुमार की
भौहैं ॥ ५३ ॥ पैठे जबै सुख मा जल न्हान
को व्याकुल ह्वै बिरहा नल डाढ़े ॥ जोराव
री जिनखें चलिस मनिहै ब्रज नारिन के
मन गाढ़े ॥ श्री नद नंदन जू के मनोहर का
नन कुंडल यों छवि बाढ़े ॥ दे ध्वज बाह म
नो मकर ध्वज रावि सुधारस कुंडल गाढ़े
५४ ॥ कान्ह की मूरति देखी कुती जिनतौ
सिगरे ब्रज ऊपर जानो ॥ काहेन ध्यान ध
रौ निसि बासर भावनते मनहू मन आनौ
रोरी लसी नंद लाल के भाल मैं कुंकुम
की अरनाइ बखानो ॥ दिव्य उदै को समै भा
लको विधु भाग मै राग विराजत मानो ॥
५५ ॥ लाग निरंतर जाहि बखानत है सिग
रे निगमो पचि हारे ॥ स्याम की सोभन रू
प कला कहं पावत कोटि अनंग बिचारे ॥
आनन ऊपर मोर किरीट सुधार बिराजत
घूंघुर वारे ॥ इंद्र के चाप समेत मनो विधु
मंडल ऊपर बादर कारे ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ जे

बैठे कान्हि तान मृदु घूघुरू मृदंग धुन घोर की
सुंदर रतन मय मंदिर सुंदरिनि संग खेल
नि ललित लाल ललित किसोर की॥५०॥ प्रा
तीप उद्दीप्त कर्यो यो उद्दीपन बिभाव को बि
वेक कियो है॥ दोहा॥ आलंबन गुन दूषितो
अलंकार संचीन॥ पुनि तटस्थ चौथो कह्यो
उद्दीपन संचीन॥५१॥ आलंबन गुन रूप अ
रु जोवनादिक चित आनि॥ बहुरि हाव भावा
दिये चेष्टा लखौ जानि॥५२॥ नूपुर अंगद हा-
र भूषन आदि अलंकार लेखि॥ मलयानिल
चंद्रादि ए सब तटस्थ पेखि॥५३॥ यापर
कम यों कहत हैं॥*॥ दोहा॥ उद्दीपन के भाव
र सुने काहू रस नाहिं॥ चंद्रो ज्याला दिका
हे समुझे नीके जाहिं॥५४॥ आलंबन के गु
न सबै आलंबन के चीन्ह॥ तै उद्दीपन कोक
हे कछुक लगे यह लीन्ह॥५५॥ सौंदर्या दिका
गुन रहित आलंबैन होइ॥ आलंबन गुन र
हित जो बरनि सकै नहि कोइ॥५६॥ चेष्टाता
को आपुही बरनैगे अनुभाव॥ अब उद्दीपन
कहत हैं कैसे बुद्धि प्रभाव॥५७॥ आलंबन
की अलंकार है आलंबन माह॥ सो उद्दीपन

है कवि कुल कल्पतरौ पञ्चमं प्रकरणं ॥

॥ दोहा ॥

द्वितिकारज अनु भाव गनि एकादश है ज्ञा
हि ॥ मधुर अंश इहां कहे सहृदय सुखद
अनादि ॥ १ ॥ जे प्रगटि थाई भावको प्रगटक
रै अनयास ॥ ताहि कहत अनु भाव हैं स
ब कवि बुद्धि विलास ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जोबन
सिंघासन मैं सुंदरि को रूप भूप पीलम (
नैन जाके उप मर पन मैं ॥ चिंता मनि क
वि किलोकनि मुसकाइ पाइ होत है मु
दित जैसे पित्र तरपन मैं ॥ सोहत वदन वा
ल घूंघट की ओट पिय कीन्हो तन मन (
धन जाके अरपन मैं ॥ विलसत मनो प्रतिबिंबि
त सरद चंद बिमल पदुम राग मनि दरप
न मैं ॥ ३ ॥ लाल रंग कंचन किनारी दार सा
री तैसी ताकी नवल मुकतान की ऊजरी
है ॥ बीजुरी की छटा सी छबीली की कंठ
नि तैसी चिंता मनि नील पल चटल की चू
री है ॥ मोहि देखि मुरकि मधुर मुसकाइ
आइ कीन्हो चित चपल कटा छन चौंचे
री है वाको छैल घुमर ललित पटु लहूला

की मनोहर भ्रमन मै भ्रमत मन मेरो है॥ ४॥ दोहा॥
स्वेद तंभ रोमांच कहि स्रुति सुर भंग वनाइ
वहुरि कंप वैवर्य्य गनि आसू अवलीना
इ॥ ५॥ आठ सात्विक ए काहत सज्जन गन
मन आनि॥ इनको हेत उदा हरन एक कवि
त मै मानि॥ ६॥ कवित्त॥ लोचन नि भाल
कौ प्रमोद जल कंप स्वेद सलिल अचल
तनु पुलक पसार्यो है॥ पीत रंग भयो मुख
वैन निवारेन मैन इं गित हरन करि खेल
यौं उचार्यो है॥ देखत परस पर यहै गति भ
ई उन देवता स्वरूप धेय आपनो विचार्यो है
वचन अगोचर जो परम आनंद नंद नंदन
सो रूप भान—— नंदनी निहार्यो है॥ ७॥ सं
चारी भाव लक्षन॥ दोहा॥ जे विशेष ते था
ई को अभिमुख रहै वनाइ॥ ते संचारी व
रिगाये काहत वडे कवि राइ॥ ८॥ रहत सदा
थिर भाव मै प्रगट होत इहि भांति॥ ज्यों
कल्लोल समुद्र मै यौ संचारी जाति॥ ९॥
सो निर्वेद विभ्रम जहं जड़ता धीरज हर्ष
दैन्य उग्रता चितन्ना साइखौ है अमर्ष॥ १०
गौरव सुमिरन मरन

पै काहानी कोहू हसै जो सखी जनती गाढि
जाति सखी चन वाल अयानी॥स्याम ति
हारे सनेह रहै मृग लोचनी सोच संकोच
समानी॥२६॥श्रमको उदाहरन॥सवैया॥
रति अंतकाहू अल साइ उठी तिकि याने
लिया कारि एक दिये॥मनि वेनी है पीठ प
री विथुरी अपने कर हूसी वाम लिये॥भालके
श्रम बिंदु छुटी अलको बिहसो हैं ले गोल
कपोल किये॥अव वेउप जावत सोचल
को सकुचो हैं सलोचन आल हिये॥२७॥
धैर्यको लछन॥दोहा॥ ज्ञान सदा आदि
कनते जो संतोष धृत मानि॥निज अहष्ट
परि पाक सो व्यगन चिन्त यहि न्धानि॥२८॥
धैर्यको उदाहरन॥कवित्त॥ पूरव करम वस
भूनते है भूतल मे पूरव जनम जो दियो
है सोई पाय है॥तिनसो महीप कोऊकाहे
को गुमान करै चिंता मनि किनको सहज
चिन्त चाहि है॥कोस दस वीस को नरेस वि
ताथो काहा होत विस रावै परमेस्वर सहा
यहै॥सवको सदाही साथ अनाथन को ना
थ हमै काहा दीन बंधु विस्व नाथ विसरा

येह॥२६॥दोहा॥सकल आचरन ह्वैनकौ
असमर्थता जित होइ॥प्रिय अप्रिय देखे हु
मैं जड़ता कहियै सोइ॥२७॥जड़ता कोउ
दा हरन॥दोहा॥अन मिष लोचन देखिबो
चुप रहिबो इत्यादि॥होत काज बरनत
रहत यों सब सुबरद अनादि॥२८॥अन
मिष लोचन ह्वै रही हली चली नहिं बा
ल॥चित्र पूतरी कहिहै छवी अप छवाला
ल॥२६॥इष्ट वस्तु पाय हरख मन प्रसा
द जो होइ॥आंसू स्वेद गद गद बचन बरन
तहै सब कोइ॥३०॥सवैया॥योंमन वैठी
चित्र रति हो मधुमै अब होत वचोगी अनं
गसों॥पीउ अचानक आइ गयो सु दीप
गयो सिगरो दुख अंगसों॥बाहिर भीतर
फूल ऐसो भयो घट मैरो अनंद उमंगसों
पूर उमंग भगी रथवो तप जैसे बिरंचिवासं
दुल गंगसों॥३१॥दोहा॥जो हरिद बिरहा
दित होइ मलिनता कोइ॥चिंता मलिनता
मोह करि होत दीनता सोइ॥३२॥तापतो
नहीं तपत हो जग मै पाप प्रवीन॥अबकों
दया सुदीन पै कीजतु दया नदीन॥३३॥दृ

सरो उदा हरन ॥सवैया॥मोहके द्योसन नांह
विदेसन चाहि सदस्न पाती पठाई॥सोच तिरा
ति सवे पलको पलको नभरे सुत हांई॥
वैठति नारि जहां सुकुमारि है लोचन वारि
न आंखि लगाई॥सांई मिले मनो याफ
लको मनि वैठीहे आंसुन की जल साई॥
३३॥दोहा॥कछु अपराध लखे जहां रोस
चंड उत होइ॥तर्ज नादि कारन जहां होइ
उगनता सोइ॥३४॥राम सील जगता पह
र सीतल सुखद अपार॥रुक्मसेन के संहा
र को अनल भयो इक वार॥३५॥चिंताक
हि यत ध्यानहे सन्य तादि जित होइ॥आ
सूर स्वासिता पतित वरनत हैं सव कोइ॥३६
चिंताको उदा हरन॥कवित्त॥मूंधतिहे मानों
मुथाता हलको हार वह चारुनीर नैननि २
की धार यों ढ़रतिहे॥आन अधर कहिका
हे को दूखित करे कौन हेत आजु ऊंची सास
न भरतिहे॥अचल व्हे रही केलि मंदिर में
चिंता मनि मथन वदन चंद्र चंद्रिका पर
तिहे॥वैठी कात आजु कर कमल कपोल
धरि ध्यानतू कमल नैनी कौनको करतिहे

३७॥ दोहा॥ कछु उपाद कंपादि कर उपजत भय जो चित्त॥ ताही सों खंडित कहत त्रास जानिये मित्त॥ ३८॥ सवैया॥ मानवती को मनाइ रह्यो वह चंदमुखी प्रिय केहू न मानी॥ एते मैं आइ गई पुरवाई लगे वरही गन बोलनि वानी॥ ऐसे समै आइ उमंडि १ अचानक कारी घटा घन की घहरानी॥ चौंकि परी चपला चमकै चलिकै पति की छतियां लपटानी॥ ३९॥ दोहा॥ जो सब्द्रि पर गुनन को उत्तम सहीन जाइ॥ भंगादिक ईरखा वरली बुद्धि वनाइ॥ ४०॥ कान्ह कह्यो देखी न कहुं राधा की अनुहारि॥ कह्यो सत्यभामा सुनी राधा गोरी ग्वारि॥ ४१॥ अम रख अपमानादि ते चित्त प्रज्वलित जानि॥ नैन राग सिर कंप अरु तर्जनादि कर मानि॥ ५२॥ कवित्त॥ बोल्यौ हनूमान रावन सो सकल सुरासुर सिद्धन आगे॥ जंगम अनय रक्ष रक्ष सठ कच्चन कहो कहां कपि कुलसो भागे॥ भुज साधन चदि मुंडपक्व फल तोरत पूरव रस भर अति जागे॥ पाइ रुधिर वल देउ भैरवनि

दृश॥ दोहा॥ प्रान त्याग कहियत मरन सु
तो प्रगट जग माहि॥ संग्रामादिक छोड
कै और बरन वै नाहि॥ ४६॥ जौ वह बाव
हू बर्नियै तौ ताकौ उद्दोत॥ श्रृंगारादि प्रबं
धसै सर नन वरनन जोग॥ ५०॥ कवित्त॥
दुर धर प्रबल विरुध खद्द जपभ्रात और
भास कालिंदेश घोर दल है॥ एक सर
दुर धर मारो काय वर अंबर मैं जादू भए
अंबर चंचल हैं॥ और बान लगानन पाए ह
ह मान तन फूलवै प्रबल भए गिरिसेअ
चल है॥ असनि से परे सुत स्यंदन तुरग
लेना माथ दुर धर कू मिलाय मद्दो तल हैं
५१॥ मदलक्षण॥ दोहा॥ धन विद्या रूपादि
द आसव जोवन जात॥ * ॥ उपजत है
मद आदि सित पाहुति अलस गत बात॥
५२॥ मदकौ उदाहरन॥ दोहा॥ रूप छकी
जोवन छकी मदन छकी मृदु बानि॥ प्रेम
छकी आसव छकी मई छविनि की खा
नि॥ ५३॥ आन नैन गति लटकि सरि हो
त लट वलि हार॥ छकी छबीली नारि ह
रि आसव छकी निहारि॥ ५४॥ स्वप्नलक्ष

रण ॥ दोहा ॥ स्वप्न नींद अरु अर्थको अनुभ
व जो काहु होइ ॥ सुखदुख को हित हेतुय
ह स्वप्न कहावे सोइ ॥ ५५ ॥ प्यो आयो परदे
सते सुनि सपने कीबात ॥ पति आगम प्रति
बिंब लखि सांचु भयो वह प्रात ॥ ५६ ॥ स
पन संग जागि दुख उठे पिय आगमन नि
हारि ॥ सखी कल्पतरु बाग है बीच अर
न्य उजारि ॥ ५७ ॥ मन सु मीलत नादको हि
अमा हिकौनिते होइ ॥ स्वासा हित तह दे
खिये सब इंद्रिय लय होय ॥ ५८ ॥ सवैया ॥
मांगते छूटी ललाट लटें लसे लर मोतिन
की लटकी चट कीली ॥ बेसरि की मुकता
हल डोलत यों मनि ग्रा मन लेति रगीली
ढीली भुजा कीए पीठि हुवे लपटाइ रही
रति अंतर सीली ॥ सोइ अजो छतियां हेल
गी सई ज्यों छतिया मन माह छबीली ॥
५९ ॥ दोहा ॥ निंद को अवसान जो सो विबो
ध मन आनि ॥ छुटा मद इन अग राइ अरु
जंभा हिक हृत जानि ॥ ६० ॥ उघरत तियदृ
ग जुगल छवि निरखत नंदकुमार ॥ खुल
त जलज जुग जागि जनु चुल वुलात अ

लिचार॥६३॥ लज्जाकोलक्षण॥दो॰॥ हानि दि
ठाई कीजुहै सोलज्जा मनि आनि॥ मुख
ना दलि आदिक कछू होति तहां है वा
नि॥६४॥ बेंदी पिय पट मे लगी लीन्हो अ
ली उतारि॥ बूडि गई अब लोचिह्नत सकु
च सिंधु सकुमारि॥६४॥ जो ब्रह्मादि आ
वे समव दुःख दिक ते होन॥ अप म्यार
भूपात तित पोन मोन अधिकात॥६४॥
मोह लक्षण॥दोहा॥ मोह वाहत है ताहि
को जहां ज्ञान मिटि जात॥ विमल दुःख
चिंतानि ते जहं अनि विह वल गात॥६५
खान पान परधान सब ज्ञानविसारयो वा
ल॥ योंमाही तुम को निरखि तुम निरमोही
लाल॥६६॥ मति लक्षण॥दोहा॥ नीद पं
थ अनु सारते आदि अरथ निर धारि॥
मतितातें कछु हास्य रस अह संतो प अ
पार॥६७॥ बिना प्रयो जन मित्र जो सोई मि
त्र वखानि॥ मित्र प्रयो जन ते जुहै सतो मि
त्र जिय मानि॥६८॥ बिन मतलब को र
यारजो सासो कीज्यो प्यार॥ मतलबलीयारी या
रै कहा मतलबी यार॥६८॥ निद्रा दिक

नमाल वनीमुकता छूट ॥ भूखन वास गि
रे रति रंगमें पायो त्यों काहू के बोल की
आहट ॥ आकुल ह्वै हरि मेचक अंबर
राधिका ओढ़ि लियो पियको पट ॥ ७५ ॥
चिंताको उदा हरन ॥ दोहा ॥ मिलन गई
तुम कौन बन मिले मुई यह काल्हि ॥ नि
रखि तुम्हें नंदलाल जो सोचति है वह बा
ल ॥ ७६ ॥ वितर्क लक्षण ॥ दोहा ॥ जो
विचार संदेह ते सो वितर्क यह जानि ॥ सि
र अंगुन तन है जहीं चिंता मनि मन आ
नि ॥ ७७ ॥ संशो पन आकार को सो अव
हित्थ बखानि ॥ प्रस्तुति तजि कछु और
को कवि को कथन सवानि ॥ ७८ ॥ जान
त भोका अलि न लगि कौन लालए को
न ॥ दोऊ एको ह्वै गए कहा मौनही मौन
७९ ॥ व्याधि वियोग दिकन ते हसता
दिक निरधार ॥ कंप ताप भूपात दृत र
आदिक यों जु निहारि ॥ ८० ॥ सवैया ॥
काहू की बात सुनैन कछू न कहै कहा
चित्त के बीच विचारै ॥ नैननि नीर भि
रहे भिरै कछू अंगन हूं की नवानि सं-

भोरै॥गात लगे बिरहा नल ख्वन भोज न भूखन भौन बिसोरै॥सुंदर ऐसे भये नँद नंदन बालक तो मुख चंद निहारै॥८१॥ दोहा॥मनके भ्रम उनमाद कहि बाभ्रम या हिबो जाल॥बिन कारन रोदन हसन वा यै अनर्थक बात॥८२॥उछलति रोवति लखि रहति हसत कहति गोपाल या उपर अब और कछु लोन होइ नंदलाल॥८३॥जहां उपाय अभाव ते होइ चित को भंग॥सो विषाद लक्षण मुकुल बढ़त तापके संग॥८४॥सवैया॥मोहि कछु नहि सूझि परै दृग देखत ही दिन होति अंध्यारी॥कैसे बचौं तुहिं आलिन सो चहुं ओर लगे निसि चंद उज्यारी॥ सीरे उपाइ चलैन कछू बिरहागिनि १ व्याधि बढ़े अति न्यारी॥हाइ हौं कौन उपाइ रचौं यह जाने को प्रेम की पीर पियारी॥८५॥दोहा॥तलनि बदन बिधु मंदु निसि आगम लखि अधिकात॥ प्रात होत पति संगते दूटत छवि छुटि जात॥८५॥उत्कंठा लक्षण॥दोहा॥अ

हस रूपक मैं तिन कहै सुनहु सुकवि मग
हूंस॥ ५॥ सात्विक दर्पन मैं कहे आठ औ
र अधि काइ॥ विस्व नाथ मत आर्य कहि
त ते अब सुनहु बनाइ॥ ६॥ भाव हाव
हेला प्रथम तीनौ एवै जानि॥ सोभा कां
ति कही बहुरि दीपति और बखानि॥ ७॥
पुनि माधुर्य प्रगल्भता औदार्य गनि
और॥ धैर्य सात अजत्न नाम यह कहत
सुकवि सिर मौर॥ ८॥ लीला और बि
लास कहि पुनि बिछित्ति बखानि॥ बि
भ्रम किल किंचित बहुरि मुट्टायत पुनि
जानि॥ ९॥ बहुरि कुट्ट मित बरनिये पु
नि बिंबोक्क बिचारि॥ चिंता मनि कबि क
हत यौं सज्जन लेहु बिचारि॥ १०॥ ललि
त विहृत इस य कहै य हस रूपक माहि॥
आठ और बरने उते बिश्व नाथ कबि ना
हि॥ ११॥ तपन मुग्ध बिक्षेप पुनि बहुरि कु
तू हल मान॥ हसित चकित अरु कहि
पुनि अष्टा दस य जानि॥ १२॥ हेल प्रता
प रहि पल कहे अठा रह भेद॥ तिनके
लच्छन उदा हरन बरनत सबै अखेद १३

है सब जोबन संधिमे मैनके दरो विका
र॥ भाव बरन यों कहत हैं विद्या नाथप
कार॥१४॥ कोकिल कूका सुने उसगे स
नरु पीछे लिख्योहै॥दोहा॥ सूनेवादि
विकारजो कछुउपजे मन माहि॥कछू
सलक्ष्य विकार यह भाव हाव है जाहि॥
१५॥ हौं निकारयो हिग ह्वै सुयो अंगनपु
लक जनाइ॥*॥हेरि तिहारे हूगनसों
चली बाल मुसक्याइ॥१६॥जहां देह
हग भौंह मुख इंगित अति अधिकात।
अधिक प्रगट मन भावते हेला सो क
हि जात॥१७॥सवैया॥करसों कर जोरिके
आनन इंदु कोवडु लता पर वेरव कोर॥
अंगिराइके अंग दिखाइ दुरे मन मोहन
को मुसक्याइ हरे॥मृग लोचनी नैन वि
लासनि सों पियके हिय भीतर मोद भरे
मन मोहन मोहन भाव नही सो बुलावै वि
ला सिनि कुंज घरे॥१८॥दोहा॥विना वि
भूखन मधुरता सो माधुर्य वखानि॥स
कल अवस्था मे सदा लसे छबिन की खा
नि॥१९॥कवित्त॥ ओठमनो रवि विंब प

लीचास चंद्रिका बाहिर निकसति है॥ मृग
लोचनी की वह काहू अचानक हंसि हेरि
कै मूरति मेरे मन मे बसति है॥२९॥ विभ्र
म लक्षण॥ दोहा॥ आनंदजुत आभरन कौ
अंग अंग आवेस॥ त्वरित समै विभ्रम य
है बरनत सुकवि सुरेस॥३०॥ सवैया॥ देख
त चौन हमै अवलोकि धौं आली काह य
ह वेख कियो है॥ कोकरि हे चित जायो च
हे मन मोहि गयो दुहि भांति हियो है॥
नूपुर हाथन पाइन मैं पहुंची कटि हार
लपेट लियो है॥ तेरे कहा उर नैन महा उ
र अंजन ओठन दीन्ह दियो है॥३१॥ दोहा॥
क्रोध आंसू अरु हास भय अभिलाष नहुं
इक बार॥ किलि किंचित तासों कहत स
व कवि बुद्धि विचार॥३२॥ कवित्त॥ दंपति
अनूप वैस सुरति अरंभ समै ते होऊ रस
रीति मैन सरसति है॥ लगन चढाइ त्यौरी
भौहै भीभ्रम कोर कांप मानि मन छतिया
की छुवनि सुहति है॥ बहिया गहत पिय स
न तिन प्यारी भारी कोपते निहारि देहु
नैनन कसति है॥३३॥ नहियां लसति नीची

खोलति नवेली बाल रोवति रिसाति अरु
साति मुसक्याति है॥ ३३॥ दोहा॥ जहं पि
यकी बातें सुनति भाव प्रकासित होइ॥
ताहि मुदित कहत हैं यों बरनत सब
कोइ॥ ३४॥ सवैया॥ कान्हको रूपको पावै
नवे विधि कोटि अनंग गन कोप विचारै॥
मेरो कह्यौ सुनिकै उत जैसी भई वह वै
सीन आप निहारे॥ रोम उठे दृग मूंदे से
नीरसों कीन्हो वधू मन मांझ विहारे॥ सो
हियाई मन मोहन चह मन मोहन मोहन
मंत्र तिहारे॥ ३५॥ दोहा॥ प्रिय कर तन मु
रखनहु मन सुख पावै वर नारि॥ पियरिह
ग सिर कंपलकै सो मुदित मन विचारि
३६॥ मुदित मित को उदाहरन॥ सवैया॥ क
छु देखति चित्रहु त्यों चितमें तिल आनि
अकेलि यै ठाढ़ी भई॥ बिहसौंहें से नैननि
से ननिसों मनकी मनि प्रीति भई जु नई
कुच गाढ़े गह्यो कर गौचकमै सिसक र
कारत हाथ अनूप भई॥ हिय पीरी बहेति
य पीर जनाइ कछू सिसकी मुसक्याइ ल
ई॥ ३७॥ दोहा॥ ढूंठहु को अप मान जोक

खन कौ जो चंचलता होइ॥ताहि कुतूह
ल बरनिये यो बरनत सब कोइ॥ ४४॥ ※
कवित्त॥बाजे जहं बाजे महा मधुर नगार
नीके धुनि सुनि मोरे कौतूहल कौ आछ
लाई है॥ पैली सहलनि मनि मेखला भ
नक संग महा मनि नूपुर निनादन की
भाई है॥ मीठे मीठे सुरनि जो बोलति सुजैनी
तहाँ मुखते निकसि गंध छूत उत छाई
है॥ ※॥ पहिले उझालन जो भूखन मयूखन
की पाछे ते मयंक मुखी देखन को आई
है॥ ४६॥ दोहा॥ प्रीतम को आये कछू भ
य संभ्रम जो होइ॥ चिंता मनि तासो चकि
त बरनत हैं सब कोइ॥ ४७॥ तिय संकासो
भ अचानका गरड बाहका गाहि॥ स
खी चकित अतिही भई अंचल लोच-
न चाहि॥ ४८॥ बोलन हूवो समय मै लाज
न बोलन देइ॥ बिहत चाहत है ताहि सों
चिंता मनि गुर सेइ॥ ४९॥ सवैया॥ पग
भूमि लखै वह ठाढी ही द्वार बिलोकत मो
ह हिये उलही॥ बिह सौंहे से गोल कपो
ल किये सो सकोचन लोचन नाइ रही

उघरौ अधर लहि बोल कछू पर आयौ नवो
ल यों लाज गहीं॥ सुधि आवत ही कसकै छ
तिया जो कछु बतिया बोलिया न कही॥ ५७
दोहा॥ जोबन को आगम लसै बिन कारन हि
जो हास॥ हंसति नाम सो तियन को लसत अ
नूप बिलास॥ ५८॥ उक्त अहट जोबन लसी
प्रगटै हास प्रकास॥ लो नीकै आयो मल
कि नैनानि ललित बिलास॥ ५९॥ रूप सो
भा प्रायते सोभा अंग सिंगारि॥ मनमथ
उत्थापित सुतौ कांति कहति निरधारि॥ ६०॥
कांतिहु को बिस्तार जो सो दीपति पहिचा
नि॥ चिंता मनि कवि कहत है रस ग्रंथन को
जानि॥ ६१॥ सोभा कांति दीप्ति प्रभा सुर्य को
उदा हरन॥ कवित्त॥ कैसकौ उठोन ठौन रूप
की अनूप कान्ह अंग अंग औरे कछू लो
प उल हति है॥ चिंता मनि चंचला बिलास
को रसाल नैन मदन के मद भोर आभा उ
म हति है॥ कुंदन की बेली सी नवेली अ
लबेली बाल कैतिक गरब की सी गोदला
हति है॥ उझकि झरोखे तुम्हे चाहिबे को चं
द मुखी चोसहू मै चंद्रिका पसारति रहति है

राज॥ कान्ह कुंवर की वलीकी कहा वनी छबि आज॥ ९४॥ इति श्री चिंता मनि विर चिते कवि कुल कल्प तरौ रस प्रसं ॥

प्रकरणम्

दोहा॥ जामै थाई रति सुतौ मनकी लगन अनूप॥ चिंता मनि कवि कहत हैं सो सिंगार सरूप॥ १॥ सुतौ रचा संजोग है विप्र लंभ कहि और॥ द्विविधि होत सृंगार यों वरनत कवि सिर मौर॥ २॥ जहां दंपती प्रीतिसों विलसत रचत विहार॥ चिंता मनि कवि कहत है यों संजोग सिंगार ३ अथ संयोग सिंगारको उदाहरन॥ कवित्त॥ कंचनकी सी वारन संजुत ललित मंच नग जडितका मैं उलहै नरिचवर॥ बैठी प्राण प्यारी संग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अंग न विलास है अनंग तर॥ कोऊ मृगनैनी लिये हाथ में चमर चारु काहू केऊ गऊ सजै पानन वीडन्या कर॥ निरमल मनि मय महल मैं बैठे चंद्र वदनी सु लावे लाल झूलत हिंडोले पर॥ ४॥ दूसरो उदा हरन॥ सवैया॥ चंद्रकासे

धकियो सिगारो जगमोध्यको ऊपर दंपति सोहैं ॥ दूधको फेनसी सेजके ऊपर रूप अनूप प्रभा मन मोहैं ॥ ह्वां पिय प्यारीके चारु जुरे दृग दूर दुरेही सखी जन जोहैं ॥ श्याम भयो ससि देखि मनो स्त्रिय दंपति पंकज जुरे दुल कोहैं ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चैतकी चांदनी के यो चंद अब लोकनिते छीरनिधि छिरको पूरन पूर उमगे चिंता मनि कोहै मन आनंद मगन हैके विहरत दंपती परम प्रेम सों पगे ॥ अध खुली अंखियां सुरति सुख रस बस मानो भोर अध खुले कमल से सबे प्यारीके सकल तन श्रम जल बिंदु सोहैं कनक लता में मुकता फल मानो लगे ॥ ७ ॥ चुंबन आ लिंगन हिरै आदि विविध विधि भोग ॥ चिंता मनि श्रृंगार मे सो कहो संजोग ॥ ८ ॥ जहां मिले नहि नारि अरु पुरुष सु बरन वियोग ॥ विप्रलंभ यह नाम कहि बरनत सब कवि लोग ॥ ९ ॥ विप्रलंभको साधारन उदा हरन ॥ ज्यों ज्यों जलु डारत जलद त्यों त्यों जारत जागि ॥ सम उपाय बिरहित बिरह यह पानी की आगि ॥ १० ॥

दोहा ॥ सो पूरब अनुराग अरु मान प्रबास
बखानि ॥ पुनि कहिये करुनात्मक सु जानले
हु मन आनि ॥ ११ ॥ होइ मिलनते प्रथम ही
सो पूरब अनुराग ॥ यामें दरसन कहत सब
ल कबि दसा बिभाग ॥ १२ ॥ पूर्व अनुरा
ग को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत सुधा सी
तल लगी सब जारति ज्यौं आनि ॥ दिसैबि
लासिनि की भई वह मुरिकै मुसक्यानि ॥
१३ ॥ प्रेम प्रीति अखियान की पुनि मन सं
गम जानि ॥ पुनि संकल्प बखानि ये पुनि
प्रबास उर आनि ॥ १४ ॥ बहुरि जागरन बर
नियै कृसता और बिचारि ॥ अरति लाज
को छोडिबो पुनि सज्जन निरधारि ॥ १५
पुनि उनमाद बखानियै मूर्छा और बखा
नि मरन अंतकी दसा ए बारह भांति सुजा
नि ॥ १६ ॥ प्रथम बरन अभिलाष पुनि चिं
ता चितमे आनि ॥ बहुरि सुम्रितो गुन कथ
न बहुरो सुमति बखानि ॥ १७ ॥ पुनि उद्वे
ग प्रलाप गनि पुनि उन्मादो मानि ॥ ब्या
धि और जडता कही मरन अंतमे जानि
१८ ॥ काहू ग्रंथ जारता काहू संबंधन लूप

गए उत लाल सखी छवि स्यों कछू चंद
की दीपति दैनी॥ज्योंही परे हग वार अबै
कै कोर कटाछ की डोरि सु पैनी॥प्रेम सु
धा सीत पालि गई अनिलाग गई मनमें
मृग नैनी॥२५॥संपाल्य को उदा हरन॥
सवैया॥जो कबहू हप मौन लखी कहुं
ज्योति जसो मति माहिं बुलावै॥चित्र लि
खित गेह विलोकति सो भनि मौन के
भीतर आवै॥सोहि विलोकत ही हंसिकै
भुज चंपक माल गरे पहिरावै॥लागि
रहो हियरा में यही अब जो हियरा हि
यरा में लगावै॥२६॥आनि कहै कबहू
यो गली कहि दैयौ निरखै गुरु लोगन
को चन॥ज्यों थरकै खरकै हियरे हम
जानतिहैं मर जाइगी सोचनि॥कुंडल
लोलह सोहैं कपोलन नंदलला लखि
ते दुख मोचन॥पाऊं कहूं सखि ठौरह
कंत हो देखी जहां हरिको भरि लोचन॥
२७॥प्रलाप को उदा हरन॥दोहा॥काहा
कहत कैसे लखै क्यों बोलत नंदलाल॥
पुनि पुनि बातें रावरी यों बूझति ब्रज बा-

चिंता मनि स्याम जके सुंदर वदन परह
मैहैं विकानी कौन यामें छल छंदहे॥ का
हौ कुल कानि जाति कौन पै निवाही
जाइ देखतुहै याही ताहि लाग्यो प्रेम
फंदुहे॥ मधुर कपोलनि मधुर मुसक्या
नि माई मधुर विलोकनि मधुर मुख चं
दुहे॥ जैसे सब कालनि अमृत मय चंद
ऐसे निभर अनंद मय नंद जूको नंदहे
३३॥ संज्वर को उदा हरन॥ कवित्त॥ मंड
प मृनाल जल जालन को पालन को ले
जहू मे विहि लाल जालन के पातहैं॥ दा
हे कवि चिंता मनि विकल विरहिनीको
सीतल अपार उपचार अधिकातहैं॥
चंदन अगार ताको जलको बहाई नदी
सिकता कपूर चूर आलि अब दातहैं॥ स
ते पथ्यति पाल विरह वियो गिनि को पी
रे पीरे होत पैन सीरे होत गातहैं॥ ३४॥
दोहा॥ ❋॥ विमल वदन को अवास ते वि
रह सहा दुख पाइ॥ हनी चंद लीरव निधि
सनि परी वालमुरझाइ॥ ३५॥ प्रथम बर
न अभिलाख पुनि चिंता मन मै आनि

बहुरि बरनिये गुन कथन पुनि उद्वेग ब
खानि॥७६॥पुनि प्रलाप उनमाद मि
लि ब्याधि सु जड़ता होइ॥दसौं दसा य
गनत हैं सुकबि ग्रंथ कर कोइ॥७८॥स
भ्यो बस्तु अरम्य सम दुखद यहै है जाहि
चिंता मनि आदि कहत है सो उद्वेग ता
नाहि॥७९॥बचन अनर्थ प्रलाप कहि
उनमाद वृथा ब्यापार॥ब्याधि सु तन त्या
दिका बरनत बिगत बुद्धि बिचार॥८०॥
जड़ता चेष्टा रहित तनु मरन सु जो
होत॥चिंता मनि आदि कहत यौं कह
त ग्रंथ कर सोत॥८१॥अभिलाष को
उदाहरन॥कबित्त॥नैननि को सुखदा
ति अनूप सुनैननि सौं सुधा रस नाऊं
या जग ऊपर मैं अपनो यहतौ अन
चीन्हि भाग गनाऊं॥श्री बृज नाथ
अभीष्ट के दातहि बार अनेकनि मैं घसु म
नाऊं॥औ बारक ही जु बिलासिन को मु
ख चंद बिलास बिलोकन पाऊं॥८२॥
ज्यौं निसि बासर चाहतु नाहि सुतौ कब
हूं अह चाह धरै गौ॥हेरि हसौंहैं कटाच्छ

लखे तनु ह्वै ॥ नैननि नीर भिगानि सरै बि
लसैन बिलास बिला सिनि तेरे ॥५६॥ ना
यका की स्मृत ॥ सवैया ॥ मोहीहै ग्वालि गु
पाल लखे ब्रजकी बनिता कछु भेदन पावें
बोलैन बोल ठगी सी लखे मन मैन के बा
न छियो अकुलावें ॥ रोमनि अंग कदंब क
ली मन मे घन स्याम की यों छवि छावें ।
सोरति मंद कियो हसिवो उमगें अंसुवां अ
खियां भरि आवें ॥५७॥ गुन कथन ॥ पेखत
ही प्रगटी मनको मनि वेनी महा विखना
गिनि माई ॥ ताप बढाइ गयो निरखे सुर-
खी तरुनी मुख चंद दगाई ॥ नील सरोरुह
मैनके काजल नैन निसारिके पीर जगाई ॥
आगि अंगारके रंगन अंगनि कैसी अनंग
की आगि लगाई ॥५८॥ उद्वेग ॥ सवैया ॥
मैनके वान गनै बिख संकुल बागके फूल
नि भोर विहारे ॥ चंद्र उवै निसि मे लखि-
कै चहुं ओर जरी जग आगिलि हारे ॥ ह्वैल
नहीं कल व्याकुल होत हितू उपचारनि
के पचिहारे ॥ ऐसे भये मन मोहन लाल
छिला गिनजी बाल वियोग तिहारे ॥५९॥

ताछिन तोहि बिलोकि बिलासिनि ताछि
नते कछु औरन भावै॥ तेरियै बात सुहा
ति सदा पुलकै कोउ तेरोजु नाम सुनावै॥ने
क नहीं कल मोहन लालहि यो सब लंक
मयंक सतावै॥ तो बनि आवै जो आनन
तेरो अरी अकलंक मयंक जिआवै॥ ५०
नायका को उदा हरन॥ बीछी को डंक म
यंक किधौं आगे लिखेहै प्रलाप॥ सवै
या॥ मूरति तेरी मनोहर मैं रचि बोलत
यों कछु मोहन प्यारे॥ आवे जू बैठो किते
ही किते चली भाग खुले कछु आजु
हमारे॥ बोलत क्यों यह संक गई जो का
हे मृदु मंजुल नाम तिहारे॥ बोलत क्यों
हो जू बूझे जबेल ददैन काछूकै काछू काहि
डारे॥ ५१॥ उन माद॥ सवैया॥ माया म
नोज की मोहन के बहु बार रचे बहु रू
प तिहारे॥ सामुहे आवति मूरति पै परि रं
भन को भुज दंड पसारे॥ हाहा करे मुख चुं
बन मांगे हसोंहे कपोल लसै छवि बारे
ऐसे है बिला सिनी रावरे प्रेम पै बावरीसी
है कछू बार डारे॥ व्याधि॥ सवैया॥ जे

मनि कंचन गाढे गडे कर मूलन है छल
काहु निकाई ॥ तेगिरि भूमि परे नहि जा
नत ऐसी भई तनमे दुबराई ॥ नीबिन मे
नानि नीद कहूं निसि दीठि कपोलनि मे
परि आई ॥ तेरी बिलो कनि पाइ बिला
सिनि ऐसी दसा मन मोहन पाई ॥ ५३॥
छूटि गयो हसिबो सब खेलि बोलिबे को
भयो आजु निबेरो ॥ खान कछून रह्यो
उनको अब ऐसी बियोग की आपदा
हेरो ॥ अंग अली नहले नचले अनसे
से घटेगो यह साहस मेरो ॥ ऐसी दसा
सुनि मोहन लाल की कैसो मन होत ह
या लन तेरो ॥ ५४॥ दोहा ॥ कबहू मरनन बर
निबे जीवन कबहू होइ ॥ तोपुनि बाको
आइबे यो बाधि सिहा कोइ ॥ ५५॥ दं
पति की रिसि परस पर मान बखान्यो
जाइ ॥ प्रनय ईर्षा भेद सो है बिधि ता
हि बनाइ ॥ ५६॥ प्रनय मानल: ॥ दोहा
होत प्रनय की कुटिल गति बिन कीन्हे
जो रोस ॥ दंपति कोइक सेजमे प्रनय
मान बिन दोस ॥ ५७॥ सवैया ॥ तू मन

ध्यान अद्र विचित्र मलीहि जो मेरी कही सिख मानै॥ जाहि चहै सो सदापति विंवित तोमे कहा तू रहै अकुलानै॥ वाहि कीन रखाई कछू सुधै अंतरवाहि भले पहिचानै॥ जो मुस क्यानि मे लीन रहै तो तू आप को ताप कछू नहि आनै ५८॥ बात कही अपने मनमे मुख वाहि रंचो हमहू को सुनाइ॥ ताकोन उत्तर दीजियै आपु तो होति गुमानहि की अधिकाइ॥ जानिको कौन सो बोलत को जु है काहू के अंतर की गति पाइ॥ जाकी चुभी मुसक्यानि है चाहिय तासो सुबोसे कोरे ली रखाइ॥ ५९॥ दोहा॥ प्रनय मान ठल दुहुन को ईर्षा मान जु होइ॥ सुतो बरनिये तियन मे यो बरनत सब कोइ॥ ६०॥ और तिया के देखते बोरे देख जो नारि॥ लघु मध्यम गुरु भेद स मानस त्रिविधि बिचारि॥ ६१॥ कौतुक छूटत मान लघु मध्यम कीन्हे सोह॥ गुरु छूटत पाइन परे फेर चढ़ति नहि भोंह॥ ६२॥ लघु मान सवैया॥ मन मान कियो वृषभानलली

अनतै अब लोकात लाल लहै॥ उत आ
वू जुरी सखियां सिगरी पिय आयां स
खी छ्बा बीजकै है॥ इत सूहि रह्यो चित
सजु पै मान लला हुलिले इत सुहि रहै
सुख बयाइ कैं राधि या आनंद सौं मुजम
लसौं लाल लपेटत है॥ ६३॥ मध्यममा
ना दोहा॥ प्यारीकी पलकी हुयै हीन्ही आ
जु गुपाल॥ तेरीसौं लाडिल उर समुभि
और लू बाल॥ ६४॥ गुरु मान॥ दोहा॥ हं
सति कहा मोपै निरखि लखि लखि हू
नकै अंग॥ नेहे और तिय नेह सों नेहु
हमारे संग॥ ६५॥ सवैया॥ सैलको चंद औ
मंद बयारि वहै अति सीत सुगंध भई
हून॥ जाको घनो लल चाति हौ बालसो
लाल सलोनो परयो मनि पाहुन॥ जोबन
को दिन पाहुन हैं पहु लाडली पीछ के
सी गुसा हून॥ कोलि करो मिलि मोहन
सौं कहा ठीक जुठानती हौ ठकुराइन॥
६६॥ दोहा॥ मान हरन के कारन कों वर
ने छयो उपाइ॥ छोडत इन तेरो सति
य ऐसे सदा सुभाइ॥ ६७॥ माना पमानो

भेद ॥ दोहा ॥ हास भेद ग्रह हीन दाहि
सोही पुनि तद्रवानि ॥ बहुरि उपेक्षा दाह
तहौं फिरि रस अंतर मानि ॥ ६८ ॥ ७८०
मधुर वचन सो साम कहि भेद सखी
की चाल ॥ दान ब्याज भूखन हि को प्रनि
त करन को पाल ॥ ६९ ॥ सामा दिकनी
छीनता होत उपेक्षा चित्त ॥ त्रास हरख
दुन आदि है कहि रस अंतर मित्त ॥ ७०
सम्यापदू ॥ कवित्त ॥ बैन सुधा तुही सी
चै बिलासिनि मोमन मोद लतानि की
क्यारी ॥ मोहि कहा बल होत कहूं मनि
जो पल एक रहे जब न्यारी ॥ मेरिये नैन
चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद
उज्यारी ॥ जो कछु जानो सु जानु कहौं तु
म मेरहो प्रानन ते अति प्यारी ॥ ७१ ॥ क-
वित्त ॥ चिंता मनि जो पै तुम्है उन सो हैं र
स पै तो काहे को उनको मनु बांध्यौ प्रेम
फंद सों ॥ वे तौ हैं बिलखें सुख तुम बिन तु
महूं तौ दुखित ह्वौ विरहि त आनंद को
कंद सों ॥ हम तौ जानति एहो तुम्है हैं स
यान देखौ पूरन अयान मान ठान्यौ नद

नंदसों॥वैतुमसैं मिली तुम दूनसौं मि
लैहीखुल्यौ चंदजैसे चाहनीसौं चांदनीसौं चंद
सौ ७३ चिंतामनि होइ कोऊ नीकी अनि-
सी कवित आगे लिख्यौहै॥दोहा॥सो
तन के कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यौ
निदान॥अब मनि एका पर चढ़ी कार
री भौंह कमान॥७४॥दानो पाइ॥कवित
मानसौं निहारि हरख भानकी कुमारि-
का हिल्या ए नंदलाल गूंदि हार माल
तीकी माल॥आनि अनवोली वेगरे मे
पहिराई वाह्यो वैसी नीकी लागी प्यारी
दुति उलही विसाल॥नेक मुस क्याइ ऊं
चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग र
चिंता मनि यों लखे गुपाल॥चिबुकाके
पोल चूंमि चूमि गहि कंठ झूल झूमि हं
सि लाल भुज माल भरि भेटी बाल॥७६
प्रनति को उदा हरन॥दोहा॥छोड़ि मान
पाइन पर्यो जो पिय काह्यो अधीन॥नी
ल कमल से दृगनि मे तियके भरि वो
नीर॥७५॥उत्प्रेक्षा उदा हरन॥दोहा॥पीव
आयो उठि इकि यो ऐसोकछु बहु मान॥

यह नहि देखति चलौ लखि यह क्यों सहै
गुमान॥७६॥रसांतर॥सवैया॥मान कियो
हु ष मान कुमारि जि मान्यौ गुना रिनाभो
र मनाई॥और उपाइ थके सिगरे मन मोह
न यों तब दाँव चलाई॥पीछे है तिहागे काहा
है तिया बाहि जोवलियां मनमें भरमाई॥
यों भिभाकी उलकी लपकी हंसिको नद
नंदन कंठ लगाई॥७७॥करुना लक्षः॥*
दोहा॥जहां पुरुष तिय जुगल मे मृत्यु ए
क की होइ॥पुनि जीवनि की आसमें क
रुना लक्षन सोइ॥७८॥जोवर नौका बं
बरी पुंडरीक वृतांत॥सो करुना लम गनत
हैं सब पंडित बलवंत॥७९॥प्रवास लक्ष
ण॥दोहा॥तन मन होत तियान को तास
नि पास प्रकास।पीतम को परदेस को वास
सु बरन प्रवास॥८०॥होनहार अरु भयो
जो द्वै विधि बरन प्रवास॥ताको देत उदा
हरन सज्जन सुनौ प्रकास॥८१॥भविष्य
त प्रवास॥क॰॥कैसीकरीमनप्यारेअरी सुर
तीन धरी ज़िय हेरि हेरवन॥सोर कियो
न काहा सजनी उत दादुर मोर पपी हन

के मन॥पावस मै परदेस गए पिय ऐसेन
हे कबहू निरदै मन॥आए नहीं घन स्याम
घेरै कहा देखे नही उनए उनए घन॥८२
दोहा॥प्रथम हेतु अभिलाख पुनि विरह
दसा मानि॥पुनि प्रवास अरु सापपुनि वि
प्रलंभ के जानि॥८३॥अभिलाष हेतु॥
सवैया॥नैननि की मुस क्यानि अनूपम
नैननि बीच सुधा रस नाऊं॥मोहन की
धन राग लखै मन मै अनुराग प्रमोद बढ़ा
ऊं॥यो जग ऊपर मै अपनो यह तो धन
जीवन भाग गनाऊं॥बार कहो जु बिला
सिनिको मुख चंद बिलास बिलोलन पा
ऊं॥८४॥विरह लछन॥दोहा॥गुरु जना
दि पर तंत्र जहं निकटहु मिलन न होइ॥
दंपति को बुध जन कहत विरह कहा वत
सोइ॥८५॥ललित कथा निसि केलि की वि
रह जलधि को सेतु॥होत दुहुन को दो
त्तै लख पद पद को हेतु॥८६॥सुंदरि
निरमल सौध रहि सरद चांदनी राति॥८
कैसें रही पियसौं अरी मिहरी मूरख जाति
८७॥प्रवास हेत॥दोहा॥मोहि तोहि जानि

के कहा जल अरु जीवन देते॥ पीउ पीउ रटि
रटि मरै निठुर कहा सुधि लेत॥ ८८॥ सेप हे
तु को मेघ दूत में॥ दोहा॥ विकृत औ कृत
बचन जो और वेष कछु होइ॥ ताते उप
जत हास्य जो बरनत हैं सब कोइ॥ ८६॥
वचन। दिवा वेहात निरषि ज्ञात गुचिन
विकास॥ विषयेणा दंदेविकै कहत सुकवि
जन हास॥ ९०॥ हास्य तु थाई भाव जित
सुतौ हास रस जान॥ चाहैं उप जत है सु तै
आलंबन पहि चान॥ ९१॥ चेष्टा ताकी
कहत बुध दीपन कूतको होइ॥ अवहित्था
श्रम आदि पुनि संचारी सो होइ॥ ९२॥ हा
स्यस्मित अरु हसित पुनि कहिये औ विचा
रि॥ और बरनिये उद्ध सित अरु अपहसि
त निहारि॥ ९३॥ पुनि अति हसित छविध
तुए दै दै भिन्न गनाइ॥ उत्तम मध्यम अ
धम जन गत ए सकुमा बताइ॥ ९४॥ स्मित
कहि बिक सित दृगन कछु लखि परै जु
दंत॥ कहत सित उत्त मेनके है बर नत बु
धवंत॥ मधुर सुस्वर विहसित सिर: कंप
छद्र मिल जानि॥ मध्यम नर गत हास को

ये हैं भेद बखानि ॥ आसुन जुतकहि अपहसि
त बहुरि अति हसित जान ॥ तन परसे मुह
मीत लै अअधमनके मानि ॥ ९७ ॥ सेतबर
न यह प्रथम पति देव तहां सब खानि
याको देत उदा हरन सुकबि लेहु मन
आनि ॥ ९८ ॥ सवैया ॥ आरसी देखि जसो
मति जू सों कहै तुत रात यों बात कन्है
या ॥ बैठते बैठ उठते उठे अरु कूदते कूदे
चलते चलैया ॥ बोलते बोले हसते हसे मुख
जैसो करो त्योंही आपु करैया ॥ दूसरो
कोत दुलारो किया यह कोहै जु मोहि
खिभावत मैया ॥ ९९ ॥ इष्ट ना सकि अ
निष्ट की आगम ते जो होइ ॥ दुःख सोक
थाई जहां भाव करन कहि सोइ ॥ १०० ॥
आलंबनिग सोक इत ताकी दाह क्रियादि
उद्दीपन अनु भाव गनि रोदन भूपा तादि
१०१ ॥ निर्वेदादिक होत हैं जामे बहु विधि
चारि ॥ ते सब अपनी बुद्धि बल लीजे बिबु
ध बिचारि ॥ १०२ ॥ यहु बचार रंग रसु कहो
जमदेवत जहं जानि ॥ याको देत उदाहरन
सुनो सुजन मन आनि ॥ १०३ ॥ कवित्त ॥ १

ऐसी भाँति राम सब नीतको प्रकार पूछौ भरत सुनायो रोइ पिताको मरन है ॥ बिहू ल अंगनते अचेत ह्वै गिरेहैं भूमि भाइ हू नको गन देखि भयो असरन है ॥ तेरही वियोग तें तिहारे पिता प्रान तजे तुमको धराको अब धीरज धरन है ॥ यह सुनते ही राम छूनो सब जग लख्यो वाही समै ह्वै गयो वदन विवरन है ॥१०४॥ वैदेही रो वै तीनो भाई लगे रोवन त्यों जागि रघुना थ एव चल मुख वाढ़ै हैं ॥ रोवो जिन को उ काहू तुम्है कौन दोसु राजा मेरे कालप्रा न तजे मेरे प्रान गाढ़े हैं ॥ तुमहू नहुते दिहा जीवें काहो कौन भांति मैंतो दुरजन जिन आगहू नठा ढ़े हैं ॥ ऐसी बातें कहि कहि भ रतसों रोइ राम नैन जल जनतें विपुलजा ल वाढ़ेहैं ॥१०५॥ भरत वचन बोलो एअ वहू तु कहा उठो तीनो जने चलि उदक क्रि या करो ॥ लछिमन सीताको विलोकि कह्यो ऐसी भांति अब उठो चलो धीरको ध रो ॥ साथमै सुमंत आए भाइ सब मंदा कि नी जल क्रिया करे भरे असुवान सो गरो

पुनि गिरि चढि आए उटज के द्वारमें पुका
र सब रोए संसार की दसा जरौ॥ १०६ ॥ ✻
दोहा॥ अरि विरचित अप राधतें चित्त
प्रज्वलन क्रोध॥ सो थाई जित रौद्र सौं व
रनत निर्मल बोध॥ १०७॥ आलंबन अ
व वरनि ये उद्दीपन मन आनि॥ ताके जो
आचार सब बुध जन लखत बखानि १०८
भृकुटि भंग दृग अरुन अरु अधर दंस
इत्यादि॥ अरु वरनत अनु भाव ए अभि
चारी इत्यादि॥ १०९॥ अरु वरनत अनु
भाव ए॥ दोहा॥ रन रंग सद्गाधि पति है
हु बखानौ ताहु॥ ताको हेत उदाहरन सु
कवि सुनौ मन लाहु॥ ११०॥ घनाक्षरी॥
बाह्यो भरत अङ्ग बुजन को गनबु छिनस
बामें त्वत्त तप लीन मारे॥ धनि धारे
सर्न छोडि नभ्मरिकों समर मैं लच्यो प
तिको संघारी॥ मीचु को मीचु संनिहत
वार सकात है भुज नवल प्रबल पइ उ
खारी॥ महा वैमान कुमार हू मार है उत्तम
निर्भिन्न जिनको बिचारो॥ १११॥ चवि
अपार आकास धूरि पूरन सम माकरि॥

अह निशि वासर छंद चलिय उहास दर प धरि॥ दिग्विजय पूरन विपति रोकि रहन के देसहि॥ चलौ उजारी भवदेरि मारोलंके शहि॥ चिंत मनि बल गन करत सब बल्लउ र भट समर भट॥ अति प्रबल विपुल का पि बल जलधि पहुच्यो दच्छिन जलधि र तट॥०॥११२॥लोलैा को नर लाक मै थि र जंत उत्साह॥ सो जा मे थाई सुरसुबी र कहत कबि नाह॥११३॥ जेत ग्यालंबन वरन ताको इंगित कोइ॥ उद्दी पन धुल्या दि पुनि संचारी इत सोइ॥११४॥नायकको आचरन जो सो गनिये अनु भाव॥ दान धर्म के युद्ध के दयासु आदि गनाव॥११५ इंद्र देवता कनक सम बरन सु याको आनि उत्तम नायक वि षम जहं होइ सुक्रोधम न आनि॥११६॥ सुभावादि इनके जु कछु बुध जन बुधिबल जानि॥ इनके देख उदा हरन सुकबि सुनो मन आनि॥११७॥ युद्ध बीर को उदा हरन॥ धनासरी॥गाय गिरि दरी बन लखन लै जानिकहि रामजु को वचनिज अंग कीन्हो॥ दिग्वर नीर सौ

है सुभग अंग मौ रुचिर रघुवीर कर चाप लीन्हो॥ कियो घन गरज घन धनुष टं कोर अस ललित मुख हरष झलकयौन दीनो॥ आइ भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व जै बोलि रघुनाथ कौ विजै दीनो॥११८॥ तबै धरको पकरि आप आयो उतै जितै सर चाप धरि राम राजैं॥ संगले सघन घ न संघ समर चगन तिष्य तमशस्त्र वरखा नि साजैं॥ परस त्रिसूल आस पास मुद्गर विपुल असनि सम राम पर डारि गाजैं समुद ज्यौं आप गावेग सहि आपु धनवे ग सहि छबिन रघुवीर राजैं॥११९॥ *

राम भुज दंड पाछे लिख्यौहै॥ दान वीर॥ कवित्त॥ कारियै लखन अभिषेक विभीष न जूको लखन विभीखन को कीन्हो अ भिषेकुहै॥ वडो सुखु पायो वानरन रीछ राक्षसन भयो मनो सवनि सुर ससेकुहै॥ त्यारि राम जूको साधमोदक अछत राज मंडलको साज भयो उछव अनेकुहै॥ रा वन संहारो राजु दियो विभीखन को ज गत सराहो रघुनाथ कौ विवेकुहै॥१२०॥

परम अपार भवसागर उतारि वेको॥ पीछे है
लिख्यो है॥ कवित्त॥ अवधनि पट तेरह गा॥
उकोस एक पर निरख्यो वारवार पदधा
रीलोग साधको॥ छिन्ना सनि वाहे मृग चर
म जटानि धरे मुनि वे ष जगात अभयक
र हाथको॥ वंस अलंहात कारि आपने
चरित्र सत्यकारी भागी रथ आहरन गाथ
को॥ जाइ हनूमान देख्यो धरम व्रतन धरे
पेख्यो है भरत उतभैया रघुनाथको॥ १२१
दया वीरको उदाहरन॥ दोहा॥ इंद्र काह्योम
न मोद धरि यों सुनिये श्रीराम॥ कौसि-
ल्या सु पुत्र भई पाइ पूत गुन धाम॥ १२२
इंद्र कह्यो अव माग वर यों वोले हृत राम
वे जीवें कपि रीछजे मरे महा संग्राम॥
१२३॥ जे पाल मूल अकास हू पावें वानर
वीर॥ होंइ विमल वसवनदी विलसैं जलके
तीर॥ १२४॥ इंद्र काह्यो ह्वै है इहै राम तिहा
रे हेत॥ सुने काहू संसार मे जीवत काह प्रे
त॥ १२५॥ ह्वै है सव जो चाहियत यों कहि
गयो अकास॥ सवके देखत समरमे वरस्यो
अमृत प्रकास॥ १२६॥ परमोन राकस लोथ

रन् काहूं अमृत को बिंदु ॥ मोह गयो मृत क
पिन को उयो ज्ञान को बिंदु ॥ १२७ ॥ उदेह
मिन बिन कपि सबै जग ईश्वर भगवान
दल रघु नंदन रामजू कारी अलौकिक ठा
न ॥ १२८ ॥ रौद्र चित्त भव क्रिया की विक
लपता भय जानि ॥ सो यामे थाई सुरस भ
यानक ह्हि यहि चानि ॥ १२९ ॥ जाके उप
जत हैं सुरे ते आलंबन जानि ॥ ताके हूं
जिन जो कछू वही पन उ मानि ॥ १३० ॥ वे
वर्नो ह्यस्त पने उ जाको हूत अनुभाव ॥
शंका मोहा दिक कहे ते संचारि गनाव
१३१ ॥ आलंबन याको यदन वाल देवत
मानि ॥ याको हेत उदाहरन सुकवि लेहु
मन जानि ॥ १३२ ॥ भया नक को उदाह
रन ॥ अति अधीन लवामी मयो राम विस
रे जात ॥ भयो कलिंगाधिपति को हीरउ
खोरे हात ॥ १३३ ॥ बीभत्सितलक्षण ॥ दोहा ॥
देखे घ्रणित वातको घिन्न जुगु प्सा जा
ने ॥ सोहि यांहि भाव थित सो बीभत्स व
खानि ॥ १३४ ॥ रुधिर मास दुरगंध अरु आ
मिषन मज्जादि ॥ महा पाल पति नीलरं

मुभाव ॥१४१॥ पीत बरन सो बरनियै म
न मथ दैवत मानि॥ याके हेत उरा हरन
सुकवि लेहु मन आनि ॥१४२॥ कवित्त॥
बाल पन कौसिक के मखके बिघनका
र निसा चर मारे सिलाप गास्त्र तारी
है॥ गारु हर चाप तोस्यौ बाप सत्त बैन
कीन्हो कानन सिधारे राज सिरो नानि
हारी है॥ बाली मास्यौ महा बली राक-
स संघारे पाति राकस के भुज दंडन
की मही पर पारी है॥ दीन्हो निज्ज था
मल अवधि दया निधि को अब धन
देस राम अवधि उधारी है ॥१४३॥ कवित्त
कोमल करकमल कर कस गिरि तै
उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलातु
है॥ जीवेगो सो जीवे जो मरेगो वहु मरै
ऐसो कैसे निज बालक कोलन देख्यो
जातु है॥ मेरो कह्यो कानन तो निकारि म
रोगी काहि चली कहा कर को सिखानि
को निपातु है॥ जहां काहे गोपी गोपग
न सब नंद रानीजहुं रसा करिबे को अ
चल अधि कातु है ॥१४४॥ संत लहरा॥

॥दोहा॥॥ सम कहियत वैराग्यते निर्विकार मन होइ॥ सो थाई जित सांतरस वर नत हैं सब कोइ॥ २५५॥ कुंद इंदु सम धवल यह श्री नारायण आप॥ यों रसके अधि देवता जे मेटत सब ताप॥ २५६॥ आलंबन संसार के निश्चित सत्य बखानि॥ कै पर मारथ अरथ जो सो आलंबन जानि॥ २५७॥ पुन्या श्रम हरि क्षेत्र अरु तीरथ रम्य बनादि॥ ताके उद्दीपन गनत महा पुरुष संगादि॥ २५८॥ रोमांच पुलका दिक अनुभाव गनि संचारी हर्षादि॥ सकल साधु सेवत लसत यह अति विमल अनादि॥ २५९॥ कवित्त॥

पूरन विमल गुरु कृपाके प्रभाव सब बिगरे प्रपंच भए व्याप कगंगन है॥ प्राचीन कर्म भोग करति जो देह ताकी सुधिनका छ्है ऐसे मान्यो जगन है॥ काम क्रोध लोभ मद मत्सर आदि महा मोहको विलास ठग सब ठगन है॥ धन्य जन कोऊ एसे

अभिराम ब्रम्ह ज्ञान आनंद १
अपार पारावार मैं मगन हैं १५०

॥ दोहा ॥

यह रस पुनि सु अलक्ष्य क्रम व्यंग आसु
धुनि हारि ॥ संगादि विसेष पद वाच्य
का कहत विचारि ॥१५१॥ वाचक पद रसतुय
हौ जो सब साधारन नाम ॥ चिंतामनि
कवि कहत है समभौ बुध अभिराम ॥
१५२ ॥ इन शब्दन तें कहत हू वंधन रस
को होइ ॥ यातें रस सब ठौर मैं व्यंगय क
हत सब कोइ ॥१५३॥ कछु विभाव अनु
भाव कछु अधिक वहुत संचारि ॥ व्य
क्तिनु थाई भावसों रस नाम यह निर
धारि ॥१५४॥ व्यक्ति सुरस को नाम तुय
ह समुझै रस ध्वनि नाम ॥ जो रसथा सो
होतु है सज्जन मन अभिराम ॥१५६॥
त्योंही भाव विचार रस भावन को आभा
स ॥ भाव शांत्यादिकौ पुनि अक्रम व
रन प्रकास ॥१५७॥ देव पुत्र गुर आदि
के तिनमै जो रति भाव ॥ कै संचारी व्य
क्ति सो थाई भाव समु भाव ॥१५८॥ देव

वलय दल सुकुमार ॥ हसत वदन दतिया दै देखि चिंता मनि जनम सुफल करि माने दसरथराय ॥ गोद लैके राम जू को आनंद मगन मैया ललकि कै बलैया लेत बार बार ॥ ९६१ ॥ रसाभास ॥ दोहा ॥

अनुचित विषय कराति जु है
सोई रस आभास ॥ अनुचित
विषयको भाव जो सो पुनि भा
वाभास ॥ ९६२

बैठि झरोखे मारि दृग बानन करति कुकाज ॥ मृग नैनी मृगया रची तरुन मृगन पर आज ॥ ९६३ ॥ भावा भास ॥ दोहा ॥ पाइ न परि ईश्वर कहे जाको सुर नर नाग ॥ पशु मिथि वध रावन कियो रघुपति जू रन जाग ॥ ९६४ ॥ उपसमया वै भाव २ जो भाव संत सो जानि ॥ भाव उदै आदि वा सुते उदया दिवा यहि चानि ॥ ९६५ आन वती पीतम लख्यो खरो दीन मुख दूरि ॥ औचका ही लोचन जलज आस्रत्ता सों पूरि ॥ ९६६ ॥ भावो दय को लछरा

॥ दोहा ॥

वेंदी पिय पट सों लगी लीनी अलीउता
रि॥ बूडि गई अब लोकि उत सखुच सिं
धु सुकुमारि॥ १६७॥ भाव संधिको उदा
हरन॥ कवित्त॥ चारु मुख चंद राम चं
द अरविंद नैन इंदी वर देह दुति लस
नि सुहाई है॥ कानन के मुकता पाल
नांकी झलकि मंद हसनि कपोलनि
अमोल छवि छाई है॥ रीझी सुकुमा
रि दसरथ के कुमार लखि भीषम धनु
ष हीन सुख मुरझाई है॥ ह्वै के बिह व
लतन जानुकी विकल मनहि मनसैल
सुता कुल देवता मनाई है॥ १६८॥ *

भाव सबलता

कवित्त॥ दूरहीतें सौंही चारु अचलहसी
ही ऊंची भौंहन के संग सोहै सुभग नवे
लीकी॥ आयो जब ढिंग तब सुबरन वे
ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन जुग
केलीकी॥ पुनि अध खुली इंदी वर
की कालीसी आइ परी है तिरी छी डीठि
रुचा के सहेलीकी॥ विविध कटाक्ष भां
ति मैन सर पांति खरी खुलीं आजु अ-

लियां अनूप अल्प देखीथी ॥ १६८ ॥॥

इति श्री चित्त भीत वि
रचिते कविकुल कल्प
तरौ अष्टमं प्रकरणम्
समाप्तम् शुभ मस्तु ॥

हस्ताक्षर चण्डी दत्त ब्राम्हण कान्यकुब्ज

बादशाह ने

साठ बरस की उमर में एक बेटा पैदा हुवा: बादशाह ने
उसका नाम जान आलम रक्खा सूरज उस्को देख कर थर्रा
ताथा· चांद शरम के मारे घटा जाता था· बादशाहने खजाना
खोला· कैदी छोडे ऐय्यत का महसूल माफ़ किया· दूर दूर तक·
रुपये बांटे· लड़के के नाम से गंज बसे मुसाफिर खाने बने·
पंडित जोतिषी आये· और कुंडली खेंच कर बोले· महा·
राजका· बोल बाला मर्न बा दुबाला· हमारी· हमारी पो
थी में निकलता है के भगवान की दया से शाहजादे का चंद्र
मा बली है· सब ग्रह अच्छे पड़े हैं· देग तेग का मालिक रहे· धरम
मूरत ये बालक रहे· जलदी राज पर बिराजे· पृथ्वी में धूम चे·
ऐसी शादी रचे मगर १५ वें बरस बृहस्पत वार के आवेगा पानी
चर पांव पड़ेगा· एक पखेरू सुएके बस में हाथ आवेगा· तिया
की खट पट से वो ऐसा वचन सुना वेगा· के राज पाट छुडावे·
सब देस फिरावेगा· डगर में शाहज़ादा भटके· कोई पास
न फटके· साथी छूटे· अपने डील से डांवा डोल रहे· फिर
एक मनुष्य ठाकुर सेवक कृपा करे राह लगावे· कोई कल
कन लामी होकर कष्ट दिखावे· वहां से जब छूटे तो रानी मि
ले· महा सुन्दर वो चरण पर प्राण वारे· पिता उस्का ग्यानी·
गुण की भरी हुई· तरुनी दे· उस्से कोई मलेछ लरे· दुख में·
आड़ी आवे बड़े काम बनाये जब उस नगर में पहुंचे जिस्की
चिंता में घर छोडा तो द्रव्य अपने हाथ आवे· सबके शदूर होजाय·
नरनारी
पर एक हरनी मन का कपटी स्त्री पर दुचित होवे बुराई करे· नरनारी
लड़े कुछ जल में हलकी चल हो प्रीति लाग छुट जावे नर नगर खो
जपे फिरावे फिर सब बिछुडे मिल जाय मात पिता के ढोक आय
स्त्री तिन हो· दो का प्रमाण रहे· एक की हीन हो वड़ा राज करे

श्या धरम के काज करे प्रभु की कृपा से जान की खैर है· बडी श्ध॰
ती की सैर है· बाद शाहने ये सुनके उदास हुआ मगर दिल मज़बू
त करके कहा जो ईश्वर करे वोही अच्छा सबको इनाम दिया· शाह
ज़ादा बडे लाड प्यार से पलने लगा· कोई बरसो में बडता है वह घ॰
डीयों में बढा· अो हान पांव निकाले के दस बरस की उमर में हिरन के
सींग चीर डाले· रूप ऐसा चमका के शायद ईश्वर से भी दूसरा वै
सा न बने· लिख पढ कर हुशीयार हुवा· सिपाही गिरी सब सी
ख ली· चौदा विद्या निधान हुआ· बाप ऐसा और बेटा ऐसा· चौ
दा बरस की उमर में एक शाहज़ादी परीकी सूरत कामनी मूरत
माह तलत नाम से उसकी शादी रची और बडी धूम धाम मची॥

२ चरित्र॥

जान आलम कभी सैर को जाता था · एक दिन उसने बाज़ार में बड़ी भीड़ भाड़ देखी · हर तर्फ़ वाह वाहो रही थी · देखा तो एक ७० अस्सी बरस का बुड्ढा तोते का पिंजरा हात में लिये खड़ा था · शाहजादे को देखते ही तोता अपने मालिक से बोला के ले तेरा नसीबा जागा · शाहजादे का दिल मेरे तर्फ़ आया · अगर्चे मैं जानवर हूं और बिल्ली का भी खाजा नहीं मगर जो ये कृपा करे तो अभी तू निहाल हो जावे · शाहजादे को तोते की बात बहुत प्यारी लगी · पिंजरा हात में लेकर उस बुड्ढे से दाम पूछने लगा · तोता बोला के गरीब आदमी के माल का कौन मोल लगाता है · जो हुजूर की मर्जी · जान आलम ने एक लाख रुपये और खिलत दिया · और पिंजरा हात में लिये घर में आया · और माह तलत को दिखाया · तोता रोज़ किस्से कहानी बात शाहजादे को सुनाया करता · ऐसा जाल में फ़साया के सोते जागते जान आलम उससे अलग न होता था · और जब दरबार जाता तो शाहज़ादी को सौंप जाता · एक दिन जान आलम तो दरबार को गया था · शाहज़ादी नहायी और सिंहार के सोने की कुरसी पर बैठी · हवा जो लगी तो शीशे में अपना मूं देख कर अपनी खूबसूरती का अभीमान करने लगी · सहेलियों से पूछा · के अब मैं कैसी लगती हूं · एक ने कहा चांद हो · दूसरी बोली परी हो · जब वो सब कह चुकी तब शाहजादी ने तोते से पूछा के ऐसी सूरत कभी तेरे ध्यान में भी आई थी · तोता उदास बैठा था चुप हो रहा उन्ने उससे फिर पूछा · तोते ने कहा ऐसा ही होगा · शाहज़ादी को लग गयी और क्रोध में आकर बोली मियां मिट्ठू जी तेसे खफा हो जो हमारे सामने चबा चबा के बातें करते हो · तोते

सवारी जान आलम और खरीदना तोतेको बाज़ार में से
तोतेवाला

जानआलम
माहतलत
बांदी
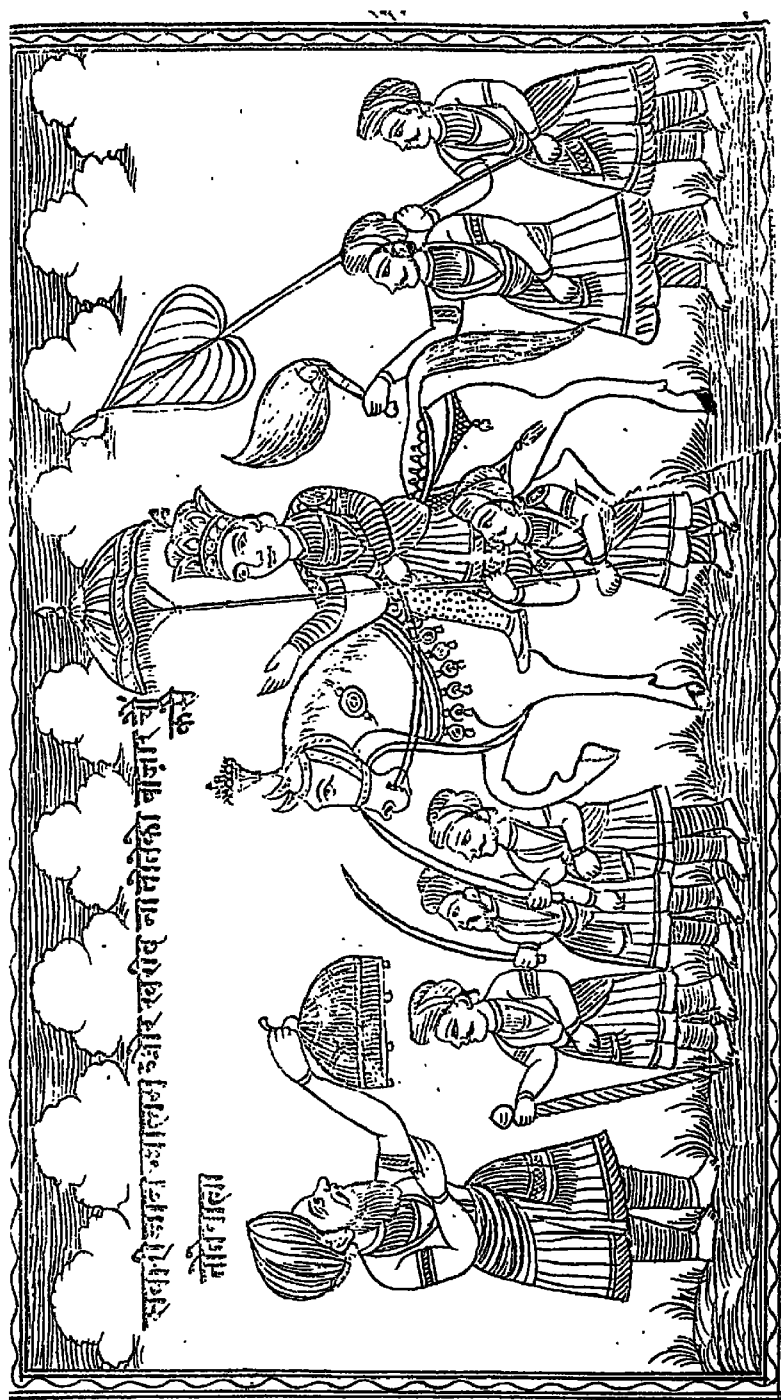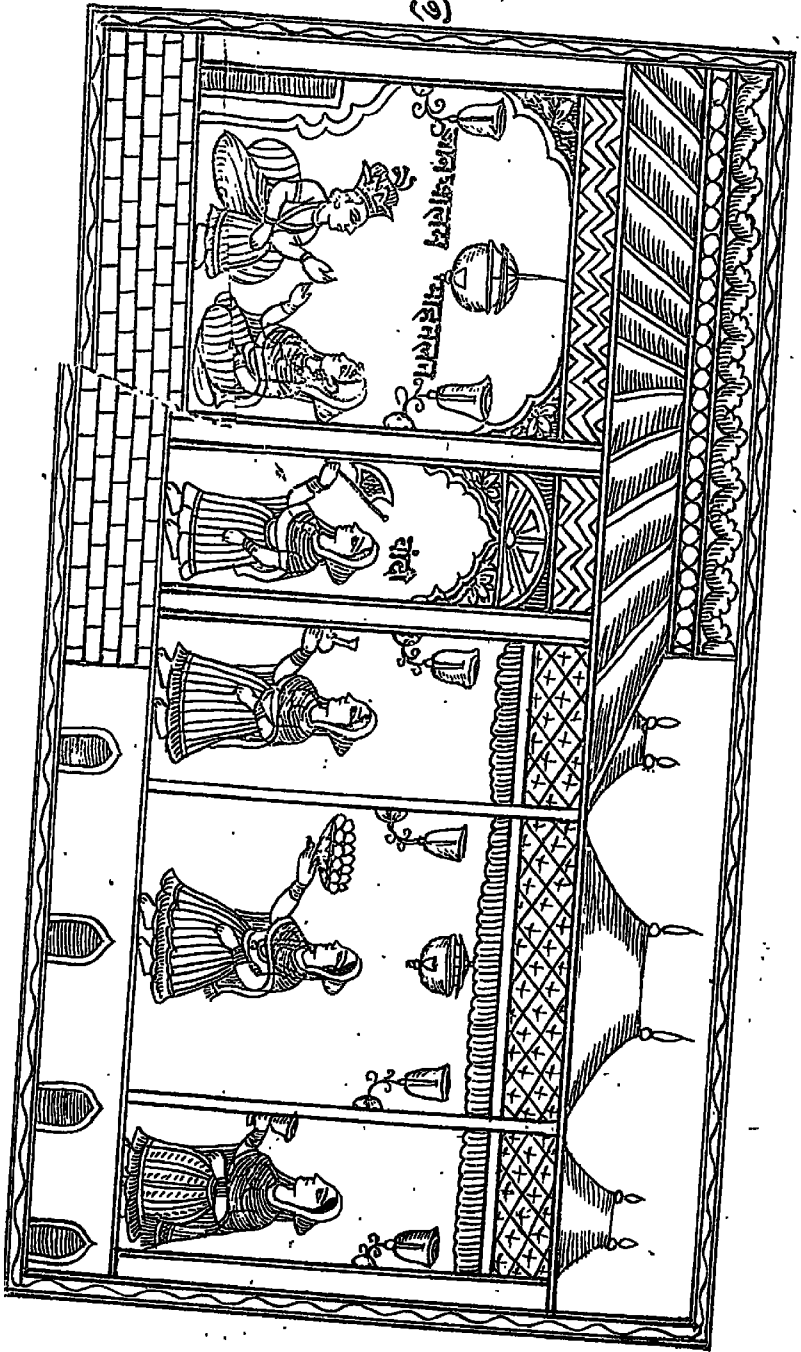
ने कहा · बात चीत और और और धमकाना और हूकूमत से
डराना और और गुस्से की आंख दिखाना और क्यों उलझती हो शायद तुम
सखी हो · ये सुनते ही शाहजादी कहा थी बोली क्यों तेरी मौत आई है · नाहक
की उंदें सचाई है · हमारा मतलब ही जानता · तोते के मूसे निकला क्यों इन
की दिमाग़ती हो · साहब तुम बड़ी खूब सूरत हो · यहां तो ये हो रही थी के शा
हज़ादा आया और ये हाल देख कर पूछा के आज तोता है · तोता बो
ला खैर यहां से तीन कोस पर है · कुछ दाना पानी इस पींजरे में बाकी था
सो आप आ गये · नहीं तो शाहज़ादी मुझे जीता न छोड़ती · आप खाली
पिंजरे को देख के रोया करते और यह कहते तोता हमारा मरगया क्या
बोलता हुआ था · साहब तलब दूत वालों से और बैठी हुई और क
हा जो तोता मेरी बात का जवाब नहीं देगा तो उसकी गाड़े की गर्द
न मरोड़ आंखें निकाल अपने नख दांतों से मलूंगी तब दाना पा-
नी खाऊंगी · जान आलम ने कहा · कुछ हाल तो कहो तो
ता बोला · हुजूर मुझसे सुनिये · आज शाहज़ादी अपनी दालि
हूतों में बड़ी खूब सूरत थी · मुझसे पूछने लगी के तूने कभी ऐसी सकल
देखी थी मेरी शामत जो आई तो मेरे मूसे निकला के खुदा ने करे · बस
इस बात पर वो मारने को तैयार हुई · जान आलम ने शाहज़ादी
से कहा के तुम भी कितनी अकल से खाली बेवकूफी से भरी हो · तुम
तो परी हो · जानवर की बात पर क्या इतना रंज करना वो कि
स जानवर है · मियां मिट्ठू को इन बातों की ताब न आई · आंख बद
ल कर रूखी सूरत बनाई · और हंसे बोला सरकार झूठ कूट है औ
र सच सच है · जिसके बराबर कोई नहीं वो निराकार ॰
जोति स्वरूप है · उस के सिवाय सेर पर सवा सेर मौजूद है · ये सु
न कर शाहज़ादी और भी पूछने लगी असल मशहूर है ·
राजहट · त्रियाहट · बालक हट · जान आलम ने लाचार होकर कहा

जो होसो हो · मिया मिट्ठू प्यारे · सच कहदो तोते ने कहा मु
के सच न बुलवाइये · मेरा मूल खुलवाई ये · नहींतो हुजूर के
दुशमनों को · जंगल जंगल फिरना पडेगा · जान आलम
ने कहा ये और हुई · जो कहना है कहिये · तोता बोला सफ़
र में बडी मुसीबते हैं · मैने बहुतेरा टाला मगर आप
की किसमत ही में लिखाथा · मेरा इसमें कसूर नहीं अ
ब सुनिये के यहां से बरस दिन की राह उत्तर के तरफ़ एक मु
ल्क है · जर्निगार नाम · वहां की शाहज़ादी अंजुमन आरा
का तो क्या कहना है · मेरी क्या ताकत है जो तारीफ़ करूं ईश्व
र खुद उस्को देख कर अपनी कारीगरी पर घमंड करता
है · मगर सातसौ लौडियां उस्के पास हैं · अगर शाहज़ादी
उन लौडियों को देखे और कुछ शरम भी आवे तो यकीन है
के चुल्लू भर पानी में डूब मरे माह तलत ये सुन कर सुन्न हो गई ·
जान आलम पिंजरा उठा दूसरे महल मे लेगया और सच्चा हाल
पूछने लगा तोते ने उसका मूं देख कर जाना के बिरह के जा
लमें फ़सा बहुत पछिताया और दिलमें कहता के मैने इ
स्से क्यों कहा · मंत्र चल गया पढा जिन सिर चढा टालने के
वास्ते कहा के इस तरफ़ का इरादा न करो · बिरह का रस्ता बहुत
कठिन है अकल जाती है · खपत होता है · आंखे चाहिती हैं ·
मूं पीला होकर · भुख प्यास मर जाती है नींद नहीं आती ·
लोग ताने देते हैं · लडके पत्थर मारते हैं ॥ तिनके चुनते
हैं रात भर तारे गिनते हैं · जंगल में जी लगता है · बस्तीउ
जाड मालूम होती है · दिनतो फिरने में कट जाता है · मगर रात
पहाड़ मालूम होती गूंगा बहरा बन जाता सुन्न हो जाता है अभि
तो कुछभी नहीं हुआ · ठंडी सांसे भरते हो देखो न भाला ·

शीशे में सूतो देखो · कोई किसका यार नहीं सब फूटा धंधा है उ
ल्फ़त कंबख़्त बे पीर है · यही टेढी खीर है बडे बडे सूरमा इसमें
मर गये छाती पर अरमान ले गये अपने प्यारे से मिलने में बडा म
ज़ा है मगर अलग रहना मार डालता है उल्फ़त कूवें फूंकाती है·
ये बीमारी जान के सात जाती है · और वो बात जो मैंने कही पच
के सबब से कही थी नहीं तो कहां मुल्क जर्रिगार और के
सी अंजुमन आरा जान आलम ये सब बातें सुन के बोला
वाह वाह मैं कब मानता हूं अगर वो झूठा था तो ये कब सच्च है
· इन बातों ही में शाहज़ादे का हाल और ही होगया दीवानो
कीसी बातें करने लगा · रोया, चिल्लाया · कपडे फ़ाडे सिर
पीट लिया · तोता बहुत शरमाया · दिल में कहा के उस और
त के सबब से इस बिचारे का खून मैंने अपनी गरदन पर लिया·
अब समझाने से क्या फ़ायदा · ये सोच कर जान आलम से कहा
क्यों घबराते हो · मैं तुम को ले चलता हूं मगर शर्त ये है · जो कहूं
सो करना नहीं तो धोका खावोगे · फ़िर मुझ को न पावोगे पछता
ओगे · जान आलम ने कहा जो तुम कहोगे सो करूंगा · मगर ५
जलदी पता बताओ नहीं तो दम निकल जायगा तेरे हा
थ क्या आवेगा · तोते ने कहा इतनी जलदी न कीजिये · रात
भर दम लीजिये कल यहां से चलेंगे जान आलम ने तडप
तडप के रात काटी · सवेरे ही वज़ीर ज़ादे को बुलाया लडकप
न से साथ रहे थे परले दरजे की मुहब्बत थी · दो घोडे अस्त
बल से मंगवाये और दोनों बिन बताले चल निकले॥

कबित्त

(न सुध बुध की ली और न मंगल की ली॥
(निकल शहर से राह जंगल की ली॥ ५॥

३ तरीह

तब बाद शाह ज़ादा इन फटे हालों से शहर के बाहर आया · फ़िर कर बादशाही मकानों के तरफ़ देखा ठंडी सांस भरी · कमर मज़बूत बांधी खूब दिल खोल कर रोया तोते को पींजरे से खोल दिया · आप और वज़ीर ज़ादा घोडों पर सवार और मियां मिट्ठू पैदल न था दाना खाने और न था पानी पीने चलते चलते एक जंगल में पहुंचे हर तरफ़ फूल खिले हुए थे ठंडी हवा चल रही थी इतने में दो हिरन आये जर बफ़्त की झूलें पडी जडाऊ सिंगोटिया चडी · गले में हैंकलें पडी हुई २ करते चौकडीयां भरते हवा की मानिंद सामने से निकल गये जान आलम और वज़ीर ज़ादे ने इनको जीता पकडना चाहा। घोडे डाले · हिरन भी कनौतियां बदल चौकडी भरते हुए भागे · तोता ये हाल देख कर चौकडी भूला · कहा ये क्या करता है ये सब जादू का खेल है · बहुतेरा पुकारा · सिर दे मारा · सन्नाटे में किसी ने न सुना · तोते ने अपना सिर धुना · और थक कर एक पेड पर बैठ गया। दो चार कोस चल कर एक हिरन एक तरफ़ और दूसरा दूसरी तरफ़ गया एक के पीछे शाह ज़ादा और दूसरे के तरफ़ वज़ीर ज़ादा जान आलम शाम तक घोडा व दूपे के गया · अचानक से वो हिरन गायब हो गया फिर तो ये अकेला जंगल में घबराया आदमी की बो भी नहीं आती थी · एक फिरे पर पहुंच कर हाथ मुंह धोया खूब रोया के ईश्वर तेरे सिवाय यहां कोई नहीं किस्को कहूं और किस्से बोलूं तेरे ही भरोसे पर मैंने ये काम किया है इतने में एक बुढ्ढा आदमी आया और सलाम कर पूछा कि क्या मांगता है शाह ज़ादा खुशी के मारे फूल गया · तोते और वज़ीर ज़ादे को ९

कोभी भूल गया· और कहाके मुझको जल्दी मुल्क जर्नि
गार तक पहुंचा दीजिये· बुड्ढा हंसा और कहाके अभी इस
सुसीबत से तो निकलो· तुम को शायद मालूम नहीं है·
के इस जंगल में सब का रखाना· जादू का है· यहां का फंसा क
भी नहीं निकलता जान आलम बोला के हमारा जीना मरने से
भी बुरा है·॥ कबित्त॥

हमेशा आग निकलती है अपने सीने से
इलाही मौत दे गुजरा में ऐसे जीने से ॥

बुड्ढे को इसके हाल पर दया आई· कहा क्यों घबराता है ईश्वर
में सब कुद रत है जान आलम बोला के एक दफे अपनी प्यारी
को देखलूं जिंदगी का क्या भरोसा है· दिल में अरमान तो
न रहे· बुड्ढे ने कहा आंख बंद कर आंख बंद करते ही·
मुल्क जर्निगार देखने लगा· प्यारी की शकल देखते ही
हाय हाय करने लगा· उस्से बुड्ढे ने समझा कर आंख खुल
वाई· कुछ खिलाया और उसी फिरि पर सुलाया· जब सबेरा हुआ
तो शाहजादे ने अपने तई वही पाया जहांसे हिरन के पीछे घो
डा फेंका था· तोते से सब पता पूछ लिया था· अपना रस्ता च
लने लगा एक दिन बड़ी धूप पड़ी जबान में कांटे पड़े जाते थे·
तलवे जले जाते थे· जानवर पत्तों से मूं छुपाये पड़े थे· जंगल
में सन्नाटा· धूप का तड़ाका· पत्थर तपते से आग का अंगारा·
जानवर हर एक प्यास का मारा था· उस धूप से हिरन काला
हो· बात करते जबान में छाला हो· मछलियां पानी में भुनती
थी जलजल कर किनारे पर सिर धुनती थी· मुसाफिर नदि
में बड बडा ते थे कोई चुल्लू भर पानी दो· ऐसे सफर में जान के
से बचे आसपास कुछ पेड नजर आये· एक होज भी दि-

कवा· शाहज़ादा बैठा गया· जानमें जान आई· होज़ पर पानी
पीनेको फुकानो पानी में उसी की शकल दिखी जिसके
वास्ते ये मुसी बन उठा यी थी· वो बोली बडी देरसे तेरा रस्ता
देखरही हूं जलदी आ इस कानो आंख बंद करने का हिसा
ब आठ पहर रहा करता था· धमसे कूद पड़ा ·सिर नीचे टां
गे ऊपर आंख खुलीतो कुछभी नथा· जंगल ही जंगल दि·
खा· कहा अफ़सोस· दूसरा धोका खाया· रोने की बात
आगे आई· चलते चलते एक बाग़ के पास पहुंचा देखा के
वहां नहर बह रही है· जानवर पेडो पे बैठे हैं सुंदरीयां बाग़में
फिर रही हैं बीचमें एक बारह दरी एक संग मर मर का चबू
तरा· और एक मसनद पर एक कामनी मूरत बैठी है·

आस पास लौंडियां खड़ी हैं शाह जादे को देख कर एक लौं
डी बोली साहब तुम कौन हो· जान न पहचान · बेधड़ क
पराये मकान पर चले आये येतो मरने पर तैयार ही था ·
कुछ न बोला · और मसनद पर जा बैठा · वो औरत तो मु
द्दत से इस पर मरी हुई थी हंस कर बोली आप कहां से
तशरीफ़ लाये · जान आलम हक्का बक्का बाग़ को देख
ता था · जान वर की शकल के फल लगे थे · फूल बातें
करते थे जिस में वे पर दिल चले वो मूके पास आजा वे
जितनी चाहो खाओ फ़िर वो पेडका पेडही पर मौजूद
है· ये बातें शाह जादे के वास्ते थी · जान आलम ने दिल में
कहा · लोफिर फ़से · उस औरत ने फिर पूछा तुम कहां
से आये · शाह ज़ादे ने कहा के हम से क्या पूछती हो·तुम
तो आप जानती हो · वो हंसी · शराब मंग वाई कवाब भी
आये · जान आलम ने सोचा के अगर नही पीते हो तो
जान जाती है और जो पीते हो तो क्या मज़ा है · आखिर को
प्याला लिया और लहू के से घूंट गला घोट घोट के पीये ·
वो औरत शराब में मस्त होकर छेड छाड करने लगी · जान
आलम भी डरके मारे कुछ हां हूं कर कर देता था सच है जि
से जी प्यार करता है उस्की गाली भी सुहानी लगती है · और
दूसरे का प्यार ज़हर मालूम देता है · आधी रात को खाना
आया · जान आलम ने दो चार निवाले। पानी के स
हारे से उगल उगल के हलक़ के नीचे उतारे मगर उस
मर मुक्की ने खूब हत्ते मारे।फ़िर शाह जादे का हाथ पक
ड़ कर अंदर के मकान में लेगई · पलंग पर बैठाया · आप
लेट गई · शाह ज़ादा वहां से सरका · वो बडी ज़लील हो गई·
और बोली · तूने सुना होगा के शाह पाल जादू गर तमाम

ज़ादूगरों का बादशाह है • मै उसकी बेटी हूं मुद्दत से तेरे ऊ
पर मरती थी • नखाती नपीती थी • आज तू मेरे हाथ आ
या दिलका मन लब भर पाया • जो तुके चाहीये मुझसे ले
मगर अंजुमन आरा से नमिलने पावोगे पहले तो शाहज़ा
दा डरा फिर मज़बूत दिल करके कहा केये सब सच है तेरी •
बातों से मालूम होता है के तू उल्फत का मज़ा ज़ानती है • अ
गर इंनसाफ़ तो कर जिस्के वास्ते मेन घर छोडा • तू उसीके
जान की दुशमन है • मैं तेरा क्या भरोसा करूं • दुनियांमें
तीन तरह के दुश्मन होते है • एक तो अपना दूसरा दुश्
मन का दोस्त और तीसरा दोस्त का दुशमन • ये सब बराबर
है भला ये कौन दस्तूर है के एक के नाम को खराब कर कर
जहां आराम मिले वहीं बेठ रहना • मैं कुछ रुपये पैसेका
भूका नहीं अपने घरका राज छोड कर आया हूं ये सुन
के वह खिसियानी कुतिया सी फुफलाई और बोली के
जो तू मेरी बात नमानेगा तो अभी पल भर में अंजुमन
आरा को लाकर तेरे सामने जलाऊंगी और अपना दि
ल ठंडा करूंगी जान आलम डरा और सोचा जो मान
ने हो तो अपनी जान का डर है • जो नहीं मानते हो तो अ
पनी प्यारी की जान जाती है ये सोचने लगा • और
अपना भू नोचने लगा • जिस पर पडे वुही जाने • दिल
का ये हाल होता है के जिधर आया आया जिस्से फिरा
फिरा एक तो अपनी प्यारी से अलग रहना और दूसरे जिस्से
दिल घिन उस्के पास बेठना • ये कहांकी मुसीबत • आखिर
को यही ठहराई के इस्से जो बनाये रहो गे तो अपनी और
अंजुमन आराकी भी जान बच जायगी • ईश्वर और कोई स

डा
यरा
कु

ना बनावेगा · ये ठान कर उस औरत से कहा · हमतो तेरा जी ॰
देखते थे · हमने सुना है · के प्यार करने वाले, सब बाते सह
ते हैं · अगर ये झूठ है · तो धम काते है · डराते हैं · प्यार कर
ने वालों की हकूमत कभी कानों से नहीं सुनी होगी · हमने
आखों से देखी तू इतना भी न समझी के तुझसी परी और
इतने रुपये को छोड कर ऐसा कौन बेवकूफ होगा ॥ जोउम्मेद प
र जंगल जंगल ढूंढ ता फिरेगा · मैंतो तुझसे हंसता था · ये कह
कर गर दन में हात डाल दिया · और उस्का मूं काला किया ·
दोनो लेट तेही नरक में पोंची । इसको नींद कहां आती थी ·
रात भर रोया करा जब वो कर वट लेती तो डरके मारे चु
प हो जाता · और झूठ मूठ सो जाता · सवेरा हुआ वो इसको हंमा
म में लेगई · नहा लाया · फिर खाना खाया और कहा के ·
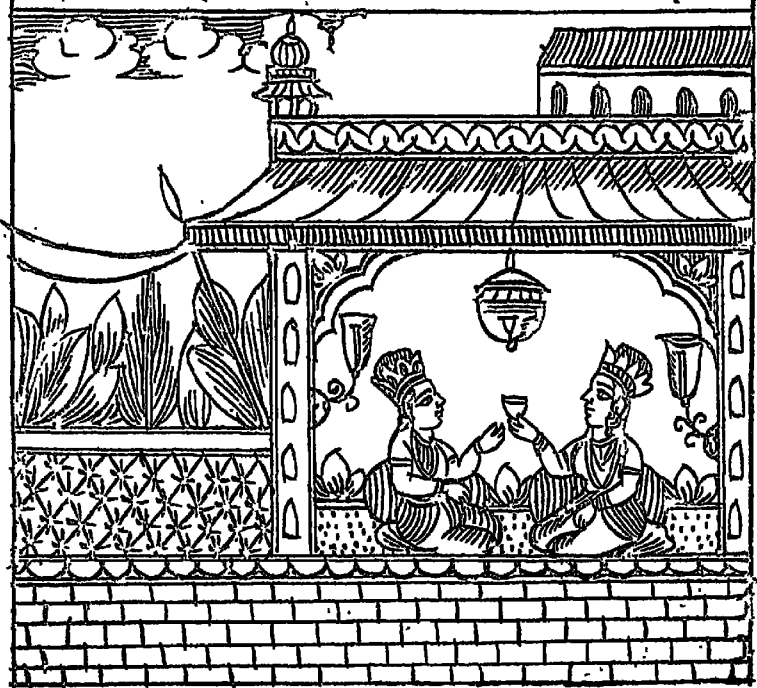
इस वक्त से तीसरे पहर तक में शहपाल के दरबार में हाज़िर रहती हूं. अगर तू छुट्टी दे तो जाऊं. दिल में तो जान आलम ने कहा जो दम बचे सोई गनीमत है. मगर ज़ाहर में बात बनाई और कहा के मैं तेरे बगैर कैसे रहूंगा. खैर जा. जलदी आईयो वोये सुन कर बहुत खुश हुई. उसके जाते ही बाग सुनसान हो गया. जान आलम अकेला खूब दिल खोल कर रोया. और कहा के हमसा भी कमबख्त कोई न होगा. कोई ऐसा नहीं जिस्से दिल का हाल कहूं. डांडा मेंडा उस्से कहरा. जिसकी शकल से भागूं. तोता यों उड़ गया. वज़ीरज़ादा वो छूट गया. शाम के वक्त वो जादूगरनी आई. जान आलम झूठ मूठ हंसने लगा. दो महीने यों ही कटे जान आलम सूख के कर कांटा होगया. एक दिन जादूगरनी ने कहा के तुझ को तो ये बाग काटे खाता होगा. तेरा दिल घबराता होगा. क्या करूं यहां कोई नहीं. लौंडियों को अभी उठना बैठना भी नहीं आता. जान आलम ने कहा हम क्या घबरायेंगे. अकेले ही पैदा हुए थे. तमाम उमर अकेले ही रहे हमारी किसमत में दूसरा लिखा ही नहीं. मगर ये है के अगर कोई मार डाले तो तुझसे कौन कहे मेरी मिट्टी मुफ़्त में खराब हो. उसने कहा ये जादू का मकान है. इसमें किसी की मजाल नहीं जो तेरी तरफ़ देखे. जान आलम बोला के अगर कोई जादूगर इरादा करे तो क्या हो. औरत ने कुछ न सोचा और प्यार में अंधी होकर एक तावीज़ संदूक में से निकाल जान आलम को दिया. वो दरबार को चली गई. ये अपनी प्यारी के ख्याल में रोया किया. एक दिन इसने अपने दिल में कहा तावीज़ तो खोलो. शायद कुछ मतलब निकले. ये कह कर

तावीज खोला · उसमें लिखा था जोकोई जादु गर के कैदमें फसा हो तो इस तावीज को पढे · फिर जहां चाहे वहा चला जाये और जिसजादु गर पर फूंके वो जादू गर जल जाय · जान आलम ब हुत खुश हुआ · तावीज़ याद कर लिया · इतनें में जादू गरनी आई जान आलम की नेवरी पर बल देख कर बोली के आज मिज़ा ज कैसा हे · वो बोला बहुत अच्छा है · तेरा रस्ता देख रहाथा ले अब में जाता हूं तुझ को शेतान के हवाले किया · ये सुन तेही उस्का दम निकला समझ गई के पेंच पड़ा · सिर पीट लीया · फ़िर कुछ पढ कर तारि यल ज़मीन पर मारा · हजारों अजदहे पैदा हुए · जान आलमने तावीज़ के जोरसे सबको पानी कर दिया, फिर तो मिन्नत करने लगी · पांव पर सिर धरने लगी · जादू गरनी थोंने समझाया के प्यार में दगा बाजी अच्छी नहीं जो अपने ऊपर जान दे उसका साथ देना चा हिये · जान आलम ने कहां जरा गरे बान में मूडालो · सोचो हम भी किसी की उलझन में जंगल फिर ते हे · तुम ने जबर दस्ती हमें कैद किया ये अहसान थोडा हे के तुमारा खेल न ही बिगाडा · नहीं तो तमाम कार खाना उलटा पुलटा कर दे ता वो सिर पटक ती ही रही · ये चल दिया · उसी होज़ पर आया · घोडा वहां सिर पटक के मर गया था · उसकी लाश देख कर रोया के अब पैदल चलने की मुसीबत पडी · फिर अ पनी प्यारी का जो ध्यान आया तो चलने लगा · पांव में छाले पडे गये · कहीं पांव रखता कहीं पडता इसी तरह से चलता ॥

५ वा दिन

जान आलम चलता चलता · जीना न मरना · एक दिन सुहावने एक जंगल में पहुंचा फूल फल और बाग की सो

मा देख कर ईश्वर याद आता था · जाद शाह जादे को यह ज गा बहुत पसंद आई · वहीं रात काटने का इरादा किया जानव रों के छूल बल· उछल कूद · खेल कुलेल देखने लगा· कहीं का· ला कहीं लाल बादल सावन भादों की घटा याद दिलाता था· घन घोर घटा छाई · मस्तों की बन आई · ॥

कवित्त

की फ़िरिस्तों की राह अक्ल ने वंद ॥ जो गुन : कीजिये स दाद है आज ॥

नदियां नाले चढे : तालाव भरे पपीये का वहां होना · पीपी कर जान खोना कोयल की कूक · मोर का बोलना बिजली की चमक · बादल की कडक बडी सेर दिखा रही थी · शाम के ५ वक्त जानवर सब पेडों पर बैठे थे · आसमान पर शफ़क फू ली · अवध की शाम की सेर भूली · एक तर्फ़ धनुष में लाल हरी पीली धानी लकीरें दूसरे , तर्फ़ बुलबुल बोल रहे· हि· रन चरते थे · कहीं मोर नाचते थे · कहीं चकोर चांद के ऊपर लपक थे थे · जब कोई अपने प्यारे से अलग हो· और ये सेर देखे तो दिल के टुकडे क्यों न हो और छाती कैसे न भर आवे· द स्तूर की बात है कि जब आदमी को आराम मिलता है तो जिसे जी प्यार करता है वह याद आता है · जान आलम को अपनी प्यारी याद आई · इस सोच ही में था के और तोका ५ गोल नजर आया · ये धोका खा चुका था · संभल बैठा और ता· वीज पढने लगा · मिसल मशहूर है , दूध का जला छाछ फूक फूक पीता है , जब वो आगे बढी तो मालूम हुआ के चार पांच सौ औरतें परीज़ाद चुस्त चालाक कम सिन, अल्हड पनमें दि न· उछलती कूदती पेदल चली आती हैं · और बीच में एक

चांद का टुकड़ा आफ़ताब का पर काला ॥ कबित्त ॥ बरस पंद्रह या के सोले का सिन ॥ जवानी की रातें मुरादों के दिन एक सोने के हवादार में बैठी है · उसके नकश का क्या हाल लिखा जावे ॥

कबित्त

गुलसे रुख्सार गोल गोल बदन ॥ गात जिस तरह कुंकुमे रोशन · फूल अपने जोबन पे मस्त जैसे हूर ॥ चश्म बद्दूर आंखें मोतीचूर · गाल मुंह पर वह बिखरे ज़ुल्फ़ के बाल ॥ रंगे वो गुलसे होंट पान से लाल ॥ ३ ॥ अप्सरा ॥ सबदो नाज़ुक के जान दे दीजे ॥ मुंह वो ऐसा के मिट्ठियां ले लीजे ॥ ४ ॥ नज़र न लगे ॥ नाक में नीम का फ़क़तिनका ॥ कूदना हंसना सब लडकपन का ॥ सीने पर दोनो छातियां अन मोल ॥ ऊंची चिकनी कड़ी करारी गोल ॥ ५ ॥ छाती ॥ अस्तीनों की वो फ़सी कुर्ती ॥ जिस्म में वो जवानी कि फुरती ॥ देख मुंह मोतियों के दानों में ॥ बिजलियां छोटी छोटी कानों में ॥ आड़ी हैं कल गले में डाले हुये ॥ प्यारी प्यारी कुंचे निकाले हुये ॥ ६ ॥ गहना ॥ बालसी वो कमर लचकती हुई · चोटी एड़ी तलक लटकती हुई ॥

चरित्र

जान आलम ये देख कर आह भरने लगा ये आवाज़ औरतों के कान में पड़ी · और निगाह जो जान आलम से लड़ी · सबकी सब लड़खड़ा कर ठिठक गईं · सक्ते की हालत में सहम कर झिजक गईं · किसीने कहा सूरज छिपा है · दूसरी बोली चांद चमक रहा है · तीसरी ने कहा चांद नहीं तो तारा है · चौथी चुटकी लेकर बोली · उछाल छक्को तू बड़ी ख़ामपारा है · एकने कहा चलो पास जा चल के देखें आंख सेके दिल ठंडा करें · दूसरी खिलाड़न बोली · दूर हो ऐसा न हो · इसी सोच में तमाम उमर जल

जल के मरे· किसीने कहा दिवानी यों चुप रहो क्या जाने
तुम सब के दीदों कहां की चर्वी छायी है · वोनो भला चंगा हट्टा
कट्टा मदु वा है· सवारी जो रुकी तो मलका मेहर निगार ने हवा
दार परसे पूछा· खैर तो है सबने हात बांध के अर्ज की के जान की
अमान पावे तो जबान पर लावें हुजूर की सवारी यहां रोज आ
ती है· आज गैर मामूल इन दरख्तों में ऐसी शकल दिखाती है के
न कभी देखी न सुनी · मलका ने पूछा कहो वो बोली हुजूर के सा
मने· जिस वक्त मलका की निगाह जान आलम पर पडी बर्छी जि
गर के पार होगई· इश्क की मदत हुई· सबवला रद हुई· होश
जाता रहा· रंग उड गया· और आखर को थर्रा २ कर मलका ह
वादार पर गश पाई· लौंडियां घबराई· किसीने गुलाब · किसी
ने केवडा· छिडका· किसीने बाजू पर रुमाल खेंच कर बांधा·
कोई तलवे सहलाने लगी कोई मिट्टी पर अतर छिडक कर सु
घाने लगी· कोई हात मूंके बडे से धोती थी· कोई सदके हो हो
रोती थी· किसीने कहा यू शबकी तरली धोकर पिलाओ· को
ई चिल्ला के बोली लोगो इधर आओ आखिर को मल्का होश
में आई· दिल बेचैन मगर शरम के मारे चुप· लौंडियों ने सला
की के सवारी इधर से फेरो· और मलका को बीच में घेरो मगर म
लका को कहां सबर था· बोली दिवानियां हो· ये कोई मुसा फिर
बिचारा सफर का मारा थक कर बैठ रहा है· इस्से डरना क्या है·
चलो पास से देखो· वो सब ताबे दार थीं· चली मगर झिझक
ती २ एक हुई बढी· जो जो सवारी बढ ती थी· त्यों त्यों मलका की छा
ती धडकती थी· जान आलम भी देखते ही बे चैन होगया· म
गर दिल को मजबूत करके तेवरी पर बल न आने दिया· एक
लौंडीने मलका के इशारे से आगे बढ कर पूछा क्यों जी

सिया मुसा फ़िर तुम्हारा किधर से आना हुआ और क्या मुसी
बत पड़ी · जो अकेले कोई संग न साथ इस जंगल में आपड़े
हो जान आलम ने हंस कर कहा · मुसीबत हराम ज़ादी तेरे
ऊपर पडी होगी · मालूम हुवा के यहां आफ़त के मारे आते
हैं · कहो तो तुम सबकी क्या कमबख़्ती दिनों की सकती है ·
जो चुडोलों की तरह सरे शाम ता काम फ़िरती हो · मल
का ये बात सुन कर फडक गई और बोलने लगी · वाह वा सा
हेब तुम तो बडे गर्म गरम तेज़ मिज़ाज हो · हाल पूछने से इतने
ख़फ़ा हो कर ये कडा फ़िकरा सुनाया के उस मुर्दार के साथ थू थू थुक
छुट सबको पिछले पाइयां बताया · जान आलम ने कहा अप
ना दस्तूर नहीं कि हर किसू को से बात करे दूसरे मुर्दार से बात
हराम है मगर ख़ैर धोके में जैसा उसने पूछा वैसा ह मैने जवाब
दिया · अब तुमारे मूंसे मुर्दार निकला हम समझ गये चुप हो
रहे · मलका ने हंस कर कहा · ख़ूब एक नहीं दो हुई साह
ब ज़रा अपनी चोंच सभालो · ऐसी बात मूंसे न निकालो क्या मे
रे दुश्मन दरगो मुर्दार ख़ोर हैं · भला बोलो कहके सुन चु
की · मैं आपसे पूछती हूं के हज़ूर तशरीफ़ कहां से लाये और
इस जंगल को निहाल किया · जान आलम बोला क्या ख़ूब आ
पहुस को बनाती है · बिगड कर ये सुनाती है · हम हुज़ूर का
हे काहे · तुम तो जीते जी चार के कांधे चढी खडी हो · अकेले
सा हुज़ूर हो · लौंडियों ने मलका से कहा हुज़ूर आप किसे
बात करती हैं · ये मर्द वा तो लठ है · सख़्त मुंह फ़ट है मल
का बोली चुप रहो इन बातों में तुम मत बोलो · ऐसा न हो ख़
फ़ा होकर और कुछ बातें सुनायें · लौंडिया हंसी और कहने
लगी ख़ुदा ख़ैर करे इस जंगल में गुल फ़ूला चाहता है · ये पर

देसी राह भूला चाहता हैं · फ़िर मलका ने कहा साहेब कूछ मूंसे वोलो सिरसे खेला · जान आलम ने कहा अमीरीछोडो नीचे आवो · मालूम हुवा तुम बडे आदमी हो · सवारी भी मांगे की नहीं · लोडियां भी तुम्हारी हे · फकीरों के विस्तर पर आवो नक ल्लुफ़ तह कर रक्खो दिल चाहे गानो हमभी कुछ कह उठेंगे · तुम हवा दार क्या हवा के घोडे पर सवार हो हम खाक पर सायवार हे · हम तुमसे बड़ा फ़रक है · मलकाने कहा खुदा की कसम हे · इतनी उमर में तुमसा मूफ़्त आदमी मैने नहीं देखा तुमभी कोई चीज़ हो टट्टू न घोडा · गठड़ी न बुकचा · नंगा लूछा वोही मसल हे · रहैं नो कोथ डोमें और ख़ाव देखे महलों का · हर वात पर ठंडी गर्मियां कर्ते हो जो यही खुशी है तो लो ये कहके मलका हवा दार से उतर शाह जादे के बराबर बैठ गई लोडियो ने भयानक होके कहा लो बीबी ये मुवा क्या जादू का बना हुआ आदमी है · मलका सी परी को गालियां देदे के शीशे में उतार लिया बैठे बिठाये मे दानमार लिया · एक बोली तुके अपने दीदों की कसम हे · सचकहियो ऐसा जवान · रंगीला · सज दार नुकीली, ढ़ील आफ़न का पर काला · दुनिया से निराला· तूने या तेरी मलका ने भी कभी देखा न भाला था · अरी दीवानी नादान खूब सूरती अजब चीज़ है · ये सबको प्यारी और अजीज हे · जान आलम मलका के बैठ ते ही आह भर के बोला :॥

कबित्त

जाहर में गरचे बठा लो गोंके दर मियां हूं ॥ पर ये खबर नहीं है में कौनहूं कहांहूं ॥ खुशी में दूर रंज में फसा आफत का मारा घर वार से आवारा · कोई संग न साथ · कोई

रस्ता बताने वाला नहीं तन को खाता हूं और लोहू पीता हूं पांवमें ताक़त नहीं मगर ऐड़िया रगड़ ने चलताहूं. जंगलघ रहै और क्या खबर है : ये कह कर चुप होरहा. मलका सम की के बेशक कोई बाद शाह ज़ादा है. मगर किसीकी उलफ तमें फसा है. बात में मुहब्बत टपकती है. जबान से आग निकलती है. दिलमें आया के किसी तरह घरले चलिये. सब हाल मालूम हो जावेगा. कहां तक छिपावेगा. बोली तु म हमारे इलाके में आये हो. तुम्हारी खातर करना हम को जरूर है. घर चलो. रात भर आराम करो. सवेरे इख्ति यार है. जान आलम ने कहा. फ़िर अमीरी की ली. यानी ह मतो यहां के मालिक हैं. और आप भूके प्यासे मुसाफ़िर हो चलो ये फ़िक़रा किसी फ़कीर को सुनावो. किसी मुहताजको अपना करो फिर देखावो. हद से कदम बाहर निकालो. यहां दिल अपने बसमें नहीं. चला चली में फुरसत कहां मलका ने सुस्त होकर कहा दावत को मंजूर करना चाहिये आगे आपको इख्तयार है. जान आलमने दिलमें सोचा कि मुद्दत बाद आदमी की सूरत देखी. यह शाहज़ादी है. इसको नाराज करना बे हयाई. आद मियत का जो लीहाज़ आयातो बोला के खाने पीने सोने बैठने की हवस दिल में नहीं मगर किसीका दिल तोडना भी अप ने मज़ हब से बडा गुनः है. और इतनी रुखाई जो मै ने कीतो इस वास्ते की के आपको रंज होगा. रोती शकल के पास हसना कहां. हम सुसी बत ज़ादों के पास खुशीका ना म नहीं. और जो येही मज़ा है तो. चलो. ये कह कर उठा. साथ साथ हातों में हात बातें करता. चला. बाद शाह ज़ा

ज़ादा बडा ठठोल था· कोई बात बे नोक-ज़बान पर नहीं लाता था·मलका का हर बात पर दिल पिगला जाता था·मगर दिलसे कहती थी·ऐसा न करना के शर्म से हात धोना पडे·बैठे बिठाये जान खोनी पडे·जग हंसाई हो·ये तो किसी उल्फ़त में मर मिटा है· दूसरे मुसाफिर है·॥ कवित्त

मुसाफिरसे करता है कोई भी प्रीत
मसल है के जोगी हुऐ किस्के मीत

चरित्र

मगर दिलको कहां चैन था· ईश्वर के कार खाने में किसी का दख्ल नहीं उल्फ़त में आगा पीछा सोचना किसने बताया है· जो दम मिल बैठे वोही गनीमत है। इसी तरह चलते चलते बाग़ तक पहुंचे·इस बाग की तारीफ़ क्या बयान हो· उस्के बीच एक बारह·दरी थी·उस पर तमामी का शामियाना तना·सफेद बादले की झालर·कला बत्तु की डोरियां·चौदवी रात· आसमान साफ़· चांदनी छिटक रही· हजारे·का फव्वारा छूट रहा·मलका ने· जान आलम को मसनद के ऊपर बिठाया· एक तरफ़ से शराब आई·दूसरी तर्फ़से। गाने बजाने वाले मौजूद हुऐ· परीयां बनी बनाई·सजी सजाई·आंख मट काती पेड़ फ़ड काती फिरती थी·तबले की थाप बाये गमक से कबर के मुरदे जागते थे·ताल और सुरसे घूंघरू बजते थे·ठोकर से मुर्दे जीते थे·गत के हाथ पर ये गत थी·के देखने वाले हात मलते थे·ठंडी सांसे लेते थे·राजा इंद्र की सभा इसके आगे गर्द थी·उस वक्त मलका ने प्याला शराब का भर शाह ज़ादे को दिया· और कहा के आप इसे पीवोगे के सफ़र का रंज दिलसे दूर हो· मुझे कुछ हाल पूं

छुना जरूर है · जान आलम ने देखा ने को इन्कार किया · मल
का बोली वाह साहब आपनो किसीका दिल नही तोडनो हो।
फिर क्यों सुकेड करते हो · जान आलम हंसा और प्याले को मू
से लगा लिया · फिर जान आलम ने एक प्याला भर अपने
हात से मलका को पिलाया · फिर तो खूब शराब उडी · दोनो
मस्त वाले होकर सब रंज भूल गये · जान आलम बोला जिंद
गीका क्या भरोसा · जो दम है सो गनी मत है · एक लौंडी
जो मलका की बडी मू लगी थी बोली की इस चांद नीकी बहा
र तो जब है · के एक चांद बगल में हो · एक चांद मुकाबिल हो
मलका ने ठंडी सांस भर कर कहा · सुदरि हम तेरी छेड छाड
सब समज तेहें · मगर क्या करे अब् मोस की बात है जिस पर
हम मरें उसका दिल कही और है · जान आलम ने लोडियों
से पूछा में मुसा फिर हूं मुझसे दिल न लगाना क्या भरोसा
मेरा रहा न रहा मलका टाल के पूछने लगी तुम सच कहो
कहां से आये हो किस फिक्र में हो और क्यों घब राये हो ·
जान आलम ने उस वक्त तमाम सब सच्चा हाल कह दिया ·
जब मलका ने सुना के यह अंजुमन आरा की उल्फत में फसा
है तो हात पैर टूट गये छक्के छूट गये · घबराई · रोई · पीटी · चि
ल्लाई · जान आलम ने कहा मलका खैर तो है · यह क्या करती
हो · मलका बोली सुन मेरी जान के दुशमन · मेरा बाप बडा बाद
शाह था · मगर छोटी उमर से फकीरी की तर्फ उसका बहुत दिल
था · सब राज काज तज इस जंगल में एक मकान में बैठा मुफसेव
होतेरा प्यारी को कहा मैन तसाना अबये कहा कि बला मेरे
ऊपर टूटी · जो तू फ को देख तेही दिवानी हो गई और तू उस्की
उल्फत में फ़सा है के जिसका दुनियां में जवाब नही अब मोत के ॥

सिवाय क्या इलाज है · सवेरे तू कहां और मैं कहां · इनसा
फतो कर किससे कहूंगी के दिल घबराता है · जान आलम
की जुदाई से जी निकला जाता है · संग सहे लिया ताने देंगी ·
छेड छाड कर जाने लगी · जब लोंडियों पर खफा हूंगीतो वो बु
डावेंगी · ये बात जबान पर लावेंगी · के मलका उल्फ़त का रंज रा
लती है · शाहज़ादा चला गया न रुक सका · उसके ऊपर तो बस
न चला गुस्से की फाक हम पर निकाल ती है · मा और बाप सु
ने गे तो क्या होगा · रुसवाई के डरसे दिल खोल के न रो सकूंगी ·
जब दिल घबरायगा · बताओ की कौन तसल्ली देगा · आप उधर
जायगें हम यहां घुट घुट के मर जायगे बापने जादू जो तिष स
ब पढा परंतु हमारे नसीव की रेखा नहीं देखी ये कह कर छाती
पर हात धर कर रोने लगी · आसू ओं से कपडे भिगाने ल
गी · जान आलम पर ये पड चुकी थी वे चैन होकर बोला · तु
म्हारा किधर ख्याल है · मैतो तुम्हारा ताबेदार हूं · जो कहोगी
सो करूंगा · हरगिज तुम्हारी बात से मूं न मोडूंगा · मगर थोडे
दिन सबर करो अगर अंजूमन आरा को ढूंढने न जाऊंगा तो
तुमको मुझसे क्या उम्मेद होगी बराबर वालों को क्या मूं दिखाऊंगा
ये वक्त देखा चाहिये प्यारा प्यार करने वाले · की तसल्ली करे · अप
नी ताबेदारी उसके गले उतारे · नसीबवालों को ऐसे भी मिल जा
ते हैं प्यार करते हैं समझाते हैं लोक जलन से जलकर मरजाते हैं ·
मल्का ये सुन कर खुश हुई सच है, जिसको जी प्यार करता हो अग
र वो कड भी बोले तो प्यार करने वाला उसे वेद पुरके बराबर मानता
है · मलका बोली · खैर हम तो इसे भी केल लेगे · ये खेल
भी खेल लेयेगे · मगर शर्त यह है के तुम हमको दिल
से न भूलो · जान आलम ने कसमें

खाई· और कहाके हरगिज़ फ़रक नहोगा· ये· वह मछो
डो हंसी खुशी कीबातें करो·जुदाई की घडी सिर पर खडी है·
रात थोरी· कहानी बडी है· दो बातें भी नहीं करने पाये थे केतड़
का होगया·मुल्लाने अज़ांदी·मुर्गे बोलने लगे·जान आलमने चल
ने का इरादा किया· मलका बोली अगर हरजनहोतो मेरे
बाप से मिलते जावो·जान आलम साथ होलिया देखा के
एक बुड्हा आदमी एक बोरिये पर बैठा है·और अपने ध्यान
में माला जप रहा है·इन्ने सल्लाम किया·उन्ने आदेकर हात
बढाया·छाती से लगाया·पास बिठया और कहाके रात
का हाल फकीर को सब मालूम है मलका के बराबर कोई कमब
ख्त नहीं हमारा कहना नमाना·बडे बोल का सिर नीचा·तुमने·
क्या क्या करार किया·जोतुम तसल्ली नहीं देते तो इसका भी
जीना मुशकिल था·अगर वायदा पूरा करोगे तो तुम्हारा
भला होगा·नहीं तो क्या जाने मलका का क्या हाल होगा·म
र्दों की यही बात है·के मुसीबत ज़दा की मदद करें· जान
आलम ने कहा आप मुझे शर्मा ते हैं· मैं लाचार हूं·इस इस
दे पर घर छोडा अपने बिगाने से मूं मोड़ा· अगर नजाऊं तो
वो कहेंगे बडा कम हिंमत है·जहां आराम मिला वहीं बैठ
गया· इससे जान सका कूटा था·नाहक मुहब्बत का दम भरा·
उस बुड्हे ने कहा शाबास मर्दों की यही बातें हैं· हमको यकीन है
के तुम अपना वायदा भी पूरा करोगे· यह कह कर एक तख्ती
जान आलम को दी और कहा मुसीबत पडे इसको देख लेना
जान आलमने वो लेली· और कहा कूंच की अपनी अब तैयारी
है·मलका ये सुन कलेजा थाम सिर को धुनावोली·॥कबित्त॥ मैं म
र गई सुन उसके सरंजाम सफर का· आगाज ही देखा न कुछ -

अंजाम सफ़र का · तब जान लिका ज्या तु मुझे साथ लिये चल · को
लो लूंगी साथ तेरे काम सफ़र का · आखिर को रुखसत किया · औ
और कहा खुदा हाफ़िज़ जैसे पीठ दिखाते हो ऐसाही फिर मूंदि
खाओ · जान आलम तो रवाना हुवा · मलका ने रोरो के नहिंया
बहाई · संग सहेलियां बोलीं मलकाजी खोवोगी जो इस त
रह बिलख बिलख कर रोवोगी · मुसाफिर के पीछे रोना अच्छा
नहीं बीबी खैर है · ये · शगुन बहुत बुरा है · वो भि दिन ईश्वर
दिखावेगा · जो वो पर देशी सही सलामती खैर से आवेगा · म
लकाने कहा · ॥ कवित्त ॥ बे दर्द कोई इतना समझता नहीं है ·
दिल दुखे तो किसतरह से फर याद नहो · जों जों जान
आलम की जुदाई बढती थी · वों वों मलका · घुट घुट के मरती
थी · कभी कहती अगर दिल का हाल कहूं तो शरम आती है ·

जो चुप रहूं तो जान जाती है · यह सब कहती होंगी के मल
का को प्रेम आती · राह चलतो से बैठे बिठाये दिल लगा ती
है आप रोती है हमें मुफ़्त रुलाती है · समझाने वाला कहां से
लाऊं किसको हाल सुनाऊं अब कौन आंसू पोछने को मना
करेगा · कौन प्यार से छाती पर सिर धरेगा । जब लोग · वे दे
खते तो उसको घेर ते · सिर पर हाथ फेरते · और पूछते के
अपनी जान की कुशल हमें तो बता कि तेरा क्या हाल है
तो वो कहती और तो कुछ जान ती नहीं पर हाथ पांव स
नसनाते हैं · गश चले आते हैं · दिल घबराता है · घर
काटे खाता है · बंद बंद टूटता है · जी छूटता है · सन्नाय अ
च्छा मालूम होता है · आदमियों से दिल घबराता है · अके
ला रहना खुश आता है · आंख बंद हुई जाती है मगर नीं
द नहीं आती · कपड़े फाड़ने को दिल चाहता रहता है । जीम
चलाता है · जंगल की धुन लगी है · रात दिन रोती हूं म
गर जान आलम का जिक्र दिल लगा के सुनती हूं जो कोई
समझाता है तो रोना आता है · कलेजा जलता है · दिल
को कोई मसोस कर मलता है · अरे लोगों ये क्या आता
र है · सबसे आंख चुराती हूं · बराबर वालियों से शर्मा
ती हूं और ये कहती हूं ॥ कवित्त ॥ अफसोस ये हाल रद
आलम देखे · ऐसा न हुवा के जान आलम देखे ॥ अगर उल
फ़त इसीका नाम है · तो मैंदर गुजरी मेरा सलाम है · जो लोग
उल्फ़त करते थे क्योंकर जीते थे · क्या खाते थे क्या
पीते थे · दो दिल से नहीं खाया मगर पेट भरा है · खड़ी हूं जी बै
ठा जाता है · पहिले मुझे क्यों न मना किया मेरी जान के दुश्मनो
पैदा किया · खैर ईश्वर की मर्जी · किसीका क्या बिगड़ा · मेरी

किस्मत का लिखा • जो किया वो अच्छा किया ये सुन कर एक सहेली खेली खायी मुहब्बत के सदमें में उठायी • पास आई और कहा कुर्बान जाऊं वारी • अभी सलामती से न यी फसी हो • जो इतना तड़फ़ती हो • सहते सहते आदत हो जावेगी • दिल को तसल्ली आवेगी • ये बात सुन कर मलका का दिल भर आया • वे इख्तियार रोने लगी • ॥

५ चरित्र ॥

मलका मेहर निगार के बाग से ४० मंज़िल मुलक ज़र निगार था शाहज़ादा या प्यादा अकेला पांव में छाले गिरता पड़ता मरता कुदता कई महीने बाद उस मुल्क में पोंचा जो जो पते तोते ने बताये थे वो: सब पाये • जान आलम हंसा खुशी से जल्दी जल्दी कदम उठाये चला जाता था • एक दिन दो चार घड़ी दिन रहे एक चीज चमकती हुई • उत्तर के तर्फ़ देखी • उस पर निगाह नहीं ठहरती थी • आंखों में चकाचोंधी आती थी ये घबराया • कहा अफ़सोस इतनी दूर • आकर भी कुछ फ़ायदा नहुवा • जब पास पहुंचा तो देखा के एक बड़ा दरवाज़ा • उस पर लाल और जवाहिर जड़े हुए हैं • अब दिल में यकीन हुवा के ठिकाने पर पहुंचा गिरता पड़ता शहर के दरवाज़े तक आया देखा बिल्लोर की ईंटें जड़ीं हैं लोहे की ढली हुई तोपे चढ़ी हैं • जवान जवान • गोलंदाज बादले के दगले पहने गुलेनार इक पेचे बांधे सजे सजाये तोपों के दाहें बायें टहल रहे हैं • दरवाज़े पर पांच हज़ार सवार एक लाख प्यादे जमें खड़े हैं • जान आलम ने पूंछा इस शहर का क्या नाम है • और यहां का हाकिम कौन है • वो: इस को देखते ही ताड़ गया • के ये बेशक कहीं

का शाहज़ादा है · नूर चेहरे से टपक रहा है · उनों ने पूछा
आप कहां से आये · जान आलम बोला भाई · सवाल और
और जवाब और आखर को एक ने कहा हुजूर इस मुल्क
को जर निगार कहते हैं · ये सुनते ही बाछें खिल गईं · चे
हरा कुंदन की तरह दमकने लगा · दिल से कहा मैं ख्वाब देख
ता हूं · नहीं तो नसीबों से ये उम्मेद किसको थी · ये कहकर आ
गे बढ़ा शहर के अंदर गया · सब चीज मौजूद पाई · हलवाई
रोटी वाला · कुंजड़े · कसाई · सर्राफों के कटोरों की झनका
र · मेवा फरोशों की पुकार · दल्लालों की बोल चाल · यारों
के आवाजे तवाजे · कोई कहता था मजा अंगूर का है · खन
दे सें · कोई बोला गुलाब में बसाई है · गंडेरियां पौंडे की एक
तर्फ तंबोलन आंख मार कर कहती थी · मिस्सी से सुरखड़ा लाल
है · कहीं से ये आवाज आती थी कौड़ी में साढ़े तीन मजे · को
ई कहता करारे भुरभुरे नीबू के रस के · कोई गुपचुप बेचने
वाला अलग ही ललकार रहा था · के सास की चोरी बहू का गु
टका · जान आलम ने पूछा किला किधर है · लोगों ने कहा
सीधे जाके दाहें हात को फिर जाना · ये वहीं पहुंचा · देख के भौ
चक्का रह गया · जो लोग दरबारी थे सब काले कपड़े पहने
हुए थे · इसका माथा ठनका · एक एक पांव कई मन का
होगया · हर एक का मूं तकता था · कदम उठने सकता था ·
कहा खुदा खैर करे शगुन बुरा है · और कदम बढ़ाया ·
सवारी का सामान नजर आया · बच्चों बड़ों का गुल मच र
हा था · देखा के एक ख्वाजा बड़ी धूम से सवार है · मगर ग़
म के मारे चेहरा उदास है · जान आलम ने सलाम किया
उसने सलाम का जवाब तो दिया · मगर उसकी शकल

वो देख कर भी चक्का रह गया · और कहा के ईश्वर ने इस जि
दृ रो से क्या क्या बनाया है · फिर पूछा के आप इस मन्हूस शहर
में कहां से आये हो · जान आलम ने कहा मियां साहेब खैर है ·
हम तो फ़क़त इस शहर और यहां के मालिक के वास्ते घर
बार छोड कर आये हैं · तुम खुदा के वास्ते हाल तो कहो के ।
सबने काले कपड़े क्यों पहन रक्खे हैं · उसने चीख मार
मार कर कहा के यहां के बादशाह की बेटी थी · अंजुमन आ
रा नाम · तमाम दुनियां में उस की खूब सूरती की तारीफ है ·
आज तक उसके बराबर न देखा न सुना · हज़ारों बादशाह उ
सके वास्ते ठोकरे खाकर दीवारों से सिर टकरा के मर गये · दो चार
दिन हुए के एक जादूगर अपने जादू के जोर से महल से उडाले
गया · ये बात पूरी भी न हुई थी · जान आलम का काम तमाम
होगया · सिर चक्राया · जमीन पर गिर पडा · और बोला ॥
कदिम ॥ जो कोजिस्में रही बात न होने पायी ॥ हाय रे उससे
मुलाकात न होने पाई ॥ ये कह कर वो इस तरह गश खा
गया · ॥ कहे तू जीने ही जी मरगया · १ ॥ खोजा घबराया · कहा
के ये अंजुमन आरा की उल्फ़त में फंसा है · मुझसे गलती हुई ·
नाहक इससे कहा · बहुतेरा केवडा · गुलाब · छिडका कुछ न हुआ ·
बादशाह के पास जा कर अरज की के हज़ूर आज अंजुमन
आरा को मातम ताजा हुआ एक शाहज़ादा राजबों फ़क़ी
री भेस कर अंजुमन आरा के वास्ते यहां आया · मुझसे जा
दूगर का हाल सुना · गिर पडा अब तक होश नहीं आया · क्या
जाने जीता है या मरगया । मगर हुजूर देखें तो शाहज़ादी
को भूल जावें · बादशाह ने कहा जल्द ले आओ · लोग दौ
ड और मुर्दे की तरह उठा लाये · बादशाह ने केवडा छिड
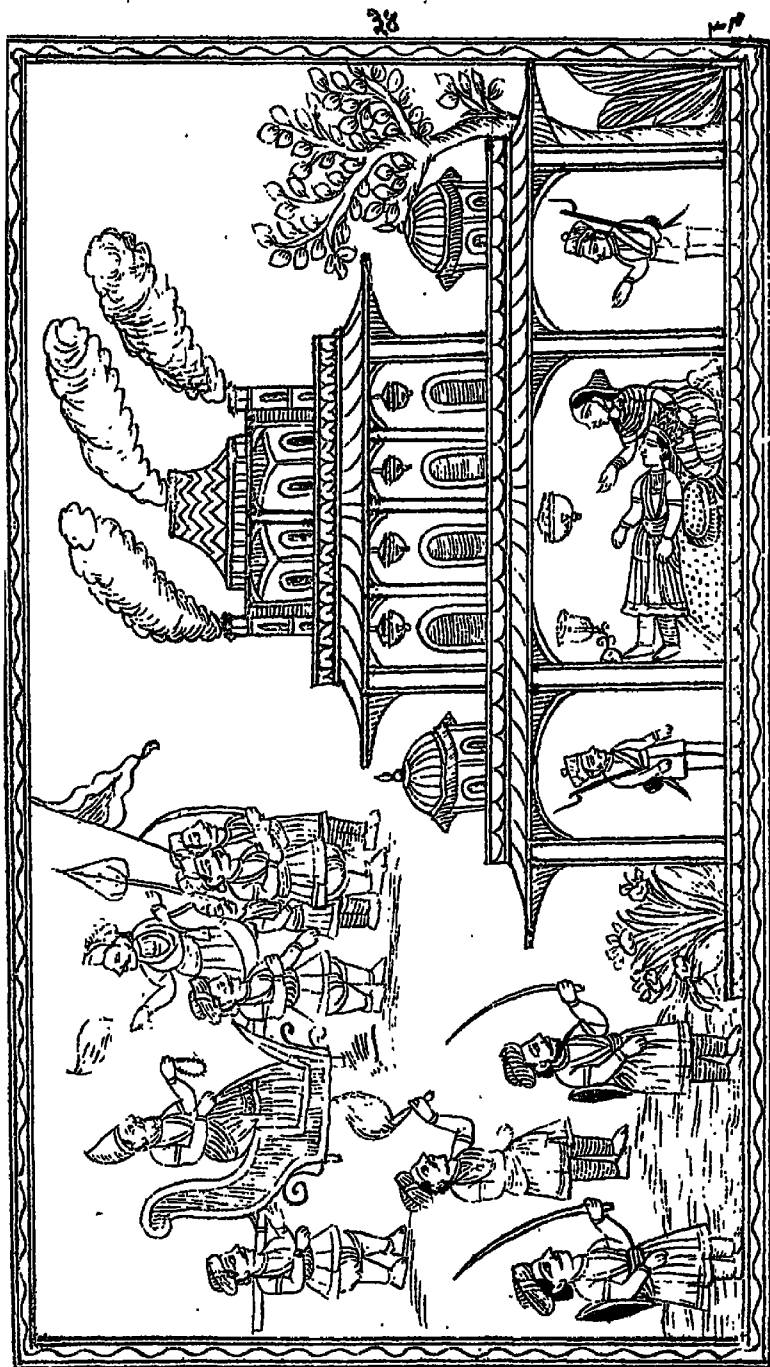
काशाम के वक्त जान आलम होश में आया · दवरा कर उठ बैठा देखा के एक शखस ताज पहने हुवे बडी धूम धाम से तख्त पर बैठा है · और अमीर वजीर अपनी अपनी जगह खडे हैं · जान आलम ने दस्तूर के मवाफिक सलाम किया बाद शाहने छाती से लगा लिया · सब दंग थे सन्के केसे ढंग थे · इस वक्त जान आलम का हाल देखना चाहीये · ॥ कवित्त · हस रत पर उस मुसाफिर बेकस के रोईये · ॥ जो थक गया हो बैठ के मंजिल के सामने ॥ १ ॥ दिल चिल्लाने को करता था मगर शरम से दमको घोटे बैठा था · बाद शाहने मा बाप का हाल पूछा · सब पता बता दिया · जान आलम ने फिर सिर झुका कर शाहजादी का हाल पूछा · बाद शाहने कहा के एक जादूगर मुद्दत से उसकी फिक्र में था · बहुत चोकसी होती थी मगर वो धोका देके ले गया · आजतक महल में नही योग हू · खाना पीना · सबको हराम है · जान आलम ने कहा कुछ येभी मालूम है · किकिधर · को लेगया · बाद शाह ने फरमाया केयहां से पांच कोस तक पता मिलता है · आगे आग का किला है · वहां का हाल मालूम नहीं के सब जादू का कारखाना है · शाहजादेने कहा अगर जिंदगी बाकी है तो कहां जाना है · ये कह कर उठ खडा हुवा · बाद शाह लिपट गया · कहा बाबा खुदा के वास्ते ऐसा काम न करना · उस जंगल में वहम के पर जलते हैं · हवा के पांव में छाले निकलते हैं · एक को धोके में खोया · तुझको जान बूझ के कैसे जान दूं · तू यहां राज कर और मैं कोने में बैठ रामराम जपूं शाहजादे ने कहा ये राज आपको मुबारक रहे · बंदा अपने घर की हुकूमत छोड कर यहां आया है · लोग यही कहेंगे के कैसा बेशरम है · शाहजादी कोतो जादूगर लेगया · और येजी

ता रहे · प्यारी के वास्ते मरना हमें उचित है · वेसिर दिये कब टलते हैं · बात और बाप एक है · जो कहे सो कर दिखावे · जिस ने यहां तक जीता पहुंचाया · वो वहां तक भी पहुंचावेगा नहीं तो अकल दिवानी क्या जरूर है · पहिले जब अकल और उल्फत का सामना हुआ था तो मेरा दिल खटका था · अकल कहती थी के मा बाप से अलग न हो · राज हाल से मत दो · मुहब्बत कहती थी मा बाप किसके · राज कैसा · अपने प्यारे ले कि त फकीरी राज से अच्छी है · अकल कहती थी · आबरू का पास करो कुलवे का नाम मत डूबो ओ · जंगल की धुन न बांधो · जंगल में बहार है · अकल कहती थी · बादशाही पोषाक न फाड़ो · मुहब्बत कहती थी · अकल दिवानी है · नंगे रहने के बराबर कोई पोषाक नहीं · न कुछ धोने की जरूरत न फट ने का डर · चोर इसको न ले जाय · डाकू इसको न उठावे · न पानी से भीगे न आग से जले · सड़े न गले · गले से अलग न हो · न कोई इसको ले सके न आप किसी को दे सके ॥ कवित्त ॥ तनकी उरयानी से बेहतर नहीं दुनिया में लिबास ॥ ये वो जामा है के जिसका नहीं सीधा उलटा ॥१॥ आखर को अकल ने शिकस्त खाई ॥ सब छूटा नाना छूटा · किस्सा दरखेड़ा पाक हुवा · तोता और वजीर ज़ादा साथ हुआ · सो उनका साथ भी नसीब में न था · तोता उड़ गया · वजीर ज़ादा हिरन के मिलने से छुट गया · सो · जो सामान था सो लुट गया · फ़िर जादू में फसे · हम रोये · दुश्मन हंसे · वहां से छुट के अकेले चले · मुहब्बत ने दुमाति हान लिया · परियों के अखाड़ों में जा फ़साया · एक परी ने बहुत रा घेरा · तमाम सामान मौजूद किया · मगर यहां तो और ही धुन लगी हुई

था· एककी नमानी· अब घर पहुंच कर खाना किसे बता या है· मैंतो जीतेजी मरने को तैयार हूं · ये खबर महलमें प हुंची· अंजुमन आरा की मा पर्दे तक चली आई· शाहजा दे को महल में लेगये· अंजुमन आरा की मा गिर्द फिरने लगी और नोनें घेर लिया· फिर खाना आया· जान आलम ने गर्द न हिलाई· खोजा पांव पर गिर पड़ा· और जो तुम नखावोगे तो कोई न खायगा· लाचार होकर जान आलम ने दोएक नि वाले खाये· फिर नींद का बहाना करके पलंग पर जालेटा· म गर किसकी नींद और कहांका सोना· करवटे लेते लेते कमर भी थक गई· अंजुमन आराका ध्यान बंधा हुआ था· मगर शरमके मारे बोल न सकता· बड़ी मुश्किल से सवेरा हुआ· ॥ जान आलम ने मरने पर कमर बांधी· सब शहर में ये खबर उडी के जादूगर की लडाई को शाहजादा तैयार होता है· स ब लोग देखने को किलेके सामने आखडे हुए बादशाह तख्त पर सवार जान आलम को बरा बर बैठा ये निकला·॥ लोगों ने फत: की दुआ मांगी· जान आलम ने कसमे देके बादशाह को रुखसद किया· और अकेला जान पर खेल कर चला· आग का किला देखा उसमें से एक हि रन निकला· और फिर वही गायब होगया· जान आल म ने बुढ्ढे की तख्ती निकाली· उसमें निकला जो ये पढ क र उस हिरन को तीर मारे· और निशाना पूरा बैठे तो ये सब जादू का खेल भंड हो जावे· और जो निशाना चूका तो जान जावे· राखके सिवा पत्ता न मिले· जान आलम ने क हा जो हिरन मारा तो जिंदगी का मजा है· नहीं तो यही मौ तका बहाना है· बे यार के जीना मरने के बराबर है· ये कह क

र तीर संभाला उधर हिरन निकला इधर निशाना मारा हिरन की मौत आई थी तीर पार हुआ हिरन जमीन पर गिरा और एक दफे ही गुल मचा हां हां लीजियो घेरियो जा नेन पावे अंधेरा होगया आंधी चली थोरी देर बाद सूरज निकला न आग रही न किला चबूतरे पर झुलसी हुई लाश पाश पाश देखी वो जादू गर सिंदूर का टीका माथे पर टुकड़े टुकड़े ज़र्द ज़र्द दांत होठों के बाहर मू मोरी से गंदा शैतान का बंदा बालों की लटें लटक तीं हड्डियां खोपरियां गले में पड़ी काला भुजंगा सिर से पांव तक नंगा तीर से छिदकर औंधा पड़ा था हरकारों ने जाकर बादशाह को अर्ज़ की के शाहज़ादा बला का पुतला है एक तीर से आग का किला ठंडा किया बादशाह ने कहा होनहार बिरवे के चिकने चिकने पात हरकारों को इनाम देके फिर रवाना किया इतने में जान आलम आगे बढ़ा: उस किले के पास पहुंचा जहां मेअंजुमन आरा कैद थी देखा कि वो किला जमीन से अधर है और कुम्हार के चाक की तरह फिर रहा है आंख न जमती थी ऊंचा इतना के देखने से पगड़ी गिरती थी जान आलम देर तक किला भी थम गया चार दरवाजे थे बुरज गिने नहीं जाते थे जाने का रस्ता और अंदर एक बंगला दिखता था वहां से ये आवाज आई के क्यों मौत आई है क्यों जम को छेड़ता है ज़िंदगी से नाहक मूं फेरता है तेरी सूरत देख कर रहम आता है आज की रात ख़ूबसूरती के बदले में माफ़ करदी नहीं तो ऐसा मारूंगा के हड्डियों का पता न मिलेगा बादशाह नाहक अफ़सोस से जान खोवेगा मर कर भी तेरी आत्मा को चैन न मिलेगा जान आलम ने हंस कर कहा गाली मादर ब

रखा तू क्या हमारी रवता माफ करेगा · ऐर तो मुझे भी उसकी ही
पायती पोंचाता हूं ये सुन कर वो कलाया · काला दानांश्री
रउड़ द उस बदमाशने निकाले · आस माना चढ़ूमें आया
जमान थर्राई · उसने लूना चमारी का नाम लेकर उनदानों
को आसमान के तर्फ से फेंका सरसों बिनोले और राई मि
लाई · अबर घिर आया · पत्थर और आग का मेह बरस
ने लगा · शाहज़ादे ने भी पढ़ना शुरू किया · सब पानी हो
कर बह गये जान आलम ने बुड्ढे की तख़्ती निकाल कर देखा
उसमें निकला के इस तख़्ती को किले की दिवाल से लगादे फि
र तमाशा देख · जान आलम ने उस तख़्ती किले की दिवार
से लगा दिया · फिर तो हज़ारों तोपों की आवाज आने लगी ·
नादिवा का कलेजा हिल गया · जमाना बदल गया · जंगल गर्द
बर्द हो गया · आग का कारखाना · सर्द हो गया · चार घड़ी
में अंधेरा जाता रहा · वहां कुछ भी न पाया · लेकिन रेत का ·
टीला सा कड़ा सरकंडे गड़े · कच्चा सूत नीला पीला उन पर लिप
टा हुआ · कुछ फंदे पड़े हुए उसके अंदर एक चांद का टुकड़ा
बैठा है · मगर भौचक्का बद हवास कोई आस न पास जान आ
लम ने पैछाना · ताब न रही · जीस न सनाया · अकेला देख कर
कलेजा मूंका आया · बहुतेरा रोका न रुक सका · थर्राता दम
चढ़ा जाता दौड़ कर गिर्द फिर ने लगा · लड़ खड़ा के गिरने ल
गा · अंजुमन आराने शर्मा के सिर झुका लिया और कहा
सभलो साहब · जरा किसी का लिहाज भी नहीं कुछ दिवा
ने हो जो इस तरह पास चले आते हो · ये कहते कहते आंख
चार हो गई · बर्छी जिगर के पार हो गई · ये बातें सब
जानते हैं · इस मुहब्बत ने छोटे बड़े को मारा है · हराम

जदा यहां बिचारा है • जान आलम तो गशमें गिर पडा • अं-
जुमन आराका दिल लड़ पा • जाना के इससे बेशक हमारा प्यार
है • जो सिर पर खेल के यहां आया उसका सिर उठा अपने घुट
ने पर धर लिया मूं पोछने लगी • गशतो कभी देखा न था • घब
रा के रोने लगी • इस तरह यार का मूं धोने लगी • यह जो आं
सू की बूंद मुंहपर पडी तो लखलखे का काम कर गई • के लडेकी
हाजत न रही • चट आंखे खोल दी • अपने सिर को प्यारी के
घुटने पर पाया • अपने आपेमें न समाया • दिमाग़ आसमान
पर पहुंचा • पांव फैलाया • इतना इतराया • अंजुमन आरा
ने फीकफ़ कर घुटना सरका लिया • जान आलम बोला • हमारे
होश से तो बेहोशी भली थे कह कर आंख बंद कर ली के लो -
हमें फेर गश आया • तुमने क्यों घुटना सरकाया • अंजुम
न आराने कहा क्या खूब इतना प्यार मेरी चीड है • मैने ते
री मेहनत को देख कर ये रहम किया था • तुम तो चल नि
कले क्या जाने दिल में क्या समझे • अपनी राह लिजिये आ
ह खाने की बर बाद गुना लाजिम • जान आलम ने कहा हम
री तो मिट्टी यहां से निकलेगी • मगर चोरकी डाढी में तिनका
आपको अपना आशक कभी न मानूंगा • नमाशूकों के दफ्तर
में आप का चेहरा लिखूंगा • अंजुमन आरा बोली • चे खु
श • क्या खूब • भला लो • कुछ होया नहीं • जमाने का
मजा निकालो • ये तो वही मिसल है • मान ना मान मैं ते
रा जिजमान • इश्क • आशकी की बातें मेरी बला जाने •
छेड छाड और किसीसे जाकर करो • अपना चोच ला त
ह कर रक्खो • अपनी सूरत तो देखो तुमने सुना नहीं ह
लवा खाने को मूं चाहिये • जान आलम बोला • मैं बिचारा

मुसीबत का मारा मुहेन त पन कहां से लाऊं क्यों कर देसी सू
रत बनाऊं · एक हंसता है · एक रोता है · तुम्हे तो मोहन
भोग का मज़ा नहीं भूला · वा तन तान में ऊबाल पर हलवा है
हमने तुम्हारे वास्ते जोग लिया · राज काज तर्क तज दिया · ब
द मुराद पूरी हुई · ये सुन कर अंजुमन आरा खिसियानी
होगई · कहा · चलो · साहेब · वो सुभ्रा सदके किया था ·
अपनी चोंच बंद करो · कटी जली की हसी अपने घर
जा करो · जादू से आदमी लाचार है · इसमें किस का दख
तियार है · मगर खैर · और जो चाहिये केह लीजिये · दर पर
दे क्या साफ़ साफ़ गालियां दे लीजिये · ये बातें सब किस
मत सुनवाती है · देखिये अभी तक दौर क्या क्या दिखाती
है · अगर ईश्वर घर बार छुड़ा मुझी के वस्से न फसता तो
हर एक तरह चलता काहे को ऐसी बातें सुनाता · जान आ
लम ये सुन के डर गया · शर्म से मर गया · आंसू भर कर
कहने लगा · मेरी क्या मजाल · जो आपको कुछ कहूं · मैं
तो मुसीबत का मारा मुसाफिर हूं · दिल साफ़ करो · तुम कि
तने हठ धर्म हो · अहसान तो भूली · हंसी में रो दिया · ह
मको दोनों जहान से खो दिया · अंजुमन आरा ने देखा के
उसके आंसू जारी हैं · हिचकी लग रही है · हंसकर कहा ·
सच है · ओछों का भी अहसान बुरा होता है · खातिर ज
मा रख अपने घर चल कर माल असबाब लाद दूंगी के
तुझसे चल न सकेगा बोझ से हिल न सकेगा जान आल
म ने कहा · फिर सलतनत का घमंड आया · हमको मुह
ताज जान कर ये फ़िक़रा सुनाया · हमसे भी कभी लोगों के
काम निकलते थे · अगर तुम्हारी मुहब्बत में न फसते तो का

आफत से मूं न मोडा· जीपर खेल गया क्या क्या न लाये के
ल गया· जान जोखों की तब तुम ने हमको देखा और हल
को तुम्हारी सूरत नसीब हुई· रूप रंग देखो· तमाम शहर
उसके मुहब्बत में फंसा है· छोटा बडा उस पर मरता है· तो तुम
जिगर के टुकडे आंख की पुतली हो· मगर वो जो हम से फ़रे
देखो तो तुम से और उस में बडा फरक है· वो मर्द है और तु
म औरत हो· अंजुमन आरा ने ये सुन कर सिर झुका लिया
रोने लगी· कहा हुज़ूर सूरत शकल का जिक्र क्या जरूर था·
येतो· उसके खेल हैं किसी को बिगाडा· और किसी को बना
या· बहुत से लूले लंगडे काने खुदरे गूगे बहरे हैं क्या वो न जी
ये कहीं धूप कहीं छांव कहीं शहर कहीं गांव· और जो अह सा
न से दब कर कहती हो तो दुनियां में एक दूसरे के आडे आ
ता है· जो ये न आता और मेरा नसीब सीधा होता तो कोई
और पैदा हो जाता· मेरे बंद छुडाता· मेरी किसमत कम बख्त
तूरी थी· एक मुसीबत से छुडा दूसरी आफ़त में फसाया· हम द
स के नाते अपने बिगाने सुन्ने पडे के ये आया· मुझे कैद से छुडा
या· क्या जाने वो कौन है· कहां से आया है· और अपने तई
शाहज़ादा बनाया है· मैं आपकी लौंडी हूं· और हर सूरत से ता
वेदार अगर कुंवे में फोंक दो तो गिर पडूं फ़कत का हुक्म
उस की सूरत शकल पर रीझे, मेहनत को समझ बूझ ये मुक
द मा किया चाहते हैं· तो मैं राजी नहीं अगर जो आप
मेहनत का इनाम देना है तो रुपया अशरफ़ी जागीर हो·
उसका काम हो आपका नाम हो· ये सुन के वो बहुत हंसी
कहा शाबाश बच्ची· उस की खूब क़दर की· वो बिचारा
तुम्हारे मुल्क का या रुपये का या पैसे का मुहताज है· अ

रीनादान वोतो आप बादशाह हे • बराबर वालियां ये सुनक
र कहे हंसी • हजूर बस इनका ये शोहर हे • उनके नजदीक
ये शाहजादा नहीं मज दूर हे • अंजुमन आरा कल्लाईक
हा रुपया तोवो चीज़ हे • केजिसके वास्ते बडे बडे लोग मरग
ये • वोजो दाई ददी पुरानी पुरानी बेठीथी बोली • सब्के जाये •
वारी मा बाप के हुकम टालना हे • तुमको हद मुनासिब न
हीं • ओर खुदान खास्ता • ये क्या तुम्हारे दुशमन हे • जो कि
सीके कहे सुनेसे बेदेखे भाले • राह चलते के हवाले करदेंगे •
आदमी दिन बदिन अकल सीखता हे • ऊंच नीच सोचता स
मझता हे • तुम सलामती से अभीतक वोही बचपन की बातें
करती हो • खेलने कूदने के सिवाय कदम नहीं धरती हो • अंजु
मन आराने कुछ जवाब न दिया • मगर उसकी सहेलियां जि-
नसे रोज मशवरे होते थे • बोली हे हे लोगों तुम्हें क्या हुवा आ
नूजी साहेब • कसूर माफ़ • आपने धूपमें चोंडा सफेद कियाहे
खेर हे • दुलन से साफ़ साफ़ कह वाया • चाहते हो • दुनियां
की • शरम ओर हया ती गोडी क्या उड गई • इतना तो समझो
भला मा बापका कहना किसीने टाला हे • जोये नमानेगी
(अलरवा मोशी ती मरजा) बुढे बडों के रूब रू ओर क
हना क्या • ये सुनके आनूने अंजुमन आराको जिसने पाला
पढाया • खिलाया था • मुबारक बाद देके अंजुमन आरा की
मांको नज़र दी • शादियाने बजने लगे • नजरे गुजरी तो
येकूटी • ॥कबित्त॥ फल्क परये मुबारक बाद हे अब किस
के मिलने की॥ ये ऐसा कोन वख ता बर हे ज़िस्का वक्त जागा
हे॥

चरित्र

॥१॥ बादशाहने वजीर को खिलत दिये ओर

वहां तैयारी करो · जान आलम मुसाफिर है · मैं उसके यहां
जाके सामान करता हूं · खुशी के मारे जान आलम की बाछें
खिली बंद टूटे जाते थे मगर शर्म के मारे आप सिर न उठाते थे
बादशाह ने जोतसी पंडित बुलाये · तुला · वृश्चिक · धन · मकर
कुंभ · मीन · मेष · वृष · मिथुन · कर्क · सिंह · कंन्या · गिन
कर विचार करने लगे · बृहस्पत और चंद्रमा एक जगें थे ·
साअत नेक ठहराई · दूला दुलहन ने गुलाबी जोडा पहना
तमाम शहर में रंगीन कपडों का हुक्म हुवा · डोंडी पिट गई
के जो सफ़ेद पोश नजर आवेगा लहूसे लाल होगा · गर्दन
मारा जायगा · रंग खिलने लगा · गुलाल · उडने लगा · के
स र के मारे शहर कश्मीर होगया सब रंग में डूबे फिरते थे ·
हर जगे नाचथा · के जो चाहो सो लो · हिंदु को पूरी, कचोरी, मि
ठाई · आचार · मुसलमान को · पुलाव, कालिया · जर्दा · कोरमा ·
किसी को किसी से गरज नथी · दिन रात नाच देखते थे ·
और दगले बजाते थे · आस पास के राजा बाबू सब हाजर हुए
थे · जो मुसाफिर आता · खाली नजाता · बहुत से बेफिकरे
दिल्ली नखलौ वाले सैर देखने को आये सांझके रोज पचा
स हज़ार चोपडे रुपेरी सोनेरी नुकल और मेवों से भरे हुये
मिसरी · मेवा · क़ंद · दही के मटके · गलेमें मढ़ लियां नाडे
से बंधा आराइश की टट्टीयां · गुल बूटे बे शुमार · फिर मेहदी
की रात आई · बोनार नोल की मेंदी के एक दफे लगाये लाल
हाजाते · तमाम उमर हाथ मलता रहे · कापूरी बनियां मेंदी
की चमक · कुंदन की दमक · ये रंग ढंग दिखाया के सब को ·
सुरख रू कर दिया · अब बरात की रात का हाल सुनो · पांच
कोस तक दोनों तर्फ बिल्लौर के फार आदमी के कद से दुग

ने पांच पांच छ: छ: गज के फ़ासले से लगेये एक एक
में सो सो बत्तियां बल रहीथी · और दस दस गज पर चांदी
सोने के पंच शाखे जल रहे थे · हजारों मज दूर ढार रो पर
रोशनी करते फिरते थे रोशनी के झाड़ अलग चमक रहे
थे तर्पो लिये और नोबत रवाने बने · उन पर जर बफ्त के शामि
याने तने फिर आतश बाजी गडी · वे रोशनी थी के सवार को ·
चींटी साफ़ मालूम होती थी · दूला सवार हुवा गुल एक बार
हुवा · किसीने कहा सवारी जल्द लाना ; कोई पटका थाम
ला सभाल कर पुकार · खिद मत गार को बुलाना पल
टने आगे बढ़ी बाजे बजने लगी · नोबत निशान माही म
रा तब · जलूस का सामान सवारी के रिसाले बागें संभा ले · सि
लह दार फ़िर हजारों बांरा सों तक्क · तमामी से मढे उन पर रं
डीयां जवान जवान शादी मुबारिक गानी सज बज दिखा ·
तब ले पर फरराती · सांडनी सवार खास बर दार · दूले के
बरा बर आस पास बर्छी वाले · चोप दार · चोप दार · रोशन चो
की वाले · शाह नाइयां सुर निराले · हज़ारों गुलाम सोने से लदे
हातो में अंगूठीयां · कयी बाद शाह अमीर बजीर राजा बाबू ·
हाति यों पर स वार खवासी में अञ्जु मन आरा का भाई · जा
न आ लम का साला · इसी तरह आहिस्ता सवारी पहर ए
क रात गये दुलहन के दर वाजे पर पोंची · मा मा असीलें दो
डी पानी का कटोरा हाती के पांव के तले फेंका · किसीन कुछ
और टोट का किया · दुला उतर कर मज लिस में आया · बा
रह सो रंडियां भांड भक्की हीजडे जनाने नाच ने गाने लगे · स
वेरे के वक्त काजी आया कई रोज के महसूल पर मेहर बंधा · मु
बा रिक सलामत का गुल मचने लगा फेरे हुए ॥ कबित्त

कूकना·नौबतकी चकोर·झांझकी फुनकार फुट पुटाव
क्त कुछ कुछ तारोंकी चमक धौंसे की गमक चांद के घर
सफेदी दुल्हन वालोंकी ना उमेदी·इतर की लपट फूलो
की महक·सबको नींद का खुमार·कोई पैदल कोई सवार
दूला के घरमें तैयारी·दुलहन यहां ब्याह भी जारी·कोई
झोंके खाताथा·कोई सिर टकराता था·ये तमाशा लायक
देखने के होता है·राह चलती देख कर रोताहै·इसका मजा
तो वोहीजाने जिसने ये देखा हो·किसीके बरातमेंतो गया-
हो अगर आप ब्याह नकिया हो·गरज के सवारी दूला के घर ॥
पौंची·बकरा जिबे किया·अंगूठे में लहू लगा दिया·खीरखि
लाई·रस्मों से फुरसतपाई·जान आलम का घबराना·घडी २
घडीयाली से दिनकी खबर मंगवाना·केकहीं जलदी रातहो·सो
फनेमें मुलाकातहो·कभी चिल्लाना केघंटा देखने को कौन गया
है·वाह किसमत की खूबी·पहर भर होगया·घडी नहीडूबी

होगा कहांथा • फ़िर पूछना था ' अभी क्या बजाया • उधर ः
अंजुमन आराभी जमाई यां लेतीथी • तकिये पर सिरधर
देती थी जब कुछ और तज बीज न बन आती तो लोगों के
दीकाने को ऊंघ जाता • गरज के खुदा खुदाकर शामहुई •
चांदनी छिट की लोग आंख बचाकर इधर उधर खिसक गये
अब सोने के मकान का हाल सुनिये ॥ कबित्त ॥ एक
बारह दरी सफेद गजकी जिसमें के निगाह जाय थजकी
सोने का बिछा पलंग उसमें हीरे जडे रंग रंग उसमें ॥ हरतो
खवासायां तैयार हाजर रहें • जिस्से कितना बेदार ॥ शा
हज़ादा जब उस मकान पर आया • ॥ दुलहन को खवा
स लेउठाया • ॥ मचलाती जाती ती याद शाहजादी पूरा सति क
दम दबाती आई • ॥ गरज के छप्पर खट में आये उस वक्त ः
अंजुमन आरा को देखना चाहिये ॥ चोटी मिस्ख जूरी वो सु
अनर बलखाई • हुई पडी कमर पर ॥ मोती का मुवाफ़ उ
समें डाला था • कालेके मूंमें कोडि याला • ॥ गलों पें करे थे
झूके के हर बार • दो फूल के झूमके फूल के प्यार ः ॥ वो नाकके
दूबे गुल से दहाय जाय • ॥ दम गुंचे का जिस्में नाक में आय ॥
नक तोडो से झलके उसके दमदम ॥ या नाकमें नथ का
आगया दम ॥ बिच्छू का सा डंक नथकी वो नोक ॥ रख
ती थी दिलों से नोक और झोक ॥ अंगारे से लाल लाल
रुखसार ॥ दिल में यही आया की जिये प्यार ॥ गरदन
की वो नाज़ुकी का आलम ॥ चंपा कली दुग दुगी का आलम
बाजू थी भरे भरे वो अर गोला वो नो रतन उनमें पहने
अन मोल ॥ वो हात हिनाथी गोरे गोरे ता खूने उ शाकके च
हेरे वो छातियां गोरि गोरि और सख्त उबरी हुई गोल गोल

दंवरत॥ वो हुस्न वो कुछ लडकपन उसका ॥ गदराया हुआ वोजोबन उस्का ॥उस चंपै रंग पर वहारे क्याजोबनकीउमंग पर बहार रेक ॥ प्यारी प्यारी वो भोली सूरत ॥ चितवन में भरी हुई शरारत ॥ अंगिया वो बनत की जग मगाती॥ जोबन कि भरी फवन की वाली जान आलम देख तेही बेताब होगया· एक तर्फ शौक दूसरे तर्फ़ ख़्याल· अगला पिछला खयाल आने लगा· दरा दरवाले यो के ताकने फांकने का खौफ लगा हुआ हल के दानोने अपने दुखडे· रोये· दस्तूर है· के हर एक अपने प्यारे के आगे शेखी मारता है कुछ अपनी तरफ़से झूठ बोलता है· अपने दिल के फफोले फोडता है· जान आलम ने अपना सब हाल बयान किया अंजुमन आराने जादूगर्नी का हाल सुनकर अफ़सोस किया· मलकाकी बात पर बनावट से हंस दिया· फिर रूठी सूरत बनाई· नाक भौ समेटी· तेवरी चढाई मगर चले आने के सहारे पर मुसकराई· अपनी जान बचाने की अहसान दंदी जताथी· फिर तो शरम उड गयी· छाती से छाती· मुंह से मुं· बदन से बदन मिलगया· मसल है (एक जान दो कालिब) मगर यहां का ये कहीये जान और एक ही कालिब थे· दिल में उमंग मगर शरम से तंग दोनो के दम चढा गये थे· जंगा जरी गाव जारियां कर रहे थे· शाहजादी भौके पर हात न लगाने दती थी· जब बे बस हो जाती तो चुटकिया लेती थी· कभी कहती थी रे साहब कोई इतना घबराता है· देखो तो कौन आता है· कभी आपडट कर देखती· भालती कोई दम यों टालती· कादिम· कहने लगी है है छोड मुझको ॥ बे दर्द नयों मडोड मुझ को दम रुकने लगा· मेरा कहीं हट ॥ चलाकी बहुत थे :

खुश नहीं हुआ जान आलम जवाब में बोला • लग मेरे गले
आ तो प्यारी ॥ दिल की मेरी देख बेकरारी ॥ हात अपनी क
मर में डालने दे • कुछ दिलकी हवस निकालने दे • ॥ १ ॥ आख
र को जान आलम ने दबोचा • बहुतेरा सिट पिटाई • हुसने ए
कन मालो • दिल में तो उसके भी उमंग थी • बरा बर से जवाब
देने लगी • थे जी कि उमंग पर वो दोनो झट आरो पलंग पर हो
दोनो। दो फूलोंकी सेज वो पलंग हुआ है • वो दोनोंकी एक
सी उमंग आह • ॥ गरज़ के मुराद पुरी हुई • कली खिल ग
ई • हुश्न नाको जान मिल गई • अल्लह पनके दिन थे • दो
दोनों पकरा गये • सवेरा हुआ • जान आलम नहाने गया • एक स
हेली उसदेश दान से आई • अंजुमन आरा सो रही पड़ी थी •

कहा के उट्ठो· अबभी पेट नही भरा सूरज निकल आया· यातो इतनी हद थी या अब ऐसी फिसली· अंजुमन आरा कुछ न बोली· सिर झुका नहाने चली गई·॥ कवित्त॥ वो अंचलसे मूंह छुपाये हुये· लजाये हुऐ शरम खाये हुऐ· दोनो नहा धो के आये· पलंग की चादर देखी गई· पंजीरी आई· बराबर वालियों इशारों बातों में रात की पते पते की कही· दोनो ने शरम के मारे सिर झुका लिया· जान आलम बादशाह के पास गया· फतः का खिलत पाया· फिरतो इसकी सल्लाह से राज पाट का काम होताथा· एक बडा बाग रहने को मिला· जान आलम रात दिन अंजुमन आराके साथ शराब पिया कर्ता· और परियों के अखवाडे में राजा इंद्र की तरह चैन उडाता· जिसने कभीये किया हो वोही खूब समझता है· और जिन्ने नही कियाहो कर देखे· नहीतो अंधेके आगे रोना अपनी आंखें खोना है·॥·

चरित्र ७·॥

अब फिर मलका का हाल लिखा जाता है· वो बिचारी कमबख्तीकी मारी रातदिन रोती थी· बिलख बिलख के जान खो तीथी· ॥ कबित्त ॥ यहां तक के उठाने का वक़्त करीब आया·॥ इस पर मेरे बाली पर तुम उठके ना आ बैठे॥ मैं नाम तेरा लेले दिन रात जो चिल्लाऊं॥ जो सुनते हुऐ बहरे कौं कर नग ला बैठे॥ १॥ जोकोई कहता मलका खैर है घुलीजाती हो· क्यो इतना गमखाती हो· तोवो ये कहती॥कबित॥गम खाती हूं लेकिन मेरी नियत नही भरती क्या गमहै मजेका के तबियत नही भरती· ऐसी ऐसी बाते करतीकि सुन्नेवालों की छाती फ़टती· वो कहती मलका इ-

तता न घबरावो · जलदी फिरेगे · और मनोकामना सिद्ध होगी · वो कहती के मेरे दमकी क्या भरोसा है · क्या जाने किस दम निकल जावे · देखो · जिस दिन से गया आजतक उसकी खबर भी न आई · हमने मुफ़्त में जान गवाई · वेसा मूल के जवाब वही दिन रहता · तो उनी पेडो में जहां जान आलम मिला था जाती, आप रोती · संग सहेलियों को रुलाती और कभी सुभों से श्याम तक उसी जंगल में सबको फिराती और ये जबान पर लाती · ॥ कबित्त ॥ रहे था लिपटा हुवा जब के मुझसे प्यार ॥ अजब मजे की थीं रातें अजब वे प्यारे दिन ॥ कब उससे होगी मुलाकात मैं ये पूछूं हूं ॥ जरा तो जोतसी देखो मेरे सितारे दिन ॥ रात को एक बार घर आती और कराह कराह सबको जगाती · और ये सुनाती ॥ कबित्त हराम नींद की इक रात वस्ल जानाने ॥ इलाही कोई किसीका उम्मेदवार नहो ॥ रात बेचैनी से पहाड हो जाती तो वो बडी घबराती · और कहती · हे भगवान जेसा मुलाकात की रात को तूने घटाया वेसा जुदाई की रात का क्यों न जलदी तडका कर दिया ॥ है है · आज मुर्गा बोला न मुल्लाने अजां दी · न चौकी दार के वक्त जागा · और घडी वाली भी नींद के झोके में गजर बजाना भूल गया · कबित्त · ये शबे वस्ल में सब जान के खाने वाले · आज क्या मर गये घडियाल बजाने वाले ॥ दिन रात उस पर भारी थी · किस मुसीबत में वो बिचारी थी ॥ लोग कहते · मलका अल्ला को याद करो रात दिन का रोना अच्छा नहीं · रोरो के आखें खोवोगी · खुदा जल्दी तुम्हारी मुश्किल आसान कर देगा तो वो आह भर कर यह कहती अगर नसीब मे है तो मिलेंगे मगर ये दु-

वाकले रात ढले सवेरा हो · जिसने हमें मारा · वुही हमें उठा
दे · यही हमारी सोनका वदला है · ये इश्क में मजे देखिये ·
वहां तो शाह ज़ादा वागमें चैन उडावे · और यहां मलका वि
लखके जान गवावे · मगर जब एक के दिलमें ज्यादा बेचैनी
होती है तो दूसरा भी तड़फ़ता है · ये इश्क दोनो की जान
लेता है · इस पर एक कहानी याद आई है · बनाने वाले ने ·
खूब बनाई है ॥ कहानी
कलकत्ते में एक अंगरेज सोदागर था · बडा आली शान
सब तरह का सामान उसकी दुकान में मोजूद था · उसकी
एक बेटी थी · बडी खूब सूरत · योंतो सब सामान अच्छा -
था · मगर ये रकम तुर्फा दूम थी · बिलायत से हिन्दुस्तान
तक उसके हुस्नका चर्चा था · और वंबे इसे सूरत तक उस्की सूर
तकी धूम थी · हजारों अंगरेज उस पर जान देते थे · लाखों हिं
न्दुस्तानी उस्के पीछे खराब फिरते थे जिस वक्त हवा खाने
को निकलती तो दोनो तरफ़ लोग खडे होजाते उसका दरशन
करते · और जान नजर करते · इत्तफाक से एक अंगरेज खू
ब सूरत नोजवान · इश्क बाज · ताजा बिलायत से आया ·
एक दिन वो आफतका मारा कुछ सौदा लेने उसी सोदाग
र की कोठी पर आया · और उस हूरके बच्चे को देखा · इश्क
गले का हार हुआ · होश खो बैठा · दिलसे हात धो जानको
रो बैठा असबाब खरीदने गया था · सौदा मोल लिया · उसने
गाहक समझ मोहब्बत के कांटे में तोल लिया · हात पांव ने
सत दिलने हिम्मत हार दी · दिन धोले लुट गया · जब और
कुछ तजवीज बन न आई तो असबाब मोल लेने के बहाने से
आमदो रफ़्त बढ़ाई फिर तो ये हाल हो गया के ॥ कबित्त ॥

दिन में सौरबार अब हम उनके घर जाने लगे · मु हुआने बोलरी हम उन पे मरजाने लगे · ॥ मुहब्बत की आज तक कुछ जी नहीं · लोगों ने बडे बडे जतन किये मगर एक न चली · जब सौदागर के कानमें इसकी भनक पडी तो साहब का आना जाना बंद किया ये बडे घबराये · गरज के साहब बहादुर ने शिकस्त खाई · हिलने की ताकत न रही · लेने के देने पडे · यौड़ इर थाई से लग लई · जो जो उसके दोस्त थे सम झाने लगे · केदके फिक्रमें हुए · और तो की बुराई बयान की मगर इसकी एक खातिर में न आई · आखिर को उस का एक बडा गहरा दोस्त था उसने कहा · क्यों मौत मांगता है · अरे जालिम, ये क्या करता है · सिवाय बे इज्जती के कुछ हासिल न होगा · अपने हातसे अपने ही पैरमें कुल्हाडी मारली किसने बताई है · तूने शायद मजिस्ट्रन के बेटे की कहानी नहीं सुनी · उसने कहा क्योंकर · ॥

मजिस्ट्रन के बेटे की कहानी

मजिस्ट्रन नाम इसी शहर में था · बडा रुपये वाला · सब दुनियां की बातें उस्को नारदून में थी · सो सो जहाज सौदागरी के उसके जाते थे · मिट्टी में हात डालता तो सोना हो तआता · सिवाय बेटे के और कुछ हवस दिलमें न थी · नसीबे वालों की दुवा जल्द कबूल होती है । ९७५ बरस की उमर में एक लडका पैदा हुवा · बडा खूबसूरत · बारह बरस की उमर में लिख पढ के तैयार हुआ · और तेरह बरस में बापसे सफर की छुट्टी मांगी · । मजिस्ट्रन ने कहा के अभी थोडे दिन सबर कर · वो बोला · आप बुड्ढे हुए मैं चाहता हूं के आपके जीते जी सफर को जाऊं और अपनी

चाला की बताऊं लाचार दापने दस दारह जहाज लोग वागसा
पकर दिये· दो महीने दाद आंधी जो आई जहाज़ नदाह हो
गये · मजिस्हल का येक तख्ते पर डूबता उछलता बह चला
सात वे दिन वो तख्ता किनारे लगा ये उतरा और घासकी र
स्सी से तख्ते को पत्थर से बांध दाला चारा लूट ले गया · थोड़ी
दूर पर एक शहर दिखलाई दे· उठता बैठता उधर चला · देखाके
शहर खाली है · न कोई वारिस है न वाली है · रुपये अशर
फीयों का ढेर लगा · हुआ है · फिरते फिरते किले में आया ·
वहां फूल फल देखे · बीचमें एक बंगला था · ये जर बख्त का प
दी उठा अंदर घुस गया · देखाके जवाहर के पलंग पर सुर्देकी
तरह कोई सोया है · दुपट्टा ताने न कोई पायती न सिराने इसने दु
पट्टा सरकाया · औरत ने चोक · कर सिर उठाया और इसको देख
कर कहा अपनी जवानी पर रहम खा यहां से चला जा · बिन आ
ई मरेगा · कोई आदमी न करे गा · इसने कहा तू हाल तो क
ह · औरत बोली तू पहले अपनी सुना · इसने कहा ऐसा
त दिल का भूखा प्यासा हूं जो कुछ खाऊं तो बात करूं · औ
रतने कहा के मुद्दत वाद आज खाने का नाम सुना · गम के
सिवाय खाना आंसू ओके सिवाय पीना यहां नहीं है · खा
ने की किसम से कसम तक भी नही खाती हूं · क्या जाने क्यों
कर जीती हूं डरके मारे दिन पूरे करती हूं · और जान ऐसी
सख्त कंबख्त है के नहीं निकलती · लोग कहते हैं के वे खाये
पिये जीते हैं ये बात झूठ है · दिलको खाते है · और लहू को
पीते है · तू इस बागमें जा · जिस मेवे पर दिल चले वो खा · ये ग
या मेवा खाया पानी पीया · उलटा आ औरत को सब अप
ना हाल सुनाया · और उसका पूछा · वो बोली कैसें यहां की ?

शाहजादी हूं • बाप मेरा यहां का बादशाह था • मैं रात दिन सैर और शिकार किया करती थी • एक दिन नदी किनारे सांप दिखा वो मेरी तर्फ़ को बढा • मैंने उसे तीर मारा • क्या जाने ल लगा मगर देखा तो एक बडा अजदहा कपटा आता है • मै तो घोड पर चढ कर भागी और मेरे साथी यों को वो अजदहा खा गया • यहां तक के शहर में बादशाह से हैवान तक भी नहीं रहा फ़क़त मैं बची हूं • शाम को वो यहां आता है • और दो घडी बैठ कर गायब होजाता है • जब भूख लगती है तो मेवा खालेती हूं • कोई अपना नहीं • खुदाके डरसे तुझ पर शुक्र कर दिया • इसने कहा तू खातर जमा रख • आजही फैसला कर देता हूं ये कह कर किलेमें से बारूद लाया • सांप के बैठने की जगह गढ़ा खोदा • बारूद बिछाई • दूर तक सुरंग बनाई • और उस पर हरी घास जमाई • शाहजादी ने कहा अब वो आता होगा • ये सुन कर मजिस्टून का बेटा सुरंग के कोने मे जा बैठा • इतने में वो अजदहा आया • और अपनी जगह पर उस क़ुदम ने हरा फर्शी बिछा पाया बहुत खुश होकर बैठा मजिस्टून के बेटे ने पथ्थर से आग काड सुरंग उडाई • येक ही दफ़े धस का हुआ वो जमीन का टुकड़ा सांप समेत आस मान को उड़ गया • फिर तो ये दोनो खुश हुए • सात बार तक ही खडे रहे दो लडके भी पैदा हुए • एक दिन शाहजादी ने कहा के शहर का बसा ना चाहिये • अकेला दिल नहीं लगता • वो बोला के अगर घर जाऊं और मजिस्टून को लाऊं तो ये बस्ती बसे • उसने कहा मैं अकेली क्योंकर रहूंगी • मैं भी तेरे साथ चलूंगी • आखर दो एक एक लडका दोनो गोद में लेकर चल निकले औ र वही पहुंचे जहां वो तख्ता था • कहो जो हो सो हो • इसी पर

सवार हो · कहीं तो जा निकलेंगे · येक हुकार सवार हुऐ · मजिस्ट्रन का बेटा तख्ता खोलने लगा शाहजादी बोली यूं तो मालवो होत है · मगर एक नारियल · हुकसीर से भरा हुवा है · अगर कहै तो लेआऊं · आदमी निल्या रावे के फेरसे रहता है · इसने कहा जो लेआ · शाहजादी लडका गोदमे लियेउत रीउसके उतरते ही ऐसा हवा चली के रस्सीतक्ते की टूट गई व ह चला · बहुतेरा हात पैर मारे मगर किनारे न लगा · किना रे पर शाहजादी अलग रोरही थी · इतने में एक जाहाज आया · जहाज वालोने देखा के कोई जवान लडके को गोद मे लिये बहा चला जाता है · रहम खाकर एक डोंगे को दौडा या · इसको जहाज पर लिया · जहाज का मालिक मजिस्ट्रन का दोस्त था उसने उसके बेटे को पहचान लिया बडी खातर की कल कत्ते में पोहचे · बेटा बाप से मिला · घीके दीवे जले · मजिस्ट्रन ने बेटे से तमाम हाल पूछा · बेटे ने सब दाह वार बापसे कहा अब देर नकीजे जल्दी चालिये ऐसा मु लक और रुपया हातसे न दीजिये · मजिस्ट्रन ने कहा · खैर है · येभी येक किस्सा था जो मैने सुना · और ख्वाब था जो तूने देखा · बेटे ने कहा के ऐसा अकल मंद और ऐसी बात कहे · दुनिया में तीन चीज़ है · जर जमीन जन यानी रुपया धरती और औरत · ये सामान जमा है अगर आप नहीं जाएंगे तो बंदा अकेला ही चपाहुंचता है मजिस्ट्रन ने क हा अफ़सोस · हमतो तुम्हे अकल मंद जानते थे मगर ये ह मारी नादानी थी · तुम्हारी जवानी थी · कोई नादान से निदा न भी · औरत का बात पर ध्यान नहीं करता · ये बातें जभी नदा थीं के जब तुम और वो एक जगे थे ये किसकी यार है · जहां तुम

से ग़रज़ मिला · उसको होली · मसल मशहूर है · (औरत
को तरफ़ चाहिये न दक्त) लोग कहते हैं के औरत जबतक
अपने पलंग पर है तब तक अपनी · हम इसको भी नहीं मान
ते नींद और मौत बराबर है · बल्कि करवट फेरने में इधर की
दुनियां उधर हो जाती है · जो लोग औरतों पर सख्ती करते हैं
वे बडे बेवक़ूफ़ हैं क्या वो नहीं जानते (कहते आपसे नहीं तो
जा सगे बापसे) मजिस्द्रन ने बहुतेरा उतार चढाव दिये मगर
उसने एक न माना लाचार मजिस्द्रन भी साथ हो लिया जहां
ज पर चढे और उस मुल्क में पोंचे मगर दंग हो गये सब न
फ़ आदमी फिरते थे · मजिस्द्रन के बेटे ने जाना के मैं रस्ता भू
ल गया · आदमी यों से पूछा · इस शहर का नाम क्या है और
वहां का हाकिम कौन है · उन्होंने कहा यह शहर उजड गया है
फ़क़त बादशाह की बेटी बची थी · सो दस दिन से शादी की
और ये अबादी हुई है · मजिस्द्रन ने बेटे से कहा खुशहो बहुत
हुए होंगे · सीधे फिर चलो · उसने कहा इतनी मुसीबत उठा
ई उसकी शकल भी नजर न आई · दो बातें करलूं तो फिर
चलूं मजिस्द्रन ने कहा कहा मान · नहीं तो मुसीबत पडेगी ·
मगर उसने एक भी न मानी · लोगों से पूछा शाहज़ादी क
भी सवार भी होती है · उन्होंने कहा हां रोज़ निकलती है · ये फ़ल
पूछ पांव लडके का हाथ पकड के रस्ते में जा खडा हुआ · इतने
में शाहज़ादी घोडा फेंकती आई · ये पुकारा हमने इक़रार पूरा
किया हाजर हुए · लडका सलामती से मौजूद है · क्या हुक्म हो
ताहै वो किसानों की तरफ़ देखती चली गई · कुछ जवाब नहीं
दिया · ज़लील होकर घर में आया · बापने हाल पूछा इसने ज
वाब दिया आज मुलाक़ात न हुई कल फिर जाऊंगा · उसने क

हाक्यों शामत आई है· नाहक जावोगे मुफ़्त में पकडे जावोगे· दूसरे दिन इसने बेटे को सिखलाया के जब सवारी आवे तो तूं १ घोडेसे लिपट जाना· और कहना कि दुनिया का खून सफेद होग या· माकी उल्फ़त से बाप की मुहब्बत में ज्यादा मज़ा पाया· वो तो उस को साथ लिये फिरता है· तुम बात की भी नहीं करती हो· बल्कि पहि चान नी भी नहीं· जिस वक्त सवारी आई· ये तो बहुत जला था· और समझ चुका था· कि खेल बिगड गया· कहा· बस शाहज़ादी बाग को रोको· वो तो खुद रुकी हुई थी बाग भी रुक गई· मजिस्ट्रेट का बे टा बोला·॥ कबित्त

याद वो दिन है कि नफ़रत थी ज़माने से तुझे।
होती वह शान थी बहुत गैर के आने से तुझे॥
खौफ़ आता था कही आने से जाने से तुझे॥१॥
मकर था याद खबर थी न बहाने से तुझे॥२॥
बेधडक गैर से बातों का कभी तौर न था॥
हसी हसथे तेरी सोहबत में कोई और न था
कभी चोटी की खबर न थी न था कंघी का ख्याल॥
बारहा उलझे हि रहते थे सिर के तेरे बाल॥१॥
पान की लाखे से और मिस्सी से होता था मलाल
मुझको अफसोस ये आता है के गुज़रा नही साल
ऐसी क्या बात तेरे दिल में समाई ज़ालिम॥१॥
इफ़ा तन सब वो रस्मो रसम भुलाई ज़ालिम॥
थी लगा वट हि तुझे याद न खेल ना सबसे॥
गरम जोशी का भला कब था ये लपका सबसे
मैं बैठना कोने में हरदम तुझे तनहा सबसे॥
तुझको लग चलते कभी हमने देखा सबसे।

अब तो रुद्दी में किया के गरज़ तूने किया
खुलगया सब ये तेरा भेद ग़ज़ब तूने किया।
मुबारक सद मुझे हुई जल्द रिहाई तुझसे॥
अब तो नाहक हज़ार मुकद्दर है सफाई तुझसे
बजा अपनी क्या कीजे बुराई तुझसे॥५॥
न मिलें पर जो कहे सारी खुदाई तुझसे॥
जुदा मिलने से हम हाल तेरे खो बैठे॥५॥
खुश रहो तुम के तुझे खोल के दिल रो बैठे॥
अब कसम खाता हूं लो दिल न लगाऊंगा कभी.
ज़िल्लतो रंज न इस तरह उठाऊंगा कभी॥५
गर न रहें दारमी दुनिया में पाऊंगा कभी ५
रखूं तो क्या है नहीं पास बिठाऊंगा कभी ५
मैं तरस अब दिल के लगाने ही का जाना न रहा
यार लोगों की ज़बां पर ये रहेगा हर बार ५
गो कि आशक था मगर था ये बड़ा ग़ैरत दार॥
देख बद वज़ा किया देर दिये ऐसा कुन कार॥५
सिर पटक के मर गये सब परन मिला वो जिनहार
करे माशूक दग़ा किसी से तो ऐसी करे॥५॥
पहुंचरे बात की आशक तो भला ऐसी करे॥
ये सुन के वो सर निंदा हुई फ़िर लडका घोडे से लिपट ग
या. जो बापने सिखाया था वो कहने लगा जब कह चूका था
हज़ादी ने तसनूबा उस पे फोक दिया धमसे गिर पड़ा. और
वो: नाग उठ चलदी. मजिस्टून बोला क्यों जो हमने कहा था
वोही आगे आया. वो: बोला सवेरे जो होना है हो जावेगा. मजि-
स्टून ने कहा के तू: अपना भी वोही हाल किया चाहता है. दूसरे

दिन दो चला · मजिस्नून काजी न रुक सका साथ हो लिया · जब ॰
शाहजादी की सवारी पास आई · बाग पकड़ ली · अभी जबान
भी नहिं लाई थी · कि शाहजादी बोली, मजिस्नून हम ने सुना था ·
तू: बडा होशियार आदमी है · सब तरह का जमाना देखा हुआ
है · मगर अफ़सोस · के बई रिशोक से तूने नहीं सुना के जो ग
या सो गया · सो किन किन बातों को याद किजिये · बनबन के खे
ल ऐसे लाखों · बिगड गये है · ये कह के घोडा छूट कारा: मजि
स्नून ने और बोलने में जान का डर देखा · बेटे को झुकके सला
म किया वेभी बुढ्ढे बाप का बेटा था · शर्म के उलटा फिरा जीते जी बा·
पसे आखर चारनकी: फिर उस अंग्रेज ने कहा के इस कहानी से
ये मतलब है के आदमी वो काम न करे जिस्में आखिर को जली
ल होवे · अब क्या कहने हो बोला ॥ कबित्त
कब तलक जिऊं गा में मौत एक दिन आनी है ॥ इन दिनो
जो आजाये ऐन मेहरबानी है ॥ लोगवाग सिर पटक के उठ खडे
हुऐ · कहा जब ये जान गवावे गा तब ये झगडा जावेगा; जब उसका
अबतर हाल हुआ · तो उन्ने दोस्तों को चिट्ठीयां लिखके जमा किया
कहा के कल हमारा कूच है · अगर हमारा कहा मानो गे तो यहां तु
म्हारा नाम होगा · और वहां नेक अंजाम होगा · सबोने मान लिया
उसने कहा के मेरे मरने के बाद मेरी लाश बडा धूम धाम से बजरे
के छतर पर संदूक में धर बाजे बजाते मेरी प्यारी की कोठी के नी
चे से लेजाना · और दिल में ये था ॥ कबित्त ॥
॥ साथ वो मेरे जनाजे के लहद कबर तक आये
अय अजल तेरा कदम मुझको मुबारक होये
रात को साहबबहादुर चल बसे · सुबह को ये खबर सब में फै
ली सोदागर बच्ची के कान में भी पहुंची मुहब्बत ने जोश कि

या। अन्तर खास से दबाये रक्खा। साहब लोग सिर नंगे गुल मचा
ते दाजे दुज़ाने जनाज़ा कंधे पर लिये चले। हज़ारों लोग रोते।
पीछे साथ थे। इसी सूरत से कोठी के नीचे जनाज़ा आया।
उस वक्त सौदागर बच्ची मुहब्बत के मारे कोठी पर चढ़ गई।
और ये इस तरह बोली के। लाश किसकी है, के मुहब्बत के हल
कारे बच्चे बच्चे कह रहे हैं। वो बोले के तुम्हारा हीनो मारा हु-
आ है। अफ़सोस के उसने जान दी और तुम्हें खबर न हुई। ता
क सरवशा ने उसको सुना कर ये कहा।। कवित्त

।। मुकर जाने का ज़ालिम ने निराला ढब निकाला है
सबों से पूछता है किसने इसको मार डाला है ।।

ये सुनते ही उसने चीख मारी और धम से संदूक पर कूद पड़ा
दम निकल गया। आशिक़ा माशूक़ सीधा जग गया। मुहब्बत ने
इस तरह दोनों बिछड़े हुओं को मिलाया। लोग फ़रीग
थे दूर दूर खबर पौहची। आखिर को दोनों को साथ एक
संदूक में गाड़ दिया। ये मुहब्बत के मज़े हैं। कब जी न छोड़ती
है। अब मलका का हाल सुनिये उस बुरा हाल हो गया।।

कवित्त। लगे ज़मीन पर आज उतार दे हमको ।। ५।।
ये दिन दिखाये तेरे हुस्न ज़ारने हमको ।।
जुदाई में तेरे बिस्मिल अब तो मारा है ।।
तड़प तड़प के दिले बेक़रार ने हमको ।।

सुबह से शाम तक छिक छिकी लगी रहती। दरवाज़े की आ
हट पर कान था। आखिर को आंख बंद हो गई। गए दिन छिक
छिकी बांधने के बाद। आस्ते रहती है दो दो पहर बंद। जब मलका
का यह हाल हुआ तो जान आलम बेचैन हुआ। दिल में सोच
ने लगा। क्या जाने मलका कैसी होगी। जानते हैं या मर गई।।

जल्द चलना चाहीये॰ अंजुमन आरासे कहा हमतोजाते हैं॰
और बादशाह से रुखसत लेते हैं॰ अब और नहीं ठहरते॰ये
तो बेतार थी बोलीके बेहतर है॰ मुझको भी जंगल देखने॰
का शौक है॰॥ कवित्त ॥ चलिये गातो साथ है॰
दिला उजुर॥ रहिये गातो बंद गीमें क्या उजुर ॥ बादशा
हसे जाके कहा॰ वो सब तो गया॰ कि मैं कभी जाने न दूं
गा॰ जंगल की सैरका शौकहै तो यहीं जावो॰ सब ची
ज मौजूद है॰ जान आलमने अरजकी कि हजूर को॰
एक बरस में मुझसे ऐसी मुहब्बत होगई॰ के जान और मा
ल से मौजूद है॰ भला हाल उनका क्या होगा जिन्होंने लाखो
मिन्नतो और मुरादो पर न दिन को दिन॰ न रात को रात॰
जानकर सोला सतरा बरस खाक छानकर मुझको पाला॰
हिदाने वतनमें घरसे निकला॰ मुद्दतसे मेरे जीने मरने का हा
लभी मालूम नहीं॰वे कौनसी आदमी थन है॰ कि आपनो
चैन करें और मा बाप जलके मरें॰ अब इसमें तीन पांच न
कीजिये॰ घर जाने दीजिये॰ बादशाहने देखा कि अबये नमा
नेगा॰ कहाकि अच्छा जावो जो तेरी मरजी मगर सफर की
तैयारीमें ४० दिन तो चाहीयें॰ जानआलमने ये मान लि
या॰॥

चरित्र ८

चालीस दिनमें सफर का सामान सब तैयार हुवा॰ बाद
शाहउदास दो कोस शहर से बाहर एक ठेकड़ी परजा ब
ठा॰ और वजीर को हुक्म किया कि तुम शाहजादे को रुख
सद करो॰ हम यहांसे सवारी का जलूस देखते हैं॰ तमाम ख
लकत पांच बरस का लडका पिछान वे बरस का बुढ्ढा॰ और
तमर्द॰ सब तमाशा देखने को चले आये कुछ पुछे कना

न·ताज·बहरी·शिकारी·कुत्ते·चीते लहू पीते·फिर
गुलाब·सड़के छिड़काव करते·वेद मुश्क छिड़कते·
हज़ार लाल देने जल रही·खुशबो केसारे उबल रही·
इतने में सुबह हुई·बत्ती का झिल मिल झिल मिला·
उदास जलना सवारी का हलके २ चलना·जंगल में जा
न वरों का बोलना·फूलों का खिलना·चांदनी का छुपना·सूर
ज का निकलना·तमाशा देखने वालों की भीड़ भाड़·लो
गों की उखाड़ पछाड़·इतने में खास बरदारों का गोल
आया·किम ख्वाब की मिर्जीई·मखमल के घुटने दिल्ली
के नागोरी·पांवमें·सिर पर फेंटे बंधे·कला कलकी एक
ल चकमान तोड़े दार कमर·तीन शेर बच्चे·जिस्से शेर
जीता नबचे आसपास कुरछी बरदार बीच में जान आल
म घोड़े पर सवार बराबर अंजुमन आराका सुखपाल हज़ार
पांच सौ कहारी प्यारी प्यारी छोटी उमर गदराया हुआ बद
न माल मस्त अतलसके लहंगे मसालादार का झलमलके
दुपट्टे बारीक बनत गोखरू कुर्ती·अंगिया कंधों पर सुखपा
ल कुछ इधर कुछ उधर जड़ाऊ कड़े नाजुक नाजुक हाथों में
पड़े पांवमें सोने के तीन तीन छड़े कानों में सादी सादी बालि
यां जोबन की मस्त वालियां·तेवरी चढ़ाके पांव धरना हर बात पर
नकतोड़ा करना कहीं सीसकी कहीं हिचकी इस तरह·से
सवारी बादशाह के पास पहुंची जान आलम ने देखा
कि बादशाह की आंखों से खून जारी हिचकी लगी है·अ
र घोड़े से कूदा बादशाहने कसम देके कहा कि इस वक्त
हमारे पास न आवो खुदा को सौंपा·चले जावो जान
आलम फिर सवार हुवा·जब शाह जाने·घोड़ा बढ़ाया

हमको नछेडो तुम केदो अब हम नही रहे॰
घब राते क्यों हो॰यही हाल है॰ दो रोजसे फैसला हुवाजाताहै॰
तकदीरके आगे तदवीर नहीं चलती॰ इतने में एक लौंडी॰
वारह दरी से उतरी॰ और बोली॰ किखुदाजाने इतनाबडालश्
कर कहांसे आया॰ मलका हंसी॰ और सैरके वहाने से लोंडि
योंके कंधे पर हात धर ठंडी सांस भर कोठे पर चढी॰ देखा केब
डा लश्कर पडा है॰ बाद शाहीडेरे खडे हैं॰ इतने में जान आ
लम तीन चार सवारो से घोडा दौडाये॰ चला आया॰ मलका दे
खकर घरा गई॰ मानो उतफके हालों में सफरका मारा घर
से आवारा देखाथा॰ या अब चाक चौबंद पाया॰ जान आल
म घोडेसे उतर सीधा मलका के बापके पास गया॰ सलाम
किया॰ उसने दुआदी॰ छाती से लगा लिया॰ फिर अंजुमन
आराकी सवारी आई॰ उसभी भी सलाम किया॰ मल्का॰
का बाप बोला॰ शाहजादी॰ फकीर के हालपर तुमने इनायत
की॰ खुदा तुम्हारा भला करे॰ उसने अर्जकी लौंडी मुद्दत सेबाद
शाहकी जबानी आपकी तारीफ़ सुना करती थी॰ आज शाह
जादे की बदौलत आपके दीदार नसीब हुए॰ दो घडी बैठ कर अ
र्ज किया॰ जो हुक्म होतो मल्का से भी मुलाकात करूं॰ उसने
कहा इसमें पूछना क्या है घर आपका है॰ जान आलम रुखस
त हो खेमेमें आया॰ अंजुमन आरा मे मलका के घरका रस्ता लि
या॰ आनेकी खबर पहिले ही मलका को पोंची थी॰ सामान उस उ
जडे घर का फिर दुरुस्त हुवा॰ जब सवारी देखी तो मल्का पेश वाई
को आई॰ फरशी सलाम किया॰ उसने गलेसे लगा लिया॰ मल्का
आखोंमें आंसू भर लाई बोली तुमने मुके शर्मिंदा किया॰ मै फ
कीरकी बेटी॰ तुम शाहज़ादी॰ आपके पांव आखों पर रखने

चाहीथें· आपके आने से मेरी बडी इज्जत हुई· अंजुमनआ
राबोली· हमने खूब किया· औरत अगर ये चोचले· की बातें
न करती तो क्या होता· ऐ साहब हमारी तुम्हारी तो बराबरी है·
और हिसाब की राह से पहिले तो सभाला मनी से तुम्ही हो·
सरकार की फ़ज़्ल हमें मिली हैं पहिले मजा आप ही ने चक्खा है जो
बन लूटा है· दो दोनों के होकर रात भर हंसी ठठ्ठे में प्यार मुहब्बत की·
बातें होती रहीं· सुबह को अंजुमनआरा जान आलम के पास आई·
देर तक मल्का की तारीफ करती रही के आज तक ऐसी औरत न दे
खी थी· दूसरे दिन जान आलम ने मलका के बाप से कहा के·
अब वादा पूरा कीजे· वो बोला हम इस लायक कहां हैं· तुम क़ौ
ल के पूरे इकरार के सच्चे हो· लौंडियों में धरलो· शादी का नाम
लेना तो चिडाना है· न वो हम हैं· न हमारा वो जमाना है·

आखिर को मलका का निकाह जान आलम के साथ हुवा·
अब ये मालूम हुआ के एक रात अंजुमन आरा की और दू
सरी मल्का की थी· और उन दोनों में ऐसा प्यार बढ़ा के शा
हज़ादे की आशकी नज़र से गिर गई· सच है; बड़े घराने
वालों में जलन और हसद का नाम नहीं· जलन अदावत· दां
ता किल २ रेज की तू तू मैं मैं छोटे लोगों में होती है· उन्हें बहुत
रा समझा बोली चूं चूं दिखावो मगर वो बेगार्ला गलीज झोंक फाटा के
नहीं मानते दो दिन मिल के नहीं रह सक्ते· जिंदगी जहर होती है· ला
ख तरे का गम होता है· नाक में दम होता है·॥

कवित्त॥

इश्क में दोनों तरफ़ उलफ़त बरा बरा चाहिये
दिल से तो बेदा हो उसका दंदा बरा बर चाहिये॥

चरित्र १०

कुछ दिन शाहज़ादा वहीं रहा· एक दिन ये सब बैठे हुए थे· जान
आलम ने कहा· हमे घर छोड़े अजी जैसे मू मोड़े मुद्दत हुई·
अभी दिल्ली दूर है· अब चलना जरूर है· वो दोनो बोली बहु
त खूब· मल्का के बाप से जिकर हुआ· उसने भी रोकना मुना
सिब न समझा· सफर की तैयारी हुई· इतना माल और अस
बाब शाहज़ादे को दिया के वो अंजुमन आरा के बाप का दहेज
भूल गया· चलते वक्त मलका के· फ़कीर के पास कुछ भी न था
जो देता· मगर एक चुटकला बताता हूं· जब वक्त पड़ेगा बड़े काम
आवेगा· दौलत इसके आगे कुछ माल नहीं· मगर होशयार रहना
फिर अलग लेजा कान में मंत्र फूंका और कहा कि अगर माजा
ये भाई से नी कहा गे तो दगा खावो गे· फिर अंजुमन आ
रा के पास आकर कहा· या शाहज़ादी फ़कीर ज़ादी को

दो चार घडी के बाद फिर अपने अपने खमे में आये व
ज़ीर ज़ादे के वास्ते बडा खेमा खडा हुआ · जान आलम ने
दोनों आज़ादीयों को बुला कर वज़ीर ज़ादे से कहा के जिस
तर्फ तेरा दिल चले दिलादूं · वो हरामी टाल तो औरही धुन
में था · कहा मेरी क्या मज़ाल है जो इनकी तर्फ आंख उठाके
देखूं · जान आलम बोहत खुश हुवा · और दिल में वज़ीर
ज़ादे का घर हुआ · तमाम रस्ते की मुसीबतें सुनाईं · म
गर जब फकीर के लडके का जिक्र आता · टाल जाता · वो स
मका इस्में कुछ भेद है · एक दिन मल्का और अंजुमन आरा
ने मिल कर जान आलम से कहा · ये नया माजरा है · हर
दम एक गैर · और जवान आदमी की सोहबत में शरीर
करना · खला मला रखना क्या जरूर है · बादशाह कभी
ऐसा नहीं करते · शैतान को इन सान दूर नजाने · गैर का
एतबार न करे · जान आलम ने कहा फिर कभी एसी बा
त जबान पर मत लाना · उस्ने तुम्हारी लौंडियों तक का पास
किया · और मैं क्या ऐसी नादान था · जो बे देखे भाले दस्तूर के
बर खिलाफ करता · मल्का ये सुन कर हंसी · और अंजुम
न आरा की तरफ मूं फेर के कहा · खुदा के वास्ते इन्साफ तो
कीजिये · खातिर की तली जिये · इनकी सादगी में किस वक्
फ़ को शक होगा · आप अगर अकल के दुश्मन न होते तो क्यों
हौज में कूद कर जादूगनी की कैद में फसते · नाम डूबोते · लो
भला सच कहो · शरमिंदा नहो जी में क्या समझे थे · जो कूद पडे
ज़रा ख्याल न आया · के कहां अंजमन आरा और कहां जंगल
का हौज · वो बादशाह की बेटी थी के किसी मछली की पोती
थी · जान आलम ये सुन खिसियाना हो गया · कहा · वा

दो चार घडी के बाद फिर अपने अपने खेमें में · आये · व
ज़ीर ज़ादे के वास्ते बडा खेमा खडा हुआ · जान आलम ने
दोनों शाहज़ादियों को बुला कर वज़ीर ज़ादे से कहा के जिस
तरफ़ तेरा दिल चले दिला दूं · वो हरामी तो तो औरही धुन
में था · कहा मेरी क्या मजाल है जो इनकी तरफ आंख उठा के
देखूं · जान आलम वोह हंस खुश हुवा · और दिल में वज़ीर ज़
ज़ादे का घर हुआ · तमाम रस्ते की खुशी बतें सुनाई · म
गर जब फकीर के लडके का जिक्र आता · टाल जाता · वो स
मझा इस्में कुछ भेद है · एक दिन मल्का और अंजुमन आरा
ने मिलकर जान आलम से कहा · ये नया माजरा है · हर
दम एक गैर · और जवान आदमी की सोहबत में शरीक
रहना · खला मला रखना क्या जरूर है · बादशाह कभी
ऐसा नहीं करते · शैतान को इन सान दूर न जाने · गैर का
एत बार न करे · जान आलम ने कहा फिर कभी एसी बा
त जबान पर मत लाना · उस ने तुम्हारी लोंडियों तक का पास
किया · और मैं क्या ऐसी नादान था · जो बे देखे भाले दस्तूर के
बरखिलाफ करता · मल्का ये सुन कर हंसी · और अंजुम
न आरा की तरफ मूं फेर के कहा · खुदा के वास्ते इन्साफ तो
किजिये · खातिर की तलीजिये · इनकी सादगी में किस बेवकू
फ़ को शक होगा · आप अगर अकल के दुश्मन न होते तो क्यों
हौज में कूद कर जादूगनी की कैद में फसते · नाम डूबोते · लो
भला सच कहो · शर मिंदा न हो जी में क्या समझे थे · जो कूद पडे ·
जरा ख्याल न आया · के कहां अंजमन आरा और कहां जंगल
का हौज · वो बादशाह की बेटी थी के किसी मछली की पोती
थी · जान आलम ये सुन खिसियाना हो गया · कहा · बा

न श्रौर श्रस सरवरा पन श्रौर॰ कहांका जिकर॰ फिर जगे सि लाया॰ क्या मेरी हंसी का सौदा श्रापके हात श्राया॰ श्रैतो स मझो सुहबत में क्या क्या नहीं होता॰ भला श्रपनी बातें तो याद करो वो कौन रात दिन बिल बिलाया करता था॰ कह हकनाहक लौंडियों को धम काया करता था॰ मल काने क हा देखा॰ श्राप शुमये॰ तोये कहानी लाये॰ मैंतो श्रौरत हूं॰ श्रौर मुझको नाकिस श्रकल सब कहते हैं॰ भला साहब श्रगर मुझसे वे दकूफी की हर कत हुई तो तत्र जुब नहीं॰ लेकिन शुक्र करने की जगह है के श्रापका मिजाज भी मे रा हिसा है॰ ये बात हंसी में उड गई॰ मगर वो हराम जादा ह रकत हर मुकाम में वक्त ताकता था॰ एक दिन एक जं गल में लशकर पडा॰ फूल खिले रहे फिरे दह रहे दिमा ग में खुश बो समायी॰ जान श्रालम को लहर श्रायी॰ वजी रजादे का हाथ पकड फिरे पर जा बैठा॰ शराब मंग वाई॰ दौ र चलने लगा॰ शाह जादा मत वाला हो कर प्यार मुहब्बत की बाते करने लगा॰ वो हराम जादा ये मौका गनी मत जा न रोने लगा॰ जान श्रालम ने हंसके कहा खैर है॰ वो बोला॰ जोजो नौकरी का हक होता है॰ सो गुलाम ने किये॰ कहां कहां सा थ दिया॰ मगर खूब एतबार भर पाया॰ जब श्राप सा कदर दान दालको छुपादे तो॰ फिर श्रौर किसीके स किस बातकी उम्मेद रहे॰ जान श्रालम ने नशेमें श्रागा पीछा न सोचा उ सके रोनेसे बे चैन होय गया॰ कहा श्रगर तुझको यही रंज है तो॰ सुनले॰ मुझे श्रल्ला के वासते ये बात बताई है॰ के जिस बदन मे चाहूं श्रपनी जान डाल दूं॰ उसने पूछा किस त रह॰ शाह जादे ने सब तरह की तर कीब बता दी॰ जब

वो सीख चुका तो बोला · के गुलाम को बगैर अपनी आंखों
से देखे गलती का शक है · शाहजादा उठ के जंगल की तरफ़
चला · दो चार कदम पर एक बंदर मरा हुआ पडा था · क
हा देखमें इसके बदन में जाता हूं · ये कह कर शाह
ज़ादा जमीन पर लेटा · बंदर खडा हुआ · वजीर जादे
को सब ढंग याद होगया था · फ़ौरन बेईमान ज़मी
न पर गिरा · जान आलम के खाली बदन में अपनी
जान डालदी · और कमर से तलवार निकाल अपना
बदन टुकडे टुकडे कर डाला जान आलम का नथा कि
र किरा हुआ · समझा बडी खता हुई अपने हाथ से पांवपर
कुल्हाडी मारी · वो बेईमान · बंदर के पीछे दोडा शाहजादा
भाग के बिचारा दरख्तों के पत्तों में छुपा · वो हरामजादा ·

लहू के पडों में छिड़के बेधड़क मल्का के डेरे में आया॰
रोया पीटा॰ चिल्लाया॰ कहा बड़ा जुल्म हुवा॰ मैं वजीर जा
दे के साथ सैर करता था॰ एक दफे ही जंगल में से शेर
निकला॰ और उसे उठा ले चला॰ मैंने अपनी जान पर खेल
कर शेर को जखमी किया॰ मगर उसने न छोडा ले ही गया॰ म
ल्का ने अफसोस किया समझा कि उसकी मौत यों ही थी॰ अब
क्या हो सकता है॰ वहां से फिर अंजुमन आरा के पास गया॰
वहां भी यही कहा॰ मगर घबराया हुआ॰ बाहर चला गया
मलका अंजुमन आरा के डेरे में आई॰ वजीर जादे का जि
क्र आपस में होता रहा॰ लेकिन मलका तेवरी नाडती थी
उडती चिडिया पहचानती थी॰ घबरा के बोली॰ खुदा खै
र करे॰ आज बहुत सुगुन बुरे हुए थे॰ सुबू से दहनी आंख ॰
फडकती थी॰ हिरनी अकेली रस्ता काट मेरा मूं तकती थी
अपनी छाया से भडकती थी॰ डेरे में उतरते वक्त कि
सी ने छींका था॰ तड़के ही बुरा सुपना देखा था॰ तुम भी
तो खुदा के फजल से अकल और शहूर रखती हो॰ आ
ज की हरकतें शाहजादे की तो देखो के आदत के खिलाफ़
हैं॰ या तुम को यों ही वहम है॰ अंजुमन आरा ने कहा तुम
जानती हो॰ के वजीर जादे से कितनी मुहब्बत थी॰ रंज बु
रा होता है॰ बदहवासी में क्या होता है॰ वो रात मलका के पा
स रहने की थी॰ उसे अंदर का हाल क्या मालुम था॰ तबि
यत के लगाव से अंजुमन आरा के डेरे में गया॰ जब पहर ब
जा मलका वहां गई॰ देखा शाहजादा बैठा है॰ मगर चौकडी
भूला हुआ॰ उसने पूछा आज कहां आराम करोगे॰ वो घ
बराकर बोला॰ जहां तुम कहो॰ मल्का ने कहा यहीं सो रहो॰

शाहजादे ने कहा बहुत खूब· येभी दस्तूर के खिलाफ था· उस
का खूब कहना मलका ने बुरा माना· अंजुमन आरा का हाथ पक
ड़ अपने डेरे में आई· रोयी· पीटी· चिल्लाई; अंजुमन आरा बोली
मलका खुदाके वास्ते कुछ हाल तो बताओ· बोली गजब हुआ· उले
टे· किस्मत गई· शाहजादे से छुट गई· खुदा की कसम ये जान
आलम नहीं· वोभी शाहजादी थी· जो सीधी साधी थी· कहा
सच कहती हो· आज बहुत सी बातें इसने नयी कीहैं मल
का ने कहा खैर· अबजो होसो हो· तुम यही सोरहो· फिर लौंडि
योंको बुला कर हुक्म दिया के सोते हैं· तुम हथियार बांधे डेरे पर
पहरा दो· शाहजादा क्या अगर फिरिश्ता भी आवे तो आने न दो नि
काल दिया जावे ये· सुन कर वो बच्चा डरे· अकेले और खेमे में
जा पड़े· एक डर दो तरफ़ होता है· मलका ने कहा देखा· अगर
जान आलम होता तो कभी अकेला न सोता· बे शक चला
आता· खफ़गी का सबब पूछता उसेकिसका डर था· अंजुमन
आरा कहने लगी· सूरत तो वोही है· उस वक्त मलका ने दूसरे
के बदन में जान डाल देने का हाल बयान किया· फिर कहा ये
हाल वज़ीरजादे से कहा होगा ये· फ़िसाद उसका है· मुझे उस
की तेवरी में शक आया था· सामने लाने को मना किया था· स
मझाया था· उस नादान ने हमारा कहना न माना· उसका मजा
पाया· गरज़ ये रात भर रोने पीटने में कटी· दोनो इसी फ़िक्र
में थी के इज़्ज़त और आबरू कैसे बचे, सवेरा हुवा· सवारी डेहु
ड़ी पर मौजूद हुई· कूच हुआ· खबर दारों ने खबर दी के यहां से
पांच कोस पर जा कर गजनफर शाह का मुल्क है· हुक्म दिया के·
शहर के पास डेरा हो· जब शाहज़ादीयां उत्तर कर डेरे में गई· ये
खुद आया· इधर ये बिचारियां डर से मरी जाती थी· उधर वो बच्चा

भी चढ़ गये। हुए थे। ये दस भर बैठ के उठ गये। उस मुल्क के
बादशाह ने लश्कर का हाल सुन कर अपने वजीर को नीका
दिया। वो लेकर पेशवाई को भेजा के चुपके चुपके तमाम हा
ल दर्याफ्त करे। वजीर आया। ये हरामजादा भी वजीर का देख
था। सलरंगढ़ गजानता था। दस्तूर के मुवाफ़िक मुलाकात की
चलते हुए। वजीर को खिलत और बादशाह के वास्ते कुछ तोफे
भेजे। वजीर अपने बादशाह से ऐसी तारीफ़ की। कवो खुद लि
लने को चला आया। इसने भी इस मजे से मुलाकात की। केवो
बादशाह भी दंग होगया और तकरार कर पीछे पड इसे शहर
में लेगया। अपने किले में उतारा। शाहजादियों के वास्ते भी मह
ल खाली हुआ। कोई दिन तो जलसे खूब उड़े। जब फुरसत मि
ली तो दिल में सोचा के अगर चे जाल आलम बंदर है। मगर उ
सके जीने से अपनी सौत का डर है। ऐसी तदबीर निकालिये
उसे जान से मार डालिये। फिर बे खटके आराम कीजिये। मल
का से डरता था। उसके बाप के नाम से मनिकलता था। जैसे :
चोर की डाढी में तिनका। ये सोच के हुक्म दिया के हमें बंद
र दरकार है। जो लावेगा दस रुपये पावेगा। शहर वाले हजारों।
बंदर लाये। जो सामने आता देख के अपने सामने सिर तुड
वाता। जब बंदर कम हुए तो दाम बढे। यहां तक एक २ बंदर
सौ सौ रुपये मुकर्रर हुए। दो दो चार चार कोस तक बं
दर का नाम न रहा। वहीं के भागे आज तक मथुरा और
बिंद्रा बन में फिरते हैं। और उस जमाने में इसी सबब से
बृंदा बन को बंदरा बन कहते हैं। गरज ये के सब की रोटी
हुई। हर एक को बंदर की तलाश हुई। एक चिडि मार उसी
बस्ती में रहता था। मुफलिस कलांच दिन भर फिरते फिरत

दस पांच जानवर जो हाथ आ जावे तो दो चार पैसे को
बेच जोरू खसम रोटी खाते • अगर खाली फिर आया
तो फाके से पेट भरा • एक दिन उसकी जोरू कहने
लगी • तू बडा अहमक है दिन भर जानवरों के फिक्र
में दरबदर खाक बसर उल्लू सा दिवाना हर एक खंडर •
वीराना झांकता फिरता है • इस पर भी जो रोटी मिली तो
बदन पर पत्ता सा दिन नही • अगर एक भी बंदर हाथ आ
वतो बरसों की छुट्टी हो • जावे • लाल चतो बुरी हानी है • वो
भी राजी होगया • बोला • कहीं से आटा ला रोटी पका • और
जिस तरह से बने • थोडे चने भी ले आ • कल बंदर की
तलाश में जाऊंगा • नसीब आज माऊं गा • उसने
मांग तांग सामान कर दिया • दो घडी रात रहे • चीडी
मार जाल • फचकी • फेक • लासा • कंपा • छोड थोडे
धोके की टट्टी तोड • रोटी • चने • और रस्सी ले • चल
निकला • और छे सात कोस पर दरख्तों में ढूंढने लगा •
वहां का सुनिये • शाहजादा जो बंदर उसने दिल से बंदर प
कड ने • लोगों को देखाया • और सिर तुफ वाने का हाल सुनाथा
बे होश • घबराया हुवा हर तरफ कुपता फिरता था • उस दि
न कई दिन का भूका • प्यासा एक दरख्त के कोल ले में बेहोश
पडाथा • चीडीमार ने देखा • दबे पांव आ कर गर्दन पकडी •
उसने आंख खोली मौत सामने दिखलाई पडी • जा •
ना के अबके आई नहीं टलती • चीडी मार ने रस्सी क
मर से खोल मज बांधी बूंत • थोडी दूर चल बंदर
ने कहा अरे क्यों बे गुनः का खून अपनी गर्दन प
र लेता है • मुसीबत जदी को और दुख देना

है · वो बोला · क्या खूब · तू बातों से मुझे डराता है ·
अगर देव · भूत · आसेब जो बला है · बलाय से म
गर तुझको न छोड़ूंगा · आज किस्मत आन भाई·
और ये दौलत हात आई · तुझे बादशाह को दूंगा
और उससे सौ रुपये लूंगा · और चैन करूंगा · ये
सुनते ही बंदर सुन्न होगया · रही सही जान निक
ल गई · बहुतेरा हात पांव जोड़े कहा लालच का
काम बुरा होता है · कुछ काम न आया · चिड़ीमा
र ने झट पट जल्द कंधे उठाया · शाम को हंस
ता हुआ घर को आया · जोरू से कहा अच्छी घड़ी से
घर से निकला था · देखो दाने ये बंदर जाल में फंसा ये · ये कह
के खूब हंसा अब दो बातें और सुनिये · इधर इसका ये हा
ल उधर मलका अपने आप घबराई · रोई पीटी चिल्लाई·
अंजुमन आरा से कहा तुमने सुना ये · बंदर पकड़ा आखिर
कुचल डाता है · यकीन जानो जान आलम इसी भेस में है·
आज खुदा खैर करे · दिल बुरी तरह घबराता है · घबरा
ता है · मगर गम कलेजा खाता है · यानी शाहजादा·
पकड़ा गया · या कुछ और मुसीबत पड़ेगी · हंसी के ब
दले रोदोगे · आस पास हात मूं धोवेंगे · सच है ·
जिस से जी को उलझन हो · अगर कहीं उसके पांव में कांटा
चुभ जाय तो यहां दिल की लगन से कलेजा मूं को आवे·
जिसने कभी मुहब्बत की होगी वोही इसे खूब समझेगा · नहीं
तो समझे सो गधा · अनाड़ी की जाने बला · अंजुमन आ
रा ने कहा · इससे और ज्यादा क्या मुसीबत पड़ेगी · शह
र छुटा सल्तनत गई · मा बाप जुदा हुए · दिया और जिगर

के नखत्त पाले पडे हैं · जान के लाले पडे हैं · जिसके वास्ते
सूरी वत उठाई · सदमें सहे उसे खो देठे · अब जो हो सो
हो · खुदा की मर्जी · यहां तो ये बातें थीं · उधर चीडी मार
की जोरू दिवाले बंदर को देखने लगी · बंदर सोच उस
का दर्द लेतो रहम ला किया ये और न हे · शायद पिग
ल जाय · ये सोच के सलाम किया · वो डरी तो कलाम ·
किया अयनेक बख्त खोफ़ न कर · दो बातें मेरी सुनले गवां
रियां जीकी कडी भी होती हैं · बंदर का बोलना अचंभा
समझ कर कहा के कह : वो बोला · हम खुशी वत ज
दे ग़म के मारे केद में फसे हैं · मा बापने किस किस ॰
लाड से पाला · किस्मत ने क्या क्या खुशी वत दिखाने को
घर से निकाला · ऐसे बुरे दिन दिखाये के तेरे पास पक
डे आए · सुबह को जब हम गर्दन मारे जाय गे · त
ब सो रुपये तुम्हारे हात आवेगे · आखर को इस्की
सजा पावो गे पैसा रुपया हात का मैल है · कितने
दिन खावो गे · धब्बा जीते जी न छुटेगा · धोते धोते म
र जावो गे · अगर हम पर रहम करो · खुदा कोई और
सूरत करे · सो रुपये के बदले तुम्हारा घर अशर फियों
से भरे · हमारे कतल में गुन : बे लज्जत · या एक मुर्गी
की हसरत · निकलने के सिवा और क्या फ़ायदा है · अग
रचे ऐसा जीना मरने से बुरा है · मगर क्या जाने · खुदा
की मर्जी क्या है · हमारी तकदीर में क्या क्या लिखा है · जो
खुदा की नाम पर रहे गा · उसी का बेडा पार है खुदा उस
का मदद गार है · तूने यमन के बादशाह का किस्सा न
हीं सुना · (एक सलतनत दी और दो पायी · लालची ·

यों की कजा आई. जाने गवाई . औरत मोम की नाक होती है . जब फिर गई जिधर फेरा फिर गई . बंदर की बातों पर कुछ अचंभा कुछ अफ़सोस करके कहने लगी . हनुमान जी सुनावो महाराज वो कहानी कैसी है ॥ १०॥

॥ ११ चरित्र ॥

यमन के बादशाह की कहानी ॥

बंदर ने कहा यमन के मुल्क में एक बादशाह था . उस वास्ते दस्तूर था . के जो फ़कीर जो सवाल करता पूरा कर देता . इस सबब से उस का नाम खुदा दोस्त हो गया था . एक दिन कोई सख्स आया और सवाल किया के अगर तू खुदा दोस्त है तो ली ल्ला तीन दिन सलतनत करने दे . बादशाह ने कहा . बिस्मिल्ला . कारवारीयों को हुक्म दिया के जो इसका हुक्म न माने गा . सजा पावे गा . ये कह कर तख्त से उठा . फकीर जा बैठा हकूमत करने लगा . चौथे दिन बादशाह आया . कहा . अब क्या इरादा है . वो बोला पहिले तो मैंने फ़कत आपका दिल लिया था . अब बादशाहत का मजा पाया . खुदा के वास्ते ये सलतनत मुझको बख्स दीजिये बादशाहने कहा . खैर . ये बादशाही आप को मुबारिक हो . बादशाही . देकर कुछ न लिया . लड़कों का हात में हात बीबी को साथ लिया . दिल को समझाया इतनी मुद्दत सलतनत की . अब कोई दिन फ़कीरी का मजा . फाके की लज्जत . देखिये . गोलश्कर साथ नहो . मगर शाही हर तरे मौजूद है . पर इस शहर से और कहीं चलना

ज़रूर है· खुदाके कारखाने हैं· कोई और सूरत निक
ल आये· एक लडका सात बरस का दूसरा नौ बरस का
था· वो बादशाह फ़क़ीर बनके चल निकला· वाह वो सल
तनत· और कहीं घर· पर आज फटे कपडे और खाक·
बसर कोस २ दो २ कोस रोज़ चलना· मिला तो खालियां
नहीं तो भूखे ही रस्ता काटा· चलते चलते एक दिन मु
साफ़िर खाने में उतरा· इत्तफ़ाक़ से एक सौदागर कहीं से
आया हुवा· यहीं उतरा था· शाहज़ादी को देख बौलो
ट गया· देखिये· मिट्टी मेंभी सोना चमकता है· इस मु
सीबत मेंभी शाहज़ादी का रंग रूप· न छुपा· सौदागर
ने आकर बादशाह को सलाम किया· ये बिचारा सीधा
साधा उसके फ़रेब को क्या जाने· दस्तूर मुवाफ़िक़ सलाम
का जवाब दिया· वो हरामज़ादा कहने लगा के थोडी
यहां दूर से मेरा काफ़ला पडा है· और उसमें मेरी औरत
त पेट से है· इस वक़्त दर्द हो रहा है· बडी देरसे दायी
के वास्ते गदायी कर रहा हूं· अगर तू इस नेक बख़्त को
मेरे साथ करदे तो बडी मुश्किल आसान हो· नहीं तो
एक की मुफ़्त में जान जायगी· ये बिचारा घबरा गया· बीबी से
कहा बडा नसीब जो इस मुसीबत में किसीका काम निकले· दे
र न करो· उसने दम न मारा· सौदागर के साथ होली· बाहर नि
कल सौदागरने उस्से कहा के तुम घोडे पर सवार होलो· क़ा
फ़ला· दूर है· वो बिचारी सीदी साधी थी· सवार
होली· इस हरामज़ादे ने घोडे पर बिठायी बाग उठाई क़ा
फ़ले के पास आकर कूंच का हुक्म दिया· और आप एक
तर्फ़ घोडा फेंका उस वक़्त इस नेक बख़्त बादशाह·

फिर याद मचाई• रोथी पीटी चिल्लाई• मगर कौन सु
नता है• रात भर बादशाह रस्ता देखता रहा• लाचार को
बेटों का हाथ पकड कर• काफ़ले के तरफ़ आया• वहां कु
छ पता न पाया• धूर गर्द उडती देखी न पाव में दौडने की•
ताकत• न बीबी के छोडने की दिलमें ताब• सख़्त रहे ज
वाब न कोई आस न पास• लाचार लडकों को ले काफ़
ले के पीछे हुआ• रस्ता भूल गया• एक नदी पर पहुंचा•
डोंगे नाव का तो नाम नहीं• आदमी का काम नहीं• वाही
तबाही फिरा• कहीं पुल बेडा• ना मिला• कुछ डूब डुबाने
का इरादा• एक लडके को किनारे बिठाया दूसरे को कंधे प
र रखा• पानी में उतरा• जब आधी दूर पहुंचा तो किनारे
का लडका भेडिया उठा ले गया बादशाह आवाज़ सुन कर
घबराया• फिर कर देखने लगा तो कंधे का लडका पा
नी में गिर पडा• बादशाह घबराया तो आप गोता खाने
लगा मगर जिंदगी बाकी थी किनारे पर आ लगा• दिल
में समझा बडे बेटे को भेडिया ले गया• छोटा पानी में डूब
गया• बीबी इस तरह छूटी आप खुद वतन से छूटे• इस मु
सीबत में भी खुदा का शुक्र किया• एक शहर के पास
पौंहचा वहां बहुत लोग खडे थे• बडी भीड देखी उस मु
ल्क का ये दस्तूर था कि जब बादशाह मरता तो कारबारी
वहां आकर बाज़ उडाते थे• जिसके सिर पर बैठे उसे बाद
शाह बनाते• उस दिन भी वो बाज़ उडा चुके थे बादशाह पौं
हचते ही• वो बाज़ आकर सिर पे बैठा• दस्तूर के मुवाफ़िक
तख़्त लाये इसने बहुतेरा कहा मैं इस झगडे को• छोड
के आया हूं• मुझे माफ़ करो• मगर लोग इसके सिर पर

दाज का बैठना अचरज समझ न दाज रहे· तेवर नाड गये· यहि चाल गये जब र दस्ती तख्त पर बिठाया स लामी की तोपे छुटी· नजरे गुजरी सिक्के पर नाम जारी हुआ ·दुहाई फिर गई· के जो जुल्म करेगा· गरदन मा रा जायगा राज करने लगा· मगर दिल सुस्त· शर्म के मारे किसी से हाल न कहता· जब बच्चे याद आते· न ब सांप छातीसे लोट जाते ·जब उन लडकों का हाल सुनिये जब भेडिया· बडे बच्चे को लेके भागा तो उधर से एक शख्स तीर कमान लेकर आता थीं ·उसने बच्चे को भेडिये के मूं से छुडाया· दूसरा जो गोते खाता था· एक म छली वालेने अपने जालमें उल·फाया· दोनो बे औलाद थे· और उसी शहर के रहने वाले थे जहां· लडकों का बाप बादशाह हुआथा· अपने अपने घरमें लाये · सुबहा न तेरी कुदरत· कैसे डाला· और क्यों कर निकाला· बादशाह जो बहुत बे चैन हुआ· तो वजीर को हुक्म दिया के दो लडके हमारे वास्ते ला· तमाम शहर के लडके पकडे आये· हाकम का हुक्म बिन आई मोतहै वो दोनो भी आये· इश्वर के नजदीक बिछडे मिला दे ने क्या बडी बात है· वजीर को येही दो लडके पसंद आये शकल बदल गईथी ·सूरत और हो गईथी तबाद - शाहने पहिचाना ·न लडकों ने बाप जाना· और न समझ के के हम दोनो भाई हैं ·मिल गये मगर जुदे रहे· बादशा ह बडी इनायत करता था· दोनो के इख्तियार वाले हुवे· वो सौदागर यही आया ·पहिले बादशाह से रसायी थी सोचा· खूब· अब औरत राजी हो जावेगी· बादशाह के

मरने की सुनी तो उदास खबर हो गया लोगों ने कहा ये बादशाह उस्से भी अच्छा है • बज़ीर सबब से मुलाकात की • न इसे इसने पहिचाना • न उसने इसे जाना • अक्सर आया करता था • एक दिन बादशाहने कही • के आज रात तू घर न जा • कुछ पूछना है • वो वेशम गर सुस्त • बादशाहने पूछा • ये थोडा बे अदब हो चलाथा हाथ बांधके अर्ज की • के मेरे पास एक नाराज औरत है उस्की चोकसी आप कर्ता हूं बहुत डरता हूं • एसा न हो • के निकल के पर्दा फाइस करे • हिमायत तो नलाश करे • बादशाह ने कहा के उस्का जिम्मा आज हम लेते हैं • वोही लडके बडे मोदमिद होगये थे • उन्को हुकम हुवा के फोज ले करके जावे • और चोकसी करें • लडके सलाम करके सोदागर के मकान पर गये • बाग में खेमा लगाथा • ये कुरसी बिछा बाहर बैठ गये • लोग इधर उधर खडे हो गये • जब आधी रात हुई तो एकको नीद आने लगी • दूसरे ने कहा सोना मुनासिब नहीं • क्या जाने क्या होगा • ऊंट किस कर वट बैठे • वो बोला कोई कहानी कहो • जिस्से नीद उचट जाय • उसने कहा जो हम पर बीती है सो कहते हैं • अगर कान धर सुनो तो नीद क्या, कई दिन तक भूख प्यास पास न आवेगी • मै यमन के बादशाह का बेटा हूं • मेरे बापने खुदा के नाम पर सल्तनत देदी • मेरा एक भाई था उस्की शकल तुमसे मिलती है • बादशाहने अपनी बीबी को और हम दोनो को साथ लिया • शहर से निकले • रस्ते में एक सोदागर हमारी मां फरेब से लेगया • हम दोनो भाई दोनों साथ रहे • आगे में

एक नदी मिली • सो बादशाह मुझको किनारे पर बिठा
छोटे को कंधे पर रख पार चला • मुझको भेड़िया ने पक
ड़ा मैं जो चिल्लाया तो बादशाह जब राया • आई कं
धे से गिर गया बादशाह आप गोते खाने लगा फिर
नहीं मालूम क्या हुआ • एक तीरंदाज ने मुझे भड़िये से
छुड़ाया था • और मैं इस बादशाह तक आया • वो
रोके लिपट गया • और कहा दरया में हम गिरे • मछ
ली वालों के सबब से तिरे थे • फिर तो वो दोनों गले मिल
कर रोसे रोये के वो औरत चौंक पड़ी • परदे पास आकर
हाल पूछने लगी • उन्होंने सब बयान कर दिया • वो पर्दा उ
लट लड़कों से लिपट गई • कहा मैं सौदागर की कैद में
हूं • उसी दम खबर बादशाह को पोंची • सवारी भेजी बुल
वाया सब ने पेहचाना • सौदागर कैद हुआ • दूसरे दिन
वो मारा गया • ये खबर यमन में पहुंची वहां उस हरा
मजादे ने बड़ा जुल्म कर रक्खा था • वजीर ने उसे जहर
देके मारा • और बादशाह को लिखा के हुजूर के देख
ने के वास्ते तमाम शहर वाले तड़फ़ते हैं • बादशाह
को भी मुल्क देखने का शौक हुआ • सफर की तैयारी
होने लगी • दीनों सलतनत मिली • बंदर ने ये कहा
नी कह कर कहा अपने कवक्त मतलब इस कहानी •
से ये था • के बादशाह खुदा पर रहा तो राज पाया •
लालचीयों ने अपनी जाने गवांई • ये किस्से याद र
हेंगे • उन्हें बद कहेंगे • और इन बातों से नरम पड़ गई
बंदर को तसल्ली दी • कहा तू खातिर जमा रख • जब त
क के मैं जीता हूं • बादशाह को कभू न दूंगी • ॥

फाका कबूल करूंगी • फिर उसे खिला रोटी पानी पि
ला सो रही • तड़के ही चिडीमार उठा • और बंदर के ले
जाने का इरादा किया • औरत ने कहा आज और किसमत
आजमा • फिर जाल डाल • जो रोटी मयस्सर आवे • तो बचे
इस्की जान जाये • इस पर कहने लगे • जद नाखी आये
नहीं तो कल ले जाना • वो बोला • तू इसके दमसे आगयी
बंदर बोला • के औरत तो खुदा पर है • तू मर्द होके बे
सबरी करता है • पाजी जोरू के गुलाम होते है • फिर
वो • पटका • फंदे • जाल • फटकी • उठा • लासा • कंपा
ले • टट्टी कंधे से लगा • घर से निकला यातो दिन भर ख
राब खस्ता हो कर दो तीन जानवर लाता था • उस दिन
कोई पहर में पचास साठ जानवर आये फटकी भर ग
ई • खुश हो कर घर आ कई रुपये को जानवर बेचे • आ
टा • दाल • नोन • तेल • लकड़ी • खरीद • थोडी मिठाई ली
भट्टी पर जा • ठर्रा पिया • हाथ पाव फूल गये • फूलने • गीत
गाते घर का रस्ता लिया • मुफलिसी का गम भूल गये • जो
रू से आते ही कहा अरी हनूमान जी के कदम बडे भाग
वान है • भगवान ने दया की • आज रुपये दिल वाये • इतने
जानवर हाथ आये • वो घर वाली बहुत हंसी पहले मिठाई • बंदर
को खिलाई • फिर रोटी पका आप खा • कुछ उसे खिला पड
रही • बंदर बिचारा समझा • कोई दिन और जान बची अब
तो चीडिमार की बढ़ती होने लगी थोडे दिनो में घर बार
कपडा • लत्ता • गहना • पाता • दुरुस्त • होगया • इत्तफा
क से कोई बडा सौदागर सराय में उस भटियारी के •
घर में उतरा • जिस्की दीवार तले चीडीमार रहता था •

उस्के कानमें ऐसी आवाज आई • के जैसे कोई लडका प्यारी प्यारी बाते करता हो • भटियारी से पूछा यहां कौन रहता है • वो बोली • चीडी मार • सौदागरने कहा इस का लडका खूब बाते कर्ता है • वो बोली • लडका बाला तो कोयी भी नही • फक्त नारू खसम रहते हैं • सौदागरने कहा • इधर आ देख • ये किसकी आवाज आतीहै • भटियारीजो आई • लड के की आवाज पाई। वो बोला इसकी आवाज में दर्द भरा हुआ है • उसको मेरे • पास ले आ • बात तें करूंगा • और तेरा भी मूं मीठा करूंगा • भटियारी चिडीमार के घर गई • देखा • बंदर बातें करता है • उसे देख चुप हो रही • वो दोनों भटियारी के पाव पर गिरे • मिन्नत करने लगे • हा हा खायी • कहा • हमने इसे बच्चे की तरह पाला है • अपना दुख टालाहै • शहर में हंगामा हो रहाहै • बंदर मारने वाला बादशाह उतरा है • ऐसा नहो ये खबर उडते उडते उसे पोंहचे • बंदर छिन जाये • हम पर खराबी आये • वोबोली • मुझे क्या काम जो किसीसे कहूं • सथे। ऐ में आके सौदागर से कहाके वहां कोई नही है • उसने कहा दिवानी वो आवाज किसकी थी • जरा गोरसे सुन्ना के क्या मालूम जवाब चोनमा कूल देती है • बलैयां लूं मुझे क्या गरज जो कहूं बंदर बातें करता है • सौदागर खूब हंसा फिर कहा • तू सीडन है • अरी कहीं बंदर बोला है • फिर बोली जी गरीपर बर सदके गई • इसीसे तो मैं भी नही कहती • बंदर बोलता है • सौदागर को खफ़गान होने लगा • केये क्या बात है • मकान पासथा • आप चला गया • देखातो •

एक औरत दूसरा मर्द · मुछंदर · तीसरा बंदर है · यकीन हुआ के यही बंदर बोलता था · भटियारी सच्ची है · वो सौदागर को देख बंदर को छुपाने लगा · उसने कहा भेद खुल गया · भांडा फूटा · अब छुपाने से क्या हासिल है · बंदर हमे दो · जो चाहो इस के बदले लो · नहीं तो बादशाह से कह दूंगा · ये मारा जायगा · तुम्हारा क्या जायगा · वो दोनों रोने पीटने लगे · बंदर समझा अब जान नहीं बचती · इतनी ही जिंदगी थी · चिडी मार से कहा के किस्मत ने · इतनी मुसीबत पर भी सबर न दिया · यहां भी चैन न दिया · खैर · जो खुदा की मर्जी · मुझे हवाले करदे · आई · टलती नहीं · तदबीर के आगे · तदबीर चलती नहीं · चीडी मारने कहा देखो बंदर की जात क्या वे वफा होती है · हमारी मेहनत पर नजर न की · तोते की तरह · आंख फेरली · सौदागर के साथ जाने को राजी होगया · बड़ा आदमी जो देखा · तो हमारे पास रहने का दिल कुल पास न दिया · बंदर ने कहा · अगर न जाऊं · अपनी जान खोऊं · तुम पर खराबी लाऊं · आखर को रोपीट कर बंदर सौदागर को दे दिया · और उसें कसम लीके बादशाह को न देना · अच्छी तरहे रखना · सौदागरने बहुत सा रुपया दिया · बंदर को पार किया · सराय में लाया हाल पूछने लगा · बंदर ने कहा क्या पूछते हो · हजरत · ईश्क की बलाय तहे जमाने की शिकायत है · लोगों का बेडा पार करने वाला · मुहताज है · न वो सिर है · न ताज · है मुसीबत में फसा हूं · कोई पूछने वाला नहीं · अपने हात से सिर दला ली है · दुश्मनों की बन आई है · जिस्का मुझे फिक्र था ·

उस्को अब मेरा गमहे · मरने से हम इस लिये जान छुप
ते हैं के साथी जुदाई में मरे जाते हैं मुझको फरेब के जाल
में उलझाया · दोस्तों को मेरे दुश्मन के फंदे में फसाया · अ
जब सैर है · जिधर देखो उधर अंधेर है · आज मुद्द
त बाद आपसा कदर दान मिला · दिल ठिकाने होगा तो
सब हाल कहूंगा · ये बात सुन कर सोदा गरकी आंख
से आंसू निकल पडे · समझा ये बंदर नहीं कोई बडा आ
दमीजादू से मुसी बत में फ़सा है · खातर जमा रख · तेरी
जानके साथ मेरी जान है · यही अब जीने का सामान है ·
बंदर को तसली हुई · किस्से कहानि या सुनाई · खूब खू
ब बाते बनाई · सोदा गर रातभर नसोया · खुब दिल खो
ल कर रोया · अबबंदर की बडी ताजीम होने लगी · म
गर होनी कब टलती है · सोदा गर कायेदस्तूर था के ·
जो कोई नया आदमी उसके पास आता · उसे बंदर की
बाते सुनवाता · सब को फ़िक्र हुआ · हर जगे जिक्र हु
आ गली कूचे में ये चर्चा फैला के सोदा गर का बंदर बोल
ता है · उस हरामजादे के कान मे भी ये बात पहुंची · स
मझा · ये वोही है · इस को मारूं तो सही है · चोबदार
बंदर के लेने को सोदा गर के पास भेजा · ये बोहोत घब
राया · औरतो कुछ न बन आया · हात जोड के अर्जी की
के मेरे कोई · और औलाद नहीं · इसे बच्चा सा लेकर बेटे
की तरह पाला है · इस की जुदाई गुलाम की जान लेगी ·
आगे जो हजूर की मरजी · चोब दार यहांसे खालीफि
रा · वोह राम ज़ादा आग होगया · और वहांके बाद शाह
कोलिखा के जो आगनी सलांवी गोत सलन नतचाहेतो

होतो · सोदागर से जल्द बंदर लेके भेजदो · नहीं तो ईंट से
ईंट बजा दूंगा · नामनिशान मिटा दूंगा · वो बादशाह
बड़े फिक्र में था · दरबार वालोंने समझाय के एक जा
नवर के वास्ते क्यों हज़ूर सैंकडों का खून करवावेंगे · हु
क्म हुआ के जिस तरह से बने सौदागर से बंदर लेकर
उसकी डेहुडी पर पहुचादो · जब बादशाही फ़ौज सौदा
गर के घर पर चडे आई · बंदर हाथ जोड़ के सौदागर से
कहा · मेरी तो मौत आई है · तकरार करने से कुछ फाय
दा नहीं है · वक्त आ पहुंचा · टाली टलती नहीं · मगर
यह डर है · के मेरी दोस्ती में · तुम्हारे ऊपर मुसीबत
आवे · तुम्हारे दुश्मनो की जान नजावे। हमेशा कोमे
रे ऊपर धब्बा रहे · खलकत भला बुला कहे · सौदागर
ने कहा ये क्या बात है · जो कहा वो सिर के साथ है ·
बादशाही आदमियोंने तगादा किया दिन थोडा रह
गया था · सौदागर ने रुपया देकर टाला · रातभरकी छु
ट्टी ली दूसरे दिन चलने की ठेरी तमाम शहर में मशहूर
हुआ सौदागर के पास एक बंदर था · कल वोभी मारा जा
यगा · ये खबर मल्का मेहर निगार को पहुंची · वो तो
जान आलम पर मरी हुई थी · समझी ये · बंदर न
हीं शाहजादा है · अफ़सोस कोम सी तजबीज की
जिये · जो उस बिचारे की जान बचे · दिलको मसोस
कर जोर जादे का · कोस पूछा · सवेरे किधर से वो · सो
दागर जायगा · ये तमाशा हमारे देखने मे क्यों कर
आवेगा · लोगोंने अर्ज़की · के हज़ूर के झरोके के
नीचे से हर तर्फ का रस्ता है · ये सुनके तमाम ·

रात तड़पा · की नींद न आई · दो घड़ी रात से बराल
दे में आ बैठी · और एक तोता पिंजरे में पास रख लिया
गजर से पहिले बाज़ार में हुल्लड़ · तमाशा देखनेवा
लों का मेला सा होगया · सवेरे ही सौदागर निमाज़ ॥
पढ़ · हाथी पर सवार हुवा · कमर से पेश क़ब्ज़ लगा
गोद में दंदर दिल मरने पर कमर बांधे मज़बूत चला
दंदर से कहा घबरा मत · जब बात चीत और रुपये
से काम न निकले गा · जोबन पड़ेगा वो करूंगा · आप
ने जीते जी तुझे मरने न दूं गा · इधर सौदागर का घब
रा कर कहना था · के खल्क़त ने चारों तरफ़ से घेर
लिया · दंदर लोगों कि तरफ़ देख कर कहने लगा ·
साहबो दुनियां तमाशे की जगह है · एक आता
है · एक जाता है · गरम बाज़ार है · हर एक शख़्स
ख़रीदार है · अपने काम में कज़ा है · जो चीज़ है बेफ़
ना है · इस्से सब लाचार हैं · यहां सब बे इख़्तियार
है · कोई किसी की अदावत में है · कोई किसी पर मर
ता है · हर एक किसी बखेड़े में फंसा है · हर एक को
सूझता नहीं · क्या लेन देन हो रहा है · सूद की उम्मेद
में सर नुक़सान है · सीढ़ी होने का सौदा है · उस्की क़ु
दरत देखो · मुझसे बे ज़बान की क्या ज़बान दी है · सुन्ने
वालों में · तुम्हारा चेहरा लिखा है · बातें सुन्ने को साथ
चले आते हैं ॥ अलग होना नहीं चाहते हो रहम खाते
हो · आंसू बहाते हो · येतो दया का रूप है · अब क्रोध
का रूप देखो · इसी बात चीत की धूम से · कम बख़्त ज़ालि
म से मेरा मुक़ाबिला होना है · वो बेशक मुझे क़तल करेगा

रेगा • मेरे खून से अपना हात भरे गा • दोनों जहान में उस का मूं काला होगा • जब उस्की दिल की कोठरी में उजा ला होगा • मेरी जवान गोया मेरी मौत थी • दुनिया आरा म की जगह नहीं • दो दिन की जिंद गी के वास्ते • क्या• क्या• सामान करते हैं • हवा के घोडो पर चढते हैं • ज मीन पर पांव नहीं धरते है • मूं उठा आंख दंद कर च लते हैं • गरीबों के सिर कुचल देहैं • आखर को अर मान लेकर मरते हैं • जान उसके पीछे खोते है • जो दो इज्जत से हात आये • बडी मुश्किल से जमा हो • कं जूस पने से पास रहे • और फिर अफ़ सोस • छुट जाय • सिर पर हात धर कर रोते है • छाती पीट ते हैं • आखिर को अमीर और गरीब दो गज कफन • और एक तके • से जयादे नहीं मिलता • किसीने किमखाब या ताफ ता पाया • किसीको गजी • गाढा • हात • आया • किसी ने संग मर मर की छत्री बनाई • किसीने दो लक डी ही पायी • जमीन गज भर दोनों को मिलती है • सो येभी अच्छे नसीब • ने दा कमाई वाले गोर गढा कफन पाते हैं • नहीं तो सैकडो हात रगड मर जाते है • लोग दर गोर कह कर चले आते हैं • कुत्ते • बिल्ली चील • कव्वे • बोटी यां नोच नोच खाते है • कोई पास नहीं फट कता • अफ़सोस के सिवाय कोई • सिराने प र नहीं • रोता है • असबाब लुट • कोई फातिहा नहीं होता है • कबरों पर कुत्ते • लोट ते हुए देखते हैं • छत्रियों पर उल्लू • बैठे रहा करते है • चील • कव्वे • उल्लू • घोसले बना ते हैं • काल के पास हमेशा • कांगा • देखा • खूब सूरतों

का रंग उडा जाता है · कोई रोता है · कोई हंसता है · दुनिया में येही मज़ा है · मुद्दतों सवेरे मुर्ग़े की आवा ज़ रंज उठाये · कभी · दम न मारा · शिकवा ज़बान पर न लाये · बरसों मुल्ला के अल्लाह अकबर के सदमें सहे · शुक्र किया · चुप रहे · नहीं तो गरज की आवाज़ ने दम बंद किया · मगर कभी जी पर न लीया · सोच के ॰ खूबसूरतो का मिलना भी एक सुपना था · उनका प्यार भी देखा तो गज़ब था · जीका · लुटना था · तमाम दुनिया में फिरे · कभी मिजाज़ पढी · कभी घंटा हि- लाया · मुल्ला को सलाम किया · पंडित जीके पांव पडे · ग़ौरसे जो देखा तो दोनो कूट थे · हर एक अपने तई· बडा समझता था · और दूसरे को बुरा जानता था· दुनिया के कार खाने है · सफ़र करना है · सौतह्र के ख टके · हज़ार तरह का डर · फिरभी · वहां के हालसे · बेखबर है · यहां तजीने की खुशी · न मरने का गम क रे · किसीको दुख नदे · मुसी बत ज़दे के आसूं पोछे · सि र पर हात धरे · तेरा मेरा सब भूल जाय · खुदा पर भरो सा रखे · सब में मिला रहे · और सबमें अलग · मुसी ब त से नडरे · दौलत का क्या एत बार मुफ़लिसी की क्या श रम · एक दिन चलना ही है · किसीके मरने पर क्या रो ना · वो बेवकूफ़ है · जो रोते है · हां रोना उन पर है · जो जीने पर मरते हैं · रुपये का जमा होना · जवाहर की तलाश में दिन का जागना · चांदी सोने की उम्मेद मे रात को सोना खूबसूरतों से लिपटना · जिनको ये बात है · उनसे दुनि या काहेको छुटती है · हमे यहाका दस्तूर है · अशराफ़

की छिद्री खार · वे बूकूफ उल्लू के पट्टे सरदार · मगर ऐ
येभी नहीं है · कभी दूसरा पलटा भी हो जाता है · सच
येभी है · न अमीर होते दिन जाते हैं · न फकीर होते देर
लगती है · अजब सैर है · बडा अंधेर है · जिन के यहां
सौ सौ और दो दो सौ घोडे बंधते थे · हाति झूमते थे · वो
जूता उतार गठ बाते फिरते हैं । और जब वक्त आगया
तो फौज भी धरी रही · और रुपया भी पडा रहा · उस
से कोई बचा नहीं सकता · न दोस्त आडे आये · न
अपना मौत के पंजेसें छुडाये · अगर ये होता तो बडे
बडे लोग काहेको मरते · यहां कुछ नेकी करले · भूखेको
खिला दुखी को तसल्ली दे · यह तो कुछ काम आवेगा
और बाकी तो सब पाखंड है · अकारथ जायगा ·
किसी से मुहब्बत न करे · दिल न लगाये नहीं तो मुफ्तमें
जान खोनी पडती है · वो लोग अब कहां हैं · जो बात
के पूरे रहें · दुनियामें मतलब की मुहब्बत हैं · दि
ल्ली उल्फत को दिया लेके ढूढो न कभी थी · न है · ऐ
और न होगी · और थीभी तो खलील खां फाकता
उड गये और जो होगी तो देखी जायगी · मगर अफ़
सोस समझते हैं · और फिर नहीं कर्ते जवानी का नशा बु
ढापे में उतरता हैं · तब सिर पर हात धर कर रोता है · फि
र क्या होता है · फिर पाछे पछिताये क्या · जब चिडी
यां चुग गई खेत · बंदर की ये बातें सुनकर लोग रोने ल
गे · अरथी की तरः हाथी के साथ होलिये · हरतरफ़ से हाय ३
की आवाज आती थी · गरज के इसी तरह हाथी ·
मल्का के झरोकों के नीचे पोंहचा · वो रात भर की ·

खिड़ की ही में बैठी थी· सौदा गरसे बोली· एक दम भर ठहर जा· मैं भी इस की एक दो बातें सुन लूं· सौदागर ने· हाती रोका· मल्का ने कहा ऐ मुसी बत जदे· बेजबान घरसे दूर· अब हम किस लायक है· मगर तेरी मुसी बतसु नने कीउसमग है· बंदर ने आवाज पै छानी पहिले तो खूब रोया फिरजी को ठहरा के कहा मैनें अपने पांव में अपने हातसे कुल्हाडी मारी है· यार ने दगा बाज़ी कीहै· जिसका रोना हमें नागवार था· वोही हमारे लहू का प्यासा· कतलका खा दार है· सच है· नेकी का बदला बदी है· प्यारोंसे मिलने नपाये· आर मान लेके इस दुनि यांसे चले· दोसों का कहा नमाना वो आगे आया· अब पछ ताना पड़ा· वे मौत मरे· आप गये तो गये· दूसरों को अंजाम में फ साया· जिन के दिलको हातों में रख ते थे· वो जीने· ही मरे के बरा बर हैं· दुनिया दम मारने की जगा नहीं· किसीसे भेद कहना अच्छा नहीं· बंदर ने कहने तो कह दिया· मगर दिलमें डरने लगा· के ऐसा न हो उसहरा मजादे को खबर हो जावेतो और बला सिर पर आवे· सों च के यह बात बनाई· के ऐ मलका कोई कमाल से दु नियांमें निहाल होता है· ये गुना: जबान के सबबसे नाहक हराम जादे की बदोलत हलाल होता है· अब अब कुछ तद बीर बन नहीं आती· मौत का क्या डर है· हमारी हमीको खबर है· कोई घड़ी में मुफ़ जान जानी है· जो जानता है वो देखता है· जिसे खब र नहीं· उसे कहदो· तुम्हारे वास्ते घर बार से तबाह हुऐ· और तुम्हारे ही सबब से अब थोडी देरमें मौतका

मजा चखते हैं · तुम्हारी ही मुहब्बत की हर पर तो ह
म तहैं · सैर देखने · वाले खडे हैं · गुल मच रहा है · भ
ला तुम भी तो कोठे परसे जरा तमाशा देख लो के ·प्या
रे कैसे मारे जाते हैं · कान नहीं हिलाते हैं · अबतो म
ल्का को खूब यकीन हो गया · के जान आलम यही है ·
जबाब दिया जान तेथे उनसे क्या हो सका · अन जानको त
कलीफ़ देने से क्या फ़ायदा · ये कहके तोते की गर्दन म
रोड़ · पिंजरा बाहर निकाला · बंदर की निगहें पिंजरे ·
पर पडी · समझा के मल्का पहिचान गई · यही फ़ुर
सत का वक्त है · गड बड तो होई रही थी · किसीने देखा न
भाला · बंदर सौदा गर की गोद में लेट कर · तोते के बदन
में गया · तोता फडका · मलका का ज़ी खुशी से धडका
पिंजरा · अंदर खेंच लिया · सौदा गरने · देखा · तो

बंदर मर गया • चाहा के आप भी मर जाय बदनामी
का किस्सा मिटाये • लोगो ने समझाया • के येतो सुक्र
करने की जगे है • रोने का मोका क्याहै • इज्जत रही •
जानबची • बेटा मर जाता है तो मां बाप सबर के सिवाक्या
करते है • अगर बादशाह जबरदस्ती बंदर को छीन के मा
र डालता तो जान खोने की जगे थी • अब सबर की जि
ये खुदा की मर्जी यही है • लोगों ने जोये देखा तो स
ब मिलके रोने लगे • सब कहते थे के बंदर अकलमंद
था सामने जाने कीभी नोबत न आयी • सोदागर की
गोदमें जान गवायी • ये खबर उस हरामजादे को
भी पहुंची • इस पर भी चैन न आया • लाश मंगवा जला दि
ल ठंडा किया • मिट्टी तक न छोडी • तब तसल्ली हुई • व
हां मलका पिंजरा ले बैठी • लोगों को पास से सर्का दिया •
मियां मिठ्ठने हूं हूं अव्वल से आखीर तक हाल सुनाया •
मलका ने कहा खातिर जमा रखिये • खुदा चाहे तो जलदी
कोई सूरत हुई जाती है • यहां ये बात होरही थी • के उस
हरामजादे की आने की खबर हुई ॥ मलका बाहर निक
ल आई • ताजीम की ; हमेशा ये मामूल था • के जबवो
आता मलका बात न करती • जलील होके लोट जाता •
इस दिन बात भी हुई • वो मरदूद समझा के बंदर का मर
ना मल्काने आंख से देखा • इस्से दब गई • अब जल्दी
न करो आज कलमें मामला हुआ जाता है • लेकिन पहि
ले • इसीसे फ़ैसला किया चाहिये • मल्का के बापसे डरता
थी • उसके नाम से दम निकल जाता • जब रुखसत हो
ने लगा • मल्का ने कहा • एक बकरी का बच्चा खूबसूर

न सो हमें भेज दो · पालेंगे · रंज टाले गे · यानो चुप रह
ती थी · या आज बच्चा मांगा · ये बचा बहुत खुश हुआ ·
उसी वक्त बकरी का बच्चा बहुत खूब सूरत भिजवा दिया
· दूसरे दिन जो आया तो मल्का और भी प्यार सेबोली
उसके सामने बच्चे से खेला की दो तीन दिन यही सोच
त रही · एक दिन मल्का ने दबा कर बच्चे को मार अध
मुआ कर दिया · और चोब दार को दोड़ाया · के शा
ह जादे को जल्दी लेआ · कहना अगर देर लगावो
गे तो · जीता नपावो गे · ये सुन के वो उस तर्फ को रवा
ना हुआ · मल्का ने पिंजरा उठा · पलंग के पास रख लि
या · जब वो नाब कार सामने आया · मल्का ने बच्चा गो
दमें उठा · इस जोर से दबाया के वो मर गया · उस्का
मरना · और मल्का का · चिल्लाना · रोना · पीटना ·
कपड़े फाड़ना · बाहर निकल जाना · वो बोला · म
ल्का ऐसे हजार बच्चे मौजूद हैं · तुम क्यों रोती हो · म
ल्का ने कहा मैं कुछ नहीं जान ती · तुम इसे अभी जि
लादो · जो मेरी खुशी चाहते हो · वो बोला · मुर्दा
भी कहीं जीया है · कभी · ऐसा किसीने किया है · म
ल्का ने रोकर कहा · वाह, तुमने मेरी मैना जिला
ईथी · जब मैं बिल बिलाई थी · ये दिलमें समझा ·
शायद शाह जादे ने ऐसा किया होगा · खुदा के कार
खाने हैं · मसल मशहूर है · (जैसा किया वैसा
पाया · रावन के वास्ते राम मौजूद हैं · वो घबराके
पूछने लगा · हमने मैंना क्यों कर जिलाई थी · मल्का
बोली तुम पलंग पर लेट गये थे · वो जी उठी थी ·

ये पनाभी ठीक मिला • मौनका वक्त नजदीक आया • क
हा बच्चा • गोदसे रखदो • मल्का ने फेक दिया • वो पलंग
पर लेटा • अपनी जान बच्चे मे डालदी • वोउठ कर कूद
ने लगा • मल्का ने गोद में लिया • प्यार किया • वो सोचा
की • दो घडी मल्का की तबीयत बहल जायगी • फि
र अपनी जान • को अपने बदन में ले आऊंगा • मतल
ब तो निकल आवे • ये न समझा के क्या घात है फरेब
की बात है • खुदा को कुछ और मंजूर है • अब इस बद
न तक जाना बहुत दूर है • जान आलम ये तमाशा पिं
जरे में से देख रहा था • झट अपने खाली बदन
में जान डाल के खडा होगया • बकरी का बच्चा देखने
ही थर्रा गया • अंधेरा छागया • समझा किस्मत अब
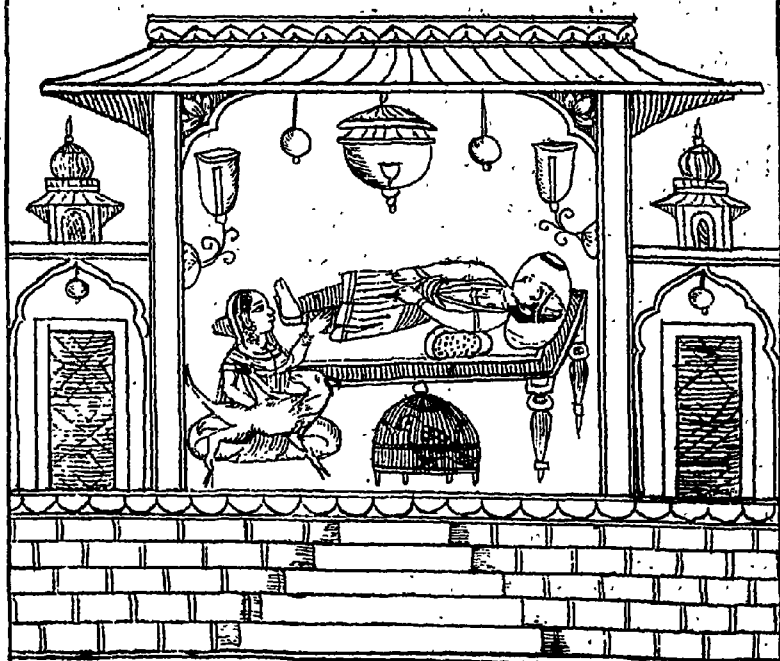
बुरी है कोई दम को गला है, और छुरी है • मल्का ने जल्दी से तीन • अच्छर पढ के फूंके के वो दूसरे के बदन में जान डालना भूल गया • फ़िर अंजुमन आरा को बुलाया कहा • लो • साहब मुबारक हो • खुदा ने तुम्हारी हुर्मत औ र आब को बचाया • बिछडे से मिलाया • ये आपका अहमः क शाहज़ादा है • वो बकरी का बच्चा बेई मान वज़ीर ज़ादा है • ये कह कर तीनों आशक और माशूक गले मिल मिल कर रोये • जो जो अपनी अपनी थीं आई • मुबारक बादीदी ज़ान आलम ने सोदा गर को बुला के सब हाल कहा • और खिलत इनाम दिया • फिर चिडी मार को और उस्की जोरू को बुलाया • और उस्को वो होतसा रुपया और जवाहर और अशर फी दी • और वहां के चिडी मारो का चोधरी ब नाया • आखिर को सफर की तैयारी हुई • गज़न फ़र शाह ने बडी मुश्किलसें राजी किया • दो चार दिन और दा नमाला • वनोंमें लगे • खूब धूम धडक्के के उडे • वो अपने इलाके तक सा थ आया • लश्कर ने मजेसे पका पकाया खाया • फ़िर रुखसद हुो • और कूच मुकाम करते आराम से चले • ॥

॥ चरित्र १२

सच है दुनियां कुछ नहीं • जिसे आज हंसते देखा उसे कल रोते पाया • जान आलम उसी जंगल में पहुंचा जहां वो हो ज में कुदा था • मल्का और अंजमन आरा को वो सैर दि खाई • होज के बराबर खेमा लगाया • दिन भर का थका हुआ था • शाम की निमाज पढ पलंग पर जा लेटा • यों ही • आंख झपकी थी के • अंजु मन आरा की एक लोडी ब द हवास दोडी आयी • कहा • हजूर की उमर ज़ादा •

शाहज़ादी के दुश्मनो की तबियत बिगडी है॰ कलेजे में दर्द हो रहा है॰ वो ताबीज दे दीजिये॰ धोकर पिला वे॰ प्यारी की तकलीफ़ सुनते ही॰ दिलवे चैन हुवा॰ छुकु छूतो नींद और कुछ बेचैनी॰ देखा न भाला तख़्ती औरनक्श हवाले कर दिया॰ नकश के देते ही॰ नकशा बिगड गया एक आवाज आई॰ कि ऐ जान आलम बहुत दिनों उडा फिरा किया॰ मुद्दत बाद आज फ़सा॰ ले हुशियार होजा ये आवाज थीके लशकर डर गया॰ वहा दुर थर्रा गये॰ महल में औरतों को गश आगये॰ जान आलम ने घब रा कर उठने का इरादा किया॰ उस जगे से हिला न गया देखा के आधा बदन पत्थर का होगया॰ जो बैठा था॰ बै ठा था॰ बैठाई रह गया॰ जो खडा था॰ खडा ही रह गया हर तर्फ गुल शोर कुछ दुख कुछ हसी॰ तमाम फ़ौज आ फ़त में फसी॰ खूब खलबली मची॰ नामर्दोंकी बाई पची तमाम लश्कर में क्या इनसान और क्या हयवान सबका नीचे का धड पत्थर का होगया॰ सब तर्फ मातम था॰ म हल में औरतोंकी जारी॰ अंजुमन आरा की बेकरारी मलका की वातों से ज़मीन और आसमान कांपता था सूरज शरम से बादल में मूझांकता था॰ इसी तरह से तडका होगया॰ एक बहुत बडी काली घटा उठी॰ और उस्में से एक बडा॰ अजदहा मूसे आगके अंगारे फेंकता निकला॰ और उस पर एक औरत सवार शा ह जादे के डेरे में उतरी॰ जान आलम ने जाना के जादूग रनी है॰ दिलमें कहा सैर अपना दूर मौत करीब आई। किस्मत ने खूब सैर दिखाई॰ वो बोली॰ जान आलम कहां।

अब क्या इरादा है॰ जान आलम ने कहा॰ वोहीजो था॰उससे कहा अब वो तावीज और तक्ती कहां है॰जिस के भरोसे पर भूलेथे॰ अगर जिंदगी चाहते होतो॰मल्का और अंजुमन आरा को छोडो॰ नहीं तो॰ तुम्हारी बोटियां चील और कव्वों को डलवाऊंगी॰जान आलमने कहा हम आदत से लाचार हैं॰ बेवफाई से वाकिफनहीं जो कहासो कहा॰ जो किया सो किया॰ अगर मौत आई है तो कुछ इलाज नहीं॰ जीते जीतो बात नजाने देगें॰ये सुन कर जलील हो गई॰ गुस्से भभक गई॰ रंगत पलट गई॰ कुछ बुड बुडा कर जान आलम पर फूंका॰ पहिले तो आधा हीथा अब गले तक पत्थर होगया वो अजदहा पर चढ कर॰ पुकारी के आज दिन और रातकी और मोहलत देती हूं॰ और कलभी इनकार कियातो॰ तमाम लश्कर का खून तेरी गर्दन॰ पर होगा॰ ये कह कर वो हवा हो गई॰ जब तक शाह ज़ादा आधा पत्थर॰ था॰ शाह ज़ादियां खेमें से पुकार तीथी॰ वो जवाब देताथा॰ इसकी आवाज उनके जीने का सहारा॰था॰ अबतो गले तक पत्थर का होगया॰ दोनों चिल्लायीं॰ कुछ जवाब न आया॰ फिरतो मल्का ने सिर पीट लिया॰ कहने लगी॰जितनी रोते है॰ उतना कभी हंसे न थे॰चलोजंगल हीमें जान देगे॰ किसी को मालूम भी नहोगा॰ मौत बद नामी से बचेगी॰ अंजुमन आरा विचारी मुसीबत की मारी सबका मूं तक्ती थी॰ और रोती थी॰ चिल्लाया नहीं जाता था॰ घुट घुट के जान खोतीथी खवा से सिर खोल के कहती थी॰

खवासे सिर खोल कहती थीं· हाय हाय इस जंगलमें
हम लुट गईं· वारिस से छूट गईं· लोगों हम किधर
जायें क्यों कर इस बलासे निकलेंगे· कोई कहती थींरोना
न के कान बहरे· भगवान न करे· अगर जान आलम
के दुश्मनों का रूगटा भी मैला हुआ तो· शाहज़ादिया
खाक में मिल जाय गी· जान गवावेंगी· हम इन के मा
और बाप को क्या मूं दिखाये गे· इसी जंगल में सिर ट
करा कर मर जायेगे· ये जादूगरनी कुरबान की थी· क
फन भी न देगी· योंही फेंक देगी· कोई सिर नंगी·
बाल बिखेर मदीने के तरफ़ मूं कर· चिल्लाती थी· को
ई कहती थीं· के अगर हमारा लश्कर इस बलासे ब
च जाये तो· मुश्किलकुशा का घडा दुगना दूंगी· कोई बो-
ली· सिमाही के रोजे रखूंगी· कुंडे भरूंगी· सहनक खि
लाऊंगी· किसी ने कहा· अगर जीती छूटी तो दर्गा हज़ा
ऊंगी· सबील पिलाऊंगी· ये हाल था के ईश्वर किसी
को न दिखाये· रोने पीटने के सिवा कुछ आवाज न आ
ती थी· इत्तिफाक से मल्का के बाप का एक चेला· अ
पने गुरू से मिलने को हवा पे उडा जाता था· रोने की आ
वाज· जो उस्के कानमें पहुंची तो· नीचे उतरा· देखा के
आदमी जानवर सब पत्थर बने हुए हैं· पूछा ये· कौन
हैं· और इन पर क्या आफ़त है· मलका के नौक
रोने सब हाल बयान किया· उसने जब ये सुना के गुरू
की बेटी पर ये मुसीबत पडी तो पाव तलेकी मीट्टी निक
ल गई· डेरे के पास आया· रोया· पीटा· चिल्लाया·
मल्काने आवाज पहिचानी· कहा भाई· इस वक्त पर्दा कहां

ओर शरम किसकी अंदर आवे · वो आया तो · आंख
से देखा · मलका कोभी पत्थर पाया · फिर मल्का ने ·
कहा · जादूगरनी ने हमारा काफला · तबाह कर दि-
या · उसने कहा के मैं उस जादूगरनी मुकाबला नहीं क
सक्ता · वक्त थोडा है · कल बिलकुल फेसला हो·
जायगा · बगैर आपके बाप के आये कोई पनाह न पा
वेगा · यह कह कर उडा · हवा को सेकडों कोस पीछे
छोड़ा · वो दौड तीथी · के हवाके घोडें की रपट उस्के एक
एक कदम पर सदके हो जाय · ठोकरों से आंधीका ·
पतला हाल कर दिया · थोडीसी देरमें मल्का के बापके पा
स जा पौंचा · कपडे फाड डाले · ओर दुहाई देने लगा·
बुढ्ढे ने कहा खैर तो है · कुछ हाल तो कह · उसने कहा
शाम तक पहुंचना जरूर है · नहीं तो आर मानही रहे
गा · बेवाली वारसों को कोई कफन भी न देगा · उस बुढ्ढे
ने आह भरी · ओर ठंडी सांस लेकर कहा · अफसोस शा
हजादे को इतना समझाया · पर उस्की समझ में न आया ·

कबित्त

एक आफ़त से तो मर मर के हुवा था जीना
पड गई ओर ये कैसी मेरे अल्लाहे नई ·

वो बुढ्ढा उसी वक्त उड़ा ओर शाम की निमाज लश्कर में ·
आकर पढी · जान आलम के डेरे में आया · ओर बहु
त घबराया · फिर अन्जुमन आरा के पास जाकर तस
ल्ली दी ओर वहां से उठ मल्का के पास आया · ओर कहा
के तेरे नसीब ने हमारी · वज़े में फरक डाला · बरसों बाद
वाग से निकाला · मल्का ने रोकर कहा · हजूर ये धम

काने का वक्त नहीं है · कुछ तज बीज कीजिये · फिर जो चाह
ना सो · कहना · वो डेरे के बाहर आया · और कुछ पढ
ने लगा · फिर असमान की तर्फ देख के रोया · और कहा
के बुड्ढे की थारस तेरे हाथ है · कबर में पांव लटकाये बे
ठा हूं · तेरे सिवा कोई नहीं · तेरे सबब से सब मुशकिल
आसान · और सब आसान मुशकिल · ऐसा न हो के इसे
बुढापे में बट्टा लगे · मेरी डाढी की तफ खियाल करना · कलं
क का टीका न लगाना · इतने में तडका हुआ वो सबमं
त्र पढ चुका था · के वो औरत अजदहे पर सवार होकर
आई · पहले मल्का के बाप के पास गई · और कहा के ·
ओ बुड्ढे सत्तरे बहत्तरे · तेरी मौत इस जंगल में तुझे खें
च लाई है · तुझे क्या मारूं · तू तो बे मारे मरा हुआ है ·
नाहक की बदनामी क्यों लूं · चल जिधर से आया है · उ
धर ही को चला जा · नहीं तो दम भर में मिट्टी में मिला दूं
गी · बुड्ढे ने कहा ओ हराम जादी छिनाल तू अपनी ·
चुल मिटाने के वास्ते हजारों को नाहक मारती है · मैं
क्या अपने प्यारों को मरते देखूं · मेरा क्या है · आज न मरा
कल मरा · मसल मशहूर है · (आज मरा कल दूसरा
दिन) मगर जीते जी लोगों को क्या मूं दिखलाऊं गा ·
बराबर वालों से आंख छिपानी पडेगी · तू सत खसमी मुझ
से क्या लडेगी · ये सुनते ही अजदूगरनी को आग लग ग
ई · आसमान चढा छू छू करने लगी · बुड्ढा भी
बराबर से तोड किये जाता था · खूब छूट हुई · पिछला
पहरा · दिन बाकी रह गया · जब कुछ न हो सका तो वो ·
शेर बन गई · उधर बुड्ढा भी दो लोट मार कर शेर बन गया ·

उसने वह तेरी गीदड़ भब की • बनाई • मगर ये कब हट
तेथे वो चिघाडे के जंगल गुंज गया • वो चील बनके
आसमान को उडी • बुड्ढा भी बाज हो कर उसके पीछे
झपटा • और दिल में कहा • के ये हराम जादी चढ़ी की
आडमें शिकार खेले जाय गी • कुछ भी हो • अवके
तो इसे जा दवावो • ये सोच कर उसे जा दबोचा • एसा
नोचा • के जान सन सनाई • वहुतेरी तडफी फड़की म
गर यहां तो मोत पंजे फाड के पीछे पडीथी • दम भरमें
काम तमाम कर दिया • उस के मरते ही जंगल में मंगल •
हुआ • लीजियो • दोडियो • मारियो • का • गुल मचा • आ
समान चकरा गया • जमीन थर्रा गयी • जंगल में अंधेरा
हो गया • जादू का कार खाना बिगड गया • शाम के वक्त
सूरज निकला • आंधी बैठ गयी • जान आलम घबरा
उठो कर और कदम दवाये • बड़े मियां के पास आया •
सबने देखा के किलेमें एक • औरत पडीथी • और ॰
अस्सी नव्वे वरस की उमर झुकी कमर • आंखें फटी
बाल बिखरे रगे अलग अलग • हड्डियां • पसलियां •
सडी गली • दांत के नाम से मूंमे तिनका भी नहीं • भा
डसा मूं • हात पुराने वडके डाले • ताड के पेड कीसी टां
गेंथी • सीना तंग • छातीयां पेट पर लटकती • और पे
ट मास के लोथडो मे लिपटा हुवा • मगर मुक्की पत्थर का •
दिल • खाल अलग • हड्डी अलग • काली बला रातको क्या
दिन को देखे तो डर जाय • सिर सफेद कलंक का टीका • ल
गाये लडके डरे के हमको काट न खाय • सिंदूर का टिका •
दूसरे दिखता मांगमें रोली भरी • वालों में नारियल का तेल •

फटे दीदों में नदी दो की तरह • काजल रेल पेल • गहने के बदले सांप • विच्छू लिपटे • खोपरी और हाड्डी योंके हार ग लेमें पड़े • जादू का सिंगार किये मन हूस शकल बनाये चि त पड़ीथी • गोयाराय पिथोरा महल की कड़ीथी • जानआलम बड़े मियां को साथ लेके डेरेमें आया • शाह जादी योंकी जान मे जान आई • सहे लियोंने भी अच्छी सूरत बनाई • सबबुड्ढे के पांव पर गिर पड़ी • उसने कहा अभी क्या है • येतो कुछ भी नथा • मुसी बत तो आगे पड़े गी • जादू गरो का बाद शा ह जरूर आवे गा • बखेड़ा मचा वेगा • सुन के मल्का ः कांपने लगी • बुड्ढे ने कहा क्यों घब रानी हो • खुदाको या द करो • यह कह कर दो उड़द के दाने उसने दाहे बायें फे के • दो जान वर नयी शकल के पैदा हुए • हिरन का मूं मोर का धड़ जवा हर के सींग हीरेकी आंखे पन्ने के पर • दो ठीकरी यों पर कुछ लिख के उनके सामने रक्खा • वो मूंमें लेकर उड़ गये • रात डर में कटी • तड़के ही आधी चली वि जली चम की • बादल गरजा • लपकर वाले डेरे • बड़े मि या के पास • आकर खड़े हुए • सांप का काटा रस्सी से डरता है • इतने में जादू गरों के गोल आये • काले भुजंगे • नंगे • ध ड़ंगे • सवारों की कतार • पेद लोंकी मार मार • बड़े मियां ने इनका परा जमाया • दूसरी तर्फ से जादू गनी • यां • ना गनो पर सवार आग उड़ाती • नारियल उछालती • छोटी २ झा ड़ियां हाथों में जादू के जोर से कूदती • उछालती • लड़नेप र मरती • एक दूसरे को तकती • आमो जूद हुई • और उसी परे के सामने ठैरीं • जान आलम का जी उसको दे खके कुलबुलाया • फौज के सर दारों को बुलाया • कहा॰ ॰

आज बेढब मामला है · ये तमाशा देखने के लायक है · अगर ज़िंदगी है · तो फिर ऐसा काहे को देखें गे · और जो मरे · तोभी बहार है · हज़ारोंके मरने कोभी शादी कहते हैं हमारी फ़ौजभी चमक दमक के तैयार हो येसुनते ही सफ़र मैना ने कुदाल फावडे · उठाये · जमीन बराबरकी झाड झंकाड काट डाले · पलटनो के मोरचे लगे · तायो दमदमें बधे · फाकी लगाई · सुरंग बनाई बादे रू बिछाई · सक्के ने छिड काव करना शुरू किया गोलंदाजों ने बाल चौमें पानी भरा · सवारो के परे · हाथियोका हलके · उटोंकी कतार · चरकटो की लल कार · साटेमारोंकी पुकार · दाहा · बचाये · बांहां समाले · सव लैस दरेस होकर खडे थे · घोडे की कनोती से कनौती मिली · धौंसे पर चोट पडी · बहादुरो की आखें खूनकासा कटोरा · बात बात पर तलवार · अजब हुल पुकार · नामर्दो को होल हुआ · भागने का फिकर पडा · पेटमें खल बली मची · दस्त निकल गये · पेशाब से समंदर बन गये · जान आलम भी टेढी लगाये तलवार चमकाये · बरछा उठाये घोडा उडाये फौजके बराबर आकर खडा हुआ · एक दफ़े ही चोब दार चिल्लाये आज हीका दिन है · जवानी जिंदगी चार दिन है · कोई दुनिया में हमेशा नहीं रहा · नाम रह जाय गा · जो करना है · आज करलो · कलके वास्ते कुछ दिलमें न रखना · सूरमा ओंके दिल बढे · मूछों को तावदे तलवार को देखने लगे · मूछंका · सिर को हतेली पर रख लिया आपस में छेड छाड करने लगे · देखें आज तलवार किसकी काटती है · किस का लहू चाटती है · पहिले किस

की बर्छी चलती है · कौन छाती तानता है · कौन लोहा मान ताहै · देखें कौन सा ललकार ता है · कौन डाटक र मारता है · और कौन ददा को पुकार ता है · आज शाह जादे का निमक अदा करो · दुश्मनों का लहू चाटो · बु रा मनाने वालों का कलेजा काटो · अगर देव सामने आवेतो जान नपावे · देखें किसके हाथ खेत रहता है औ र कौन कौन खेत रहता है · दिल चलावो · ढाले अशर्फि यों से भरलो · आज ही तो आन बान है · यही तो तलवा र और यही मैदान है · येतो बहादरों का हाल था · अब दिलकसरों की सुनो · मूपर हवाईयां उड़ती थी · भाग ने को घोडोंकी बागे मुडती थी · मूं नोचतेथे · भाग ने की सो चतेथे · पेट पकडे फिरते थे · दस्त पर दस्त चले आते थे डरके मारे बिन मारे मुए जाते थे · कोई कहाता था · मि या जी है तो जहान है · नोकरी न मिलेगी तो भीख मांग खायगे · जान कहां पावें गे · हुर्मत गई तो गई · जान तो र हे गी · यही ना कोई ना मर्द कहे गा · आबरू गयी · जीते रहेगा यहां बिगडी और कहीं बना लेगे · गोलियां बचा कर गालियां खालेंगे · लडने को सिपायोंने कमरे बांधी है कोसने को हम मौजूद है · कोसों भाग नेको आंधी है · जोखें लगाने में हमारे मा बाप भंग पीला तेथे · कि सीकी फस्त खुली देख कर हमको गश आते थे · दोस्त हो या दुश्मन, हमतो सब की खैर माग ने वाले है · सब से पहिले मागने वाले है · गाली गलोज को लडाई समझे · लडाई भिडाई से कभी भिडके न निकले · उ मरभरमें बदन में सुईभी · गडने नदी · गालिया खाके

जिंद गी देर की · वे गैर नी का भला हो जिसने आज तक
जान सला मत रक्खी · इस पर भी किसमत ने ये दिन दि
खाये · खुदाने हमें हीजडा क्यों न बनाया · फौज में ये खल
बली मच रही थी · उधर अंजुमन आरा एक टकने पर डेरे
में चिलबन डाले सैर देखने लगी · इतने में शह पाल नौ
ला ख · जादूगर साथ लेके · तख्त पर सवार हुआ · चाली
स हज़ार अज दहे · तख्त को उठाये बडी धूम धाम से आ
या · और फौज़ के सामने अपना परा जमाया · काले झंडे
निकाले · झांझ बजने लगी · उस्का वजीर बडे मियांके
पास आया · और हात बांधके कहाके कहनी नहीं स
कती मगर शह पाल ने ऐसा कहा हैं के तुम्हारा जी
ना मरना बरा बर है · बुड्ढे हो चुके हो · क्यों इनजवानों

इन जवानो का खून अपने सिर पर लेते हो· बडे मियांने जवाब दिया के उस हराम ज़ादे से कहदो के जितने यहां मरे गे· उन सब का खून उस छिनाल पर होगा· हम तो समझे· थे के तेरे घरमें वोही बुरी थी· मगर मालूम हुआ के एसों के वैसे ही होते हैं· तुझे सफेद डाढी की शरम न आई· के वो स रीमरा कलंक का टीका भीचा· तू तो उस्से भी जयादा बे शरम निकला· अब कुछ बात चीत का काम नहीं· तलवार फ़ैसला कर देगी· देखें आज कौन जीत ता है· और कौन कौन क फन काठी को तरस ता है· वज़ीर उलटा फ़िरा और जो बुड्ढे ने कहाथा· वो शाह पाल से कह दिया· ये सुन ते ही वो जल गया· पहिले तो कुछ पढ कर आगका अंगारा उस पर· मारा· फिर फौज वालों को लल कारा· दो पहर तक एसी जमी के किसी ने देखा न सुनी किसीने जलाया· किसीने बुझाया· कोई पत्थर· वरसा ताथा· कोई काटे खाता था· जब जादू हो चुका तो तल वार चली· जान आलम ने वाग उठाई· फौज सब तर्फ से सिमट के घिर आई· तल वार की बिजली चमकी· वहा रों की लल कार ने बादल की गरजका काम किया· वो लोहा बर साया के होश न आया· ये तो ता ज़ा दम थे· वो दो पहर से लडते लडते थक गये· सैकरों पांवमे कुचले गये· घोडों की झपट में रुंद गये· इस वक्त जान आलम की तल वार देखनी थी· जिस पर पडी अलग अलग कर दिया· सिरको चीर कलेजे से उतर कलेजा चा ट पट कार जीनको चीर घोडेके कमर से निकल गई· याती सिरथा या धड ही रह गया· जिस पर वार किया तो ए क के दो और दो को चार किया· ज़मीन हिल गई· आस

आसमान कांप उठा · मुरदे घबरा कर कबरों के बाहर
निकल आये जो अटका, उस मार लिया · भागतों का
पीछा न किया · एक घडी भरमें लहू की नदी वह निकली
लाशों के ढेर लग गये · घोडे लहूमें तेरते थे कोसों तक मु
रदों की सडक बन गई · आखर को शाह पाल मारा गया
पलक मारने में उस्का सिर उतारा गया · फिर तो जान आ
लम की फ़ौज टूट पडी · तू और में और गेरे पच कल्यान च
पड कनाती जेबकतरे · उठाई गीरे रद्वे खदवे मू पसारे ·
लूट पर टूट पडे · पर एक तिनका भी न जाने दिया · शह पा
ल की फ़ौज का क्या हाल · जिधर जिसके सींग समाया चला ·
गया · इतने में रे के आज तक लघ्घड गिद्ध कव्वे उनको षा
ते हैं · इतना खाया के हज़ारों जानवर हज़ा करके मर ग·
थे · तमाम खजाना और मुल्क जान आलम के हात आ
या · इह भाल के वो तक्ती और तावीज भी पाया · बडे मिया अब
रूख सेद हुए · और समझाया के बेटा ऐसा काम कभी न कर·
ना · देखभाल कर चलना · खुदा के दिन फिर ना दिखावे · तुम
तो क्या दुसमनो को भी ये वक्त न आवे · ॥

चरित्र ९३॥

जादूगर के मारने के बाद जान आलम दो महीने उसी जं
गल में रहा · बडे मियां अब अपने बाग को गये · थोडे दिन
बाद जान आलम ने भी कूंच किया · चलते चलते एक दिन स
मुद्र के किनारे डेरे हुए · जान आलम अपनी प्यारीयों को
लेकर लहरों की सेर देखने लगा · समुद्र गगन खल रहा था ·
इतने में एक जहाज दिखा · जान आलम ने जाना कोई व
डा सोदागर है · जो ऐसे खूबसूरत जहाज में आता है · ५॥

जब जहाज किनारे लगा तो लोग उसमें से उत्तर के जा
न आलम के पास आये और हात बांध कर कहा के हम
मल्ला हैं जो अमीर आता है उसे हम जहाज़ पर बैठा
कर समुद्र की सैर दिखाते हैं जो किस्मत में होता है वो
इनाम पाते हैं जान आलम के दिलमें आई के सैर करो मल
का से कहा के चलती हो उसने जवाब दिया के अभी तो
गम के भवर में फस हुये हैं आप को और लहर आई न
या ढकोस ला सूढा जान आलम ने कहा सैरसे जी खुश हो
ता है दिल बहल जाता है घबराहट जाती है चलो चार घ
डीजी बहलावे नहीं तो बिचारे मल्ला नाउम्मेद हो जावेंगे
मल्का ने कहा जो आप कहते हो वो सच है घबराह
ट कैसी आरव कान कैसा तुम्हारे दुसमनों को तो एक
बीमारी है जिस्से आदमी पालंग सा हो जाता है मालिक
खोलिया है मैने अंजुमन आरा से कई दफ़ा कहा इस
मर्ज की दवा नही पानीसे दूना होता है सिवा इसके मेरे दि
माग में कुछ खलल नही जान आलम ने कहा खैर हम तो
सिडे हैं अकेले ही जावेंगे तुम न चलो बैठी रहो
आराम करो मोहब्बत में ये कब हो सक्ता है के प्यारे से अ
लग रहा जाय उल्फत का यही हाल मालूम हो जाता है सो
ना कसोटी पर चढता है खरा खोटा निकलता है लाचार
मल्का उठी अंजुमन आरा साथ होली जहाज़ पर चढे और
करने लगे मल्का ने अंजुमन आरा से कहा खुदा खैर करे
दुश्मन भी ऐसी सैर न करे दिल घबराता है लहर को देख
कर खोफ़ आता है मेरा माथा ठिनकता है जान डरती
है चार घडी न होने पाई थी के एक दफ़े ही आंधी चली

बद बान टूट गये · मल्लाओंके छक्के छुट गये · जहाज के टुकडे टुकडे · होगये क्या जाने कौन डूबा · और कौन बचा · किसको किसी को खबर नहीं · जान आलम एक तख्ते पर डूबता उछलता चार दिन बाद किनारे पर लगा · उठता बैठता चला एक बस्तीमें पोंहचा · वहां के लोग इसको देखकर दंग होगये हर एक पूछता था · (कौन हो क्या हो हूर हो या परी हो · तुम जान आलम ने ठंडा सांस भर कर कहा क्या बताऊं · मैं कौन हूं होश ठिकाने नहीं · बिछडोंसे मिलने को दिल बेकल है · पानी दाना मूंमे नहीं गया · साथी छुट गये ठिकाना पूछते हो क्या भला हम बेठिकानो का ·)

हिचकी लगती है · मगर पता नहीं लगता · किसमतने दोस्त छुडाये · दिया · क्या करूं कहा जाऊं · हाय मुसी बत · वाये कि स्मत · ये सुन कर सब लोग रोने लगे · जाना कोई शाह ज़ादा है · सबीने खातिर की · अपने मकान पर ले गये · हात मूधुला या · लाखा लाये · खाना लाये जान आलम रोने लगा · और बोला · खुदा जाने मेरे बिछडो का क्या हाल है · किसीको दाना पानी · मिला या न मिला · मैंभी नखाऊं गा · भूखा प्यासा मर जाऊं गा · लोगों ने कहा ये क्या नादानी है · खाने सेतो जिंद गानी है · जो जीतेजी होतो किसी रोज बिछडो से मिल जाओगे · और जो नखाओगेतो भूखे मर जाओ गे · कफन भी नपावो गे · लाचार सबके समझाने से दो एक निवाले गलेसे उतारे · पानी जो पिया हात पांव सन सनाये · गश आये · जब ज़रा दिल ठैरा तो सब हाल कहा · लोग सुन कर रोने लगे · एक ने कहा यहां से दो मंजिल एक पहाड़ है · वहा येक जोगी रहता है · हज़ारों आदमी उस्के पास जाते हैं · जो मांगते हैं · सो पाते हैं · आज तक कोई खाली न फ़िरा · जाते ही मनों कामना सिद्ध है · जान आलम ये सुनः के खुश हुआ · चलने का इरादा किया · लोगों ने कहा ये क्या · करते हो · अभी तुममे दम नहीं · दोचारदिन यहां ठहरो · नहीतो रस्ते में ढेर हो जावो गे · जान आलम उनके कहने से ठहरी गया · मगर दिलमें चैन नहीं · पर होते तो उड़ के जाता · खुदा २ करके दो दिन काटे · रात भर रोना · दिनभर तडफना · चार दिन में उस पहाड पर पहुंचे · वो बडा ऊंचा था · फिरे बह रहे थे · नहरें जारी थी · फूल फल लगे हुए · जान बर बोलरहे थे सैर देखता चला · एक जगे बडे घनदार

पेडेथे · और एक पक्की क़बर बनी हुई · और मढी · देखी · वहां त्रिशूल गडा हुआ · खार वेकी झंडी लगी जब पास आयातो सौ सवासो वरस का जोगी देखा डा डी पेटके नीचे लटकती · जटाये पावो पर पडी · आखें प लकों से ढकी और पलक भूंवोंसे मिली · बदन में झुर्रि यां पडी · और भभूत चढ़ी · खार वेका लंगोट बंधा · हु क्का लगाये · अफीमी की शकल बनाये · शेर की खाल बिछाये · सोता न जागता · आसन मार · दुनिया से कि नारे · पेट पीठ से लगा · टीका माथे पर चढ़ा · कही चौ की पडी · कही · मुसल्ला बिछा · धूनी लगी · अजब सामा न · नहिंन्दु न मुसल मान · एक तरफ़ बेला चमेली खि ली · क्यारियां बनी · कही पीरों के ढेर · गुरुकी छतरी मौल सरी के पेड · दरखतों की टहनियों में पिंजरे लट कते · तोतों का कही · (सत गुरु दत) पढ़ना · कही · मैना (नबीजी भेडियो) कहना · शेर की चौकी लगी · , लक्कड सुलग रहे · एक तर्फ भवानी का मठ · । तुलसी का पेड · कही दुर्गा · कही ढेर · एकतर फ़ भंडारा जारी · कढाई चढी · मोहन भोग बनरहा · कही पुलाव · कलिये की तैयारी · कही महंत वाल के · कही मुरशद मुरीद · कोई जोग अभ्यास करता कोई · चिल्ले में बैठा · एक तरफ खंजरी वज रही · भजन होरहे · दूसरी तरफ़ दायरा खडक ताथा · ढोल बज रहा · जान आलम की पावकी आहट जो हुईतो · जोगी की आंख खुली · हातसे पलक उठा आंख मिलाई · लाल लाल च ढी हुई · आखों से जान आलंको देखा · इसने झुकके

सलाम किया · उसने कहा · भला हो · बच्चा बडी खुसी बन
उठाके यहां आया · गुरू भला करेगा · मुरशद की दुआसे ते
रा काम भी हो जाय · तेरी अमानत मौजूद है · सवारी खडी
है · हम जाने को तैयार हैं · जान आलम हक्का ब
क्का होकर बैठ गया · जोगी उठके हौजमें न्हा
या · गेरूवा कपडे फेंक · सफेद ओढ अतर मल जा
न आलम के पास आया · और कहाके एक दिन
हम बडी मौजमें बैठे थे · गुरूने तेरे हाल से हम को
खबर दी · एक शाहज़ादा यहां आवेगा · उसका ज
हाज़ तबाह हो जावेगा · यहांसे मतलब पावेगा · ये सु
नतेही जानमें जान आगई · कहा जोगी जी तुम्हारे नामे
से मेरी जान बची · नहीं तो कभी का मर गया होता ॥

खूबसूरती भी अजब चीज है · अमीर गरीब सब
इसपर मिटी है · फकीर जान आलम को देख कर खुश हु
आ · समझाने लगा के अब रोना अच्छा नहीं ये दुनिया
है · कभी सवेरा कभी शाम, कभी प्यारे के गलेमें हात है ·
कभी फिलंगा है न खाट है · कभी फूल निकलते हैं कभी
पत्ते तक झड जाते हैं · जो मजे करेगा वोही मुसीबत भी उठा
वेगा · जीसे तकलीफ है · वो आराम भी पावेगा · तुमने उन
दोनो भाईयोकी कहानी नहीं सुनी · जो जुडवां पैदा हुए थे · प
हिले क्या मुसीबत उठाई · फिर गद्दी पाई · जो शाहजादी
हात आई · जान आलमने कहो क्यों कर · जोगी कहने ल
गा · ॥ कहानी ॥
एक शहर में दो भाई जुडवां पैदा हुए थे · बडे लाड प्यारसे
पले आपस में बहुत हेल था · एक को दूसरे बगैर चैन
नहीं पडता था सीकार को नही जाते थे · एक दिन जंग
लमें जाते जाते हिरन सामने आया · छोटे भाईने तीर
लगाया · निशाना चूक गया · हिरन कनौतियां बदल के
भागा · इनोंने घोडे पीछे छोडे · शाम को बडे भाईने तीर
जो मारा तो हिरन उगमगा के गिर पड़ा · इन्होने घोडे प
र से उतर उसे भून भान कर खाना सुरू किया · घोडेभी
घोडेभी थक गये थे · इनमें भी दम न था पानी पीकर बैठे
दम लिया · रात हो गई थी · चांदनी · छिटकी जंगल ब
हार दिखाने लगा · उन्होंने कहा · आजतो रात यहीं ·
काटिये · ईश्वर के चमत्कार देखिये फिर दिल में कहा ·
कि चांदनी की बहार तो किसी प्यारी के साथ है · अकेले तो
चांदनी काटने को दौडती है · खैर · एक पेड के नीचे ॥

पड रहे· चांदनी तो साथ नथी· जी नही बिछा लिया·
घोडे वाग डोर से झटका दिये· बडे भाई ने छोटेभा
ई से कहा, हम तुम से तीन बाते पूछते हैं· और तुम्हा
री अकल देखते हैं· एक तो यहां से अपना शहर कितनी
दूर है· दूसरे किस तर्फ को है· और तीसरे आज कबाब
में जियादा मजा क्यों आया· उस ने कहा इसमे क्या मुशकि
ल है· हमारा घर यहां से सो कोस है· क्यों के मेरा घोड़ा·
इसी चाल से सो कोस चलता है· और उत्तर की तर्फ है·
इन सितारों से मालूम होता है· खाने में मजा आया क्यों
के बहुत देर बाद मिला· मगर मैं एक नई बात कहता हूं·
और वो ये है· के कल बडे मजे होंगे· भाई ने पूछा के इ
सका क्या सबब है· वो बोला· आज हमने बडी मुसीबत उठा
थी· मगर दिल खुश है· ये कहके वो चुपका होरहा· ये
बात तो योंही रही· फिर दोनो ने कहाकि जंगल सुनसा
न है· आदमी का पता नही घोर लगता है· सांप आवे· वि
च्छू काट खाय· नींद और मौत बराबर है· पहर भर रात आ
चुकी तीन पहर बाकी है· डेड पहर में जागूं· और डेड पह
र तुम जागो पहरा दो· ये बाते दोनो को पसंद आई· पहिले
बडा भाई सोया· और छोटा समल बैठा· पेड पर दो जान·
वर बाते करने लगे· एक बोला के जो मेरा गोस्त खावे वो;
दो पहर बाद एक लाल उगले· और फिर हर महीने·
उस्के मूसे लाल निकले· दूसरा बोला जो मेरा गोस्त खा
वे सो उसी रोज़ बाद शाह बन जावे· ये सुन के बहुत खु
श हुवा· तीर खैच के मारा· दोनों छिद कर गिर पडे· उसी
वक्त भूने· जिस्के गोस्त में बाद शाहत का मजा समझा थो·

दोनों आप खाया दूसरा बड़े भाई के वास्ते रखा इत
ना खुश हुआ के कि रात भर आप पहरा दिया बड़े भाई को
नलाया जब लड़का हुआ तो वो उठा उसे वो वा गोश्त खाने
को दिया मगर कुछ हाल न बताया दो पहर के बाद लाल
छोटे भाई के मूंसे निकला दिलमें अफसोस किया के चूक ग
या फिर सोच साच कर वो लाल बड़े भाई को दिया रात का हा
ल कहा और हाथ बांध कर अर्ज की के ये लाल न जर है
थोड़ी देर में आप बाद शाह हुआ चाहते हैं बड़ा भाई बहु
त खुश हुआ दिलमे कहा के मेरा भाई बड़ा लायक वाला
है फिर कहा के सामने बस्ती मालूम होती है इस लाल
को यहां बेचें क्यों के अगर अपने शाहर में बेचेंगे तो पक
ड़े जावेंगे तुम घोड़े के पास रहो मैं अभी बेच कर आता हूं
ये कहके चला शाहर दरवाजे पर बड़ी भीड़ दिखि उस
मुल्क का ये दस्तूर था के जब वहां का बाद शाह मरता
सब छोटे बड़े बजीर के साथ तख्त ले कर दर बाजे के पा
स आते जो मुसा फिर पहिले आता उसे बाद शाह बनाते
इन दिनों में वहां का बाद शाह मर गया लोग तख्त लि
ये खड़े थे ये पहुंचा उन्होंने तख्त पर बिठाया बादशाह बना
या उस दिन तो धूम धड़क के में भायी का ख्याल न आया दूस
रे दिन तो जासूस भेजे कहीं पता न मिला चुप हो रहा राज
करने लगा वो लाल जो बेचने आया तो भाई की निश
नी थी वो राज दर बार वालों को दिखाता सब उस्की
तारीफ़ करते इधर छोटे भाई थे बिचारा बड़े भाई
का रस्ता देखते थक गया अचानक एक जानवर आया
और इसे पंजेमें दबा कर ले गया घोड़े जंगल में

भाग गये· वाहवा एक तो राज करे· दूसरा मुसी बतमें
पड़े· वोजानवर उड़ता उड़ता एक पेड़ पर बैठा· उसके नी
चे कुंवाथा· पंजा जो खुला तो छुट कर कुंए में गिर पड़ा· इत
नेमें वहां एक काफला आया· लोग बाग पानी भरने को आ
ये· ये चुपके से एक डोल में बैठ गया· लोगो ने खेंच लि·
या· जो देखता था वो ताज्जुब करता था· उस्से हाल पूछा
उसने सब बयान किया· वोउसे काफले में ले गये· और·
अपने सरदार को दिया· वहां ये रहने लगा· काफ़ला· चल
ते चलते मंजिल पर पहुंचा· महीना भी पूरा हुआ· इस
ने दूसरा लाल उगला· काफाले का सरदार बहुत·
खुश हुआ· फिर सोंचा और उसे कैद करके कोतवाली
में भेज दिया के मेरा गुलाम है· इसने लाल चुराया जो
सजा चाहो इसे दो· कोतवालने काजी से पूछा के इसको क्या
सजा चाही ये· उसने कहा के इस्के हात काट डालो· मगर
उस शाहर काये· दस्तूर था के जो तकसीर करता वो बाद
शाह की बेटी के सामने जाया करता था· क्यों कि बादशाह
तो बुड्ढा था· तमाम काम वोही करती थी· उस्के रूपका क्या·
पूछना· हजारों आदमी एडीयां रगड कर गये· मर· मगर
उसने किसी को पसंद न किया· अब तक कुंवारी थी· इस
जवान को शाहज़ादी के पास ले गये· उसने कोतवालको
बुला सब हाल पूछा जो कुछ गुजरा था· उसने सब हाल बया
न कर दिया· फिर वो इस्के तरफ़ फिरी· इसने कहा के सब स
च्चे है· आप मुझको सजा दीजिये· शाहज़ादी ने कहा आज
तक किसी चोरने· चोरी का इक रार नहीं किया· इसमें कुछ फी
है· कल सब कचेरी में हाजर हो· और ये हमारी डेहुडी·

पर कैद रहे· किस्मत जो खुली तो शाह ज़ादी का दिल इ
स की तर्फ़ आया· रात को बुलाके सब उससे हाल पूछा· इ
सने सिरसे पांव तक सब कह दिया· शाहजादी सुन कर बहु
त खुश हुई· दूसरे दिन बाद शाह के सामने हात बांध कर
कहा के कोत वाल और काजी सब झूठे और जुल्म करते हैं·
नाहक इस बिचारे के हात काट ते हैं · बाद शाह बुड्ढे थे·
और बुढापे में अकल जाती रहती है· सोंचने लगे· शाह
जादी ने· कहा हात कंगन को आरसी क्या है · हजूर महीने
भर और कैद रक्खे· अगर इसने दूसरा लाल उगला तो
ये सच्चा है· नहीं तो बेशक इसका सिर काटा जावे· बादशा
ह को ने बेटी की बहुत तारीफ़ की· और जवान को अपने सा
मने कैद किया· और काफले के सर दार को शाह जादी ने कै
द में भेजा· दिन २ शाह जादी को उस की मुहब्बत बढती·
दिल बुरा होता है· जिस पे पडे पडे वोही जाने· इतने में महीना
होगया· जवान ने· सब के साम ने लाल उगला· लोगों को
बडा ताज्जुब हुआ· काफले के सर दार को गधे चढा पर के
शहर के बाहर निकाल दिया· सब लोग उस जवान को देख क
र खुश होते और आखिर को शाह जादी के खातिर से स
बने मिल कर बाद शाह से कहा· हजूर इसे अपनी नोकरी
में रक्खे· ये आपकी जूति था उठाये गा· बाद शाह भी राजी हु
घी· मान गया· थोडे दिन में वो मूलगा के बाद शाह की मुल्क
का बाल हुआ· हर महीने लाल उगल ना· और बाद शाह
के पास लाना· आखर को सबने सला कर २ बाद शाह से· क
हाके हजूर इसका ब्याह अपनी बेटी से करदो· दोनों का दि·
ल आया हुआ है· अब रोकना मुना सिब नहीं ॥

बादशाह ने बडी धुम धाम से व्याह कर दिया· और मजे उडने लगे· मगर जवान हर रोज बिला नागा बादशाह की नौकरी में हाजर रहता था· एक दिन उसके भाई का एलची वहां आया· इधर उधर की वाते होने लगी· जवाहर का जिक्र उठा· एक एलचीने कहा के हमारे बादशाह के पास एक असा लाल है· के किसीने देखा न सुना· बादशाह के पास भी उगले हुये· लाल थे· आठ दस दिखाये· एलची देख कर घबराया· और कहा के ये लाल तो हमारे बादशाह के लालसे बिलकुल मिलते हैं· बादशाह ने कहा के ये मेरा लडका हर महीने लाल उगलता है· एलचीने जो देखा तो अपने बादशाह की और उसकी शकल एकसी मिलती हुई पायी· खैर वहां से रुखसत होकर अपने बादशाह के पास आया· वहां तो ये दस्तूर था· जब बादशाह तख्त पर बैठता था· तब वो लाल सामने धरा जाता था· एलचीको वही बात याद आई· और उसने हात बांध कर कहा के हुजूर क्या एक लाल को लिये फिरते हैं। जिस-बादशाह के मैं पास गया था· उसके पास लाल का पुतला मौजूद है· ये बादशाह के बात समझ में न आई· फिर एलचीने कहा के उस बादशाह का दामाद हर महीने एक लाल उगलता है· और विसकी और हुजूरकी शकल बहुत मिलती है· अगर दोनों साथ बैठ जाय तो सगे भाई मालूम हो· ये सुनतेही यकीन हुआ के अब पता मिला· बेशक वो मेरा भाई है· उसी वक्त एक खत बादशाह के नाम लिखा· के आपके दामाद से मुझे मुलाकात करनी है· उसको जल्दी यहां से भेज दीजे· बडी मेहर·

वानी होगी · चुपके से एक खत भाई के नाम लिखा · औ
र सब पता बता दिया · एलची ये दोनों खत लेकर आ
या · भाई ने भाई का खत देखा तो खून ने जोस किया ·
उसी वक्त बादशाह से रुखसत हुआ · और चीके ए
लची से साथ हो लिया · कहि दम भर न ठेरा · एलचीसे भाई
का हाल पूछा तब चला · मगर दुनिया कब चैन देती है जब
शहर दस बारह कोस रहा तब जहाज तबाह होगया · वि
जिसकी आई थी वो रह गया · जिसकी बाकी थी वह नि
कला · ये बात सबमे मशहूर हुई · भाईने भी सुना उसी
वक्त हज़ारों आदमी भेजेके जिस डूबतेउछलतेका पता
पाओ उसे जल्दी लावो · बहुत सा ढूंढा ढांढा · तो शाहजा
दी हातआई · उसे बादशाह के पास हाजिर किया · और भाई
केडूबनेका हाल कह दिया · एकतरफ़ शाहजादी कोनेमे बैठग
ई · दूसरे तरफ़ बादशाह रोने लगा · वो जवान तक्त केसहा
रे बहता २ भूखा प्यासा गिरता पडता किनारे पोहचा · ज
ब ज्वहा जरा दम आयातो पूछता २ उस शहर में घुसा · बा
दशाह को खबर हुई · सामने बुलवाया मगर मुशीबतने
वो मूं बिगाड दिया था · के पहिचाना न गया · ॥

शेर ॥

इतनी मुद्दत में मिला मुझसे वो धोखादेकर
यादभी जब मुझे उस यार की सूरत न रही ॥

वाहनी वाह अभीतो वो मजे करते थे · और अभीये मु
सी बन पडी · शाहज़ादी को बुलाया · वोहिचर मिचर करने
लगी · वोबोला के पहरभर बाकी है · लाल उगलूंगा · तब प
हिचान · लोगी · बादशाह नेजाना के ये बेशक सच्चा है

अगर झूठा होता तो पहर भर का नाम न लेता · शाहजा
दी बोली के तू बडा अकलमंद है · एक बात पूछता हूं अगर
उस का जवाब इसी वक्त देगा तो मेरा शक जाता रहेगा · भला
वो चीज क्या है · जिसे सब हिन्दु मुसलमान और किश्चन खुले
बंदो खाते है · मगर जो उस्का सिर काट डालो तो जहर हो जावे ·
कोई न खावे · और जो खावे चट मर जावे · जवान ने हंस कर
कहा शाहजादी · कसम · है · क्या अच्छी बात पूछी है · सुनतेही
वो फडक गई दौड के गले से लिपट गई · बादशाह ने क
हा हम तो कुछ न समझे · शाहजादी क्या समझ सामने हुई ·
जवान ने हात बांध के कहा हजूर वो चीज कसम है · उसे त
माम आलम खाता है · और सिर उस का (क) है उसे का
टा तो (सम) रहता है · और सम जहर को कहते हैं · उ
से कौन खाता है जो खोता है वो मर जाता है ये सुन के
बादशाह ने भाई को गले लगाया · शादी याने बजने ल
गे · जवान ने लाल उगला और वखेडा मिटा · जिस
तरह ये बिछडे हुए मिले इसी तरह ईश्वर हम को भी बिछ
डे हुए मिले · जोगी ने ये कहानी कह कर जान आलम से
कहा बाबा दलो · घबराने का काम नहीं · हम को सब
मालूम है मगर कह नही सकते · बोलने का हुक्म नहीं
मैं थोडी देर मे मरने वाला हूं मुझको गाड दीजो · ये कह कर
दो चार बाते बनाई · जान आलम ने कहा साई ये किस्से देखा
जायगा · पत्थर का कलेजा कहां से आयेगा · ये क्यों कर होस
केगा · मैं तुम को अपने सामने गाडूं · फिर जान आलम
खूब रोया · जोगी ने कहा बच्चा अब कुछ देर नहीं · प्यादा
आन पहुंचा है · नही तो हम भी तेरे साथ होते ॥

है· नहीं तो हम भी तेरे साथ होते· भला फकीर का एक लट
का सीख ले· साईं चाहे तो कहीं अटका न रहे गा· कबर में
अपने साथ लेजा कर क्या करूंगा· तुझको बतादूं जो काम तो
आवे· फिर एक तरकीब बताई· के जिस सूरत का ध्यान क
रो वोही हो जावे ये बात बना हर हर कर गुरु को नाम लिया·
फिर कलमा जो पढा तो चल बसा· दम निकल गया· रमता
राम था· आया आया· न आया न आया· जान आलम·
रोया· चेले चाटे सब जमा हुये बहुतेरा चिल्लाये· मगर जोगी
न बोला· फिर जान आलम ने· उसके कहने के बमूजिब नह
ला धुला· कफन पहना कबर में रक्खा· फिर जो देखा तो·
लाश भी नहीं है· कफन को फाड डाला· आधा चेलों ने
जला दिया· और आधा मुरीदों ने गाढा· और सबने मि
ल एक को गुरु की गद्दी पर बिठाया· गद्दी पर बैठने की दे
र थी· कि वो चिल्लाया· कि जोगी दिखते नहीं मगर य
ही मोजुद है· पेड और पत्ते बोलते है· आख चाहिये स
ब कुछ देख लो· कोई मसजिद में सिर रगडता है· कोई
मंदिर में हात जोडता है· ढूढने वाला चाहिये, घर बैठे ही मि
लता है·

कबित्त

जिन ढूढा तिन पाईयां गहरे पानी बैठ॥
मैं बेरिन डूबन डरी रही किनारे बैठ॥ १॥

दुनियां का मामला· समझ का झगडा· ये अच्छा वो बु
रा· जहां देखो· वहां दाता मोजूद है· एक निराकार ज्योति
स्वरूप को जानो· उसीसे सबको निकला· और उसीमें मि
ल जायगा· दिल्को खुश रक्खो· जीने मरने के बखेडे में मत
पडो हां को नहीं· और नहीं को हां है· दिल ईश्वर का घर·

है· इसमें कुडा करकट न चाहीये· जितना साफ रक्खोगे· उतनाहिं मजा पाओगे· जान आलम ने ये· सुनके चलने का इरादा किया· उस महंत ने जो रोका तो दोचार दिन ठैर गया· फिर जिस तर्फ जोगी ने बताया था· उसीतरफ़ चलनिकला· जब पहाड से आगे बडा तो एक दर्या मिला· बहुतेरा ढूंढा· कहीं नाव बेडे का थल बेडा न लगा· मगर एक लाल चमकता हुआ पानी में दिखा· उसके पास एक और दिखाई दिया· इसी तरह थोडी२ दूर पर इसने लाल बहते हुए देखे· अब तो घबराया के ये क्या बात है· किनारे २ सैर देखता चला जब दो कोस निकल आया· तो एक बडा मकान दिखा· मगर अंदरजाने का रस्ता नहीं· लटका याद था· बुल बुल होकर दीवार पर जा बैठा· देखा तो बडा मकान है· बाग बहुत अच्छा लगा है· मगर सुन सान न आदमी है न हवान· उसमें एक बंगला था· और उसमें अंदर से एक नहर बहती थी· ऽ आदमी बनके नीचे उतरा· बंगले में गया· देखा तो जमुरद के पायों का पलंग बिछा हुआ है· और उस पर कोई दुशाला ताने सोता है· और बराबर या कूत की तिपाई पर फूलों का दस्ता रक्खा है· आधे सफेद· आधे लाल· जान आलम ने दुशाला सर काया· तो· एक आदमी सूरत का धड नजर आया· अफसोस किया· के किस हरामजादे बेईमान ने ऐसा मोहिनी सूरत का सिर काटा· हक्का बक्का देखने लगा· छतपर आंख पडी· तो छीकाल टका देखा· उसपर सिर भी रक्खा हुआ था· और सिर के नीचे नहर बहती थी और जितनी बूंदे लहू की टपकती थी उतने ही लाल ऽ

वन ने ये · जाना के ये बेशक जादू का कारखाना है · पास जाके जो देखा तो अंजुमन आरा का चेहरा था · पहिचानते ही सिर पीट लिया · कपड़े फ़ाड डाले और अपने मारडालने का इरादा किया · के किसूको मालूम भी नहो फिर सोचा के जल्दी अच्छी नहीं · होजमें कासा धोका न-हो पहिले हाल तोहक़ीक़ करना चाहिये · वह तेरा सोचा कुछ२ समझ में न आया इतने शाम हुई · आंधी चली · गुल मचा जान आलम ने जाना के यहां कोई देव या जादूगर आने वाला है · अब छुपना चाहिये · ये सोचा कर वो भौंरा बन गया · और वहीं बैठ गया · इतने मे एक देव भयानक सूरत बनाकर आया · वो सूंघता हुआ आया · और सफ़ेद फूल तोड कर उसपरीको सुंघाया · सिर उछल कर बदन से जा लगा · अंजुमन आरा उठ बैठी · देव ने मेवा सामने रक्खा · मगर उसका दिल ठिकाने न था · चारो तर्फ़ देखता था · शाहजादी ने कहा खैरतो है · वो बोला खैर कैसा · और बैर किसका · आज तो यहां मानस गंध आती है · वो कहने लगी हमें तो आज तक जानवरकी पर्छाई भी न दिक्खी तूने आदमी की बो पाई ये सब दिवानपन है · रात भर इधर उधर की बातें होती रही · सुबह को लाल फूल उसको सुंघाया सिर छीके पर जाता गया · धड़ पलंग पर रहा · देव दुशाला उडा चल दिया जान आलम ने चारघडी तक बडी मुसकिल से सबर किया फिर अपनी पहिली सूरत बनायी सफेद फूल तोड कर सुंघाया · अंजुमन आरा उठ बैठी शाहज़ादा चीख मार कर लिपट गया · दोनो बिछडे हुऐ ऐसे बिलप २ के रोये · के सारा बाग हिल गया · जान आलम अपना हाल बयान करने लगा · आधमी नहीं कहा था · के अंजुमन

आप बोली में (किस्से कहूं जो कुछ के मुझ पर गुजरी ।) फिर दो
नों चिल्ला २ के रोने लगे । दुनियां के मामले में अकल कु
छ काम नहीं करती । हमेशा किसी की एक सी नहीं रहती ज
हां तदबीर का मन करे वहां तकदीर के हवाले करदे । हमने ।
हजारों दफा देखा है । के लोग अपने मतलब के वास्ते गुल
करते हैं । मगर कुछ नहीं होता है । जब वो थक जाते हैं । और छो
ड देते हैं । तो काम अपना आप हो जाता है । ये दोनों तो रोही र
हे थे । के एक बड़ा देव उडा जाता था । रोने की आवाज जो का
न में आई तो दिल पिघल गया । सोचा के किसी पर मुसीबत
पड़ी है । जो इस तरह बिलख २ कर रोता है । मगर यहां परन्
दा पर नहीं मारता । आदमी कहां से आया । बाग में पहुंचा ।
वो दोनो रोते रोते बे होश हो गये थे । ढूढता ढूढता बंगले में
आया । देखा तो दोनो लिपटे हुए पड़े हैं । मगर चेहरे पर
रंग नहीं । दोनों चांद और सूरज को गहन लगा हुआ था
थोड़ा पानी उन पर छिड़का उन्होंने आंख खोली तो देव दि
खा । देवने उठ कर सलाम किया । और कहा के मैं तुम्हारा
गुलाम हूं । मुझसे बिलकुल न डरना जान आलम ने उठ
गले लगा लिया । वे हाल पूछने लगा । जान आलम तो
बड़ा बतूनिया था । गम कहानी कह सुनायी । ये सुन कर
रो दिया । और बोला । के तुम खातिर जमा रक्खो । अब के
जो हमारा मजारा आवे । तो । कैसी घिस घट्टी बताताहूं
जान आलम तो पांच था । वो लगा बट की और एसा शीशे
मे उतारा के उससे भाई चारा कर लिया । फिर सब मिलके बा
ग की सैर करने गये । इतने में वो देव भी आया तो देखा ।
शाहजादी । आदमी के साथ फिर रही है । और सफेद देव ।

हात में हात दिये · साथ है · जल कर जान आलम पर क
पटा सफेद देवने वही उसका हात पकडा · फिर तो खूब धमा
चौकडी मची · जमीन के टुकडे उड गये · आखिर को सफेद
देवं जमीं से लंगर उखाड़ सिर से ऊंचा कर जमीन पर पटक ·
हात ऊटक छाती पर चढ बैठा जान आलम भी पास आया
बहुत सी तारीफ़ की · फिर कहा, अगर तुम खफा न होते
में भी एक जोर करूं उसने कहा बिस मिल्ला ; शा ह
जादे ने एक हात कंधे पर करे धर · दूसरे से गर्दन पकड़
धडसे खेंच, जमीन पर धड से फेंक दिया · सफेद देवये देख
तेही · सपेद होगया · और वो बेई मान जमीन पर अंटाचि-
त पड़ा रहा इतने में सपेद देवके नौकर भी आन पहुंचे ·

बड़ी धूम धाम की दावत हुई· सात दिनतो ऐसे ही जल
सों में कटे· आठवे दिन अंजुमन आरा बोली के मल्का के
बगैर खाना पीना हराम है· तुम्हारे अहसान हम पर
भोत है· इस सबब से कभी २ ईसी आजा तीथी· नहींतो
शराब किसकी और कबाब कैसा· यहांतो दिल कबाद हो
रहाहै· देवने कहाके आप क्यों घब राते हो· मैं अपने
आदमी भेजता हूं पता लगाता हूं· जान आलमने कहा
अपने ढूंढ ने में जादा मज़ा है· अपना काम आपही खु
ब होता है· लाचार होकर उसने रुख सद किया· मगर आप
समें भुला कातके कौल करार हुऐ· अंजु मन आरा को रात
दिन मल्का का ख्याल था· के खुदा जाने· डूब गई· या· हमा
री तरह तबाह हुई· चार कोस दिन भरमे चलते· दो तीन
दिनमें छाले पड गये· अंजु मन आरा कभी दो कदम पैदल न
चली थी· येबुंदे ल खंडके से काले कोस उसने कहां देखे थे
फ़ल्ला गई· जान आलम से कहाके सब आपकी बदो-
लत है· सबको छोड दिया· रुसवा हुई· मुसी बत उठायी· देखिये
अभी क्या होताहै· शाह जादा हंस कर चुपहो रहा· फिरतो
जोगी का लड़का बनाया· और दोनो तोते बन कर निन न
दाना खाना· नया पानी पीते चले· कभी पेड़ पर ब
रते· कभी खंड रोमें जा बैठते जो किसी को हंसते दे
देते· ॥२३॥ चरित्र २४
अब उस मुसीबत की मारी मल्का का हाल सुनो
·तीया में अच्छ हो · मी बन उ जते हैं· और बुरे
·:गधालो पाको खान की क़ न पहने· और घो
डा भी नही· तब उसात्र टूटा तो वो बिचारी·

आरी डूबती तीरती चली · उधर से कोई बादशाह जहाज प
र सैर देखता चला आता था · दूर्से तरता वहता हुआ देखा ज
ब पास आया तो उसपर आदमी सा नजर आया · खुदाके
डरसे उसके पीछे डोंगा · दौडाया मल्का में जान कहा · थी ·
अंजु मन आरा और जान आलम के ध्यान में जी डूब गया
था · वे होस पडी थी · मगर कही मिट्टी डाले से चांदनी छुपा
हे · हाती मरे पर भी भारी होता हे · चेहरा चमक रहा था ·
बादशाह ने गुलाब केवडा छिडका · इतर सुघाया · वाजू
बांधा · और भोत से टोने टुटके किये · दो तीन · घडी मेंआ
खें खोली · देखातो जहाज पर हूं और एक विगा ना आ
दमी सिराने बेठा हे · सरम से सिर झुका लिया · तमाम ब
दन पसीना पसीना होगया · बादशाहने पूछा के आपका
नाम क्या हे · ये बडी मुसीबत में पडी एक तर्फ़ से सरम
दबोच तीथी · दूसरी तर्फ़ लाचारी मसोस तीथी · वे
जबाब दिये क्यों कर बनती हे · होले से कहाके में तवा
ह जली ल और खुवार हूं दिलको टुकडे हो गये · बुराई
पंजे फाड कर पीछे पडी हे · राह भूली हे · और क्या जाने क्या
[illegible]ती हूं बादशाह के टपसे आंसू टपक पडे · जानाके ·
[illegible] शाहजादी हे · खाना मंगवाया मगर मल्का न्ने खाया
[illegible]तो बादशाहने गिड गिडा के कहाके आप खाना खा
[illegible]र घरका पता बताईये · जब आपस में दम आवे
[illegible] वहां पोंचा दूंगा · मल्का ने कहाके जिसके पल्ले
[illegible]ओ · जंगल में भटक२ कर इसी से पानी गायब
[illegible]र तुम हमारी काम तमाम करो और वही ·
[illegible] वडखेडा मिटे · झगडा चूके तुम्हारा बडा

अहसान होगा उसने कहाके फिर ऐसी बात मुझे न नि
कालना नही तो मेरा खून तुम्हारी ही गर्दन पर होगा
लाचार मल्का ने मूं झूठा किया दो चार दिनमे हिलने
फूलने लगी बे सहारे उठ बैठ नीथी जहाज चलते चल
ते उस बादशाह के शहर में पहुंचा मल्का को एक बड़ा
महल मिला लोडियां बादियां, आया, ददा, सब आनमौ
जूद हुई शाहजादी योंकी तरह रहने लगी एक दिन
बादशाह ने कहा के तुम छुपाती हो मगर हमें मालूम हुआ
के तुम शाहज़ादी हो हमारी तुम्हारी मुलाकात इस बहाने से
बधीथी नदीनाव संजोग अब तुम मुझको अपने नोकरो में
धर लो जो कहोगी सो करूंगा हांजी का नोकर रहूंगा
मल्का ने जबाब दिया के मैं ने तमाम उमर में बादशाहत का
नाम भी न सुना आप को खुदाने बादशाह बनाया है सोउ
सी धुन में रहा करते हो बिल्ली को सुपने में भी छीछड़े ही दिख
ते हैं मै तो एक मुसीबत की मारी आफसी हूं खुदा जाने कोन
हूं और किस तरह यहां तक आई हूं मेरी तर्फ क्या देखते हो क्या
कुनबे में कोई और नहीं है अगर मेरा खून लिया चाहते हो तो इ
ख्तियार है यहां नहीं बोल सक्ती तो क्या हुआ खुदा के
सामने पल्ला ह पकड़ लूंगी इस वक्त तो तुम्हारे बसमें हूं
जो चाहे सो करो और जो मेरी खुशी मंजूर है तो बरस दिन
तक मुझसे नबोलो शायद मेरे वारसों का पता मिले कोई
डूबा तीरा चला आवे मुआ जीता फिरे नहीं तो फिर जो तेरे दि
ल में आवे सो करना बादशाहो के यहां जुल्म नहीं होना है
और यूं तो मुझे इख्तयार है दीवे के नीचे अंधेरा मशहूर
है बादशाह ने सोचा के डूबा हुवा भी कहीं तीरा है

इतने और सबर करो · पलख मारने में बरस होजाय गा · फिर अपने आप मान जायगी · ये सोच कर मल्का से क हा के भोत खूब जीनाच नचावोगी सो न्वा चूंगा · मगर जो खफा न होगी तो · एक बात मैं कहूं और वो यह है के मै कभी २ आप को देख जाया करूंगा · मल्का ने इसे गनी मत जा ना · बाद शाह और कैदी का फरक सब को मालूम है · अब ये ठैरि के पांच वे छटे दिन पहिले जो खोजा आकर खबर कर आता · फिर बाद शाह आता · और दो चार घडी बैठ इधर उधर की बात कर चला जाता · अब ईश्वर की देखिये · मल्का के महल के सामने बाग था · फूल खिले · हौज़ भरे · नहरे जारी · फव्वारे छूट रहे · चबूतरे बने · क्यारियां अजब बहार दिखाती थी · मालनें आठ पहर इधर से उधर और उधर से इधर · फिरती थी · कही उखाड़ा और कही जमाया · कोई · बोती और कोई जोतती · किसीने फूल उठाया · और किसीने फल तोडा · कोई खुरपे से · घास छीलती · कोई टूटा झडा पत्ता · गिरा पडा · कांटा क्यारी से निकाल नी थी · दरखतों पर जान वर बोलते थे · सब अपने हाल में मस्त कोई किस को न पूछ ता · मल्का सवेरे और श्याम यहां आया करती और वे दरख ति यार रोती · बेलों को देख कर जान आलम के बाल या द आते · तो सिर को धुनती और आसमान के तरफ देख कर कहती · ॥

कवित्त

वो दिन खुदा करे के खुदा भी जहान हो ॥ १॥
अपना किस्सा गैर की वहां दास्तान हो ॥ २॥
कभी फूलों से बाते करती · और कभी फूल को खिलने हुए

देख कर फुट के रोती और दिल से कहती (जल तुकिया, दूसरे से के बिल कुल धुवा नही।) वो बेई मान क्यों इतना नपडपता है. अब मेरे पास क्या रहा' क्या दूं और करूं॥

कबित्त॥

॥ अब क्या रहा है जिसपे के दुश्मन का गम करे.
हम तो बुरों की जान को पहिले ही रो चुके॥ १॥

इसी तरह मल्का दिन काटती. अगर सोचो तो दुनियां कुछ नहीं एकसा हाल नहीं रहता. मसल मशहूर है. ईश्वर की माया, कही धूप कहीं छाया. कभी बुल बुल बोलती है. कभी कव्वे कावें कावें करते है. पहिले तो कभी यार मिलता नहीं. और जो मिले तो किसी न किसी सबब से अलग हो जाता है. इस सहारे पर लोग जान देते हैं और जी बेच कर रोग मोल लेवे है. एक दिन मल्का बाग में बैठी थी और अंजुमन आरा और जान आलम का ख्याल आया. एक हीव फेवे राग छाया. एक पेड़ के नीचे जा खूब दिल खोल कर रोयी. शाम का वक्त था. जान वर बसे रा लेते थे. पेड पर एक तोता भी बैठा था. उसने जो इसे रोते देखा तो. बोला के शाहज़ादी खैर तो है. इतना क्यों रोती हो. मल्का और भी रोई और कहा कि वारे किस्मत अब तो जान वर भी मुझ पर अफ़सोस करने लगे. बंधी बात है. के जब कोई किसी की मुसी बत का. हाल पूछता है. तो दिल उमंग आता है. मल्का ने बे इख्तियार रोकर कहा. ऐ जान वर तुझे क्या बताऊं. बेकस हूं कोई कहने सुनने वाला नहीं. ना आगे नाथ न पीछे पगा है. कोई वाली वारस नहीं. अगर जमीं फट जाय तो उसमे समा जाऊं. गैरों में आफ़सी छाती पर मूंग दले.

जाते हैं· तोते ने कहा यह्ना मुहब्बत की बू आती है· तुम्हा
री बातों से कामी फटी जाती है· खुदा वास्ते अपना हालतो
कहो· मल्का ने सब कह दिया· सुन्ते ही· तोता जमीन पर
गिर पडा· मल्का घबराई· कि ये क्या हुआ· समझाने
आया था· आप ही ढेर हुआ· लेने के देने पडे घडी भ
र में· तोते को होश आया· तो वो बोला के ए मल्का
मैं वोही कम बख्त तोता हूं· जिसने अंजुमन आरा का
जिक्र सुना· कर जान आलम को तबाह किया· और बा
की हाल तो तुम्हें मालूम है· मल्का ने उसे गोद में उठा
या· और यहां तक रोयी के बेहोस हो गई· माल ने
दौडी आई· के आज क्या है; जो मल्का को गस पर गश
चले आते हैं· जब होस मे आई तो· तोते ने कहा के ज
मा खातिर रक्वो· जान आलम और अंजुमन आरा
जीते हैं और एक ही जगे है· फकत तुम्हारा ही ख्या
ल है· मैने ये बात नजूमियों से पूछी थी· अब बुरे दि
न गये· और अच्छे आते हैं रात की रात तोता वही·
रहा· सुवह को रुखसत हुआ· मल्का ने एक पर्चा लि
खकर दिया· और कहा के शाहजादा जहां मिले ये ख·
त निशानी देकर जो कुछ देखा है· जबानी कह देना, तो
ता वहां से उडा और खूब जंगल और शाहरों की खाक छा
नी· एक दिन शाम को वक्त वो थक कर एक पेड पर बैठ
कर रोने लगा· उसी वक्त जान आलम और अंजुमन आ
रा तोते की शकल बनाये उसी पेड पर आये तोता उन
का मूं तकने लगा· और फिर खूब रोया· अंजुमन आरा
ने कहा· जान आलम देखना ये तोता रोता है· शायद हमा

रीशकल देख कर इसे रोना भरआया • तोता बाते समझता था • बोला के खुदा तुम्हे वो रंज न दे जो हमपे है • दुश्मन से दुश्मन कामी ये हाल नहो • एक सख्स गेरों में जाके फसा उसकी वानों से छाती फटती हैं • अगर जरासा हाल कहूं तो पत्थर पानी होकर वह जाय • जान आलम ने कहा वो कौन है • तोते ने सब कहानी कही • अंजुमन आरा मल्का का नाम सुन कर खिली • दोनों ने सूरत बदली • तोता पहिचान कर पांव पर गिर पड़ा • शाहज़ादे ने गलेसे लगा लिया और कहा की उस दिन के बिछड़े आज मिले • कुछ मल्का का हाल तो कहो • तोते ने वो खत दिखाया • अंजुमन आराने आखों में लगाया • सरनामा ही देखने से मालूम होता था • के घबराहट में लिखा है • क्यों के अंजुमन आरा की जगे जान आलम और जान आलम की जगे अंजुमन आरा लिखा था • लिखते २ जो रोई थी तो खत भरा हुआ था • और एक राक बात दो २ तीन २ दफे लिखी हुई थी • गेर खत खोला उसमें लिखा था के ऐ मेरे प्यारे खुदा तुम्हे सलामत रक्खे • दिलका हाल क्या लिखूं • उमर थोरी है • और कहानी बड़ी • अगर मेरी जिंदगी चाहते हो तो अपनी सूरत दिखाओ • नहीं तो पछताओगे तुम ने देर की और हमने जान दी • फिर कुछ हात न आयेगा • मिट्टी के ढेर के पर खाक उड़ाओगे • कभी इतना न हंसे थे • जितना अब रोते है थोड़ा सा दम और वाकी है • क्या करूं कहां जाऊं किस्से कहूं • किसको सुनाऊं आठ पहर तेरी शकल आंख के सामने है • अगर ये हाल मालूम होता तो तुझसे बाते करने की आदत न डालती • ॥

कवित्त ॥

जोमें ऐसा जानती कि प्रीत किये दुख होय
नगर ढढोरा फेरती के प्रीत न कीजो कोय ॥

मेरे तडप नेसे पडोसी घबराते हैं महल में बैठी हूं मगर जह
ल खाना मालूम होता है जिन आंखोंमे तुम आंसू की बूंद
न देख सक्ते थे उनसे लहू के दर्या बह गये ॥

कबित्त॥

तुमने हमारी पर खबर ली ०॥
छाती पत्थर की कौंजी करली ॥

जब तुम्हारी बाते याद आती हैं नींद उड जाती है बचैनीकी
रात पहाड मालूम होती है काटे नही कटती चारपाई काट
ने को दौडती है सुपने में भी नींद नही आती खाना
पीना हराम होगया जो सिर आपके घुटनो पर रहता
वो पाटियों पर पटकती हूं सितारे मेरे जागने के गवाह हैं जो इ
स्का भी यकीन नही तो मसजिद के मुल्लाओं से पूछो जिनकी नींद
मेरे सबब से हराम होगई मुर्गी को में चिल्ला के जगाती हूं ज
ब हम तुम साथ थे तो ये हमे जगाते थे अब हम मन मानता
बदला लेते हैं दिलमें है के थोडासा जहर लेकर खालूं क्यों
के तुम वहां और में यहां ऐसे जीने का क्या मजा है अगर जी
ते जी मिले तो सब दुखडे कह सुनाये तो लाचार हैं यही अ
रमान ले जायेगें आठ पहर यही मांगती रहती हूं के तुम्हा
री शकल देखूं के दिलको चैन आये मौत का डर जाय और
खत लिखूं जिसदम जान आलम और अंजुमन आराने ये ख
त पढा दिल टुकड २ होगया आंसू टपक पडे तमाम
खत पानी पानी होगया रात भर तो वही रहे सवेरे तो

चरित्र ९५

दस्तूर है के खुशी के बाद गम और गम के बाद खुशी होती है· एक के पीछे दूसरा लगा हुआ है· इन बिचारों नेबडी मुसीबतें उठायी· बारह बरस बाद कूडी केभी दिन फिरते हैं· इनका भी दरिद्र गया· मल्का का ये दस्तूर था· के रोज शाम को उसी पेड के नीचे आकर रोया करती· इस दिन भी मामूल के मुवाफिक आईथी· और अपने आप से कह रहीथी· के होटो पर दम आगया· मगर अब तक पता नहीं· अब क्या मिलना होता है· ये कह रही थी· के तोतेने आकर सलाम किया· वो खुश होकर बोली· किरो मेरे प्यारे· क्या खबर लाया तोते ने कहा खबर देने वालोंको खिलत और इनाम मिलते हैं· पहले ये बताईये आप मुझे क्या दीजियेगा· मल्का ने कहा जल्दी बता क्या हालहै· नहीं तो अभी दम उलटता है· तोते ने कहा के जो आपक हो वो सच· मगर ऐसी खबर जलद नही कहते हैं· तोता कभी कुछ और कुछ कभी कहता कभी मल्का खुश होती और कभी बेचैन होकर खूब रोती· विधर अंजुमन आराजा न आलम घबरा रहे थे· झट सूरत बदली और सब गले मिल मिल के रोने लगे· इन कि आवाज से लोडियां बांदियां जमा हुई· देखती थी· सदके हो· तीथी· सच है· खूब सूरती भी अज ब चीज है· बेगाना भी एकदफे अपना होजाय है· यहां बुड्ढे और लडके बराबर हैं· बुढिया भी सस की हड्डी लिये फिरती है· हंसते हंसते बाग दरीमें आये· तोतोंने अपने दुखडे रोये तो तेको येबात बुरी लगी· कहा ये झगडा छोडो गडे हुए मुर्दे न अखा

[illegible]

मल्काने तोते से कहाके जो दोस्त नादाना है वो दुश्म
न से कुछ कम भी नही. हम तो शाहज़ादे के हातसे
तंग आगये. दो तीन दफा तो अपनी बेवकूफी की सज़ा
पा चुका है आप मुसीबत में पडा और हमको मुफ़ में तबाह
किया. आगे आगे देखिये क्या होताहे. इस के बाद कमरे में
बैठ दो दो प्याले शराब के उडे तबले पर थाप पडी नाच
होने लगा. वहां के बाद शाहको भी खबर हुई. उसने क
हा वाहवा: एकतो थी दो और आये फिर दो हज़ार सवा
र पहरे पर भेज दिये. बाग को घेरलें कोई बाहर नजावे
पावे. जान आलम को खबर हुई. कहा कुछ डर नहीं सवे
रे समझ लेंगे. अबतो तबले पर थाप पडने दो. रातभर स
वार घेरे खडे रहे. यहां मजा आता रहा. गुल शान उडते
रहे. जब तडका हुआतो. जान आलम न्हाया. और तख्ती
निकाल कुछ पढता हुआ बाहर निकला जो घेरने आयेथे
आप घिर गये. पांव पर गिर पडे गुलाम हो गये. बादशाह
को खबर हुई और फौज भेजी. इनपर भी जान आलम ने
दो अच्छर फूंक दिये. फिरतो ये हाल थाके जो आया उसने
कढाई चाटी. (चल वुदू मोरी का राह) फिर तो मशहू
र हुआ के ये कोई बडा जादूगर है. तमाम फोज उस के
साथ होगई. बादशाहको गुस्सा जो आया तो अकेला
ही लडने को निकला. तलवार चली. दो एक जखमी हु
ए. फौजने बादशाहको जीता ही पकडा. जान आलम के
हवाले कर दिया. उसने छाती से लगाया बराबर बैठाया
और कहा के हमतो आपके यहां महमान आये हैं तुमने
दावत के बदले अदावत की. उस का मजा. चखा.

सैर देखी · मगर तुम्हारा मुल्क हमें न चाहिये · ये तुम ही को मुबारिक रहे · हम तो मुसाफ़िर हैं · आज यहां कल वहां · बादशाह शरम के मारे मर गया · और कहा के आपही सलतनत के लायक हैं · मेरा कहा सुना माफ़ करो · फिर बडी धूम धाम से दावत हुई · हज़ारों आदमी जान आलम को देखने आये · बाग में आठों पहर मेला लगा रहना · सब मिले मगर जान आलम के लश्कर का पता नहीं · चारों तर्फ़ जासूस भेजे · चालीस मंजिल पर पता लगा · मगर किसीमें जान नथी · जान आलम का नाम लेले रोते थे · बडी मुसीबत से सब जान आलम के पास पहुंचे · अपना हाल कहा · इनाम पाया · फिर वहां से कूच हुआ · खूब तबले खडग ते शरावे उडती · ॥

१६ चरित्र ॥

एक दिन एक जंगल में पहुंचे · पूस का महीना था · जाडे के मारे जानवर घोंसलों में जम गये थे · भूखे प्यास से मरते थे · किसीका होट नहीं मिस्ल सकता · ये हाल था के जहां मूंसे बात निकली के होटों पर जम गई · जोरू खसम साथ सोये तो लिपटे ही रहे · पहाड मारे बर्फ़ों के जमे हुए थे ये जंगल कशमीर को मात करता था · विलायत के पहाडों को नाम धरता था · लुजोंने बटेरे पकड ली · कव्वे लूलों के हात आये · लंगडे हिरन बांध लाये · ओस पत्तों पर पडी और जमी गई · आग पर लोग सदके होते थे · हीन्दु और मुसलमान पारसी योंका दम भरते थे · आफ़ताब को ख्वामाशरूक ठंडे सांस लेते थे · दांत से दांत बजता था · हो ड नीलम को शरमाते थे · वो पाला पडा के तमाम लश्कर ·

को जाडा चढ आया • तिरछे ऐंठे जाते थे • तल-वार • खड खडाने की जगे दांत कड कड़ाते थे • चक मक बे कार सांप के पत्थर आग न देते थे • के चुवेकी मिट्टी आ लाव समज लोग फूंकते फूंकते हाय नेथे • पर वीजने को चिराग समज हातमें उठा लिया • सबने जोरू वोको याद किया • जाडेकी मिसल मस हूर है • (जीवेंगेवो जो सोवेगे दो •) जान आलम ने कहा अब तो यहीडेरे होने दो • फिर अंजुमन आराको वुला • बोतल की डाट खोली • खूब ऊडाई • फिर नशे की तरंग में सूजी के मल्का • ओर • अंजुमन आरा मुझसे भौन अ लग रहीहै • औरत का क्या एत वार • वे पाक इनोने • कही धब वा खाया है • ये जो समाई ये तो आपस में जली कटी बाते होने लगी • बात बढ गई • हिन्दी म सल है • (हांसी मे खांसी। •) तो ना उडती चि डिया पेछान ताथा • बोला • हजूर आप का खि - याल कहां है • मजे के वास्ते शराब पीते हैं • आ पर को बहक गये • नझेल सके • शराब पी ना रा से वैसो का काम नहीं • सांप को खिला ना पड़ ता है • भौत से इस्में बह गये • यही तो मर्द और ना मर्द मालूम होता है • योंतो सभी भट्टी पर जा कर दो पैसे का ठर्रा पी आते हैं • फिरकी चड़ में लोट ते फिरते हैं • मैने बहुत सा ज़माना देखा है • मै एक कहानी कहता हूं जरा कान धर कर सुनो तो • सब ॐ तुम्हारे वहिम जाते रहे गे • जान आलम ने कहा के जल्दी कह • तोता बोला • ॥

कहानी॥

एक मुल्क में एक बडा बडा धर्मात्मा राजा था॰ उसके श
हर में दो भाई थे॰ एक तो शहर का काजी और दूसरा मुफ़
ती था॰ जाहर में बडे भले मानस और इमान दार मालूम
होते थे॰ बाद शाह ने मुफ़्ती को किसी काम के वास्ते वाहर
जाने का हुक्म दिया॰ वो अपनी औरत अपने भाई को सों
प गया॰ काजी कभी कभी उस औरत के पास जाता था
कहीं आंख जो पड गई तो औरही समाई॰ वो औरत
बडी खूबसूरत॰ और बडी पतीव्रता थी॰ एक दिन काजी
ने उस्से सवाल किया॰ मगर उसने न माना॰ काजी –
घबराया॰ कि बात की बात गई॰ और हंसीकी हंसी हो
गी॰ यह भाडा जरूर फुटे गा॰ कुलियां में गुड न
हीं फोडा जाता है॰ ये सोचा कर वो बाद शाह के
पास गया॰ और कहा॰ कि मेरा भाई॰ अपनी औरत मु
के सोंप गया था॰ मगर मैंने उसे दूसरे के साथ पकडा
है॰ बाद शाह ने काजी समझ कर कहा कि तुम्हें इख़
तियार है॰ जाओ सो करो॰ काजी उसे अलग ले ग
या॰ और कहा कि अब भी मान जा॰ नहीं तो॰ बुरा हो
गा॰ वो कब॰ इस गीदड़ भपकी से डरती थी॰ एक न मानी
और मरने को तैयार होगई॰ वो हराम जादा उस जंगल
बाहर ले गया॰ और नोंकरों से कहा कि इसे खूब पत्थरों से
मारो ये हाल देख कर हजारों आदमी कांपते थे॰ आखिर
को सब चले गये॰ ईश्वर के बडे कारखाने हैं॰ उस औरत
को चोट तक भी न लगी॰ शाम को उसने पत्थर सकीये॰।

अौर वटिया वरिया जंगल को चली गई॰ वहां एक फ़क़ीर रहता था॰ अौर उसका एक छोटा बच्चा था॰ उसने लौंडे ५ पालने में रइस्को रक्खा॰ उस फ़क़ीर का एक गुलाम बडा हराम ज़ादा अौर सैतान था॰ उसने जो जवान परी अौरत देखी॰ तो फूल गया॰ बहुतेरा॰ उतार चढाव दिये मगर वो: ढब पर न चली॰ उस हराम जादे ने उस फकीर के लवैडे को मार डाला॰ अौर इस विचारी पर तोहमत रक्खी॰ मगर फकीर नें कुछ न कहा॰ चुपका होरहा अौर वास अशुरफ़िया देकर उस अौरत को रुख सत किया॰ वो चलते चलते एक शहर में पहुंची॰ वहां एक आदमी को मुश्के बांधे लिये जाते थे॰ अौरत ने पूछा कि इसकैं ने क्या गुनाह किया है॰ लोगो ने कहाके इसे २० अशुरफ़िया एक की देनी है॰ अौर इसके पास देने को कुछ नहीं: इस लिये हम इसे फांसी देने को लिये जाते हैं॰ उस अौरत को रहम आया॰ अौर उसने वो वीस अशरफीयां दी॰ ये बद माश छूटते ही॰ अौरत पर गिरा॰ अौर कहाकि मैंतो तेरे साथ चलूंगा॰ तूने मेरी जान बचाई॰ मैं ने तेरी गुलामी करूंगा॥ इस वहाने से सात हो लिया॰ चलते चलते एक नदी मिली वहां वो: अौरत नहाई॰ अौर कपडे बदले॰ इतने में दो जहाज आये॰ लोगों ने जो इसे देखा तो हक्के वक्के रह गये॰ उस हराम जादे से पूछा के अौरत कौन है॰ उसने॰ कहाकि मेरी लोडी है मोल तोल होने लगा बहोत से रुपये लिये अौर आरत को किसी वहाने से जहाज पर चढा आप चल दिया॰ उस जहाज पर दो सोदा गर थे॰

औदागीं इस पर भिड़ी हुये तू तू में में होने लगी· आखिर को · यह ठहरी किये औरत अभी माल के : जहाज़ पर रहे· और जब असबाब बिक चुके तो जिसे पसंद करे वो ले· थोडी देर में आंधी चली · सौदागरो वाला जहाज डूब गया · और माल वाला बचा · और इसी पर वोह औरत थी चलते चलते · उसी शहर में पहुंचे वो: जहाज वहां आया · जहां इस बिचारी पर पत्थर पडे थे · अब और सैर देखो जिस ने इसे बेचा था · वो: यहां के बादशाह का · बकसी हुवा · फकीर का गुलाम वज़ीर था · मुफती भी सफर से फिर आया · मगर जोरू की फिक्र में पडा था · इसी · शहर में एक बडा ऋषी रहता था · भगवान ने · उसको हुक्म दिया की · इस जहाज पर हमारा भक्त है बादशाह वजीर बकसी · काजी · और मुफ़ती · उनके पास जाकर · जो कसूर किया है · उससे · कहा है · जो वो माफ़ कर देवे तो हमसे भी माफ़ किया · नहीं · तो अभी सब ।मटिया मेल हो जाय गे ॥ उस ऋषी ने ये हाल बादशाह से कहा के बादशाह सब को · साथ लेकर जहाज पर आया · और वोह औरत परदा छोड कर हो बैठी · बादशाह से कहा कि मैने - तह की कात नहीं की · और योही मुफती की जोरू को काजी के हवाले कर दिया · औरत ने कहा महाराज क्षमा करें · फिर मुफ्ति ने कहा कि मुझको अपनी औरत की तरफ़ शक है · ॥—

वो बोली तू अभी चुप रह • फिर काजी ने • कहा के मेरे कहने से उस औरत पर पत्थर पडे थे • वो बोली के तुझ पर भी महा राज सहाय करे • फिर उस फ़कीर वाला • गुलाम हा आया • और कहा के • मैने लडका मारा और • औरत पर तोहमत लगाई • उस ने कहा के तेरे ऊपर भी महा राज दया करे • अब सब के बाद बकसी आया • और मगर उसकी जान न बकशी • और कहा के जिस थाली में खाना उसी थाली में छेद करना किसने बताया है • फिर पर्दा उठाया • और मुफ़्ती से कहा के तूने मुझे पैछाना • आज तक तो बर्क हुई हूं • अब ये माल मता तू ले • और में कोने में बैठ कर अल्ला २ करूं • सब लोग इसे देख कर दंग हुये • और बाद शाह सला मत भी अपना सा मूं लेकर उलटे फिरे • तोता ये कहानी कह कर बोला के जो पूरे हैं वो पूरे ही हैं • तुम सबको एक लाठी हांकते हो • पाचों उंगलियां बराबर नहीं होती • ये सुनते ही जान आलम का नशा हलका हुआ • और वो मल्का और अंजुमन आरा के पांव पर गिर पड़ा • और बोला के मैने बहुत सा फक मारा • और २ गुखाया • मेरा कसूर माफ़ करना • में घोडे पर सवार हूं • जान बूझ कर नहीं • कहा • चमडे की जबान तो है • फिसल गई • फिर सब मिल कर खूब हंसे और आगेको कूंच हुआ • ॥

१७ चरित्र॥

चलते चलते जान आलम अपने शहर में पहुंचा • दो कोस पर डेरे डाले • वहां वालो ने जोये धूम धाम देखी • तो जाना के कोई गनीम आया है • वजीर ने बाद शाह से जाकर कहा के जिस दिन से जान आलम गया था • उसके मा और बाप रोते २ अंधे हो गऐ थे • पीड और पेट की मुहब्बत ऐसी होती है • बादशाही का किसको गम था • नाम के वास्ते लकीर पीटे जाते थे • बाद शाह ने वजीर से कहा के मैं तो आप मरा हुआ हूं • जो जी चाहे वो ले ले • मुझे कुछ काम नहीं • वज़ीर ये सुन कर जान आलम के लश्कर में आया • अब तो ये और ही जान आलम थे • बात बात पर फुंकारें भरते थे • फ़ौज भी बहुत सी साथ थी • वजीर ने बिलकुल न पहचाना • और कहा के हमारे बाद शाह का आंख अंधी हो गई है • बेटे का पता नहीं मिलता मौत को दोनो हाथों से बुलाते है • मगर वो भी नीतेरा बाईस बताती है • अगर आपको बाद शाहत लेनी है तो लीजिये • कहां कोई कहने सुन्ने वाला नहीं है • जान आलम वजीर को खिलत दे कर रोया • और कहा के गोद के पाले को अभी से भूल गये • आप बाद शाह के पास जाईये • और मेरे तर्फ से सलाम के बाद कहिये के गुलाम हाजर है • वजीर प[illegible]न तेही पांव पर गिर पडा • जान आलम ने गले लगा[illegible]या • फिर वजीर घर झपटा और बाद शाह को मुबारक बाद दिया • और कहा के इस शहर के नसीब जागे • हमारी दुआ कबूल हुई • बाद शाह ने कहा • (मेरे को मारे शामदार •) क्यों मेरे जखमों के ऊपर नमक छिडकता है • ये बातें होई रही थी के जान आलम

महल में आया बडा रोना पीटना मचा और तो ने गुल मचा या माबापने बेटे को गले लगाया दोनों की आंखें खूली॥ बादशाह उसी वक्त सवार हो कर वह वोसे मिलने आये) शहर वाले साथ आये सवारी उलटी फिरी दोनों लश्कर अर्द लीमें थे मल्का और अंजुमन आरा के डोले पर जवाहर अशर्फियां लुटाई हरी कं गाल सेठ साहू कार बन गये जान आलम की माने जो मल्का और अंजुमन आरा को देखातो बलायें लेने लगी दूसरे दिन मल्का और अंजुमन आराने बादशाह से कहा अगर हजूर का हुक्म होतो हम माहनलन से मिल आवे। बादशाह ने कहा वो बडी मुफट है जाकर पछताओगे मियामिठु भी मोजूद थे वे से बोले पछताने की क्या बात है अपना घर में आते जाते हैं दो कहते हैं दो सुन्नते ही है बादशाह चुप हुआ शाहजादी यों ने सवारी मंगवाई तोता पहिले से मोजूद हुआ और झुककर सलाम किया बैठा उसने शरम के मारे सिर झुका य लिया इतने में सवारी भी आन पहुंची अबतो माहनलक कोउठना पडा गले मिल मिला कर फिर बैठ गई अंजुमन आरा तो गो वर गणेश थी चुनसी बैठ गई मल्का आठो गांठ कुमैद थी बोली शाहजादी हमारा तुम्हारा दावन चोलीका साथ है तुम हमारी ते कुछ फिक्र मत करो हम दांत काटी रोटी खाने वाले हैं ने में तोता अंजुमन आरा के सामने आया और माहनलन से कहा के हजूर अब फर्माईये सच्चा कौन है और झूठे के मूं में क्या है और तो क्या कहूं आपकी तकरार की बदौलत ये चांद के टुकडे जान आलम को मिले मेरे सबब आपको शरम हुई झूठे के मूंमे घी शक्कर हो मल्का मुसकुराई मगर

सुकबहत्तरी
मतबअ इलाही मच्छूखां के प्रबंध से छापी गई

श्रीगणेशायनमः

अथ सुकवहत्तरीभाषा

श्लोक

प्रणम्य शारदा देवी दिव्य ज्ञान समन्वितां
मनश्चित्त विनोदार्थं क्रियते शुकवहत्तरीं॥१॥

पृथ्वी के विषें एक चंद्र कला नाम नगर था राजा विक्रम सेन राज करता था वहां हरिदत्त नाम सेठ वसते रहे ताके सुर सुंदरी नाम स्त्री रही ताके पुत्र मदन ताको रतन सेठ की बेटी प्रभाव ती सों व्याह किया सो रूप लावन्य युक्ता सो मदन सेन व्याह आसक्त वऊत ऊश देख कर पिता मन में चिंता करने लगा पुत्र व्यापार नहीं करता स्त्री से आसक्त रहता हे इससे सथरो ग होगा यह समझ कर चिंता करने लगा इस हेत में जो बात प्रगट भई सो कहते हैं चित्त दे सुनो एक विदेशी ब्राह्मण था विक्रम नाम सो वो गंधर्व पर्वत को गया उस पर्वत में एक सिद्ध देखा महा तपेश्वरी तप करता है जाकर दंडवत किया तब सिद्ध ने वऊत आगत स्वागत किया तब विप्र ने कहा एक वस्तु अपूर्व मो कों दीजिये किस वास्ते कि जो पृथ्वी पर अटन कर्त्ता कथा वार्त्ता पर चित्त लगाता नहीं और जो ऐसे ऋषीश्वर के पास से न पाऊं तो कहां से पाऊंगा जो ऋषी की सेवा करे तो उत्तम है निर्फल नहीं और श्लोक पढ स्तुति की। श्लोक। अमोघा वासरे विद्युत् अमोघं निशि गर्जितं॥ अमोघाच्च सतां वाणी अमोघं सिद्ध दर्शनं। १। ऐसा ब्राह्मण ने कहा तब सिद्ध ने विचार के ध्यान किया उस वक्त एक सुआ एक सारो सिद्ध को दृष्टि आई उन दोनों की जन्मांतर की बातें जानिवे में आई कि ये दोऊ गंधर्व हैं कोई ऋषीश्वर के शाप से तोता योनि पाई है

और ऋषीश्वर अनुग्रह किया जो पृथ्वी के विषे मनुष्य भाषा किया
प्रभावती आगे रात्रि को उपदेश करे आत वह सुवा गंधमादन प
र्वत पर जायगा तब शरीर को छोडेगा फिर गंधर्व होजायगा अ
व सुक अपना शरीर वेचे मुहर ५०० को तो या ब्राह्मण को दिव
वे तो पाप से छुटे ऐसे सुवा सुवटी को देव ऋषि ने कहा कि अरे
सुक तू इस ब्राह्मण के संग जा और मुहरन को दान कर तेरा भ
ला होगा इतना सुन सुक हाथ पर आन बैठा तब ऋषि ने उस
ब्राह्मण से कहा अरे ब्राह्मन तू इसे लेजा तुझे कोई ५०० मुहर दे
उसे दीजियो मेरी आज्ञा से तेरा भला होगा ऐसा जब कहा त
व वह ब्राह्मण सुआ को ले आज्ञा मांग के चला बाद इस के
वहुत देशांतर फिरा सुक ने कथा वार्ता वहुत किया ऐसे वार्ता
कहते विक्रम ब्राह्मण चंद्रकला नगर विषे आया हाथ मे पिंजरा
लिये हुए श्रीदत्त की हाट के आगे विश्राम किया तिसके पीछे वहुत
श्लोक सुक सुंदर कहत भया अपूर्व वार्ता हित उपदेश शास्त्र पुराण
वेद कला ज्ञान विज्ञान कहने लगा तब वह श्रीदत्त सुक की कथा सु
नकर वडा प्रसन्न हुआ और यह सोचा कि जो यह ब्राह्मण मुझे
सुवा दे तो मैं मांगूं और जो द्रव्य चाहे सो दूं यह विचार ब्राह्मण
से वोला हे तपस्वी यह सुक सारा मुझे दो तव ब्राह्मण वोला कि
जो ५०० मुहर मुझे दे तो मैं दूं तव सेठ वोला हजार मुहर ले तव
ब्राह्मण वोला ५०० से कम ज्यादा नहीं लूंगा मुझे सिद्ध की
यही आज्ञा है तव साहू वहुत प्रसन्न हो उस ब्राह्मण की
आतिथ्य सेवा की और ५०० मुहर दीं वहुत सा खुश कर सु
क सारिका ले अपनी चित्रसाली में रक्खा वह राति दिन क
हा करे एक सुक ने सेठ को देखा तो वहुत उदास है सुक वोला
हे सेठ तू उदास क्यों कर है तव सेठ वोला कि मेरा वेटा मदनसेन

है अपनी स्त्री प्रभावती सें वहुत आसक्त है क्षरा भर उससे जुदा नहीं होता इस से मुझ को वडा क्लेश है और मैं तो वहुकृपा से र राजा विक्रमसेन की वेटी का व्याह है उस ने यह आज्ञा दी है कि तुम देशांतर को जाके रत्न वस्त्र आभूषरा अनेक भांति के लावो अगर न जाऊं तो राजा दंड दे और जाने की सामर्थ्य नहीं इस से अति चिंता में रहता हूं तासों शुक अव कहो सो करूं तव शुक वोला कि पिता सोच मत करो मैं मदन को वोधन करके तुम्हारे पास लाऊंगा ऐसा कह के मदनसेन के घर गया जाकर आशीर्वाद दिया मदनसेन प्रभावती ने वडा आगवस्तागत किया तव शुक ने अनेक वार्ता किया और कहा कि पुत्र वही उत्तम है जो माता पिता की आज्ञा माने और जो न माने तो नर्क पडे सो ऐसा वेद शास्त्र कहता है ऐसे सुन मदनसेन एकांत में शुक से वोला कि पिता को किस वात की चिंता है सो तुम कहो तव शुक वोला कि एक कथा सुनो एक चंपावती नाम नगरी रही वहां सत्य शर्मा ब्राह्मरा रहता था धर्मशीला भार्या उसकी थी जिस के वेटे विद्यावंत गुरावंत थे परंतु माता पिता की आज्ञा न करते देशांतरों को गये विद्या वहुत पढी महा तपस्वी हुए तीर्थ यात्रा वहुत किया एक दिन तीर्थ को जाते थे राह में धूप लगी तव सिरस के नीचे खडे हुए उस वृक्ष के ऊपर वगुला वगुली वैठे थे सो वगुली तपस्वी के माथे पर वीट की तव तपस्वी को क्रोध हुआ देखते ही दोनों भस्म हुए तव ब्राह्मरा आगे चला मन में सुख भया तपस्या पूरी हुई यह विचार के देश को गया एक ब्राह्मरा के घर जायके कहा भिक्षा देहो यह वात ब्राह्मन की स्त्री ने सुनी भिक्षा देने चली उसी वक्त पति ने जल मांगा वह पतिव्रता थी इस से जल लेके पति को

दिया पाछे भिक्षा ले ब्राह्मण को देने लगी तब ब्राह्मण ने क्रोध
किया कि मैं शाप देऊंगा तब ब्राह्मणी बोली रे तपस्वी मैं बगु
ली नहीं हूं जो अपनी तपस्या दिखावे ऐसा कह बहुत सा निंद्
का तब ब्राह्मण ने जाना कि मैं जो पाप किया इससे प्रसिद्ध हु
आ यह जान लज्जित हुआ भिक्षा लिया तब ब्राह्मणी ने कहा
तू पापी है तुझे तपस्या का फल नहीं तब ब्राह्मणी बोली तू बार
णसी जा तहां एक धर्मव्याधी नाम एक कसाई रहता है उस
के पास जा मूर्ख वह तुझे ज्ञान उपदेश करेगा सब बात को
निर्णय बतावेगा यह सुन ब्राह्मण वहां गया धर्मव्याधी सों
खबर किया वासों मिला देखा तो वह मांस वेंचता है और
हाथ लोहू में भरे हैं साक्षात यमराज का रूप है देख कर
राम राम कहने लगा और यह कहा कि ब्राह्मणी ने तुम्
पास भेजा है मुझे धर्म उपदेश करो तब उस कसाई
ने बहुत सत्कार किया ब्राह्मण को घर में बिठाया फिर मा
ता पिता की सेवा किया आज्ञा मांगी जो मुझे आज्ञा हो
तो ब्राह्मण की सेवा करूं तब आज्ञा दिया कि ब्राह्मण
को जिस में संतोष हो सो करो सेवा बहुत किया भोज
न कराया चित्त स्थिर हुआ तब ब्राह्मण ने ज्ञान पूं
छा कि ब्राह्मणी को ज्ञान किस तरह से हुआ और तु
म को किस तरह हुआ सो कहो तब धर्मव्याधी बोला
हे विप्र प्रथम तो अपने कुल का जो धर्म हो सो करे
पराये धर्म को त्यागे नीके प्रकार धर्म साधे माता पि
ता की सेवा करे सब को समान जाने राग द्वेष त्यागे
माता पिता को ईश्वर जाने यह जान कर भव को ध
र्म को ज्ञान है सो करे और ब्राह्मणी अपने धर्म को

जाने है साधन करती है आज्ञा पालती है पतिव्रत पालनो स्त्री को वडो धर्म है इस से उस को त्रिकाल ज्ञान है अरु तू ब्राह्मण माता पिता को त्याग गृहस्थाश्रम को त्याग किया है पितर देवतान को त्यागा है इतने पर तप कियो सो क्या भयो तेरा पाप मिटा नहीं तेरे वोलने से भी पाप लगता है तू हमारे अतिथ आया इस से बोलना पडा अन्यथा तेरा मुख देखना योग्य नहीं तू माता पिता को त्याग कर आया है फिर ब्राह्मण वोला हम को उपदेश करो तब व्याधी एक श्लोक वोला। नपूजयंतिये पूज्यान् अमान्यान्मानयंतिये। जायंते नियमा नास्ते मृता स्वर्गं नयांतिते।१। इतना व्याधी वोला वोधन हीं भयो तब ब्राह्मण नमस्कार कर अपने घर आया व्याह किया गृहस्थ धर्म में रहने लगा माता पिता की सेवा ईश्वर समान करने लगा यह कथा सुन मदनसेन कहने लगा कि जो माता पिता कहेंगे सो करूंगा वचन न टालूंगा इस तरह शुक के कहने से पिता पास गया नमस्कार किया पिता ने आदर बहुत किया पुत्र को देख निहायत खुश हुआ हरिदत्त वोला हे शुक जिस के सत्पुत्र हो उस को चिंता किस वात की है इतना सुन पुत्र वोला हे पिता तुम को चिंता किस वात की है सो मेरे आगे कहो तब हरिदत्त ने कहा कि राजा विक्रमसेन की बेटी का विवाह है तिस से राजा ने आज्ञा दी है कि बाहर देशांतर जाके भूषन वस्त्र रत्न ले आओ आज से नवमें दिन विवाह है इससे चिंता है कि पांच सात दिन पहिले आना चाहिये द्वीपांतर से लावना अपने समान राजा कोई नहीं कैसे करें जिसे मैं वृद्ध हुवा यह वात सुनकर विनती किया कि जो मुझे आज्ञा हो तो मैं सच केरूंगा तब सेठ निहायत खुश हुआ इस के वाद पिता पुत्र

राजा के पास गये राजा से विनती किया कि जो हम को आज्ञा
हो सो करें तब राजा ने फरमाया अरे सेठ तुम रत्न माणिक मे
तो देशांतर से ले आओ आज से उन्नीस दिन ब्याह के हैं ति
स से पांच सात दिन पहिले आन पहुंचो तब मदनसेन ने कहा
जो आज्ञा हुई है सो करेंगे और मेरी इच्छा से रत्न उत्तम ला
ऊंगा दो राजा का सेवक तब राजा ने उनको दो सिरोपाव दिये उ-
न्हों ने बहुत दिलासा दिया बहुत सा द्रव्य दिया जितना मांगा घो
डा रथ प्यादा बहुत दिये आज्ञा दी कि सुबह होते ही सिद्ध करो
विलंब मति करो आज्ञा हुआ तब सेठ मुजरा कर घर आया
लेकिन सनेह से पुत्र के चिंतावान हुवा तिस के पीछे मदन
सेन अपने घर आया प्रभावती से कहा कि मैं परदेश चलूं
गा तू शील से रहना कोई बुरा न कहे सो करना मैं बहुत दि
न में आऊंगा यह वार्त्ता प्रभावती सुन मूर्छा गई मदनसेन ने यत्न
किया और उसको चैतन्य किया तब प्रभावती ने कहा कि मैं भी
चलूंगी जो यहां तुम बिन रहूंगी तो प्राण न रहेंगे और दंड दे ति
स से स्त्री को आज्ञा नहीं तब प्रभावती ने कहा कि मैं अकेली
किस तरह रहूंगी तब मदन सेन ने कहा सुवा सारी तुम्हारे
पास रहेंगे कथा वार्ता रात दिन कहेंगे चिंता मत करो तब
प्रभावती बोली जो आप की आज्ञा हो सो करूंगी मदन सेन पि
ता माता के पास आया और कहा कि सारी सुवा मुझे दीजे तब
पिता ने दिये अपने घर ले आया प्रभावती ने परम संतुष्ट हो
कर राजी भई तब मदनसेन शुक से कहने लगा मैं परदेश जाता
हूं इस से बातें अच्छी २ करते रहियो और सब तरह रक्षा कीजो
कथा वार्ता सों बहुतर दिन बितावोगे पीछे एक वार्ता कान में क
ही कि नवयोवना है इसका भरोसा नहीं स्त्री जात है स्त्री के

चरित्र कोई जानता नहीं कोई वुरे का संग मत करने दीजो तिस से रक्षा कीजो तुम सर्वज्ञ हो शुक ने कहा चिंता मत करो तव मदन सेन रात्री को विनोद वऊत तरह से किया प्रभा वती को मन प्रसन्न किया पाछे मदन सेन सुवह होतेही माता पिता को दंडवत कर परदेश को गमन किया उस समय एक श्लोक पढा॥ दैन्यं पृथु हयहृ यमर्जुने भासा कुंतलयं भरतेनल रामं ध्रुवो वैस्मरति प्रयाणे तस्यार्थ सिद्धिं कुशलं भवंति॥१॥ इस तरह मन में कहते देशांतर को जाते भये जाकर रत्नादिक वस्त्रादिक लिये और जो राजा ने आज्ञा किया था सव कुछ लिया और इधर जो कौतुक घर में भये सो सुनो राजा विक्रमसेन का वंधु विजयसेन वह वत्तीसलक्षण और सुभग था और वऊत गुणवान शीलवान कामदेव की मूर्त्ति विद्यावान था एक दिन घोडे पर चढ महादेव के दरशन को चला उसे जो देखे मोहित हो जावे मध्यान्ह के समय निकला हर दत्त सेठ के महल के नीचे खडा ऊवा उस वक्त प्रभावती की नज़र पडी देखतेही वेहाल ऊई काम के वस ऊई सिर के वाल न्हाय सुकाती थी सर का पानी उस के ऊपर पडा तो विजय सेन भी ऊपर को देखने लगे और प्रभावती पर नज़र पडी तो देखतेही वह भी कामकर पीडित ऊवा प्रभावती काम का तीर मार चली गई और विजसेन भी इश्क की चोट खाय चला गया और दोनों के चित्त में अति यादगारी की लगन लग गई तव विरह के दुख से विजय सेन ने एक श्लोक पढा॥ किं करोमि क्व गच्छामि रामो नास्ति महीतले॥ कांता विरहजं दुःखं एको जानाति राघवः॥१॥ इसी तरह वार वार पढता और जो चीज़ देखता उस में प्रभावती की सूरत देखता ऐसे वस किया कि कहीं चित्त नहीं लगता और

किसी से कुछ नहीं कहता और दिल में विचारता कि रुपये
खर्च जो चाहे सो ले प्रभावती की कोई मुलाकात करा दे ऐ
सा रातदिन दिल में सोचता और फिकर करता और प्रभावती
भी इसतरह जी में चाहती और रातदिन सोच में रहती और विरह
के वियोग में रहती। श्लो॰। सुवेषं पुरुषं दृष्ट्वा पितरं भ्रातरं सुतं॥
योनिः खलति नारीणां सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥१॥ ऐसा प्रभावती का
मन काम के वस भया और जहां पर बिजसेन महल में चिंता से बैठा
था वहां पर एक मालन फूलों की डाली हारों से भरी हुई ले आई औ
र वह फूल विजयसेन के आगे रक्खे और उस मालन का नाम मोहनी
था विजयसेन ने उन फूलों को लिया परंतु भीतर की उदासी से कु
छ खुशी न मालूम हुई तब मालन बोली कि मैं तुम को उदास देख
ती हूं और नहीं जानती तुम्हारी तबीयत उदास क्यों है सो हम से क
हो अगर किसी स्त्री के हेत में हो तो हम से कहो और आज्ञा दो जिसे
ले आऊं क्योंकि मुझे मोहिनी मंत्र आता है जिस पर नेह लगा है उसे
मोह कर ले आऊं तब विजयसेन ने बड़ी खातिर की और यह पूछा
कि मेरे मन की बात तूने किसतरह से जानी तब मोहनी बोली हे वि
जयसेन मैं ने तुझे देखा कि मन तेरा उदास है विरह करके दुखी
इस से मैंने जाना कि किसी स्त्री पर आसक्त हुवा है और यह बात
मन में जानती थी और एक दिन उसके यहां गई भी थी सो वह
भी चाह में अति दुखी थी तब मैं ने उसे पूछा तब उसने कहा
कि विजयसेन के इश्क में दुखी हूं तब मैंने कहा विजयसेन के पास
गई थी वह स्त्री के मोह से बहुत दुखी है तब मैंने कहा कि मैं मालन
हूं जिसको तू चाहे अभी लाऊं यह सुन विजयसेन अपने हाथ का
गहना दिया और कहा कि प्रभावती मेरे मन में निहायत बसी है उ
से तू मिलावे तो जो मांगे सो दूं तब मैंने करार किया तुझे जरूर मिला

दूंगी सो मैं ने जाना कि तुझे भी उसकी चाह है तो परमेश्वर अच्छा करेंगे और तेरी भी मुराद पूरी होगी जब ऐसा कहा तब प्रभावती निहायत खुश हुई और यह कहा कि मुझसे यह काम पूरा होगा तब ऐसा सुना तो सारिका बोली इस मालन को घर से जल्दी निकालो बड़ी हरामजादी है तब सुवा बोला आदमी के पास आदमी आते हैं तू कौन है तू काहे को बकती है सारों ने मालन का तिरस्कार बहुत किया मदन सेन के वचन को प्रतिपाला परंतु जानवर हैं इसकी कौन माने तब सुक विचार के बोला कि सरदार के पास मालन और नायन ये बहुत आते हैं इससे चिंता नहीं सारों ने कहा चल तू समझता नहीं तू खुशामद की बातें करता है खुशामदी मन राखने की बात करता है मैं तुझसे सच कहती हूं ऐसी आपुस में बात करते हैं तब मैना बोली चुप कर रहो तब मालन बोली प्रभावती मन में खुशी रहो जो आज्ञा करोगी तत्काल बजा लाऊंगी स्नान करो फूल पहिरो मनोर्थ सिद्धि करो और मदन सेन की चिंता छोड़ो हम राजा की दासी हैं कभी घर कभी बाहर हमारा यही काम है तेरी आज्ञा में हूं जो तू कहेगी सो करूंगी यह जब कहा तब दलगीरी संवदूर हुई और स्नान कर गहना पहर फूल पहन खाना खाया और सोलह सिंहार किये गद्दी पर बैठी मोहनी आगे बैठी और यह कहने लगी कि आज मुझे बड़ी खुशी हुई तब प्रभावती बोली कि तुझे किस बात का दुख है तब मालन बोली कि तुम अपना दुख कहो तो मैं भी अपना दुख कहूं तब प्रभावती की सखी बोली कि स्वामी तो परदेश है यह जोबन रस रंग जाको चाहलगी हिये सो दुर्लभ सखी संग॥ श्लोक॥ स्त्रकजनागंरागलज्जाकररुह परवसोजया प्रिय सह विषय मपिमां मरणां शरणं वरं॥१॥ इससे मरण भला है ऐसा सखी बोली कि इस मन वसंतु

अपना दुख बयान कर दूती बोली कि इस समें बसंत ऋतु हैं और तू नवयोवना है तुझे देखे मुझे बडा दुख लगता है इस से अगर मेरा कहना माने तो एक बात कहूं तब प्रभावती बोली जो तेरे मन में बसता है उसे मैं जानती हूं राजा के प्रधान का बेटा विजयसेन तेरे मन में बसता है मालन ने कहा जो कहे तो तुझे मैं उस से मिला दूं प्रभावती ने कहा मुझे अगर उससे मिला दे तो तुझे बहुत सा द्रव्य दूं मालन बोली जहां पर तू कहे वहां उसे ले आऊं तब प्रभावती बोली अरी मालन तू विजयसेन के पास जा कर यह कह आज पहर रात गये सिंगार कर शहर बाहर एक शिवालय है तू वहां आइयो और मैं भी वहां चलोंगी ऐसा संकेत बाको तुम कहना तब दूती प्रसन्न हुई और प्रभावती ने उसे पांच मुहरें दीं वह लेकर विजयसेन के पास आई और कहने लगी कि आज प्रभावती को प्रबोधा है और उसने कहा है कि पश्चिम तर्फ एक देवल है और वहां सुनसान है वहां उसे लाऊंगी अब तू अपना मनोरथ पूरा कर यह बात सुनते ही बहुत खुश हुआ अपने गले की मोतियों की माला उतार के मोहनी को दी तब उसने कहा मैं तो काम कर आई परंतु इसमें बहुत से विघ्न हैं देर मत करो क्योंकि उस के यहां दासी शुक मैना बहुत हैं लेकिन मैं जहां तक बनेगा तेरी मुलाकात कराउंगी ऐसा कह दूती फिर प्रभावती के पास आई देखे तो नख सिख से सिंगार किये बैठी है पान खाये शोभा की रासि बन गई है और कह रही है कब मोहनी आवे और कब मैं मिलने जाऊं मोहनी को देखते ही आनंद हुई कि जो चाहती थी सो बात हुई इतने में देख कर प्रभावती बोली हे मालन आई मैं तेरी बाट देखती थी मालन बोली मैं तो तेरी दासी हूं तेरा हुकम बजाया ले चल अब देर

मत कर इतना सुन पर पुरुष से विलास करने चली और दूती का हाथ पकड़ लिया और चौक में आई और चाहे कि जावे तव सारिका बोली कि प्रभावती तू कहां जाती है यह तो दूती है इसका नाक कान काटना चाहिये और पर पुरुष के पास जाना न चाहिये मदनसेन तुझे क्या कहेगा और हम से क्या कह गया था तू भूल गई और मैं मदनसेन के आने पर समझूंगी तुझे उस से छुड़वा दूंगी वह आंदी अपनी ओर कर लेगा उस वक्त तुझे बहुत रंज होवेगा इससे तू मेरी नसीहत मान तू बड़े घर की बहू बेटी है इतनी सुन प्रभावती बोली अरे ये रांड कम अकल तू मुझे क्या सिखावती है देख सुक तो नहीं बोला तू मरा चाहती है तव मैना बोली मैं तेरी विहतरी की कहती हूं और सच कहती हूं मैं तुझे जाने न दूंगी तव तो प्रभावती को गुस्सा आया पिंजरे में हाथ डाल मैना को पकड़ मार डाला तब चली तो कुत्ता ने कान फड़फड़ाया उसे भी लात मारी इतने में बिलाई आ पड़ी उसे भी लात मारी तव प्रभावती क्रोध किया शकुन अच्छा नहीं हुआ उस वक्त सुक को चिंता भई कि अगर मैं बोलता हूं तो सारो की गति होगी और जो नहीं बोलता तो प्रभावती निहायत काम के आसक्त हुई मद करके अंधी हो रही है इसे आगा पीछा दिखाई नहीं देता। श्लो०। नैव पश्यति जन्मांधो कामांधो नैव पश्यति। नैव पश्यन्मदोन्मत्तो ह्यर्थी दोषो न पश्यति।१। इससे प्रभावती कामांध हुई है किस तरह समझे ऐसे मन में चिंता करने लगा और जो न कहूं तो वचन मेरा जाता है तिस से ऐसा करो जिस में न जाय और मेरी बात भी रहे और मुझे मार भी न डाले और दूती को भी खुश करतो गंधर्व। श्लो०। उपपन्नेषु कार्येषु बुद्धिरेव गरीयसी बुद्धि हीन विनश्यंति यथा ते सिंह कारकः।१। उपपन्नेषु कार्येषु बुद्धि ही

रेवगरीथसी। वने सिंह मदोन्मत्त शशांके न निपातितः। २। इस तरह मन में विचार करने लगा उस वक्त सुक बोला जिस काम को जाती हो सोई सिद्ध होय आप पधारिये यह सुक संबंधी वचन सुन प्रसन्न हो प्रभावती बोली हे सुक मैं परपुरुष से आनंद मांगने जाती हूं सुक ने कहा युक्त है याने बिहतर है परंतु यह काम कठिन है निंदित है कुल की स्त्रियों को योग नहीं अभिचारिणी को जोग है तुम्हें न चाहिये तब प्रभावती बोली क्यों न जाऊं तब सुक कही मैं कैसे कहूं आपकी इच्छा हो सो करो अगर एक काम करो जारी बेजारी जानती हो तो जाइयो और नहीं जानती हो तो मत जाइयो और जाओगी तो बहुत दुख पाओगी तब प्रभावती ने कहा जारी क्या और बेजारी क्या सो कहो तब सुक बोला जो कोई परपुरुष सों रति करे और कोई आन पहुंचे तो उसको जवाब कैसे देवें जिस में अपना ऐब ढके और लज्जा बचे नहीं तो बड़ा दुख होता है तू भले कुल की बेटी भले कुल में ब्याही राजी सों काम करेगी तो दोनों कुल की लाज रहेगी और तू दुख न पावेगी जब ऐसा सुकने कहा तब तो मन में विचारा और सुक से कहा हे सुक क्या करूं जो तू कहे सो करूं तब सुक बोला कि उस वक्त बुद्धि उपजे तो जाय जैसे हरिदत्त ब्राह्मण की स्त्री लक्ष्मी उसका नाम उस वक्त उस की जो बुद्धि उपजी और अपनी लज्जा राखी जो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाना पराये पुरुष पास नहीं तो पराये पुरुष से प्रीत न करे तब प्रभावती सुक से पूछने लगी कि लक्ष्मी कोन से बुद्धि किया सो कहो तब सुक बोला कि आप जाय अपना काम करें चित्त को थिर करो तब तुम से कहों प्रभावती ने कहा सुखड़ा अचंभा ऊवा है तब सुक कहने लगा कि दूती को विदा

करदेउ तव प्रभावती ने अपने हाथ की अंगूठी देकर विदा किया और यह कहा कि कल आवना चलूंगी और आज मैं बात सुनूंगी तव दूती नायक के पास गई अंगूठी दिखलाई औ र कहा कि कल आवने को कहा है तव प्रभावती वोली शुक अब कहो तव शुक वोला जारी तो यह है पराये पुरुष से रति करे और वेजारी उसका नाम है जो करके पछिताये अपनी लाज राखे कोई जाने नहीं तव काम सही इस वात के सुन्ने की इच्छा हो तो सिंगार उतारो चौकी पर वैठो एकांत मन करो तव मैं कहूं प्रभावती ने सिंगार उतार चौकी पर वैठी तव शुक ने प्रथम कथा का आरंभ किया सो कहते हैं ॥

प्रथमकथारंभः

एक चंद्रावती नाम नगरी है तहां भीमसेन राजा राज करता था व हां मोहन नाम सेठ रहता है तिसका वेटा सुधन्वा वहुत प्रवीन गु णवंत है उस देश में हरदत्त नाम कायस्थ तिसकी स्त्री लक्ष्मी नाम है और जैसा नाम है तैसा ही रूप और महाप्रवीन है तिसके पीछे एक दिन सुधन्वा ने लक्ष्मी को देखा मन में लालसा आई विचारा कि इससे रति कीजिये ऐसा विचार दूती के घर गया और उससे पूछा कि तेरा नाम क्या तव दूती वोली कि मेरा नाम सोपवास है सुन मा सोपवा स मेरा एक काम है लक्ष्मी के विषय मेरा चित्त लगा है सो उस से मिलाय दो तव दूती ने कहा मैं उसको संकेत स्थल के वीच उसे लाऊंगी तू चिंता मत कर तेरा काम पूरा होगा ऐसा कह दूती लक्ष्मी के घर गई और उस वक्त हरदत्त न था जाकर वैठी मा सोपवासनी ने लक्ष्मी को उपदेश किया और रुपये का ला लच दिया तव वह मन में चलायमान हुई कि पर पुरुष की रति करें जो श्याम के वक्त में यह संकेत को ले गई

जा बैठी सुधन्वा को राजा ने बुलाया सो वह राज घर गया औ
र वहां आने का वक्त बीत गया दूती से बोली क्यों न आया तब
दूती बोली कि राजा की आज्ञा से काम में लग गया इस से नहीं
आया फिर लक्ष्मी बोली और एक काम कर जो कोई अच्छा
सा हो तिसे ले आ मेरा मन अत्यंत चाहता है यह सुन दूती
चली तमाम गांव में फिरी कोई मन में आवे नहीं हरदत्त लक्ष्मी
का भरतार मिला उस को ले आई और जानती न रही जिस से
आई जब भरतार मिला खड़ा हुआ देखे तो अपना भरतार है त
ब बहुत सोच किया यह सुक ने प्रभावती से पूछा उस वक्त भ
रतार से उस ने क्या कहा और कैसे मुकरी सो कहो तू कह अपना
तेरी दासी कहे या और कोई कहे तब प्रभावती बोली हम नहीं जा
नती तुम कहो तब सुक ने कहा जो तू आज जाने का इरादा न करे
तो मैं कहूं तब प्रभावती बोली मैं न जाऊंगी तब बोला तो इस का उ
त्तर सुनो जो दूती पर पुरुष जान लाई सो उसका भरतार रहा तब उ
सने मन में एक बात उपजाई देखते ही छाती माथा पीटने लगी
बहुत अपघात किया तब पति ने देखा तो अपनी स्त्री है अपघात कर
ती तब बोला अरे लक्ष्मी यह क्या करती है तब लक्ष्मी बोली कि तू मे
रे आगे झूठ बोला जो मैं पर स्त्री के बुलाने पर बुरा कर्म नहीं
करता यह जान तेरी परीक्षा के वास्ते दूती पठाई और तू पर
स्त्री जान कर आया है सो मैं ने जानी कि तू निर्बुद्धि मुख देखने
योग्य नहीं यह सुन लक्ष्मी के पायन परा अपने घर ले आया सु
क बोला साहूकार की जो ऐसा जवाब करे अपने को बचा
वे जो तू ऐसो काम करे तो लक्ष्मी कैसी बुद्धि उपजे तो जा
उ नहीं तो मत जाउ यह सुन सेठ की बहू उठ पलंग पर सो
रही ॥ २ ॥

द्वितीय कथा २

फिर प्रभावती दूसरे श्याम के वक्त सोलह सिंगार कर पान खाय
दूती का हाथ पकड़ जब चली तब शुक से बोली हे शुक मैं परपु
रुष के सुख को जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु जैदेवी
ने जौन सी बुद्धि की सो कीजो तब प्रभावती ने कहा सो कहो तब
शुक बोला अपना मनोर्थ करि आवो तब कहूं सुचित्ताई से सुनो
प्रभावती बोली सुन के जाऊंगी तब प्रभावती सब सिंगार क
रे चोकी पर बैठ गई तब शुक बोला एक नंदन नाम नगर है
तहां चंद्रवती राजा था तिसका बेटा राजशेषर है तिस को बहू
शशिप्रभा थी सो वह एक दिन सेठ का बेटा वीरसेन तिस को
देखा दोनों को काम की रति लगी और इश्क के मैदान में चूर हो
गये खाना पीना छोडा और दिल में बिचारने लगे कि अब क्या
करें तब उस की दाई से जाकर मुलाकात की यशोदेवी उसका
नाम था उससे कहा कि राजकुमार को बहू से मेरा मन लगा है उ
स से मिला दो तब तोता बोला हे प्रभावती वह किस तरह मिली
तब प्रभा वती बोली तुम्हीं कहो मैं नहीं जानती तब शुक कहने ल
गा कि दाई यशोदेवी को अपने वश किया तब शशिप्रभा सिंगार
कर अपने महल में बैठी थी उस समय यशोदेवी शशिप्रभा
के महल में गई राम २ किया और बोली कि शशिप्रभा तेरी सुंद
रता को देख मेरे मन में बहुत दुख होता है तिस्से एक बात कहूं
जो तेरे मन में आवे शशिप्रभा बोली तू कहेगी सो करूंगी तब
दाई बोली कि तेरा जीना धिक्कार है जो पराये पुरुष का सुख नहीं
जानती जब इस सुख को जानेगी तब बहुत प्रसन्न होगी तब रा
जा की बधू बोली तू बतावे सो करूं ऐसी अच्छी जल्दी कहो

तव दाई ने कहा वचन देतो कहूं तव शशि प्रभाने वाचा दिया॰
तव दाई खुश हो वोली एक वीर सेन पुरुष तेरी इच्छा कर
ता है तू उसका मनोरथ पूरा कर तेरे पर आसक्त तव दाई एक उपाय
वताया कि मैं अपने घर जाती हूं तू जव सवार होतव मूर्छा खा
गिर पड़ियो काहू की औषद से नीके मत हूजो पाछे मैं आके तु
झे अपने घर लेजाऊंगी और मनोर सिद्ध कराऊंगी यह कह
कर आई और जाकर वीर सेन को खवर सुनाई कि तेरा मनोर
थ सिद्ध होगा तू अव चिन्ता मत कर सवेरे काम होगा वो॰ अकस्म
त मूर्छित हो गिरी सव को वडा सोग ऊवा कि अचानक क्या ऊ
वा सवने झाड फूंक कराया दवाई दी मगर अच्छी न ऊई॰ तव
तो नगर मे ढंढोरा फेरा जो कोई शशि प्रभा को अच्छा क
रे तिस्को वऊत कुछ मिलेगा तव ऐसा कहा तव दाई वोली कि
मैं नीके करोंगी जो मेरा काहिना करो तो अच्छी होय॰ यह
वात सुन राजा से कहा कि यशो देवी ऐसा कहती है जो मेरा
कहना करो तो अच्छी होय सुनतेही राजा ने वुलाई और फ
रमाया जो तू कहे सो करें यशो देवी वोली जो ऊक्म पाऊं तो
कहूं राजा वोला जो तू कहेगी सो मुझे कवूल है॰ तव दाई वोली
कि जो तुम नीके कराया चाहते हो तो मेरे घर आठ दिन ताईं
रहने की मरजी करो तो नीकी होय तव राजा ने फरमाया अपने
घर इसे लेजा॰ राजा की आज्ञा पाय अपने घर लेगई वीर सेन
वैश्य अपने मन में प्रसन्न ऊवा आठ दिन तक भोग विलास किय
वाद आठ दिन के शशि प्रभा अपने महल में आई राजा देख वऊ
त खुश ऊवा कुंवर भी वऊत राजी ऊवा यशो देवी को वऊत द्रव्य
दिया इस तरह सुकने प्रभावती से कहा ऐसी वुद्धि होतो जा
उ यह सुनि पलंग पर जा सोई रही॥२॥

अथ तीसरी कथा का प्रारंभः॥३॥

फिर तीसरे दिन प्रभावती वैसाही सिंगार कर चली परपुरुष
के मिलने को उस वक्त सुक से पूंछा कि मैं जाती हूं परपुरुषसे
रत करने तव सुक वोला कि निस्संदेह पधारो मनोरथ पूरा करो
पर राजा सुदर्शन कैसी बुद्धि उपजे तो जाउ तव प्रभावती बो
ली राजा सुदर्शन कौन था और कैसी बुद्धि थी सो कहो तव सु
क वोला कि एक विलास नाम नगरी थी तिस्का सुदर्शन नाम
राजा था तिस्के गांव में विमल नाम वनिक वस्ता हे तिस्की स्त्री
एक तो सुर सुन्दरी एक रुक्मानि है महा सुंदरी को एक कुटि
ल महा धूर्त काम के आसक्त हुवा मन में विचारा कि क्या क
रों किस्तरह से आवे तव अंविका के मान्दिर में जाकर वहुत
सेवा किया तव देवी प्रसन्न हुई और वोली कि वर मांग मैं प्रसन्न
हुई तव धूर्त वोला जो विमल वनिये का सा रूप दीजे तव देवी ने
कहा तथास्तु ऐसा ही होगा कहते मात्र विमल का सा रूप वन गु
या कुटिल धूर्त भी घर गया और दूतिफाकन विमल अपने
घर न था उस वक्त घर में वैठ दास दासिन को खुश किया घ
र में रहने लगे और कहा कि मेरा सा रूप वना विमल वनिया
कोई आवे तिस्को वैठने न देना ऐसा कह घर रहिने लगा स्त्री
न के साथ अपना मनोरथ सिद्धि किया पीछे विमल विचारा अ
या कि ये धूर्त ने मोकों वंचना कीनी अव का उपाय करो तव
घर के पास आया तव धूर्त ने उसे देखा तो गारी देने लगा कि
मेरे घर तू क्यों आया है फिर उन दोनों में वडी लडाई हुई शह
र के लोग जमा हुए दोनों की वातें सुन वडा आश्चर्य हुवा
कि घर किस्का है दोनों के रूप समान हैं तव दोनों राजा के पास गये
राजा ने न्याय किया तव सुकने पूंछा कि हे प्रभावती उस धूर्त को किस

तरह से निकाला सो बताओ प्रभावती बोली मैं नहीं जानती
कहो तब शुक बोला आज न जाओ तो कहूं प्रभावती बोली आज
न जाऊंगी तब वोः बोला राजाने विमलकी दोनो स्त्रियां बुलाई जुदी
बुलाके उनसे पूंछा कि कहो तुम्हारे बाप का क्या नाम है और माता
का क्या नाम है और व्याह हुवा घर आई तबरितुसमे तुम्हे विमल
ने क्या दिया तब उन दोनों ने सब आहिवाल कहा सो राज मे लि
खलिया विमल से पूंछा उसने भी वही कही सब बात मिली
पीछे धूर्त से पूंछी उस्की एक बात भी ना मिली तब उस धूर्त
को गांव से निकाल दिया और विमल को उस्की दोनो स्त्रि
यो समेत उस्के घर विदा किया वोः अपने घर गया ये प्रभाव
ती जो ऐसा गुन हो तो जाउ नही तो मत जाउ फिर से रही ॥

चौथी कथा का प्रारंभः

फिर चौथेदिन प्रभावती सिंगार कर पराये पुरुष से रत करने
चली उस वक्त शुक से पूंछा हे शुक मै पराये पुरुष से सुख चा
हती हूं इस से जाती हूं शुक ने कहा बहुत अच्छा लेकिन गोवि
द ब्राह्मण ने बडे की आज्ञा नमानी तो बहुत दुख पाया तब
प्रभावती बोली गोविन्द ने बडे का काहना क्यो नहीं माना
और किस्तरे दुख पाया सो कहो तब शुक बोला कि एक भद्रावती
नाम एक नगरी थी वहां का प्रतापसेन राजा था राज्य करता
था उस गांव मे सोमप्रभु नाम ब्राह्मण वस्ता था और पंडित बहुत
था तिस्की शोभा नाम स्त्री थी तिस्की मोहनी नाम बेटी थी सो वोः
विष कन्या थी सो सब जानते तिस्को कोई व्याहे नहीं पिता
को इस्से बडा सोग हुवा कि क्या करे आखिर को देशांतर गया
और एक गांव मे जाकर गोविन्द नाम ब्राह्मणसे मुलाकात
हुई उसे कहा कि मेरे एक मोहनी बेटी है वोः तुझे देता हूं त:

व्याह कर ले बहुत सुन्दर ऐसी कहीं नही लेकिन विष रूप दूत
ना सुन कर कबूल किया परंतु भाई बंधों ने मना किया कि जे
तू विवाह करेगा तो बहुत दुख पावेगा परंतु उसने किसी कीव
त न मानी एक तो स्त्री का लालच दूसरे धनका हुवा व्याह
किया और द्रव्य लिया अपने घर आया तो मूर्छ कन्या थी अ
पने स्वामी को देख बहुत दुख पती एक दिन पति से कहा
कि मुझे मेरे बाप के पहुंचा दो जब ऐसा कहा तब गोविन्द उसे
ले चला तब राह में आया तो स्त्री से कहा तू यहां बैठ मैं कर आऊं
आप तो काम करने को गया उस वक्त एक विष्णु नाम ब्राह्मण आ
था स्त्री को देखा तो महा सुन्दरी है मन में काम पीड़ित हुवा औ
र मोहनी भी काम के वस हुई मन में विचार हुवा कि इससे भोग कर
जिये क्योंकि बहुत चतुर है उस वक्त मोहनी को बहुत मनसे पा
न लौंग इलायची दिया गोविन्द ने भी आदर किया महसे उत
गोविन्द बोला यार तू महल के पास बैठ मैं काम कर आऊं इतना
कह कर गोविन्द तो गया उस वक्त विष्णु दास महल सेले भागा पीछे
गोविन्द ने पुकारा कि हे विष्णु दास खड़ा रहो वाने जवाब न दिया त
ब तो दौड के आप आया आपस में बहुत लड़ाई हुई इसी त
ह से लड़ते लड़ते राजा के घर गये और पुकारा किया मेरी स्त्री लिये
जाता है तब राजा के प्रधान ने न्याय किया तब प्रभावती से शुक बो
ला कि प्रभावती कहो उस प्रधान ने क्या न्याय किया तब प्रभावती
बोली हे शुक तुम कहो मैं नहीं जानती शुक ने कही तू आज न जा
य तो कहूं तब उसने कहा न जाऊंगी तब शुक बोला हे प्रभावती
बुद्धि सेन मंत्री ने उस कन्या विष को बुला के पूछा जिस
दिन तेरे पति गोविन्द से संग भया था उस दिन क्या भया था
उस कन्या ने सब हकीकत कही पीछे गोविन्द से पूछा

उसने भी यही बात कही इन दोनों की वात ठीक मिली उसको ध
क्के देके निकाल दिया तव प्रधान ने कहा स्त्री गोविन्द की है और
प्रधान ने गोविन्द कहा जो तू इस स्त्री को रक्खेगा तो तेरा मरण
होगा इस्से तू इस स्त्री को छोड़दे कि शास्त्र भी ऐसा कहता है
श्लोक। वेदं षान रतं नष्टे कुपण्डितं मूर्खं परिव्राजकं रिक्तं पुरुषं
हयं गमरयं स्वाध्याहीने द्विजे। प्राज्यं बाल नरेंद्र मन्त्रि रहितं मि
त्रं छला त्विषिणं भार्यां यौवन गर्विता परता मुंचंति शीघ्रं बु
धा१ इसतरह गोविन्द ब्राह्मण को समझाया परन्तु उसने वि
ष कन्या को त्याग न किया वहां से उठके आगे को चला व
हां एक मनुष्य नजर आया उस से विष कन्या ने कहा तू जो
इसे मारडाले तो तेरे संग चलूं जब इसतरह कहा तब तो इस
ब्राह्मण को मार डाला इस से कहता हूं जो कोई कहता है अच्छी
बात और जो न माने तो गोविंद का सा हाल हो इस्वातको सुनसे
रही

पांचवी कथाकाआरंभ ५

फिर पांचवे दिन प्रभावती सिंगार करके चली उस वक्त शुक से
पूछा हे सुक मैं पराये पुरुष का स्वाद लेने जाती हूं शुक बोला
अच्छी बात है परन्तु बाल पंडित कैसी बुद्धि हो तो जाना यो
ग है तव प्रभावती बोली वाल पंडित की कैसी बुद्धि थी औ
र क्या बात उस ने करी तव शुक बोला अगर आज नजाओ तो
कहूं तब प्रभावती बोली नजाऊंगी तबशुक कहने लगा कि उज्जैन
नगरी राजा विक्रमा जीत राज करते थे राज कला रानी को बहुत
प्यार करते क्योंकि वो बहुत सुन्दर थी सो राजा के मन में एक
दिन ये आई नीरुनथार में एका दिन भोजन करें यह विचारक
रके राणी को बुलाया पास बैठाया दोउ प्यार में भोजन करने बै
ठे जीमते राणी ने पूछा यह क्या बात है राजा ने कहा कि यह

मछुकी तरकारी है यह सुन राणी बड़त गुस्सा ऊई कि राजा में प
तिव्रता हूं पर पुरुष को स्पर्श करती नहीं यह आप क्या कार
ते इस से राजा बड़त खुश ऊवा उस वक्त पर ईश्वर की मरज़ी
से मछ हंसा तब राजा को आश्चर्य ऊवा और कहा कि म्टतकमच्छ
है क्या कारण जो हंसा इतनी बात विचार आराज में खड़ा ऊवा
और दरबार में आकर यह अचरज सबसे पूछा कि म्टतकमछु को
हंसा याने हसने का कारण कहो तब सारी सभा बोली कि महारा
ज यह माया ईश्वर की है हम लोग तो यह जानते नहीं जिस आग
म की गम है सो जाने तब ऐसा सभी ने कहा तब राजा ने सब विद्या
विसारद को बुलाया जब ब्राह्मण आया तब राजा ने पूछा कि
मछु हंसा सो कहो तुम्हारा नाम जब विसारद है सो अपना नाँ
म सार्थक करो यह सुनि ब्राह्मण बोला यह अजान बात है
देवताओं को दुर्लभ है तिस्से शास्त्र देख के कहेंगे आज से
पांचवें दिन इसका उत्तर देंगे तब राजा ने कहा पांचवें दिन
न कहोगे तो वे इज्जत करूंगा नगर से निकाल दूंगा तब ब्राह्म
ण बोला जो आज्ञा करोगे सो करेंगे ऐसा कह ब्राह्मण घर
आया और निहायत सोच में होकर शास्त्र में देखा लेकि
न इसका उत्तर न पाया तब तो मन में दूना सोच ऊवा कि अब प्र
तिष्ठा गई और देश भी छूटा और देश से न जाऊंगा तो प्राण
जायगा ऐसा विचार अन्न जल त्याग किया तब बेटी बाल पंडि
त की पिता को दुखित देख कर हे पिता इतना सोच तुम का
हे को करते हो मेरे आगे सब वृतांत कहो तब बाल पंडित ने सब
बात कह सुनाई और कहा मुझे इसका उत्तर नहीं आता तू कहे
सो करूं तब बेटी बोली पिता शास्त्र की बात जो है सो तुम
से छानी नहीं परन्तु त्रिया चरित्र का विचार तुमने ना किया तब

ब्राह्मण बोला कि राजा ने मुझे बुलाके पूछा कि यों म्नत मछ क्यों हं
सा सो कहो उसका उत्तर कोई न आया इससे चिन्ता है यह बा
त सुन बेटी बोली कि पिता यह बात तौ कुछ है नहीं इसकी चिन्ता
तो मत करो राजा से जाके यह बात कहो कि इसका उत्तर मेरी बे
टी देगी यह सुन कर ब्राह्मण बहुत खुसहुवा और राजा के पास ग
या सब वृतांत कहा फिर राजा ने बाल पंडित से कहा मछ क्यों
हंसा सो कहो तब बाल पंडित ने हाथ जोड़ राजा से कहा मह
राज आप राजा है फिरते देर नहीं तिस्से कहा नहीं जाता उस वक्त
श्लोक पढ़ा। काके सत्य श्रोचे द्यूतकारेषु सत्यं क्लीवे धैर्यं मद्य पेत
त्वचिन्ता सर्पे क्षान्ति स्तु कामो विशान्ति राजा मित्रं केन दृष्टं श्रु
तं वा १ उस वक्त सब पंडितों ने कहा। त्यजे देकं कुलस्यार्थे ग्राम
स्यार्थे कुलं त्यजेत्। ग्रामं जन पदस्यार्थे आत्मार्थे पृथ्वीं
वी त्यजेत् २ तब पिता मन मे विचार किया कि इस का उत्तर
न आवे तो मारा जाय इस्से देशांतर जाइये बेटी के कान में क
हा तब बेटी बोली। श्लोक। विद्या वतां महात्मानां शिल्पनापि
वशेषतु सुरानां सेवकानां च नाभयः पार्थिवं विना १ इस्तर
ह पिता को समझा कर राजा से बोली महाराज तुम ब्राह्मण के
अपूछो लेकिन स्त्री के चरित्र का जानो पूछने योग्य नहीं पर
तु भारत में कहा है। श्लोक। राष्ट्रकौहरव्याहेनएकादशाच भूपतें
पंचानामपियोभार्या नसा एकांति मानुषी।१। बोले हे बाल
पंडित तूने कहा सो मेंने जाना परंतु इसका उत्तर अत्यस दिया
चाहिये मन में संदेह मत कर मैंने माफ किया तब उस समय
बाल पंडित सभा में सब बात विचार कर यह श्लोक क
हा और बोला मछ यों हंसा सुनो। श्लो। राज्ञी स्पृशाति नोम
स्यान् म्रतानपि मद्यः सर्व पुरुषाख्या सर्वे राजन हसता

सफरी क्रवं॥ ३॥ परिमाव्यस्तया राजन् श्लोको र्थोयं सदाहि मूढपाररायया देव यदि पच्छति मापुनः २॥ इसतरह वाल पंडित की पुत्री कह अपने घर गई वाद इसके सभाके लोग उन श्लोकोंके अर्थ का विचार किया तो राजा का माक्रहे सो तो वात झूठी है इस से वाल पंडिता से पूंछे तो यह विचार कर चुप हो रहे कि कल पूंछेंगे इसतरह प्रभावती से कहा वाल पंडिता ने दूसरे से कही थी सो फिर कहो यह सुन सो रही ॥५॥

छठी कथा ६। फिर छठे दिन सिंगार कर पर पुरुष के पास चली उस वक्त मुक वोला हे प्रभावती वालपंडिता ने राजा को कैसा समझाया सो कहो तव प्रभावती वोली में नहीं जानती तुम कहो तव मुक वोला हे प्रभावती तुम चित्त दे सुनो जव दूसरा दिन हुआ तव राजा ने वाल पंडिता को वुलाया और पूछा कि हे वाल पंडिता उस का अर्थ कहो तव वाल पंडिता वोली कि राजा उस का अर्थ मत पूंछो जो पूछो तो सुमंत नाम वनिक की स्त्री पद्मिनी से पश्चाताप होगा तिससे पूंछो मत तव राजा ने कहा पद्मिनी के पश्चाताप किस तरह हुआ सो कहो तव वाल पंडिता वोली हे राजन् चंद्रावती नाम नगरी थी तिसका राजा चंद्रप्रभा तिसके गांव में सुमतिनाम वनियां रहता था तिस की स्त्री पद्मिनी है सो वह सेठ धन हीन हुआ और वुद्धि हीन हुआ यहां तक लकडी वेचने लगा वहुत दिन गुजरे कि ऐसा पानी एकदिन वर्षा कि लकडी न पाई सवेरे वन से फिरते २ एक मंदिर मिला देखा तो श्री गणेशजी का मंदिर है और तेलसिंदूर खूव लगा है मन विचारा कि विभुक्षिताः किं न करोति पापं ऐसा विचार के वोला कि मूरत फाडके आज वेचके कुछ लीजिये ऐसा मन में सोच किया कुल्हाडा ऊंचा किया कि इतने में श्री

गणेशजी प्रसन्न हुए और कहा कि सुमंत जो वर मांगेगा सो दूंगा तब सुमंत बोला कि दो दिन से फाके से हूं भोजन देउ तब गणेशजीने कहा पांच रोटी और गुड़ घी इस द्वार में से ले जाया कर परंतु यह बात किसी से कहियो मत जो कहेगा तो उस दिन से न मिलेंगी यह कह पांच रोटी दीं सुमंत घर ले आया और भोजन किया ऐसे हमेशः ले आवे और भोजन करे एक दिन सुमंत की स्त्री पद्मिनी ने अपनी पड़ोसिन मंदोदरी को एक रोटी दी देख कर वह बहुत खुश हुई और एक दिन पूंछने लगी कि हे सखी यह रोटी कहां से आई है तब पद्मिनी बोली मैं नहीं जानती मेरा घरवाला हमेशः लाता है मंदोदरी ने कहा तेरा धनी कैसा प्यार करता है जो तुझे यह बात न बताई जान पड़ता है कि तू उसको प्यारी नहीं है तब बोली कि आज पूछूंगी मंदोदरी ने कहा कि तू संसार संजोग समय हठ करके पूंछना ऐसी बातें कर घर में आई राते के समय पति सों इस तरह बोली कि आज पूंछती हूं जो तुम न कहोगे तो मेरे तुम्हारे लड़ाई होगी तब पति बोला जो तू पूछेगी सो कहूंगा तब बोली कि यह रोटी रोज कहां से लाते हो तब बोला प्यारी यह मत पूंछ जो पूछेगी तो पछतावेगी वह सुनकर बहुत गुस्सा हुई उसने विचारा कि कहों तो मुशकिल न कहों तो जो भवितव्यं भवित्येव होनहार अमिट है आखिर को पति बोला कि मैं एक दिन लकड़ी को गया देखा तो मूर्ति है और सेंदूर लगा है तब विचारा कि मूरत फाड़ के बेचूं यह सोच कुल्हाड़ा उठाया वहीं गणेशजी प्रसन्न हुए जो वर मांगे सो दूंगा तब मैं ने कहा जीव का दान कीजिये तब बोले कि पांच रोटी हमेशा लिया कर परंतु कहेगा तो न दूंगा तब मैने कहा कि काहे को कहूंगा यह करार किया उसी दिन से मुझे रोटी देते हैं यह सुन दूसरे दिन मंदोदरी से सब वृत्तांत कहा मंदोदरी ने अपने भरतार से सब हाल कहा और

यह कहा कि तुम जाउ भरतार कुल्हाडा लेकर गणेश जी के पास ग या और कुल्हाडा उठा कर मारने लगा तब गणेश जी बोले जो तू कहेगा सो करूंगा इतने में वह वानिआं आया और उस को देखने ही गणेश जीने हाथ उस का बांध कर खूव लकडे से मा रा इस में उस की स्त्री ने देखा कि देर भई पति नहीं आया चलि के देखूं जाकर देखा तो वंधा है तब पूछा कि किसने वांधा है तब पति बोला कि मेरे वचन ने वंधवाया है जो मैने तेरे आगे कहा तब पद्मिनी ने श्री गणेश जी की वहुत स्तुति करि के प्रसन्न किया गणेश जी बोले कि तेरे भरतार को रोटी मिल ती थी तूने मंदोदरी को दिई अब तेरा भरतार मुझ से रोटी लेक र मंदोदरी को देवे तो छोडूं पद्मिनी ने कहा जो कहोगे सो करूंगी इस सुमंत को छोडो फिर पद्मिनी बहुत पछिताई स्त्री पुरुष और मंदोदरी का भरतार आपने घर आया तब वाल पंडिता बोली राजा अर्थ पूछोगे तो ऐसे ही पछतावोगे इस तरह प्रभावती से शुकने कहा कि तूभ पछतायगी यह सुन प्रभावती सो रही॥

सातवीं कथा॥ फिर सातवें दिन प्रभावती सिंगार करे पर पुरुष से रति को चली शुकने कहा जाती हो तो वाल पंडिता ने रा जा को क्या उत्तर दिया वैसा जवाब आवे तो जाउ नहीं तो मत जाउ प्र भावती बोली वाल पंडिता ने राजा को जो उत्तर दिया सो तुमही कहो शुक बोला वैठो तो कहूं प्रभावती वैठ गई शुक कहने लगा राजा ने वाल पंडिता को वुला के फिर पूछा अच्छा क्यों हंसा पंडिता बोली कि राजा स्वर्ग की वेश्या का सा पश्चाताप होगा राजा ने कहा वह वात कहो बोली कि राजा वक्र नाम नगर था तहां वीरसेन राजा राज करता था वहां सब ब्राह्मण वसते थे उसने विचारा कि पिता का उपजाया धन कहां तक खायंगे इस से आप भी कुछ कमाइये

तो अति इतर है ऐसा विचार करके परदेश को चला वहां जाकर एक वन खंड देखा और वहां जोगेश्वर लोग बहुत है तिन के आगे हाथ जोडकर प्रणाम किया और खड़ा हुआ इस तपसी की ताली लगी थी दोपहर के बाद जो ताली खुली देखा तो एक ब्राह्मण खडा है जोगेश्वर बोले क्यों ब्राह्मण ऐसे हो तब विप्र बोला हे तपस्वी मैं द्रव्य चाहो नहीं मैं तो अनाथ हो आप के दरशन की अभिलाषा थी तिससे आया हूं तब तो ब्राह्मण को देख बहुत खुश हुवे और योग बढ़ा दिया और यह कहा कि पांच सो मुहर देगा किसी से कहना मत और जो बतावेगा तो बात जाती रहेगी और मेरा मेरे पास आजायगा ऐसा कह जोग बड़ा दिया ब्राह्मण प्रणाम कर आगे चला रत्नापुरी में गया जहां स्वर्ग का नाम वेश्या रहती है उस वेश्या से आशनाई किया और उस के घर रहने लगा उससे भोग करे जो द्रव्य पावे उसे दिया करे सिद्ध की आज्ञा से द्रव्य का टोटा नहीं एक दिन वेश्या ने विचारा कि यह धन कहां से लाता है तब विप्र से पूछा कि तुम द्रव्य कहां से लाते हो तब उसने सब गति कही सुन के विचारा जोग बड़ा किसी ढब से लीजे इतना विचार अपने मन में बात रक्खी जब यह ब्राह्मण सूत गया तब कमर खोल लेलिया और प्रभात होते ही वह देखे तो जोग बड़ा नहीं तब तो बड़ा सोच किया पीछे शहर में पुकारा कि वेश्या ने मुझे लूट लिया इस तरह कहता २ राजा के द्वार पर गया और पुकारा तब राजा ने वेश्या को बुलाया वेश्या की माता बोली महाराज ब्राह्मण झूठा है इसके द्रव्य कहां से आया मेरी बेटी के ऊपर आसक्त हुवा है झूठा तूफान लगाता है योग बड़ा इसके पास न था यह बात निहायत बुरी है ऐसा कह ब्राह्मण को झूठा किया और जोग बड़ा उसी मुनीश के पास गया वेश्या के पास भी न रहा इससे हे महराज मैं सांच

कहोंगी तो ब्राह्मण और उस वेश्या की सी गति होगी जोग बडा भी गया और प्रीत भी न रही इस से वह वात जाने दे हठ न कर और प्रभावती से सुक ने कहा तो सर्ग के शब की कथा कही राजा से विदा मांगी अपने घर को गई प्रभावती सुन के सो रही ॥७॥

आठवीं कथा ८

आठवें दिन प्रभावती सोलहो सिंगार करके पर पुरुष के साथ रति को चली उस वक्त सुक से कहा हे शुक मैं जाती हूं तब तोता बोला श्रेष्ठ वात है परंतु वाल पंडिता ने फेर के जो राजा को उत्तर दिया सो कहो प्रभावती वोली तुम्ही कहो मैं नहीं जानती तब बोला कि राजा ने वाल पंडिता को बुलाया और यह कहा कि अर्थ बताओ तब वाल पंडिता ने एक वात और कही कि राजा एक विक्रम नाम बनियां तिस की सुंदरी नाम स्त्री थी सो बहुत व्याभिचारणी थी जैसे वह स्त्री अति भ्रष्ट भई उसी तरह होंगे जो इसका अर्थ सुनोगे फिर राजा ने कहा मच्छ क्यों हंसा सो कहो तब वाल पंडिता ने एक वात और कही कि राजा त्रिपुर नाम नगर था वहां का विक्रम नाम राजा था उस गांव में सुंदर नाम बनियां है उसके सुभग नाम स्त्री थी सो व्यभिचारिणी पराये पुरुष विन रहै नहीं एक दिन भरतार बजार को जाता था उस वक्त उसका गुण जाना स्त्री को वो भ्र घर में जर के गया जब वो गया उस वक्त घर सूना भया जिस घरी दूती आई स्त्री ने विचारा कि उस पुरुष से संकेत है तिस से मुझ को हु दिया फिर उस स्त्री ने दूती से कहा कि मैं उसके पास जाती हूं तू पाछे से घर में आग लगो कर आइयो यह कहि आप तो गई और दूती ने घर में आग लगा दिया और चली गई पीछे से भरतार आया जो देखे तो जरता है तब पूछा कि किसने आग लगाई है तब परोसन ने कहा तेरी स्त्री ने आग लगाई है इतनी

वात सुन कर स्त्री को त्याग दिया और वह सुभगा देवी के मंदिर में गई थी सो वाह ने तिरस्कार किया अतो भ्रष्ट हुई और बहुत पछिताई इसी तरह हे राजा मर्म पूछ कर पछ ताओगे॥ इतनी वात सुन प्रभावती सो रही॥

नवीं कथा ९

फिर प्रभावती नवें दिन सिंगार करके परपुरुष के साथ रति को चली उस वक्त शुक से बोली मैं जाती हूं तव शुक बोला अच्छी वात है परंतु वाल पंडिता ने राजा को जवाव दिया सो सुन वार जाइयो प्रभावती बोली अच्छी वात है कहो तव शुक ने कहा कि राजा ने वाल पंडिता को वुलाके कहा कि वह वार्त्ता कह तव वाल पंडिता ने वहुत समझाया परं तु राजा के मन में न आया तव पंडिता बोली जो पुष्पहास मुंह तिसका परवार वुलावो वह हंसेगा तव उसके मुंह से फूल गिरेंगे यह वात प्रसिद्ध है तुम को मत्स्य हंसे की वात समझावेगा तव राजा ने उस को वुलाया सव कुटुंव आन हा जिर हुआ उस वक्त स्त्री पुरुष वहुत इकट्ठे हुए किस वास्ते मन में आश्चर्य है कि फूल कैसे झरेंगे सो देखें तव राजा ने कहा हे वाल पंडिता पुष्पहास हंसता क्यों नहीं तव वा ल पंडिता ने कहा कि इस के मन में भय है कि मैं ने क्या अ पराध किया है कि तिस से हंसता नहीं तव राजा को वहुत दिलासा दिया और यह कहा कि महतो वाल पंडिता की ओ र देख के हंसो कि राजा अजहूं न समझे ऐसा कहके हंसा उस वक्त फूलन को ढेर हो गयो वाल पंडिता हू हंसी तव रा जा वोला वहुत क्यों हंसा तव महंता ने राजा से कहा घर का छिद्र प्रगट न कीजिये। श्लोक॥ अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितं

निच। वचनं चापिमानंच मतिमान्न प्रकाशयेत्।१। महाराज इतने में न समझे तो प्रगट कर कहता हूं कि मेरी स्त्री पर पुरुष से रमन करते देखी तिस से मुझ को बहुत हंसी आई काम लीला को देख हंसी आई देख राजा मैं हूं सो तिस को तेरी रानी को बड़त अचरज हुआ कि इस के आगे फूलों का ढेर हुआ है रानी को राजा देख फूल मारा फूल के लगते ही मूर्छा आई उस वक्त महता ब्राह्मणी की तरफ देखा कि यह मूर्छा नहीं आई इस को काम व्यापा है तिससे गिर पडी है तब महता बहुत हंसी बोली कि एक विसाला नाम नगरी तहां केराजा सुदर्शन नाम तिसके गांव में विमलनाम बनिया है सो इस को पहले भी कह आये वही है।९। दशवीं कथा १० ॥

दशवें दिन प्रभावती सिंगार करके पर पुरुष के पास रतिको चली सुक से बोली मैं जाती हूं सुक बोला अच्छी बात है परंतु सिंगार देवी कीसी बुद्धि हो तो जाइयो तो प्रभावती बोली सिंगार देवी ने कैसी बुद्धि की सो कहो सुकने ओक्त राजापुर एक नगर है तिसका राजा रत्नेश्वर दैत्य नामा हे मुढ उसके गांव में बसता था तिसकी स्त्री सिंगार देई महा व्यभिचारिणी रही एक दिन दैत्य नाम बुद्धि का बेटा लेवे को गया था उस वक्त सिंगार देवी ने सकथार को बुलाया तिस से काम क्रीडा करने लगी नग्न होकर उस में पति को आते देख और यह विचारा किया कि ऐसा किया जिस से लज्जा रहे उस वक्त नग्न हो पति के सामने नाचने लगी तब भरतार ने कहा यह क्या भया जो नाचती है तब सिंगार देवी बोली कि ऐ मूर्ख मेरे पैर में कांटा लगा है मैं भागा देवी हूं तू नहीं जानता तैने मुझे दुखदिया मैं तेरी स्त्री को मारडालेगी इतनी बात सुनतेही मलउठालियाओर भागा तिसवक्त अपनेयार

से भोग कराय के उसे सिखावन दिया आप कपडे पहर के बैर र
ही इतने में भरतार आया स्त्री से पूछा कि देवी तू नग्न होके क्यों
नाचती थी तव बोली कि हे भरतार मुझे तो खबर नहीं कि क्या
बात हुई वह देव माया हुई इस से मैं कुछ न जानी इतनी सुन
कर भरतार की चिंता मिट गई इस तरह सिंहार देवी कैसी करे
तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी सुन के फिर सो रही॥

ग्यारहवीं कथा ११

फिर ग्यारहवें दिन सिंगार कर पान खाय के चली उस वक्त सु
क से बोली हे सुक मैं जाती हूं तब सुक बोला कि जो रंभा ब्राह्म
णी तरह अद्भुत रस आवे तो जाउ तब प्रभावती बोली कि सो कह
क्या हुआ तब सुक ने कहा कि एक भांडलीपुर नगर था
राजा भीम नाम राज करता था तहां त्रिलोक नाम एक ब्राह्मण
था तिसकी रंभा नाम स्त्री थी और व्यभिचारणी थी पर पुरुष
से प्रीत बहुत करती परंतु भरतार के भय से कोई कुछ कह न स
कता था एक दिन पानी भरने को गई तहां एक पथिक आ
वते देखा रूपवंत गुणवंत और जवान है उसे देख उसके मन
में आई कि इससे रति कीजिये उस के मन में भी आई कि रंभा सों
रति करों तव रंभा ने कहा पथिक मेरे संग आओ लेकिन कुछ
न बोलियो मत मेरे चरित्र देख उसका भी मन राखो और तेरा भी
रंभा ऐसे कहि घर ले आई उस वक्त घर के पति ने पूछा ये कौन
है तव उसने घड़ा धर बोली कि मेरी मोसी का बेटा विद्याविलास है
मुझ से मिलने को आया है तव ब्राह्मण बोला इनको बैठाओ अ
च्छी तरह से भोजन करावो स्त्री ने वैसे ही करा इतने में राति
हुई त्रिलोक ब्राह्मण घर का धनी ऊपर जाकर सोता रहा और वि
द्याविलास नीचे सोता जव पहर रात गई जब रंभा विद्याविलास

के पास आई और कहा कि अपना मनोर्थ पूरा कर तब ब्राह्मण बो
ला कि तूने कहा मेरा भाई है अब कैसे करें इस में दोष लगता है इससे
नर्क गामी होता है तूही अपने मनमें विचार कर वहिन कर भोग करूं
ये वात कभी न होगी भोग न किया पर वह न मानी रंभा ने कहा। स्नो॰
यनो हि दुर्लभा रामा पितृभर्तृ परायणा। पितृमई मातृभूत्वा भेजव्य
कामनी नरैः।१। हे मूर्ख कामनी दुर्लभ है माता पिता भर्ता जिनकी
रक्षा करे सो आप से आवे और भोग न करे सो नर्क गामी होता है। स्नो॰
कामनीं स्वयमायातां यो न भुंक्ते नितंबनीं। सो वस्यं नरके यांति तत्र
भ्यासतो नरः।१। काम पीडित स्त्री आवे और पुरुष भोग न करे
तो नर्क में जाय अरे ब्राह्मण तू बडा मूर्ख है आगे प्रद्युम्न ने माता
की वेटी से भोग किया यह तो आगे से चला आता है इससे देखे
नहीं इतना कहा पर उसके मन में न आई तब रंभा को गुस्सा आ
या और ये कहा कि देख तो मैं क्या करती हूं इतना कह चोक में आ
ई ऊंची आवाज से रोई और कहा कि देखरी परोसन मेरे भाई को
त्रिदोष हुआ जो मारजाता तो मेरे माथे अपयश होगा इससे सब
देखो इसके घर के कहेंगे कि इसने मारा होगा इतना सुनके ब्रा
ह्मण को दवक गया तब रंभा आग लेकर दीवा जलाया आग से से
का इतने में पति आया और परोसी सब आये अरी रंभा तू काहे को
रोती है तब बोली मेरे भाई को त्रिदोष आगया है इस से रोती हूं आग से सेका
तब अच्छा हुआ है इस बात को सवों ने सच जाना फिर सब से कहा
कि तुम लोग घर जाउ अब अच्छा होगया सोता है सावको विदा किये
अपने नाम से इस तरह एक महीना रख और अच्छी तरह भोग
कराया पाछे सब से विदा हो कर अपने घर आया जब २ आवे
कोई पूछे नहीं इस तरह की तेरी बुद्धि हो तो जा नहीं तो मत जा यह
सुन सो रही।११।   बारहवीं कथा १२

फिर बारहवें दिन प्रभावती सिंहार कर पर पुरुष के भोग करने को चली तब सुक से बोली हे सुक मैं जाती हूं तब सुक बोला अच्छी बात है पर भोगा कुम्हारी ने जैसा अपने भरतार को जबाब दिया वैसी करतूत है तो जाउ नहीं तो क्यों लाज गंवायो तब प्रभावती बोली उस ने कैसा उत्तर दिया सो कहो तब सुक बोला कि एक नवलग्राम है तहां नरपति नाम राजा है तहां महाधन नाम कुम्हार बसता है ताकी स्त्री का नाम भोगा है अति व्यभिचारिणी एक दिन उसका भरतार घर नहीं था उस समय एक पुरुष को बुलाय वासों रति करने लगी ताही समय भरतार आया तब वहां करीजो ताको बावल पर चढ़ाय दियो नामी वर यौवरतु डर को मारो खिसल परो और भागो वा समय पति बोलो यह कौन है स्त्री से पूछो तब स्त्री हंसी कि आज बड़ो अचरज भयो ये जो मनुष्य है याको राजा के आदिमी पकरने को आये थे तब ये भागो कछु न बनी तब अपने घर में आय छिपो इतने में तुम आये उन जानो वेई आये तब बावल पै चढ़ो हल वलाय के कपड़ा हू न पहर सको ता सो मोकूं हंसी आई तब कुम्हार बोलो तू सांची है सुक बोले ऐसो जवाब तुरत आवे तो जाउ इतनी सुन प्रभावती सो रही १२

तेरहवीं कथा

अब तेरहें दिन प्रभावती कामक्रीडा को चली और सुक सों कही हे सुक मैं जाती हूं सुक बोला अच्छा परंतु निरत क ब्राह्मण कीसी बुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो मत जाउ तब प्रभावती बोली सो कहो तब सुक बोले कि विषावंत नाम राजा हतो तहां राव ब्राह्मण नाम कामी हतो एक दिन तलाव गयो तहां एक रूपवंत वनीता देखी वासों कह्यो मोसों रति कर तब वाने नाहीं की तब या पै पो गयो वारीत स्त्री का घड़ा उठाइवे को पास गयो वा समय कुच मर्दन कि

यो ग्रवुधन कियो वडी वार ताई ताही समय वानियां आय गयो दे खातो कही ये काम आछो नहीं है खवर परेगी मैं दरवार में पुका रेंगो तदतो ब्राह्मण डरो ओर अपने असन पास गयो वित के नाम ब्राह्मण सों कह्यो जो मैं कुकर्म करता वने नीसे उस का धनी आया उन कही राजा के आगे जाय पुकारोंगे तासों तुम्हें पूं छता हूं कि मैं कहा करों तव वितर्क कही कि हां हां कहियो और वच २ कहियो यह वात सिखाई ताही समय राजा के आदमी आये पकर ले गये जव वहां गयो तव सव पूछो तो हां हां करी फिर वच २ करने लगो तव सव ने कही कि यह वावरो है या को सुभाव यही है तासों कछु मत कहो जो ऐसो मन आवे तो जाउ इतनसुन प्रभावती सो रही॥ चोधवी कथा २४

फिर २४ वें दिन प्रभावती सिंगार कर रति करने चली तव सुक वोला जाती तो हो परंतु जारी आवे तो जाउ जैसे वल्लभा ने साहस करा तव प्रभावती वोली क्या साहस किया सो वताओ सुक ने कहा एक प्रतिष्ठाना नगर तहां का राजा देवपाल तहां सुभ करन नाम वानियां तिसकी स्त्री वल्लभा थी एक दिन सुभकरन स्नान को वैठो ताही समय वल्लभा एवार सों संकेत जाती तव पति सों चतुराई सों वोली जल नहीं है नहायगो काहे से कहो तो तलाव सों भरलाऊं तव पति वोलो अच्छी वात है इ तने में वल्लभा चली सो संकेत अर्थ लगाई जासों मनोर्थ हतो सो पूरो कियो तामें पहर एक लग्यो इसने विचारी जो मैं अव जाऊंगी तो कहेगो तू कहां रही तव कहा उत्तर देउंगी तासों यह विचारी जो वहुत आदमी पानी भरते हों तहां चालिये वि चार कर वहां गई देखे तो वहुत भीर है उहां भरने लगी ताही समय गिर पडी इतने में सुभकरन को कहने लगे कि तेरी स्त्री

गोहर में गिर पडी है तब तो रिस मिटगई है वहां को चलादेखे तो सोचहे तब निकार के पूछा कि कैसे गिरी वल्लभा बोली जो मो को लाज बहुत थी यहां भीड हवी तासों गिरपडी याते पहर एक लगो सुनके घर ले आयो हे प्रभावती ऐसो साहस होय तो जाउ इतनी बातसुनसो रही॥ पंद्रहवी कथा १५

फिर १५ वें दिन प्रभावती सिंगार करे पर पुरुष के पास रवि को चली तब सुक से बोली हे सुक मैं जावी हूं सुक बोला अच्छा पर सिंगारदे पाणी सी मति उपजे तो जाउ तब सुनकर प्रभावती बोली कहो तब सुक बोला एक नागपुर नाम नगर है ताको राजा नरसिंह महतो ताके गाव में धनपाल बनिया है ताको वधू सिंगारी नाम हे बडी चतुर परंतु धनी मूर्ख था और पुरुषन को बुलाय रति करे परंतु पति नजाने एक दिन अपने पति को जिमावत हती सो समय आयो जानो तब बारी में सो झांकी ताही समे नेत्र सों समस्याकी कि तू चल मैं आई यह कह ताही समय बुद्धि उपजाई जो पांव सों घी डारि दियो सब गिर गयो ता समय देखि पति बोलो जोरू चौंके षाउ जो तो ले आइयो ता समें घी के मिस चली गई वासे नीके प्रकार रति कियो पहर एक बीतो तब मन में विचारी कि पति रिस करेगो तब बुद्धि विचारि के चोहट में वेही गोदी में धूर बहुत भरी तामें घीव डारि दियो और रोवत चली आवत ही देखी तो भरतार बहुत कोप कियो इतने में जो देखे तो स्त्री रोती आई है तब तो रिस उतरि गई और पूछा तू क्यों रोवती है और तेरी गोद में क्यों धूर भरी है तब स्त्री कहने लगी जो तुम ने कहो सो वगले आवती सो दोरी गई जाके सोदा लिया लेकर चली ताही समय ठोकर लगी सब गिर धूरे में मिल गयो जब उठावन लगी तासों देर लगी जब न उठो तबे सब समेट लाई यह बात सुनि रिस दूर भई तासों प्रभावती

जो ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ नहीं मत जाउ इतना सुन प्रभावती सो रही ॥१५॥

सोरहवीं कथा १६

फिर सोरहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुषसों रति को चली ता समय सुकसों पूछी हे सुक मैं रति को जाती हूं तव सुक वोला कि अच्छी वात है परंतु रुक्मनी कीसी वुद्धि उपजे तो जाउ तव प्रभावती वोली कैसी वुद्धि उपजी सो कहे तव सुक वोला एक विसला नाम नगरी विजै सेन राजा राज करता था तिस के गांव में धर्मदास सेठ वसता है ताकी स्त्री रुक्मनी भरतार सों कपट कर अति नेह राखे जो वो जाने पति व्रता है अपने धर्म में सावधान है एक समय भरतार परदेश को गयो पाछे वसंत ऋतु आई कामोद्दीपन भयो ता समय दूती को वुलायो और कहा मैं रति करना चाहती हूं कोई पुरुष ले आ अच्छा तव दूती कही अच्छी वात है यह कहे किसी पुरुष को ले आई वह वड़त चतुर थी देखकर वड़त खुश ड़ई सनेह कीनो वह नित्य आवे रति करै वड़त प्रसन्न रहे एक दिन मित्र सों लड़ाई भई गुस्सा भई ताही समय रुक्मनी की चोटी काट लई फेर जात रहो ताही दिन भरतार आयो तव पूछो कहो राजी हो इहां वैठो तव कही जो न्हाइ आऊं पूजा कर आऊं तव वैठोंगी ऐसा कह पूजा को घडी २ लगाई पास आई भरतार सों मिली तव भरतार पूछो जो चोटी कहां तव स्त्री वोली जो तुम परदेश गये थे सो देवी को मानो जो मेरा पति जा दिन आवेगा ता दिन तेरी पूजा करौंगी सो पूजा कर चोटी चढ़ाई तव तुमसों मिली भरतार खुश भयो जो ऐसी पति व्रता है और मोको वड़त चाहत है ताते प्रभावती ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी कथा सुन प्रभावती सो रही।

सत्तरहवीं कथा १७

सत्तरहवें दिन फिर प्रभावती सिंगार करके भोग को चली तासमें शुकसों वोली हे शुक मैं रति को जाती हूं तव शुक वोला अच्छीवात परंतु साहवदे को नेवर उतार लियो तव वुद्धि करी फेर लियो जोऐसी वुद्धि हो तो जाउ तव प्रभावती वोली कि कैसी कीसे कहो तव शुकवोलो एक विसाल नाम नगरीथी तहां विजयसेन राज करत हतो वहां समरत नाम वानियां वसतहे ताकी स्त्री जयंती ताको पुत्र गुणाकर नाम वड़ा चतुर प्रवीण हे निसंक काहू की संका नहीं सव घर के जानें पर पुरुष सों रति करै एकदिन पर पुरुष सों रति करती हती ता समय ससुरो जाय पांव को जेवर उतार लियो साहवदे जानी जो ससुरो उतार लेगयो तव आप सांची होने के लिये भरतार पास आई सोई रूककोर के जगायो तव उठो तव वोली मैं तुम सों का कहूं परंतु कह्यो चाहिये जो तुम्हारा वाप जेवर उतार लेगया मैं तुम्हारे पास सोती थी यह वात सुन के क्रोध भये जो वहू सों ऐसी हंसी का यह तो वात लाज की थी तव जाय आपने वाप सों कही जो तुम को ऐसी न चाहिये जो वहू के पांव को जेवर उतार लियो लाज नहीं आई तव पिता सुन लज्जित भयो और यह कहो जो यह वात काहू सों कहियो मती मैं चूको इतनी कह जेवर दियो वेटा ले गयो वहू को दियो और कही काहू सों कहियो मत देखो ऐसी निर्लज्ज ससुर को लाज आई परंतु वहू को लाज न आई जासें प्रभावती जो ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ इतनो सुन सोरही॥

अठारहवीं कथा १८

फिर अठारहवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष के पास चली और शुकसों पूंछी मैं जाती हूं तव शुक वोलो वहुत अच्छे हे परंतु सगाविगारी कीसो वुद्धि उपजे तो जाउ तव प्रभावती वोली कैसे सो कहो तव शुक वोलो विशाल नाम नगरी विष्णु सेन राज करता था

तिसके गांव में वल्लभ वानियां रहता था तिसकी स्त्री सुगंधिका महा व्यभिचारिणी थी चौहटे में रहे उसे सब कोई जाने काहू के सारे नहीं रची देवस पुरुष सों रति करै काहू को कह्यो माने नहीं सदा वाहर सोवे सब ने कह्या पर माना नहीं तव सब मिल राजा पै पुकारे कि हमारी वहू मानती नहीं तव राजा को हुक्म भयो जो कोई रात्री को वाहरे रहेगा सो राजा का सजावार होगा यह नगर में डौंडी फेरी सुगंधिका तो सदा वाहर रहे जव यह वात सुनी तव तो रात्रि घी४ पांच ताईं रही यार से मिलाप करि पाछे आई तो पति ने किवार देलिये वहुतेरा पुकारी परंतु कोई वोलो नहीं तव उसने वुद्धि उपजाई जो तुम नहीं खोलते तो मैं पडुंगी ऐसी कह एक वडा सा पत्थर लेइके कुए में डारा पुनियां के भरतां ने धमका सुना कि कुए में परी यह सुन किवार खोला वाहर निकस कुवा देखने लगो ताही समय सुगंधिका घर में वैठी किवार देलिये और सोर ही तव भरतार पुकारो कि किवाड खोल वोली नहीं खोलूंगी वहुत वार ताईं पुकारो तव यह कही जो आज पीछे मेरो नाम लेय नहीं तो खोलूं तव भरतार वोलो कि नाम नहीं लेउंगा हाथ जोड पांव पडा वचन दिया तव घर में आवन दिया तासों प्रभावती ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ इतनी सुन सो रही ॥

उन्नीसवीं कथा १९

फिर उन्नीसवें दिन प्रभावती सिंगार कर पर पुरुष से भोग करने को चली शुक सों पूंछी हे शुक मैं जाती हूं तव सुक कही जो तेरे मन में आवे सो कर शास्त्र तो यह कहता है। श्लो० दृष्टिपूतन्यसेत्पादं वस्त्रपूतपिवेज्जलं। सत्यपूतवदेत्वाकं मनः पूतं समाचरेत ।१। जो मन में आवे सो करो परंतु गुनाढ्य नाम ब्राह्मण मन की सी जान्यों किसो तैसे तुम हू करो यह सुन प्रभावती कही

सो कहो तब शुक बोलो हे प्रभावती एक विशाला नाम नगर विज
यसेन राजा राज करता था वहां जाऊक ब्राह्मण ताकी स्त्री सरू
पा थी ताको गुराकर माता पिता को छोडकर परदेश गयो ज
यंती नगरी में जाय पहुंचो वनजारा को रूप धर लियो जो मैले
वस्त्र एक थैला में खांड लगाई शहर में फिरने लग्यो तब लोगों
ने जाना कि वनजारा है तहां एक मदन वेश्या है ताकी दासी
ने पूछा तू कहां से आया वह बोला मैं बनजारा हूं खांड वेचने को
भाव पूंछत हों राजा सों मिलोंगे जगात देखें तब तो दासी जानो
जो धनपात्र है ये जान आदर कियो और घर में राखो वहीं र
हो वेश्या जानो धाना ढ्यहे यासों द्रव्य लीजिये यह जान
सनेह कीनो रात को संग सोई पहर एक रात रही तब वाको जे
वर रुपये २००) को उतार लियो और भागो देश को गयो जब स
वेरो भयो मदना वेश्या जागी देखे तो खांड को थैलो हो वह नहीं
है और गले को जेवर नहीं है बहुत सोच किये पछताय बैठ
रही जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी सुन सोरही।

बीसवीं कथा २०

फिर बीसवें दिन प्रभावती पर पुरुष सों रति करने चली ता समय
शुक सों पूंछी हे शुक मैं जाती हूं शुक ने कहा अच्छा परंतु गोभि
भिल्ल बीसावो कैसी बुद्धि हो तो जाउ बोली सो कहो तब शुक जी बो
ले एक परमवती नगरी है वहां का राजा पुरुषोतम उसके गांव
में दरिद्र बनिया चोरी को पैठो वहां देखा तब गजीवांसा फिरत है क
छु न मिला केवल चार सेर सरसों पाई ता समय धनी जागो पु
कारो ताही समय राजा के सिपाही आये चोर पकरो पास
निकसी राजा के पास गये सब जगह कहत फिरे जो
चोरी करेगा ऐसी गति होगी तब गोभिल नाचर हंस २

कहा मैं न मरेंगो मेरी रक्षा वडी भई तव राजा सुन अचर
ज मानो जे मरे क्यों नहीं तव राजा ने पूछा तू कौन मरेगा
पराये धन मूसा तू मारा जाता जाइगा तव यह वोला महा
राज तेरा व्याह भयो तव पांच सेर सरसों वांधी थी अव पां
च सेर भई तासों वडी रक्षा है तव राजा वोलो यह चोर
नहीं चली है याको छोड देउ राजा की आज्ञा से छोड़ दिया प्र
भावती जो ऐसी वुद्धि उपजे तो जाउ इतनी सुन सो रही॥

२१वीं कथा

फिर २१वें दिन प्रभावती सिंगारकर रतिको चली तव शुक वोला
जो जावो तो खोंचा वनिये की सी वुद्धि उपजे तो जाउ नहीं तो म
तजा प्रभावती वोली सो कहो तव शुक कहने लगा एक करह
र नाम नगर है गुणप्रिय राजा है तां गांव में सोज वनिया वाको
स्त्री कतिका है पतिव्रता है परंतु वाकर परोसन महा गरीव है
परंतु साडा के मनमें नहीं तासों कहे वने नहीं एकदिन सो दायना
की सेवा को गयो ता समय परोसन गई किसी से भोग न कीनो
ता समय स्त्री ने वुद्धि विचारी कि कुछ इनको दीजिये वोली कि
भाइ यो निठाइ वाड़ अरु मोहर दो लेउ पर एक काम हमारो क
रो सहर में ऐसे पुकार के कहो एक वेल चरत है ईका कोई धनी हो
य सो लेजाय इतनी वात कह आवो तुमारा गुन मानेंगे इतनी सु
न जाय पुकारो ताही समय मोढा की स्त्री सुनी मनमें चिंता कीनी
जो वडो अनर्थ भयो विचारो जो यक्षके मंदिर में से वरू की परोस
न कर्म सों परो यह जानि वुद्धि उपाई अपनी नंद की मतई जग
य साथ लीनो और लरका गोद में लियो सव कहे जो कहां जाती है
तव वोलो यक्ष की पूजा के लिये जाती है सवने कहो पूछो का
ते है जाउ ताही समय दोउ जनी यक्ष के मंदिर में गई।

वहां देखे राजा की चौकी है तब भीतर जान लगी तब चौकी
र बोले राजा के चौर यामें हैं तू जाय मत तो बोली उन सें मे
री काम नहीं में अकेली पूजा कर आवेंगी तब चौकी दार
हो आछे जाव करो तब कहो भलो है। इतनी कह ननंद को
लड़का देगई देखे तो परोसन बैठी है तब अपने कमरा वाको
दिये वाके आप पहर वाको बाहर काढ़ स्त्री पुरुष वहां
व घर आये सवेरे राजा को ख़बर भई जो मन्दिर में घिरे
लावो तो कोतवाल गयो देखे तो स्त्री पुरुष हैं
उपजी यह क्या बहुत कायल भयो सीख दे अपने घर गयो
तासों प्रभावती ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ ये सुन सो रही२१

बाईसवीं कथा का प्रारंभः २२

बाईसवें दिन प्रभावती बोली कि हे शुक में जाती हूं तब शुक बोले
एक नटनी को सो जवाब आवे तो जाउ तब बोली कैसे सुकेनो
क्त समर समर मती के तट पर शंख पुर नाम नगर है वहां सु
दर्शन वहां का राजा है तहां सुरादय नट रहे ताको स्त्री कोलिका
गरीब रहे ताके मित्र सुंह करण ब्राह्मण नदी के तट वाको घर
है महा देव को पुजारी रहे एक दिन परोसन के संग पानी को
गई पाते पाछे देखने को चलो तब कोलिका परोसन से क
ही जो पार जाउ यार है वासों भोग कर आऊं तुम घर जाउ
ऐसा कह घड़ा पै चढ़ तिर्ती२ पार गई वासो कोलि कर प्रसन्न
कियो पाछे घर आई आते ही देखो पाते परोसन के
सों खड़ो है अब आंखन संज्ञा सों बताई तब कोलिका सों
बोली कोलिका तू अच्छी बात कीनी शिव के दर्शन
पाते की उमर बढी मोको बहुत चिन्ता थी पांच दिन
ताईं जाइ तो वृद्धि पावे तब कोलिका बोली जो पाते जी वेतो

१० दिन जाऊंगी तव ये वात पति ने सुनी प्रसंन्न भयो जो मेरी
री स्त्री पतिव्रता है ये जाने जो जाउ है प्रभावती सुनसोरही

तेईसवीं कथा २३

फिर तेईसवें दिन प्रभावती राति को चली शुक से कहा हेशु
क मैं जाती हूं आछो मंदोदरी केसी बुद्धि उपजे तो जाउ वो
ली कहो सो कथा तव शुकनी कही एक प्रतिष्ठा नगर है तहा
हेम प्रभा राजा है तहां यशोधन सेठ है ताके मोहनी स्त्री ता
की वेटी मन्दोदरी सो कांति नगरी व्याही है श्रिवत्स सेठसे
एक दिन सेठ सासरे आयो कोई दिन ससुरार में रक्खो स्त्री
के गर्भ रहो पांच मास को भयो एक दिन मन में आई कि
मोर भक्षण करो एक दिन राजा मोर को आई वेरी चुगाइ
र वुलायो पकड़ मारके कवाव कर खायो जव ध्यान को स
मय भयो तव राजा को वेटो वोला मेरा मोर कहां आदमी
देखत फिरे पायो नहीं कुंवर ने डोंडी फिराई कि जिसने मोर
लिया सो राजा का गुनहगार है यह पता वतावेगा ताको
लाख टका इनाम इतनी दूती वुलाई तव कुंभिका दूती हजू
र में आई तव हुकम भयो मोर का पता दे तव दूती कहा आ
ठ दिन में पता दूंगी यह कह सलाम कर घर आई विचारी
मालन का भेष कर तलाश करूं फूल ले घर २ फिरने ल
गी फिरते २ श्री वत्स के घर आई मन्दोदरी वेटी थी जहां जा फूल
धर सनेह करने लगी मन की वात पूंछी सव सोः कही जो धूर्त के ल
क्षण हैं श्लो० मुखं पद्मदलाकारं वाचा चंदन सीतलं हृदय कर्तरी
युक्तं त्रिविधं धूर्त लक्षणं १ सो तासों पूंछी तेरो मन काहे पै है सो लाउं धीर
मांस में चित है सो कहो ऐसे कह श्लो० कहा एणः कुरंगो शशीनः नितरोसा
मेतत्मपूसिभिकोरमाक्षेमेशमासगुणधिका १ इतने जो कहो सो लाऊं मन्दोदरी

बोली मोको नाहीं चाहिये तू काहे को खाद मन्दोदरी बोली मोरको खाया है दूती बोली मोर कहां पायो मन्दोदरी बोली राजा को मोरथा यो मार खायो ये सुनके कुटनी राजा पै गई महाराज मैं पतास ई हूं यह सुन राजा बोला वृतांत कहो कुटमी बोली यशोधर सेठकी बेटी वाने मोर खायो ये सुन राजा के मन नहीं आई वासों ऐसो काम नहीं य तू झूठी है मन्दोदरी मेरे सामने कहे तो जानूं दूती बोली सा मुने कहाय दूंगी ये पिटारी में राजा को ले गई मन्दोदरी के आगे धरी और ये कही मैं तीर्थ को जाती हूं यामें मेरो माल है तुम धरि राखो यह कह मजूषा के सिर पर हाथ फेरा कहने लगी तूने मोर कैसे खायो सो मन्दोदरी सब हक़ीकत कुटनी बोली मजूषा सुनो तब मन्दोदरी जानी याम कुछ है तब कहा अरी तूने सांच जानी मैं ने सुपने की बात कही ऐसो देखो तब जागी इतनो सुन कुटनी को मन बिगर गयो मजूषा कोलेके निकरी राजा के घर आई राजा गुस्से हो कुटनी के नाक कान काटलिये इतन बुद्धि उपजे तो हे प्रभावती जाउ इतनी सुन सो रही चौवीस्वी कथा २४॥ फिर चोवीसें दिन रात को चली शुक से पूछा में जाती हूं शुक बोला अच्छी बात परंतु मीडिका सो उत्तर आवे तो जा उ तब बोली समझाके कहो शुक बोला उमिला गांव में दानसील राजा है तामें सोमदास कर सुनी है ताकी स्त्री मीडिका सो महा ग़रीब राह चले एक दिन सोमदास खेत गयो वाके खाने को भात रोटी ले चली सो राह में सूर पाल यार मिलो वासों भोग करने लगी रोटी भात धरन लागी मन में विचारी कउवा लेजाइ तासों ऊंची टांगि राखी इतने में मूल देव मणवादी आयो रूख सो भात उठायो और ऊंट के मेंगन भरदिये राति होचुकी तब देखी नहीं वैसी ग पति के आगे राखो जो पति देखे तो ऊंट के मेंगन हैं पति बोला कहा तब मीडिका बोली रात में सुपना देखो सो तुमको भाखो नहीं तासे

ऊंट का लेंडा लाई इनके खाने से कष्ट मिटेगा इतना सुन लेंडा खावे स्त्री को सती जाना जो इतनी बुद्धि हो तो जाउ इतनी सुन सोरही

पच्चीसवीं कथा २५

फिर २५ वें दिन प्रभावती बोली हे सुक मैं जाती हूं राति को सुक ने कहा अच्छा परन्तु धूर्त कुटनी कैसी बुद्धि उपजे तो जाउ प्रभावती सो कहो शुके नोक्तं चंपापुर नाम नगर है सुदर्शन राजा है चंगार सुंदरी रानी राम चन्द्र प्रधान चन्द्र सेन साहु प्रभावती भार्या ता को राम सिंह वर्ष को बेटा था तहां कुटनी वाश में रहे हरामजादी है ताको साहु बुलायो कहो तुम्हें हजार मुहर देवेंगे जो मेरे बेटा को विचक्षण करदे तो खुश करों यह सुन कुटनी बोली शाहजी तेरे बेटा को ऐसी पढाऊं जो हारे नाहि ये कह जो हर मुहर लीनी औ र बेटा को लीनी अपने घर गई वर्ष राखे अपनी कला सिखाई प्रवीन किया पिता को सौंपो पिता ने प्रवीन जान संगल दीप व्योहार को भेजो वो गयो वहां कलावती वेश्या हती वाके घर एक वर्ष रहा वह्न चतुर भयो तब एक दिन राम सिंह वेश्या से कही ऐसी वेश्या कोई नही जो के मुझे वस करे तूने वस कीनो ये सुन कलावती अपनी मां से कहा जो ऐसा कहत परंतु महा धूर्त है वस नहीं यासे कोई तरह द्रव्य ली जे। ये अपने घर जाइगो या सो प्रपंच कीजे जब ये जाय तब तू कहिये मैं भी चलूंगी और नहीं तो प्राण जायगा ऐसे विचार कीजो इतने में राम सिंह आयो और कहा मैं अपने देश को जाता हूं ऐसुन रोवन लगी मोको भी ले चल नहीं तो प्राण त्यागन करेंगी यह विचार कीनो वाकी महतारी आई यों कही तू काहे को करत है ताही समय राम सिंह विचारे कि याने विचारी है सो करेगी तासों द्रव्य का लालच छोड दीजे इत्यर्थ अपने घर गयो पुत्र को देख पिता बोलो खेद मत कर अच्छी है ऐसा कह पुत्र को धीरज दयो तब पुत्र संगल दीप की बात कही तब पिता पुत्र को समझाय

पाछे कुटनी को बुलाया वो कि मेरा पुत्र संगलदीप को गया था सारद्र
व्य दे आया भला पढ़ायो सो हमारी वने सुफली कुटनी वोली मेरे संग
पुत्र पठायो देखो कैसे काम कर आऊं कलावती लीनो सो द्रव्य लाऊं इत
नी कह संगलदीप को सिधारी तहां कुटनी चांडाली को भेषकियो पह
ले रामसिंह को समझाये एक दिन रामसिंह कलावती के बैठो हो कु
टनी चांडाली को भेष धर वेश्या के घर गई देखो तो वो वेश्या पलं
ग पर बैठी है देखते ही आगे आई ठाढ़ी भई और बोली शाह के बेटे
मैंने अब तोको पायो तू बड़ो चोर है मेरा द्रव्य चुराया खबर में
राजा सों पुकारूंगी दोऊन बंधाऊंगी ये कही पूछो वेश्या तू कौ
न है रामसिंह बोले मेरी माता है याको मूस केलाओ तो को दि
या ये कही तब कुटनी को भीतर बैठायो बाके पायन परी वाही
समय कुटनी ने लात दीनी तबतो हाथ जोड़े और कही द्रव्य देतो
छोड़ं वाने द्रव्य दीनो लेकर घर आये बेटा और द्रव्य शाह को सौंपी
जो ऐसा जवाब आवे तो जाउ इतनी सुन प्रभावती सो रही २६॥

सताईसवीं कथा प्रारंभः २७

फिर सताइसवें दिन प्रभावती रात को चली शुक सों बोली मैं जाती
हूं शुक बोला आछो परंतु सोरठी कैसी बुद्धि उपजे तो जाउ तब प्र
हो कहो कैसे तब तोता बोला शंखपुर नगर है तहां सोमेश्वर
राज करता है तहां धन सेठ ताकी स्त्री सोहनी आति चंचल है को
ई नगर में छोड़ो नहीं परन्तु दिया दित्य ब्राह्मण सों नित्य क्री
डा करनी तब पति ने क्या किया अकेला छोड़ा नहीं तब सोहनी ने दूती
को काहे पठायो मित्र से ये कहियो चित आइयो रात को क्रीडा
करेंगे एक दिन ब्राह्मण रात को गया देखे तो स्त्री पुर्ष सोते हैं
तो कहा काम कियो एक ओर पति दूसरी ओर आप जा सो
यो तासमय पति छाती पर आप हाथ धर के देखे तो दूसरो

हाथ है हाथ पकर चोर कर पुकारो और कही दीवा करो स्त्री बोली मोकूं डर लगता है और तू हाथ को पकडी वो तो भाग गयो पति दीवा लेआया देखो तो पड़ा को हाथ है तद खिसियानी हो सोहनी बोली स्वामी यहां चोर नही तुमको भ्रम भयो वात बनाय दीना पति चुप रहो ऐसी माति हो तौ जाउ इतन वात सुन सो रही॥२७

अट्ठाईसवीं कथा २८॥

फिर अट्ठाइसवें दिन प्रभावती सुकसो बोली में राति करनेजावी हूं सुक बोला औघ वात है परंतु देवकी कासा उत्तर देउ तौ जाउ तव बोली कैसें भई तव सुक बोला कुसुम नाम पाढ कुंवर पाल राजा है असकरन कुनवी मूर्ख है ताकी स्त्री वहुत गरीव प्रजा करण ब्राह्मण से आसक्त एक दिन सवने कुनवी से कही तेरी स्त्री ब्राह्मणासे है सुन संकेत रुष पै चढ़ वायो देखने लगी देवकी अ भा दोउ रमण करत है दुष्ट जान ऐसा कर्म करता है देवकी ब्राह्मण को छोड़ नहीं तो वहुत क्रोध भयो रूष से उतरो तौ पति को देख वार भागो तव देवकी बोली जो पतिज्ञा है जो तेरे देखरा तिकर ग यो अकार छुडावा नही तो पति बोला में तो न देखो स्त्री कही य में भूत है जो मोसों कुकर्म कीनो पति बोलो मोसों लड़ै तो भूल नहीं तो रूठ स्त्री बोली में रूष पर चढती हूं यह कह रूष चढी पु कारी लो यामें देव है जो समझलो तो पुकार के कहो तो ब्राह्म ण भूत को रूप धर कुनवी को पछाड़ा ऊपर से बोली यही मो सों भोग कियो यो सुनतेही ब्राह्मण वो भाग गया स्त्री उतर आ ई पति वोलो जो सांची है ये कह घर सोहे प्रभावती ऐसी बु द्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही २९

तीसवीं कथा ३०॥

तीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा जाती हूं
शुक बोलो मंगल अस्तु मूल देव मंत्र वादी उत्तर आवे तो जाउ
बोली कहो शुक बोलो एक समान है तामें भूत दो रत हैं एक क
दूसरो उतार दोउन में झगरा परो दोउ आपस में यह कहें जो
अपनी अपनी स्त्री की अच्छी करत है कोई तामें नहीं तास
मध मूलदेव मंत्र वाही आयो तासों दोउ बोले हमारा झगड़ा
तुम चुकावो मूल देव बोला तुम्हारा झगड़ा क्या है तव कहा स्त्री
कौनकी अच्छी तव विचारी सांची कहूंगो तो खायगो ता
सों मनमे विचारी और ये कही जाको स्त्री प्यारी ताकी स्त्री
प्यारी अच्छी है तव दोउ राजी भये तव सो ऐसी बुद्धि हो जाउ सुन सो
रही॥३०॥

इकतीसवीं कथा ३१

फिर इकतीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोले जाउ परंतु
सुबुद्धि काग की सी मति हो जाउ तव बोली कहो शुक बोला म
गध देश में पंचक वन वहां अनेक दिन तो चंपा के रुष पर
बुद्धि काग और वाके तरे चित्राग हिरन रहे दोनों में प्रीति थी
वहां हिरन को काहु स्यार ने रुष्ट पुष्ट देख अपने मनमें विचार
किया यासों प्रीति करों तो याको मास खेवे को मिले यह वि
चार हिरन के पास आ बोला मित्र तुम कुशल रहते हो मृग क
ही भाई तू कौन है वाने कही हों छुद्र बुद्धि स्यार हूं पावन में मि
त्र कर हीन हों निरवंधु अकेला वस तहां आज तिहारो दरशपा
यो मेरे जी में जी आयो अव तिहारे पायन तरे रहिहों संग ल
गो सांझ भई तव सुरंगो अपने आश्रम को चलो आयो
साथ भयो निदान चले २ यहां आये जहां मित्र जाको काग है स्या
र को काग ने देख मित्र यह कौन है मृग कही ये स्यार है और मोसे
मित्रताई करत है काग कही परदेशी से मीत न कीजे कही

है जाको सील सुभाव है आश्रम न जानिये तासों प्रीति न कीजि
ये और नीति तो यों है कि अपने घरमें वास न दीजे ये बात सुन
स्यार क्रोध भयो बोलो मित्र जा दिन हिरन से मित्रताई करी वा
दिन तिहारो कुल सुभाव कहा जानत हो जो मिल बैठे ताते अपनो प
रायो कहनो मूरखन को काम है पंडितन को तो सब अपने ही है
जैसे मृग हमारो मित्र तैसे ई तुम और भलो बुरो व्यवहार ही से जाना
जाता है मृग कहो मित्र विषाद क्यों करत हो जितेदिन रहे तितेई दि
न सहीअपनी २ चिन्ता सब उदर की करत हैं ऐसी भांति वहां रहन ल
गो एक दिन स्यार ने कहा भाई मृग हम तेरे लिये जौ का खेत देख
आये हैं सो मेरे साथ चलियो सो गयो चरने लगो रोज ऐसे जाय
चरे एक दिन खेत के रखवारे ने हिरन को देख फंद रोप्यो जो चर
न को गयो फंद में परो कहो अब मित्र बिन कौन निकारे है स्यार
फांसी देख खुसी भयो मेरे कपट को फल आन मिलो रखवारो मां
स लेगो हाड़ फेंकेगो हाड़न को हम खावेंगे ये खुसी मृग ने
जानी मेरे दुख से व्याकुल है पर यह न जानी कपटी है और स्या
र को दूर्रा देख मृग कहो तू नाहक फड़फड़ात है और ऊवा सो ऊव
जाल तो तांत का है और आठ दिन को उपवास है सो दांत से के सेव
ये और ब्रत है तो चिंता नहीं बहुत विचार किये इतने में रात विती
त भई और वहां सुबुद्धि काग जागो मृग को देखा नहीं रात को न
हीं आयो अब कहीं देखो यह कह चलो आगे देखे जाल में फं
सो है काग कही मित्र यह क्या है सुना है तू मैं तेरो कहो न मा
नो ताको फल है काग कही तेरा मित्र कहां है मृग कही वो मे
रे मांस का लोभी यहीं होगा काग कही आपने सो साथ
सुभाव सब ही को जाने दुष्ट जात का यही सुभाव है जो बातें क
रे भलाई की बाद बुराई करे हित की रीति सों प्रीति न करें क

पट कारी कुमारग बतावें अवसर पाय घात करें जैसे मांछर पीठ पाछे पीठ आय कान सूं लाग समय पाय डंक मारे तैसे ही दुष्ट मनुष्य ताते मैं कहत हौं वैरी को विश्वास कबहू न कीजे ऐसी बात सुन मृग ठंडी सांस ले बोलो जो झूठी बात कह और कोड़ु री करत हैं तिनको भार पृथ्वी कैसे सहत है ऐसे बतलाते थे तो तों रखवारो आय देखो कागने कहा मृतक होरह जब मैं पुकारो तब भागियो यह सुन वैसा ही किया रखवारो मृग को देख बोलो यह तो मर रहो याको कहा मारें आगे परो जान बंधन खोल उठावे त्योंहीं काग बोलो मृग भागो तब रखवारे ने ख्याल कर लकरी मारी सो [illegible] मूड में लगी लाग नहीं स्यार प्रमात मरो और ठौर कहा है कि तीन दिन तीन रात तीन मास तीन वर्ष में पुन्य पाप का फल मिला है ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही॥

बतीसवीं कहानी ३२

फिर बतीसवें दिन प्रभावती ने शुक सों कही मैं जाती हूं शुक बोलो अच्छी बात है परंतु धूर्त कैसी बुद्धि हो तो जाउ बोली कहो शुक बोले जो पिंगल नाम एक सिंह बन में रहिता है महदुष्ट है बहुत जीव नाश करता है ऐसे बहुत दिन जब भये वहां के जीव सब दुखी भये सब हाथ जोड बिनती कर बोले महाराज तुम हमारे राजा हो हम बहुत दुखी हैं तासो एक जीव नित लीजे और सब की रक्षा कीजे सिंह ने मानी सब सुखी भये नित्य अपनी बारी से जाय सिंह खुशी भयो एक ससा को औसर आयो ससाने मन में बिचारो याको बध कीजे ऐसे विचार सबेरो दिन वितायो जब सांझ भई तब वो गयो जो देखे तो सिंह बहुत भूखो है वासों क्रोध करो ता समय ससा आगे जाय के खड़ो भयो तब सिंह बोलो देर कहे लगाई तब बोलो महाराज मैं आयो हों मो पर क्रोध के हैं पर कान्हें

मैंने अपराध किया है परन्तु विपति सुनो मैं आप के पास आवत
हों तासमय राह में देखो तो कुवा पर एक सिंह राजत है तब मैं डरि
यो इतने में मोको घेर लियो मैंने हाथ जोडे कि राजा पिंगल के
पास जाता हूं तब उन कही पिंगल कौन है जो मेरे आगे ठाडो
रहे तामों मैं तुम्हें जाने न दूंगे तब मैं विनती कीनी और सौगंद
खाय के आयो हूं सो करो और यह तब तो तुम्हारो राजा ग़रीबन
मारवे वारो है मेरे पास आवे तो मैं समझाऊं यह सुन के पिं
गल नाम सिंह उठके गर्जे और बोलो कहां है तब ससा कुआ
पै ले गयो और कह्यो कुआ में है ये सुन सिंह कुआ में झांके
ज्योंही अपनो प्रति बिंब देखतेही बहुत गर्जना की सो कुवा में कू
दो देख ससा बहुत प्रसन्न भयो सब निर्भय हुवे इतना सुन सो रही

चौतीसवीं कथा ३४

फिर चौतीसवें दिन प्रभावती राति को चली सुकसे पूछा मैं जा
ती हूं सुक बोले रंभिका केसी बुद्धि हो तो जाउ बोली सो कहो सु
बोले शंख पुर नाम नगर है सिद्धेश्वर राजा जाको शिव पूजा से
अति रत है ताके गांव में एक शंकर माली है ताकी स्त्री रंभिका
सुन्दर है परपुरुष से भोग करती फिरती है एक दिन शंकर माली
के पिता को श्राद्ध हो तादिन अपने कुटुंब बुलायो ताही दिन रंभने
अपनो यार न्योतो बडे भोर सवारे मध्यान के समय जार आये ति
न्हें स्नान कराये बैठाये तिन के आगे खीर खांड धरी सो बैठे नीके
खाय ता समय बनिया के बेटा ने खीर को फूंदीनी सो सबने सुनी
जान्यो यहां सांप है यह जान जारो माने तब तो शंकर स्त्री सों पूं
छो ये कौन है स्त्री बोली जाको सराध करत हो सो तुम्हारे पुरुष
हैं ते अच्छा आहु अहां सो दर्शन दियो तब शंकर प्रसन्न भयो
ऐसी बुद्धि हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी बात सुन सो रही॥

पैतीसवीं कथा का प्रारंभः

फिर पैतीसवें दिन प्रभावती राति को चली सुकसे पूछी मैं जाती हूं सुक बोला श्रेष्ठ बात है परंतु गुणदत्त कीसी मति उपजे तो जाउ बोली सो कहो तोता बोला मनोरा नगर है मनोहरदास राजा ताके गाव में गुणदत्त बानियां है सो निर्धन रहे तेल को व्यौहार करत है एक दिन तेल वेंचने को धीरपुर में गयो तहां सागरदत्त सेठ है ताके घर गयो सेठ बोला ले आ यह सुन तेल वेंच दियो हमारे तेल मन पांच है तू लेगा सेठ बोला ले आ यह सुन तेल वेंच दियो तब तो सागरदत्त ने कहा तो आज अबेर है तुम रहो यह कही तब वाके घर रहो रात को सागरदत्त अपनी दूकान पर सोयो यहां गुणदत्त ने कहा करी जो रात्रि को उठ वाके घर में गयो वाकी स्त्री सों हंसन लागो तब वा स्त्री ने कहो अपनी मुंदरी मोंह दे तो तोसों भोग करों यह जो कही मुंदरी दई और वाको भोगो सवेरा भयो तो विचारो अपनी मुंदरी ले वाको विचार करि सो सेठ पास गयो सेठ से बोलो मैं तोसो व्यवहार नही करहों जो तेरी स्त्री मेरे हात की मुंदरी मंगाई सो देत नाहीं ये सेठ सुनी आदमी को आज्ञा दीनी तू याकी मुंदरी यदि लायदे आदमी गुणदत्त के घर में गयो साहनसे कही याकी मुंदरी दे दो मुंदरी लेके आयो जो ऐसी बुद्धि उपजे तो जाउ नही तो को धक्का खाइ। ३६॥

सैंतीसवीं कथा का प्रारंभः

फिर ३७ वें दिन प्रभावती सिंगार कर राति को चली तोता बोले आछे तो हो परंतु माधोदास कीसी मति हो तो जाउ बोली कैसे सुक बोलो एक ब्रज खंड नगर है ताको ब्रज नाम राजा है तामें माधोदास है सो वो बड़ो वाचाल है जुवा सदा खेले एक दिन ब्राह्मण देशांतर गया एक गांव में जवासो लियो तहां सुदर्शन दास वनिया वसत है तासों मिले वो ब्राह्मण को वनिया ने घर में अपने राखो और वने नीब

हा चंचल है सदा आनंद में रहती परंतु लोभन बहुत थीतासे यह जानी इस ब्राह्मण पास द्रव्य है यासों प्रीति कीजे तो आवे यह जान बहुत प्रीति कीनी एक रात्रि को ब्राह्मण को सुलायो भोग कीनो ता समय यह कही यह मुंदरी हमको देउ यह सुन के मुंदरी दीनी पाछे सवेरो भयो तब अंगूठी मांगी हम को देउ तब यह विचारी यह न आवेगी साहसे कहनो॥ श्लो॰ पाठ ति काग मन काल मथार यं तो सोद स्मर ज्वर मरति पियासते बातिप्यंत वल्लभ जना धरग लोभा तस्या कथ्यते कवि वरे रभिसार केति१॥ याते साहसों कहनो उचित है यह विचार साहसों बोलो अरे साह तेरी स्त्री मेरी मुंदरी देत नाही में राज में पुकारोंगो तब साह जी बोले कैसी है ब्राह्मण बोले तेरी खाट को पायो फटो हुतो वामें गिर पड़ी तब काढ़ी सो देखने को मांगी सो अब देत नाही यह सुन साह विचारो जो राजा के पुकारेगा तो राजा दंड देगा ये विचार अपनी स्त्री सों कही ब्राह्मण की मुंदरी दे याको माल राखनो योग्य नहीं यह दुष्ट है ये कह समझाय मुंदरी दीनी ब्राह्मण ले गयो ऐसी मति हो तो जाउ यह सुनि प्रभावती सो रही॥ ३८वीं कथा का प्रारंभः॥ फिर अड़तीसवें दिन प्रभावती रति को चली शुक से बोली में जाती हूं शुक बोला अच्छी बात है परंतु लाला बनिक कैसी मति उपजे तो जाउ बोली कहो तब तोता बोला एक कुंदनपुर नगर है तहां भीमसेन राज करता है मधुर बनिया है ताके द्रव्य बहुत रही सो निर्धन भयो विश्वास कोई ना करे भूखे मरन लागो घर की वस्तु गहने धर परदेश को चलो जाके कमायो बहुत द्रव्य लायो सब को देनो चुकायो एक परोसन के घर लोहे के बासन धर गयो सो आये परोसन बोली मूंसे ले गये ये कही सुन चुप एक दिन वाको बेटा दुकान पर जाय थो सो दुकान पर बैठाय राखे

कोई जाने नहीं तब गांव में डौंडी फिरी जो कोई सेव को देखा हो तो वताइयो जब सबनने कही भूधरने पूछो तब वुलाय भूधर को पूछो तब भूधर वोलो लरिका को चील ले गई ये बात कोई माने नहीं तब दरबार में गयो जाय के सब कही कि पांच वर्ष के वालक को चील कैसे लेगई या को मारो तब भूधर वोलो जो आज ताईं महाराज लोह मूसान ने खायो है जो मूसा ने लोह खायो तो लरिका को चील ले गई तब भूधरने कहो तब सबने कहो परोसी ने लोह को सब असबाब दियो भूधर ने वो लडका दियो ऐसी मति हो तो जाउ इतना सुन सो रही॥ ३८ वीं कथा का प्रारंभः॥ फिर ३९ वें दिन प्रभावती राते को चली सुक से वोली मैं जाती हूं सुक वोलो आछे वुद्ध कैसी मति हो तो जाउ यह सुन वोली कहो तोता वोलो एक नवल पुर पाटन है तहां नर वाहन राजा है ता गाव में नीच वसत हैं एक सुबुद्ध दूसरो कुबुद्ध है दोऊ कमाई को चले बहुत कमाई की घर को आये जब गांव के नजदीक आये एक जगह सबरो गाड आये अपने २ घर लेगये जब सात दिन वीत गये सुबुद्धि वोले है कुबुद्धि कहो तो आछी बात है ऐसे कहि दोनो कहां गये जो देखे तो धन नहै तब आपस में लडने लगे सुबुद्धि कहै तूने लियो कुबुद्धि कहे तूने लियो ऐसे झगरत २ राजा के पास तब राजा ने पूंछो तुम्हारी द्रव्य साथी दार कुबुद्धि वोलो वनदेवी साही दार है तब राजा कहे जो हम सो कहेगी सुबुद्धि वोलो वन देवी सबन के आगे कहेगी तब राजा ने कहो कल चलेंगे ये सुन अपने घर आये कि बुद्धि ने अपने बाप सों कहो जो वन में एक रुख है उसमें तुम जाय वैठो जब हम कहें वनदेवी द्रव्य किसने लिया तब तुम कहियो सुबुद्धि ने लिया तब तुम कहियो सुबुद्धि ने लियो यह कहोगे तब द्रव्य वचेगी ऐसे कहि दूसरे दिन वहां वापको वैठाओ इतने में राजा आ

यो गांव के सब लोग आये वा समय राजा पूंछो कि वन देवी याको न लियो है ये सुन कुबुद्धि को बाप बोलो जो सुबुद्धि लियो है ऐसा वाचा ३ दियो ये सुनि राजा बोलो जो कुबुद्धि चोर है तब सुबुद्धि बोलो हे महाराज एक घड़ी चुप रहो तब कही जो भली बात है दूत नी कही सुबुद्धि या रूख के आस पास कांटे की बाड़ करी आगल गा दी तब तो कुबुद्धि को बाप पुकारो जो मैं जरत हौं मोको का दियो राजा सुनी वाको पूंछो तब जो कही कुबुद्धि लियो राजा ने कुबुद्धि को बांधा और वाको द्रव्य दियो जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ बुद्धि इतनी सुनि सो रही ॥ ३९ ॥ ४० वीं कथा का प्रारंभः ॥ फिर ४० वें दिन प्रभावती रति को चली सुक बोलो जाती है तो विद्याधर ब्राह्मण की भांति कीजो तो जाउ प्रभावती बोली सो कैसे तब सुक बोलो एक चंपावती नगरी है मदन राजा है ताकी स्त्री सिंगार सुंदरी ताकी बेटी मदन सुन्दरी है सो राजा को बड़ी प्यारी है ताके गरे में एक फोरा भयो सो अच्छो नहीं हो तब राजा ने डोंडी फेरी जो मेरी बेटी को अच्छी करेगा ताको लाख टका दूं ऐसे यों बात सुनी तब ब्राह्मणी महाभिल कहो मेरो धणी हाल जानत है ये सुन राजा के लोग पकर राजा के पास लेगये ब्राह्मण भाजन लागे इसें बांह गही राजा देख के बोले हे ब्राह्मण मेरी बेटी को देख के नीकी करो तो लाख टका दूं ये कही बेटी को देख ब्राह्मण मन में विचारो कछु करे विना छुटना नही यह विचार रूठो लेप देन लागो वासो नीकी भई गरे को फोरा फूट गयो राजा प्रसन्न भयो लाख टका दिये ब्राह्मण ले अपने घर आयो प्रभावती सो रही ॥

४१ इकतालीसवीं कथा ॥

फिर ४१ वें दिन प्रभावती रात को चली सुक सो मैं जाती हूं

शुक बोले आछो परंतु बाघ मारी की सी मति हो तौ जाउ बोली कहो तब शुक बोले स्वस्ति पुर नाम नगर तहां देव दत्त राजा है ताकी स्त्री अति रौद्र है ताके दो पुत्र हैं एक ५ वर्ष का दूसरा ७ वर्ष को एक दिन राजा रानी सौं लडाई भई रानी अपने बेटा को ले बाहर चली तो एक उपाय मन में आयो जो दोनों लड़का को रुवाय दीनो आप मारयो उधारि के बोली अरे लरिको क्यों रोवत हो मैं तुम को एक बाघ मार देउं वाको तुम खाउ ठाकुर ने भजी कही आय पहुंचे यह सुन चीता बाघ भागे ये रानी घर को अपने आई तासों ऐसी बुद्धि है तो जाउ इतना सुन प्रभावती सो रही ४१॥

बयालीसवीं कथा ४२

फिर बयालीसवें दिन प्रभावती राति को चली शुक से बोली मैं जाती हूं शुक बोले अच्छा परंतु विप्रजानी कैसी मति उपजे तौ जाउ बोली सो कहो शुक बोलो हंस पुर नाम नगर है राजा हंस ताको पुत्र सिंगार सुंदर है परंतु नपुंसक है ताकी भार्या रतन सुन्दरी है सो वो काम पीडित है और बहुत चंचल परंतु वाकी कुछ चले नहीं काहे तें जो राजा वो: वाके दर्वाज़े में पांचसौ आदिमी बैठे रहें तासों कछु वस लागे नहीं एक दिन नगर में विप्रजनी नायन राजा के महल में आई आइ के रतन सुन्दरी के पास बैठी देखे तौ रतन की सुन्दरी दुखित बैठी है तब ये नायन बोली जो तो कू ऐसो कहा दुख है तब वो: बोली मेरे पति नपुंसक हैं तासों दुखी हैं जो कोई पुरुष को लावे तौ मेरो मन प्रसन्न होय सुनके नायन बोली मैं लाउंगी इतनो कह शहर में आई बहुत तलाश कीनी परंतु कोई क़बूल न करे काहे को रानी है राजा जो जाने तो मार डारे यातें कोई क़बूल न करे तब प्रधान का बेटा बोला मोको रतन सुन्दरी को मिलावे तौ तेरो गुन मानो परंतु मेरे घर लावे तो वाको मनोरथ आछी तरह पूरा होय

सुन कर नायन रानी पास गई रानी से वृतांत कहो तबरानी बोली मैं कैसे जाउ इहां तो पांच सौ प्यादा बैठे तब नायन कही तू मेरा कपरा पहन ले और वाके पास तू जा मैं यहां रहौंगी यह सुन रानी नायन के कपरा पहन अच्छी तरह से भोग बिलास कियो ऐसे कितेक दिन ताईं काम चलो एक दिन कुंवर ने रानी को पुकारो यह नायन बोली तब तो कुंवर आइ उसका हाथ पकरा देखे तो हाथ भारी है तब विचारो येतो कोई और है इतनो विचार छुरी काढ को नाक काट लियो परंतु यह बोली नहीं कुंवर मन में विचारो संसा छुरी कहेगो यह जानि और ही सो रहो तो नायन अपने घर गई पिछवारे पति को पुकारो एक छुरा कहे इसने फेंका थे रोई अरे तूने यह क्या किया वो दौड़ देखे तो उसकी नाक कट गई घर आई रानी घर को गई भोर होते ही राजा जो देखो बहुत लज्जित भयो सो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतनी बात सुन सो रही ४२॥

तेंतालीसवीं कथा का प्रारंभः

फिर ४३ वें दिन प्रभावती राति को चली बोली हे सुक मैं जाती हूं अच्छी कनक सुन्दरी कैसी बुद्धि हो तो जाउ बोली कैसे सुक कही एक सुभ पुर नगर है सुंदर सिंह राजा रतन सेन कुंवर ताकी कनक सुन्दरी प्रधान के बेटा सों रति करे एक दिन कुंवर आयो देखो स्त्री प्रधान के बेटा सों रति करतो जान्यो याके लछण आछे नहीं स्त्री की नाक काट ली तब कनक सुन्दरी किवारे बंद करके सो रही ससुर आयो जान्यो किवाडे खोलो बोलो नहीं बोली मेरी नाक बेखता काटी यह कह सूर्य से बिन्ती करी मेरी नाक आछी करो आछी भई जो ऐसी बुद्धि हो जाउ ये सुन सो रही ४३॥

४४ वीं कथा का प्रारंभः

फिर ४४ वें दिन प्रभावती राति को चली मैं जाती हूं कहा अच्छा

परंतु चपला ब्राह्मण कीसी बुद्धि उपजे तो जाउ बोली कहो सुक बोला शंख पुर नगर है शिव राज राजा है ताकी भार्या सुभ सुंदरी तहां चारों वर्ण सुखी हैं परंतु एक ब्राह्मण चंपा नाम है ताकी स्त्री कमकावती है बेटा बहुत हैं तीनों आदमी की बुद्धि न्यारी २ है एक दिन एक काम में गयो फिरत रह्यो एक ब्राह्मण मिलो धर्म शील नाम है एक गाय नित्य ब्राह्मण को देते हैं सो पांचा को ले आयो भोजन करायो एक नाव दीनो पांचा अचरज कियो मन में विचारो ब्राह्मन सोचा बोला मैं पूछत हूं जो तुम्हारो द्रव्य कितनो है सो रोज पुण्य करत हो तो ब्राह्मण बोलो मैं एक दिन घर से निकसे एक स्त्री हती सेत कपडा पहरे माथे एक गिरी भरा हती आवत देखा ब्राह्मन मन में बहुत खुश भयो जो शगुन आछो भयो तो बोले हे ब्राह्मण हे लक्ष्मी हो तो को घर ने चल तेरो भलो होगो ऐसी कही तब तो मैं नमस्कार कियो घर ले आयो बहुत पूजा कियो वो प्रसन्न भई यह वर दियो जहां तू खोदे तहां द्रव्य निकलेंगो इससे मैं रोज पुण्य करत हूं यह सुन विदा मांगी याको घर लायो अब यह जो कोई स्त्री मिले ताके पायन परे कहे मेरे घर पर पधारो ऐसे निरंतर अन्न न खाय राति से उठे अध घटजाय ऐसो पांच सात दिन भयो घर के कहें यह कहा करे है पांचे बोली तुम नहीं जानत हो यह कह एक दिन देखे तो एक स्त्री स्वेत कपडे पहरे घर को चली वह उसको नमस्कार कर अपने घर ले आयो पूजा कियो पायन परो घर वो रोवन लागी तो गढ्ढा खोदो कुमि करो नहीं डोकरी को बैठाई पांचो के घर आयो वाको पांव पंचानन सों धोयो घर के मानस को कहा सो प्रभावती ऐसी मति हो तो जाउ नहीं तो मत जाउ इतना सुन सो रही ॥ ४९ ॥

४९ वीं कथा

फिर ४६ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से बोली मैं जाती हूं शुकने
कहो तब शुकने कहा अच्छा जाउ परंतु बाघमारी कीसी बुद्धि होतो
जाउ बोली कहो तब शुक बोले बाघ यह है जो बाघ भाजते जामें एक
भाजतो जातहे तहां एक स्यार बोले तुम कों भाजत हो तुम्हें कौन
काडर है बाघ बोले एक बाघमारी पीछे आतीहे ताके डर सों भा
गे जात हों तब स्यार बोलो मामाजी वाको तो मार खाइ ये बाघ बो
लो तू जाव मैं तो न जाउं जो मैं आगे चलूं तू पीछे आवो जो तू जाय भा
ग तासूं मैं तो को गले में बांध ले चलूंगो स्यार बोलो बाघ नगर
सों बांध के चालो इतने में वो रानी देखे तो स्यार और बाघ आ
वतेहैं सो मन में बिचारी अब के खांइगे तासों कुछ बुद्धि को उ-
पाय कीजे तब बेटा सों बोली अब एक तमासो देखो तो जाय यह
शालबो हमसों कहि गयो तीन बाघ लाऊंगो तामें एक लायो
तासों बडो हरामजादो है बाघ ने सुनी भाजो रे स्यार आजनू मो
को मरवायो तासों बडो दुष्ट है यह कह भाजो स्यार तुरत डरगयो
रानी ढोउन बेटा को घर लाई ऐसी माते हो तो जाउ फिर सो रही
४७ वीं कथा॥ फिर ४७ वें दिन प्रभावति रति को चली शुक बो
ले गले बंधे स्यार की सी मति होतो जाउ शुक बोलो जब बाघ भाजो स्या
र पै भाजो न गयो चोट लगी स्यार हंसो बाघ बोलो तू कैसे तो आयो
स्यार बोलो बाघमारी को मेरो लहू मीठो लगे है तासों दूर ले आ
यो बच्चो नहीं तो खाय जातो तासों मोको छोड देउ नहीं तो वाको
गेरी बास आवेगी दोउन को खायगो बाघ साच मानी स्यार
को छोड दियो सो ऐसी मति उपजे तो जाउ इतना सुन सो
रही॥ ४७॥ ४८ वीं कहानी॥
फिर ४८ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक सों पूंछो मैं जा
ती हूं शुक बोलो अच्छी बात पर कुस ब्राह्मण की सी

बुद्धि हो तो जाउ कह्यो तव शुक बोलो विसालपुर पाटन में शत्रु मदन राजा है ता गांव में कृष्णदास ब्राह्मण वसत है सो महासुंदर है चतुर है ताको मा बाप छोड दिया कोई स्त्री वाको जीत न सकै अपनी स्त्री सों भोग करे और वेश्या सों भोग करे अस्तपाय प्रभावती बोली ऐसो वामें का गुण है तो वह यों बोलो याके गुण सुन कृष्णदास काम को स्वरूप है एक मंत्र स्तंभन को आवत है तासों जीतत है एक वेश्या ने सुनो एक दिन कृष्णदास मिलो वासों वार्ता करी जो मो सों रति करी में काहू ऐसो मदन देखो जासें रति करे तव कृष्णदास बोलो हम करेंगे वेश्या बोली लाख टका देऊ तो करन दूंगी क़बूल करे यह कह्या हारे तो मैं लेउ कह्या अच्छी बात है यह कह रात जब भई रति करन लागी एक पहर भई तव वेश्या दुखी भई यह कह्या मैं हारी तू जीता और अपनी माको बुलाय कह्यो याको द्रव्य दे डारो नहीं तो मेरा प्राण जायगा महतारी बोली अपने यही रोज़गार है जो यह प्रसन्न होय सो कीजे इतने में पहर दिन वी तातो दऊते कायल भई कृष्णदास बोले मोकों दूनो द्रव्य दे तो छोडूं ऐसे कही डोकरी रूप पर चढ़ कुरग की सी आवाज कही सवेरो भयो तो वाह एक यो देखो तो रात पहर है वासें कही वाने अपनी वहन को सुवाय दी एक पहर वासों भोग कीनो वेश्या ने कही अपनो द्रव्य लेउ मेरो द्रव्य ले के पधारो जव अपनो और उस को द्रव्य ले आयो॥ ४८॥

४९ वीं कहानी।

फिर ४९ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा जानी हूं शुक बोलो कगरा के पति के सी करे तो जाउ सो बोली कहो शुक ने कहा एक विन्ध्य नगर है विजयसेन राजा है तहां ब्राह्मण हरदास ताकी भार्या कगरा सो वह महा कलहारी पति को सदा दुख देय वाके घर में पीपर को वृक्ष है ता में एक भूत है सो एक दिन वृक्ष से

उतर के वन को गयो वहां एक भूत वड़ है ता में रहन लागो एक दिन हरदास स्त्री में लड़ाई भई हरदास निकसो वन में गयो जा वड़ के नीचे बैठो वह भूत देखे तो हरदास आयो है तब नीचे आके भूत वोले कि हरदास आज बड़ो काम भयो जो हमारे पाहुनो आये तासो यहां भोजन कीजे ये कह मिठाई दी और कहो तुम हमारे बड़े मित्र हो तुम निर्धन रहे अब तुम एक काम करो जो तुम्हारे द्रव्य आवे एक मृगाव ती नगरी है तहां मदनसेन राजा है ताकी बेटी मृगलोचनी है ताके मैं लगो हो ताके बाप ने बहुत इलाज किये परंतु मैं छोड़ो नहीं सो तोकूं धन दिवायो चाहिये ताते तू वहां जाय ताको देखे मैं छोड़दूं ये कही तो हर दास मृगावती गयो वहां देखे तो गांव में डोंडी पिटी है जो राजा की बेटी को अच्छा करे आधा राज पावे तब हरदास आड़ो दियो नीकी भ ई तब हाथ जोड़े जो आप आज्ञा दें बहुत भांति आधीनी की तब तो भू त प्रसन्न भयो अपनो वल मांगो हरदास ने वल दियो बेटी नीकी भ ई तब आधो राज दियो बेटी दीनी भूत वस किये अपनो मनोरथ सि द्ध किये जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ ये सुन सो रही ।४९।

५० वीं कथा

फिर ५० वें दिन प्रभावती तैयार भई तब सुक बोलो जो केसो की सी मति ही हो तो जाइयो बोली हे सुक सो कहो तोता बोलो राजा को सब को भूत ने दुःख दिवायो ताको भोग आछी तरह किये औ र केशव नाम यह कियो जो ऐसे मंत्र वाही को एक दिन करुणाव ती नगरी को राजा गये राजीन की स्त्री सुलोचना को यही भूत ल गो तब सबन कही केशव ब्राह्मण आवे तो नीक हो इतनी राजा सु नी आदमी पठाये आय के केशव को ले गये केशव देखा वही भूत है तब याके कान में कही जो कंगरां मो को बहुत दुख देत है ताके डर सों भाजा हों अब शरण तेरी आयो हों जब मेरी रस

कौ ऐसे सुन भूत बोलो रे तेरी वह सदा कीनी पीछा करै मत वा केशव को स्त्री को ऐसे डर है तासों भूत जात रहे रानी नीकी भई राजा प्रसन्न भयो वहुत द्रव्य भयो अपने घर गयो इतनी सुन सो रही॥

५१ वीं कथा

फिर ५१ वें दिन प्रभावती रति की इच्छा कर चली सुक से पूछा जाती हूं तोता बोले सुकडाल के सी अकल हो तो जाउ बोली कैसे सुक बोलो नंदनपुर का राजा मदन कुंवर सुकडाल जाको प्रधान सो धर्मात्मा बुद्धिमान नीत में वहुत प्रवीन सब को वस किया तब राजा अपने मन में विचारो काहू दिना मार न डारे याको तासैं क़ैद कीनो और मंत्री बैठायो सो काम करै एक दिन वंगाले के राजा ने इनकी परीक्षा के लिये घोडी पठई उनको वकील आयो आय राजा को मुजरो कियो सो अर्ज करी हमारे महाराज ने २ घोडी पठई है यामें वेटी कोन है सो परीक्षा देउ महीना १ की आज्ञा तव तो राजा सवन पूंछो परंतु कोई न बतावे महीना बीत गयो तव राजा को बडो संदेह भयो जो यह बात न बतावें तो वह कहेगा कि राजा की सभा में कोई अकलमंद नहीं ऐसे वहुत सोच कीना तव सुकडाल को याद किया वह बतावेगा और की सामर्थ नहीं तव सुकडाल बुलायो आयो राजा ने वहुत आदर कियो वाको सिरोपाव दियो दंड माफ़ कियो और आज्ञा कियो जो सभा को तू उरन आयो बता तू याकी परीक्षा इतनी सुन हुक्म मानो माथे वडाई लियो घोडी दोऊ बुलायकर जीन दोउन पै धरायो और दोऊ वहुत दौराये जव पसीना चलन लागो तव ठाडी कीनी ताही समय घोडी अपनी वेटी को श्रमित जान माथो संघन लागी कह्यो जो यह वेटी यह माता ऐसी परीक्षा कीनो राजा वहुत खुश भये दोऊ घोडी वंगाले में गई वंगाले का राजा वहुत प्रसन्न हुआ इतनी सुन सो रही॥ १॥

५२ वीं कथा

फेर ५२ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक से कहा मैं जाती हूं बो ला सकडाल के सी बुद्धि हो तो जाउ बोली कैसे तो ना बोला एक दि न अंबधर राजा सभा में बैठा था एक लकडी सो वह लकडी रंगीन हती सुंदर थी सो वीरपुर ले वीरसिंह राजा ने पठवाई हती परीक्षा के लिये सो वकील कहो इन को परीक्षा कर देउ अच्छी है कि बुरी तब राजा सबन को दिया किसी ने आछी कही न बुरी इतने में सकडाल आयो आय राजा को सलाम कीनी तब राजा बो लो कि दीवान यह लकडी राजा वीरसेन ने पठाई है परीक्षा के लिये सो बताओ तब महता बोलो ये बडे आदमी बैठे हैं इन सों पूछो राजा बोले तुम हीं कहो इन को पानी में डारो वहते में आछी होगी ठहर जायगी बुरी होगी चलेगी इतनो सुन सो रही ॥ ५२ ॥

५३ वीं कथा

फेर ५३ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक सों बोली मैं जाती हूं शुक बोलो गंगला डोगर कीसी करे तो जाउ बोली कैसे शुक बो लो एक चमत्कारपुर नगर है तहां चिंतामन राजा है ताके गां व में गंगलो ब्राह्मण है सो ब्राह्मण विदर्भ देश की देवी की यात्रा को गयो साथ बडो गयो राह में चोर मिले तिन को देख भागे ता समय गंगलो ब्राह्मण को गाजा दट पडो वो न भाजो इतने में नजदीक आयो देख रहो पर छूटो नहीं ता समय गंगलो भ करो भाई बोलो कहा है गगलो बोलो कह्यो जो चोर लूटत हैं ये सु न कमठा चढाइ अरु हाथ में लियो जो चोर कितने हैं जो हजार होइ तो दो बान मारों जो वेग कहो मैं यह विद्या द्रोणाचार्य जी पै पढी जो एक बान मारों ये सुन चोर भाजे वो घर आये इतना सु न सो रही ॥

५४ वीं कथा

फिर ५४वें दिन प्रभावती सिंगार करि चली शुकसे बोली मैं जाती हूं बोलो जैसे स्त्री केसी केसी मति हो तो जाउ शुक बोलो सत्यपुर नाम नगर था सत्यसेन राजा इंद्रमन राजपुत्र ताके ४ यार है एकदिन सबने विचारो देशांतर को चलिये देखें हमारे भाग्य में है या नहीं ये विचार निकसे बहुत दूर पहुंचे विचारो कहा उपाय कीजे तब समुद्र के पास गये समुद्र की सेवा की ११ दिन तब तो सागर प्रसन्न भयो और कही जो वर मांगो तब चारों बोले जो हम निर्धनी हैं हम पै ऐसी कृपा करो जो धनाढ्य हों इतनी समुद्र सुन के चार मानक दिये सो प्रसाद कृपा करि दियो सो चारों बांट लिये समुद्र कहो एक मानक अष्ट भार स्वर्ण देगा जो ऐसी सुनी तो प्रसन्न भये वहां से आज्ञा मांगी घर को चले राह में विचारी जो कोई मिलेगो तो कहा करें सो एक काम कीजिये बनिया को सोंप दिये॥ ५४॥

५५ वीं कथा

फिर ५५ वें दिन प्रभावती चली शुक बोलो जाउ जैसे राजा के बेटे प्रधान ने उत्तर दियो ऐसी मति होतो जाउ तब शुक बोलो इलावती नाम नगरी है जलंधर राजा सुशील प्रधान ताको बेटा बुद्धिवंत है सुशर्मा ताको नाम है वो राजा के मन माने नहीं प्रधान ने अर्ज की मेरो बेटा बड़ो प्रवीन है तासों याकी परीक्षा कीजिये बिचारो एक डाबे में राखो भर के प्रधान के बेटा को दियो और कही दमनक देश जाउ मदनसेन राजा के पास जाय के दे देउ वाको जवाब लावो प्रधान के बेटा सलाम करि चलो गयो राजा को सलाम कीनी और डाबा दियो राजा डाबा खोलो जो देखे तो वामें रानी है देखतेही बहुत क्रोध किया कहो ये हाथी हमको क्यों पठई है इसको दहो कियो है तो प्रधान को बेटा हाथ जोड़ बोलो महाराज ऐसा आप को बताय पठावनी है महाराज यज्ञ किये ते सो आप को

पठाई है सो सुन वज्ञत प्रसन्न भयो सिरोपाव दियो वज्ञत कुछ नज़र किये और हाथ जोड़ के यह कह्यो मो पर बड़ी कृपा की यह कह विदा कियो प्रधान को बेटा राजा पास आयो सलाम कियो हाल कह्यो राजा वज्ञत खुशी भयो ऐसी मति हो तो जाउ सो रही।

५६ वीं कथा

फिर ५६ वें दिन प्रभावती रात को चली शुक बोला जाती तो हो पर श्रीधर ब्राह्मण की सी मति हो तो जाउ बोली कहो शुक बोले वरसुकटनगर है तहां चिंतामणि राजा है ता गांव में श्रीधर विप्र है तहां एक मोची चंदन बसत है तासों श्रीधर ने अपने जूती बनवाई यह कह्यो मैं तुम्हें खुशी करोंगो यह सुन जूता बनायो ब्राह्मण अधेली दैन कह्यो परंतु खुश न भयो तो चौहटे में आय बोलो चमार राजा के बेटा भयो तू खुशी है कि नहीं तब मोची विचारी नहीं तो मारो जाऊं यासों कह्यो खुशी हौं ब्राह्मण बोलो मैंने खुशी कियो इतना सुन सो रही॥

५७ कथा

फिर ५७ वें दिन प्रभावती रात को चली शुक बोले जाउ परंतु धर्मदास की सी मति उपजे तो जाउ बोली कैसे शुक बोले एक चक्रधीर नगर है तहां मनोहर राजा है ताके मानसिंह प्रधान है जाके गांव में एक शील नाम ब्राह्मण है सो महाधनवंत है ताके धर्म एक गुमास्ता है सो वो नित्य उगाही कर रुपया ले चलो तब राह में चार चोर वाको मिले देख मन में विचारो ये चोर हैं मैं अकेलो ये धन छिड़ाय लेंगे विचारो कला करो तस में जक्का स्थान देखो तहां जाय धन धर दियो कह्यो महाराज ये द्रव्य फिर आयोगो फिर तो चाहे कहो तो फेर जानो ये पंच को द्रव्य है तासों मैं मान वाको द्रव्य नहीं लियो उठ गये तो बनियां द्रव्य ले अपने घर आयो इतना सुन सो रही॥

५८ वीं कथा

फिर ५८ वें दिन प्रभावती सिंगार कर रति को चली शुक बोलो शुभ करन केसी मति हो तो जाउ सो बोली कहो शुक कही एक धारा नगरी में भोज राजा है सुमति नाम प्रधान बहुत प्रवीन है एक दाव भोज राजा की रानी चंद्र रेखा बहुत चंचल ताको मन पंडित सों अटको शुभकरन अति सुंदर जासक्त भयो एक दिन रानी रतिसमय अ पने दोस्त पंडित के गई सो बहुत प्रसन्न भये भोग किये ऐसे बहुत दि न बीते एक दिन रति को चली तासमें नृत्य चार्षा को राजा निकरे आगे रा नी पीछे २ राजा या या भांति चले तब पंडित यार बोलो रानी भीतर गई भोग किये राजा घर आयो पलंग पर सो रहे कितनी देर पीछे रानी आ ई पलंग पर सो रही सवेरे भयो राजा सभा कीनी पहर १ पाछे सबको सीख दीनी पंडित को राखो रानी को बुलायो कथा वारता कही आप स प्रसन्न भयो तब रात की वात पूछी हे पंडित राति को कोन सी बात करी मोसों सांच करो तब पंडित मन में जानी ये जान चुको और रानी हूं भी जानी पंडित ने विचार के एक श्लोक कहो। श्लो। उग्राग्र हाभुदन्तं तो जलमतित्य नालंबने को मकी उतीदुर्ग मिष्याति मनाप्र प्मारभी रोहति व्याति याति विशो: वरो रत्नकुले पाताल मेका कीनी कीर्ति स्ते मदनाभिरामहत कं मन्ये त्वं योषितो।।१।। श्लोक सुन राजा संतुष्ट भये पाछे मन में विचारो ऐसो पंडित फिर मिलनो नहीं स्त्री तो बहुत मिलेंगी तासों याको दीजे यह विचार बहुत धन दियो मन में संतोष भयो ऐसी मति हो तो जाउ इतनी सुन सो रही॥

५९ वीं कथा।

फिर ५९ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला जाती तो हो परंतु दुःशाला केसी बुद्धि हो तो जाउ बोली कहो शुक बोला लोहपुर न गर है लोकपाल राजा है ताको भीमसेन मंत्री है ताके दुःशी ला भार्या जो महा गरीब है वाके ४ लगायन सो ये सूत बेचने को

पदमावती नगरी को चली राह में १ गणेशजीको मंदिर है वहां ये चारों जाय दंडवत किये एकतो बोली जो मेरे सूत में द्रव्य मिले तो मैं तुम्हारा भाग धरूंगी दूसरी बोली मैं आप को धूप दीप करेंगी और बोली मैं भेंट करेंगी४ बोली आपु सों नग्न ह्वै होकर आलिंगन करेंगी ऐसे कह पदमावती नगरी गई आय सूत बेचो सब को नफ़ा भई ऐसे संग सब चली फेर गणेशजी के पास आई आयके अपनी २ कही कीनी और दुःशीला नग्न होके गणेशजीको लिपट गई और चुंबन कियो तो गणेशजीको काम जाग्यो आलिंगन कियो चुंबन करी होठ मुख में लियो छोड़े नहीं वह स्त्री घर गई दुःशीला के पति सों कही तेरी स्त्री के होठ गणेश जीके मुख में है छोड़त नाहीं तो वो दौरो देखे तो सांच है नग्न है पतिभी नग्न होके स्त्री सों रति करन लागे सो देख गणेश जी हंसे सो मुख पकगयो अपने घर स्त्री पुरुष आये ऐसी मत होजाउ इतना सुन सोरहीं॥

६० वें दिन की कहानी

फिर ६० वें दिन प्रभावती रति को चली बोली शुक मैं जाती हूं बोलो आछो परंतु रुकमनी कीसी मति होतो जाउ बोलो कहो कहा धनपुर नाम नगर है वहां धनेश्वर राजा है धनपाल प्रधान और पुत्र कुंवर सेन सो बड़ो धनुर्धारी शब्द वेधी याकी स्त्री रुकमनी सो स्त्री पुरुष तीर्थ यात्रा को गये राह में बटोई महा सुंदर देखो स्त्री की नज़र बैठी पति ने जानी स्त्रीको मन चलायमान भयो और व्यभिचारी याको ले जाउं तो धर्म साधन न होगो वासों अपने घर आयो यात्रा को गयो नहीं परंतु स्त्री को बहुत डाटता रहत है एकदिन रातको स्त्रीको सांची नव स्त्री बोली मनमें जो तेरे पुरुषा लग से आगे रति करें तो मेरा नाम है सो आधी रात गये पति सों बोली मैं स्त्री धर्म सों कछु पास न रखनी चाहिये मोकूं छोड़ दे सो पतिने छोड़दी

और वाहर ले गयो वाहर गई तो एक यार मिलो अंद के नीचे वासों रति करन कही पति सों वोली तुम शब्द पर वाण मारत हो ये वडहै याचे शब्द होत है तापे वाण मारो ताने वाण मारो लागो और वाण चलाये पाछे देखन गयो नहां देर लागी याने यार सों भोग करायो और वाकी मुंदरी लीनी पहिरी इतने में पति न आयो जो देखत यारसें वोली जो देख मेरो तमासो वन में रति कीनी तोहूं पति न माने तो सुंदरी दिखाई देखनहीं वडन आरमायो और कही स्त्री को चरित्र को ऊ जानत नाहीं सो प्रभावती इतनो बुद्धि हो तो जाउ ये सुन सोरही

६१ वीं कथा ॥ फिर ६१ वें दिन प्रभावती रति को चली तव तोता वोलो जाउ परंतु मानक देवी केसी मति हो तो जाउ वोली कहो शुक वोला जयस्थल नगर यसोधर राजा जयचेत प्रधान ताके गांव में वैशाष नामा कुनवी है ताकी भार्या मानकदेवी सो गरीवहै ताके सूरपाल यार वासों नित राति करै एक दिन खेत को चली पानी लेकर तहां राह में यार मिलो वासों भोग करावन लागो पहले भी कह आये हैं॥

६२ वीं कथा

फिर ६२ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक वोले जाती तो हो परतन देवी की सी मति उपजे तो जाना श्रेष्ठ है वोली कैसे शुक वोले एक शंखपुर नगर है तहां शंखचूड राजा है एक वनियां तहां है ताकी स्त्री रतनदेवी सो एक दिन अपने यार सों कही जा मेरी विद्या देखि पति के संग सोवत रहे और यार से काम कराऊं एक दिन पीतम के संग सोरही और यार आयो उसे भी एक ओर सुलायो फेर सुखकर यार सों काम करायो जब काम हो चुको तव योनी में से निकासो तासमय वाके पति की पीठ सों इंद्री लगी तो स्त्री पुकारी जो चोर है इतने में पति के हाथ में यार को लिंग आयो उसने खेंच के पकरो स्त्री सों कही जो तू याको पकरे तो मैं दीवा वार लाऊं यह

कही स्त्री के हाथ में पकराय के दीवा को गयो ताही समय यार को छोड़ के वडोथा की जीभ पकर लीता समय पति दीवाले आयो दे खे तो पडोवा की जीभ लीनी कहे यह कहा तब हंस कर बो ली पति ढिग जो ऐसी काहू की लिंग पकरावोगे तो याही प र ओर २ करत हे पति ढिग स्यानो भयो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ।

६३ वीं कहानी

फिर ६३ वें दिन प्रभावती रति को चली सुक बोले जाउ परंतु शंभु ब्राह्मण की सी मति हो तो जाउ सो कहो शुक बोला सिद्धपुर नाम नगर शिवभक्त राजा सुंदर नाम प्रधान तामें शंभुनाथ ब्राह्मण हे महा प्रवीण हे एक समय तीर्थ यात्रा को चलो राह में स्त्री सुंदर मिली परंतु बोलवे मन रहे दोऊ सामूं भये काम व्यापा ब्राह्म ण कहो आवो रमण करे स्त्री बोली विना लिये न करेंगी विप्र के पास भी रतो कुछ न था वाने अपने गरे की कंठी दीनी पाछे भोग कियो काम हो चुको कंठी मांगी में अपने शरीर बेच के लीनी हे सो न दूंगी याको झगरो परो तब वाने कहा काम कियो जो वाके खेत में से सिरा तोर के भाज्यो हां पुकारी ब्राह्मण खेत मेरो लूट लियो जाता हे आगे शंभु पाछे स्त्री चले २ गांव में आये गांव को चोधरी बोला जो कहा हे शंभु बोला महाराज में ब्राह्मण हों तीन दिना को भूका सो एक सि रा मांगे सो ना दीने में अपने हाथ तोड लीने इसने मेरी सोने की कंठी उतार लीनी सो सिरा को मोल लेहु और कंठी मेरी दिवाय दीजे वहां कामावती को पिता हता सो बेटी पास सों कंठी दिवाय दीनी॥

६४ वीं कथा

फिर ६४ वें दिन प्रभावती रति को चली शुक बोला जावो तो हो प रंतु सजयानी की सी मति उपजे तो जाउ बोली कहो शुक बोला जल्ले धरपुर नगर हे जोगसेन राजा जनार्दन महतो देवो दास वनक

ताकी भार्या सजयानी है सो छिनार है जाके दो सौ यार एक दे दोना
म यार है सो नित्य आवे सजयानी बहुत प्यारी है यह बात धनी जाने
कीने स्त्री दुष्ट है ताकी परीक्षा कीजे कही मैं गांव होय आऊं यह कह
दिक रहो रात भई तब दे दो आयो भोग कियो इतने में धनी आयो
जान के यार सों बोली रे तू मो सों लडो और यह कही जो उवा पतिके दे
न याही वेर देही ऐसी कही बहुत गारी दई इतने में दे दो धनी को दे
ख और बहुत करन लागो अरे रांड मो को भैंसी देऊ तब स्त्री बोली रे ग
री काहे को देत मेरो धनी आवे तब लीजो ऐसी कही वाको काट इतने
में धनी आयो देख बहुत खुश भयो सो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ॥

६५ वीं कथा

६५ वें दिन प्रभावती रात्रिको चली शुक बोले जावो परंतु श्यामवती
केसी बुद्धि हो तो जाउ बोली सो कहो शुक कहन लागे एक संभलपु
र नगर है जस राजा नरपति प्रधान ताके गांव में एक सुभकरन र
जपूत है ताकी स्त्री श्यामा महा गरीब है एक दिन सुभकरन चाकरी
गया दो कोस पे डेरा किया और घर में स्त्री अकेली १ राम रंगी लौंडी
पास है जब संध्या भई तब श्यामा बोली हे राम रंगी हे कहो राइ अभ
रलेजा किसी उत्तम पुरुषको लेआ। सुन दासी चली सो ऐसी बुद्धि हो
तो जाउ सो रहो

६६ वीं कथा

६६ वें दिन सिंगार कर चली तब शुक बोले प्रसन्नता से जाउ परंतु
कुसमावती कीसी मति उपजे तो जाउ सो कहो तब शुक बोले चक्रावती
नगरी इन्द्रसुहास राजा असकुंवर धनद नाम प्रधान ता गांव में विरम
बनियां ताकी बेटी कुसमावती पुरुषोत्तम को ब्याही थी एक समय
पुरुषोतम रास देश को गयो आठ वर्ष रहो द्रव्य कमायो यहां कुसमा
वती दिन १० सील प्रतिपालो पाछे निसंक भई मन में आवे सो क
रे एक दिन अमोला दासी सें बोली मो को काम व्यापो है कोई

ले आओ मन प्रसन्न होय ये कही ममोला बोली गुसैन हो तो कहूं बोली कहो ममोला बोली कि एक गांव में कामावती वेश्या रहती है वाके यार को व्योहार है तासों तुम्हारो मतलब है वहां जाउ तो ऐसे पुरुष से मिलेगे सो बोली आज तमासो देखिये सबने कही जो आछी बात है यह सुन ५ मोहर ले वेश्या के घर गई जाके बैठी वेश्या मोहर दीनी और कही जो आछे से आछी स्त्री आवे तब वेश्या लौंडी को और कुसमावती को बुलाइयो जो जरूर आइयो तब लौंडी कुसमावती को सलाम करी बोली कि बीबी आपु को बुलाया है कुसमावती बोली जो कि आज सेठ आवेंगे मैं कैसे चलूं सो तू जाय कहि वा को विदा किया कामावती सब हकीकत कही बोली जो तू ये कहो कि मो को चाहे तो आमनी तो मत आवे सुन लौंडी गई तब हाल कही कुसमावती गई वाने सेठ के पास पगई देखे तो पति अपनो है सेठ देखे तो स्त्री अपनी है कुसमावती बात छिपा के बोली कि सेठ जो ऐसे काम करे मैं आज नाई काहू को मुख देखो नही तुम पर स्त्री सों आसक्त हो अब ही मैं सुनी कि सेठ कामावती पास गये हैं तासूं आन देखो अब घर चलो यह कही तब सेठ बहुत रिसायो घर को आयो सो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतनी सुन सो रही॥

६७ वीं कथा।

फिर ६७ वें दिन प्रभावती राति को चली बोली मैं जाती हूं शुक बोले जाउ राजा जैसे मित्र को दुख भाजो तैसी बुद्धि हो तो जाउ बोली क्या शुक बोले एक जैपुर नगर है मनरंजन राजा मनोहर कुंवर कमें आठ प्रधान ता में एक श्रीपाल सेठ है वाको बीर राज बेटा बड़ो प्रवीन वाकी स्त्री मदन मंजरी सो अति रूपवंत है परंतु पर पुरुष गामिनी एक बनियें से सदा रति करे एक दिन श्रीपाल मृत्यु पायो ताको बेटा एकदिन जेठ के महीने में सिकार को गयो वन में जाय साथी बिछुर गये

की रहली ऐसी मति उपजे तो जाउ इतना सुन सो रही।
फिर ६९ वें दिन प्रभावती चली तोता बोला अच्छा परंतु एक कथा
सुन वनियां तीसरी बुद्धि भूलो सो सुन बोली कहो तोता बोलो वीर
राजा सोने को पुरुष ले आयो स्त्री देखो सो हृकियो सब बात
पूछो सो वनिक ने कही राजा की बात भूल गयो इतने में एक कासद
आयो बड़ा गदीनी तुम्हारे बोल जो ६० आइ पहुंचे वो कासिद वह
तयार लाई बात की इतने में वीर राजा पूंछो आप वस्तु आई है
कासद बोलो ककडी के बीज है तुरत उपजे सेठ के मन में आई
तुरत बोये पहर में उपजे प्रसन्न भये अपनी स्त्री को बुलाय तमासा
दिखायो स्त्री बोली जो यह दोनों ऐसी देवें सो कभू सुनो नहीं इतने
में स्त्री को यार आयो तासों कही जो मेरे माल के आठ बेल आये हैं
और एक बीज को टीको आयो है सो तुरंत बोवे तुरंत उपजे तुरत
खाय वाको तमासा दिखाऊं ककडी खवाई स्त्री वंत प्रसन्न भयो अ
रु कहो जो अब तुमसों मिलाय रहो सो तू मेरे घर आवे तो सही
नहीं तो नहीं ये कही तो स्त्री बोली जो कोई उपाय करे तो आऊं तब
श्रीवंत बोलो जो बीज तेरे हैं सुन बीज को कराव ऐसे कह कुछ बीज
ले अपने घर गयो और बीज हते सेंक राखे जब सवारी भई तब वीर
राजा कपड़े पहन राजा के भेट ले गयो और सेठ बोल को हासिल हो
गयो और श्रीवंत आगे जाय बैठो ताही समय सेठ जाय साला
म कीनी राजा बहुत महत भयो बात पूछी भेट लीनी यह बोले कि
सेठ अपूर्व वस्तु कोई आई होय तो दिखावो तब वीर राजा बाज ले
मुंह के आगे राखे और जो कहो तुरत बोये तुरत उपजे ऐसी वस्तु है
तब राजा बोलो जो अब ताई जो जाने नहीं कहा जानियें झूठ सांच
तब श्रीमंत बोलो जो हम में कहो पहिले बोवे वीर राजा सुनी कहो
जो तुम्हारी होव कहे सो कबूल है तब श्रीमंत बोलो जो यह बीज उपजे तो

मेरे घर की यह धनी और न उपजे तो मैया के घर को धनी ऐसी होइ बांधी जब वो उपजे नहीं तब श्रीमंत जीत्यो वीर राजा हारो बहुत खिस्यानो पडो घर आयो विचारो जो अब बहुत दुख पडो ऐसो विचार घर आयो विचारो जो पहर रात गये राजा सो मिलो ष्टी भाई अरु राजा प करो जो तो को बहुत भीड पडी तासों आयो तब सेठ बोलो जो महाराज दो वात आप की देखी तामें बहुत लाभ भई और एक बात में चूको ताको यह फल भयो है ये राजा सुनी घोरक के ऊपर सवार होय के आयो आय के देखो जो स्त्री को प्यार यह कहत है मैं तो लेन चलो जाउंगो यह कह घर ले गयो सवारे भयो तो लोग तमासे आगे सेठ को मलि बहु की श्रीमंत जीतो है सो लेजावेगा इतने में वीर राजा आयो देखो तब बोलो मेरी कही नहीं मानी सो यह फल पायो यह कह श्रीमंत को नाक काटी सहर से निकार दियो सेठ को और व्याह कीनो ये सुन प्रभावती सो रही ॥

७० वीं कथा

फिर ७० दिन प्रभावती राति को चली सुक बोलो जाउ परंतु गागरी सुनारी के सी मति हो तो जाउ वोली सुनाओ सुक बोलो चंडिलपुर नगर है तहां अर्जुन राजा चिंतामनि प्रधान ता गांव में वीरम सुनार वसत है धनवंत ताने सोरह व्याह किये सो सोरहों गरीव हो सोरह वरष की भई तब पुत्र को व्याहन लगी एक दिन परोसन घर आई देखत हो हरामजादी है बोली रे गांगला तेरी स्त्री हरामजादी है सुनी बोली नहीं स्त्री बोली जो या गांव में कुटनी है परोसन बोली ये राउ पाको है ये सुन परोसन सों बोली आप जाउ हमारे पति आवेंगे जो पराये हाय पार मंगावे तो सुनारी ऐसे वार मनि वह हो मेर व्याह है वासों इनाते पड़ेगो तो अच्छी वरह गाइ बीवजाइ बोली मागि तो वहुत बोलो अब इन को विगारो सहत हो तासों अपने घर

जाइ कही तव ती वहन सिसकरी उठ गई तव तो गांगली रोवन ला
गीजो मो को वंदी वानो कियो है काहू के नहीं जान देत है तव गांग
ली ने घर में से तो ली रसोई नालियो और वीड़ा १ वांधे तामें रखो
एक पुरुष चलो जात है वाके आगे डार दीनी और रुका एक में लि
खीजो सडक फर्या कुटनी को दीजो ये वात जान ओर कुटनी के लेच
ली और ये कहो तो को बुलायो है कहि वसंत लाल अपने घर गयो
पाछे कुटनी १ मासा सोना लेके वाही सुनार के आई और कहा प
से दे वोले वो तदामले कहो ये भीतर गई गांगली से मिली गांगली सों
कही तू एक काम करि है जाति हों पाछे से यह कहियो ये नजर
लगाइ गई सखी के घर को दामले गई पाछे गांगलो कहो लोट
गई हाय २ करने लगी पति वोलो कहा भयो कहो ये आई नज़र
लगाई पूछो जो कोन सी है जो सडक फाफा हती याको वेगला
मो को नीका करे सुनार सडक फाफा के घर गयो और कहाते
री भोजाई मरत है वेगि चलिये जो वोली राति को समो है जो कोई
मेरे घर में ते ले जाइ तो कहा करूं तासों सवारे आऊंगी सुनार वोलो
काम याही वेर को है दूती वोली मालको माठ है जो माथे धरले तो मैं
चलूं ये सुनके वोलो आछो वसंत राज को माट में धरि मोडो वांधि मा
थे धारे दियो संग आप गई जाइ कही तू वाहर जा मैं उपचार करत
हूं सुनार को तो काढि दियो वसंत और गंगालो दोऊ राति भरि भोग कि
यो मास एक ताईं सुनार के घर में रही पेट आछो भयो रुपया दस
दे विदा किया और मांठ मांथे धरि पठाई आयो और राह में सांड लड़त
मिले सो धक्का लागो माठ गिर परो वामें से वसंत निकरो निकसत
सुनार को पकर लियो कि मैं जो साध कर तहां तो मोपर माव
पटको ये कह पांच कर लीनो मैं राजा पर ले जाऊंगा इतने
में कुटनी ने हाथ पकर लीनो तो यामें को माल कहां तव

तो सुनार को मुंह विगर गयो रूपये दीने और पायन परो फे र आय गांगली के पैरन परो जो तेरो फंद कोन जानो जो ऐ सी मतिहो तो जाउ इतना सुन सो रही॥

७१ वीं कहानी

फिर ७१ वें दिन प्रभावती फिर सिंगार कर रति को चली शुक बोला आनंद से रति करो परंतु सिद्ध रीह कीसी करो तो जाउ बोली केसे शुक बोला चंद्रावती एक नगरी है सत्यव्रत राजा ता के दो प्रधान एक तो सिद्धरीह दूसरो सिद्धवर्णन एक दिन दोनों से विगरी तब सिंधुराजा के पास गयो वे बहुत आदर कियो बहुत दिन एकदिन धर्मदत्त बडा राजा सों फोज लेइ सिंधराजा पे चढि आये मुलक में बडो उपद्रव कियो सिंधराजा बहुतो टालो कियो प मानो नहीं तव सिद्धरोहन ने पठयो बहुत भेंट दीनी और यह कही जो कोई तरह यह जाय सो करो तव दोऊ प्रधान आये रा जासों मिले बहुत वतलाये परंतु एक वात मन में आवे नहीं यह कही सो अपनी वेटी देऊ और लक्ष मोहर दे तो जाऊं नहीं तो यापरो जो इतनी कही तव प्रधान बोले महाराज यह आसान है जुद्ध दोउन को वुरो है सो ये वात आछी नहीं तासों आप पधारो हुकम मानो और राजा को द्रव्य कोठार में न कहते जो ताला वाडो है जो आवे सो पुराय करत है जो आप की ... है तो आपु पुराय लेहु तव राजा कहे ते आछी वात है तव लाख रुपये लेके हाथ में दिये याने जो हमारे राजा को पुन्य तुम है यह सुन राजा प्रसन्न भयो अपने कटक ले घर गयो प्रधान यहां अपने राजा के पास आये इतनी अगले प्रधान राजा सों कही जो इसने वुरी कीजो आपको धर्म दे आयो इतनी सुन राजा बहुत को प कियो तव दोऊ वोले महाराज ऐसे पुन्य जाय तो कोटि द्रव्य जोजे हम

राजा को बुरा बुलाइ दे तासों रत नाहीं जब ऐसो कहो तब तो राजी रा
जा भये सो हे प्रभावती ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सो रही ॥

७२ वीं कथा

फिर ७२ वें दिन प्रभावती रत को चली शुक सों बोली जाती हूं शुक
बोले जाउ परंतु जारी वे जारी करि आवे तो जाउ बोली कहो
शुक बोले सुंदर नाम नगर तेज बंत राजा श्रीबंत कुंवर जे पाल
प्रधान सो श्रीबंत कुंवर एक नाई सो जारी वे बात प्रसिद्ध भ
ई कि राजा को नाई को यार कियो सब ने कही ये प्रीति अच्छी
नहीं परंतु माने नहीं कहा किये जो देश से निकारो साथ ना
ई को लियो तब माता ने चार लड्डू बनाइ के दिये वामें रत्न
धर दिये जब मारग गयो तब भूख लागी तब लड्डू खाय लिये
दो नाई को दिये जो तोड़े तो रत्न निकसे तो पूंछे तेरे रत्न कैसे
जो कही कोई नहीं कुंवर जानी नाहीं झूटा है जो कहो सो भ
ली जो कही थोरी सो चोरी नाई बोलो सो बुरो भली तो एक
डोकरी मिली सो छाना बीनत हती सो नाई कैसे बोलत हैं
डोकरी बोली हे राजा मैं सब के पीछे छाना बीनत हों कुंवर
बीरो सांचो सांचो अरु झूठो झूठो वेरा को पालको कियो सो
बेटा बहू की आज्ञा में चलने लगा घोड़ा पै चढ़त है और
हजारन को द्रव्य है सो मैं कहा कहो तुम देखत हो सो अस
झूठा अस झूठा सो सांचो इतने में नाई बोलो जो तो हारो मैं
जीतो तासों होड देउ कहि छुरी से आंख काढ़ लीनी सब के
ले के चला गया पाछे कुंवर बहुत दुखी होके आम्लरों के नीचे
आ बैठो एक नाई राजा के देश को गयो वहां रतन भुंजायो खान
लाग्यो कुंवर के नीचे पडो वड के ताके नीचे सारस पक्षी पै सु
वो ऊनी तहां कुंवर को रात हो गई तब तो रोवन लागो तब

जिनावर आपस में कहन लागे जो यह हमारी वीट आंखिन में लगावे तो अच्छी अभी होंय फिर आपस में पूंछी कि जो कुछ और भी गुण है तब कही अठारह कोढ़ हैं सो भी नीके होंय यह सुन सवरी वीट वटोर कर कपड़ा में वांध लीनी आंख में लगायो आंख नीकी हो गई तब आगे चला वाही गांव में नाई हतो वहां का राजा कोढ़ो हतो कही जो मेरो कोढ़ नीको करे ताकों अपनी वीटी देऊं और आधो राज देऊं ये सुन कही जो मेरी औषधि लगावे तो नीक होय राजा सुनी वुलायो आते ही औषधि लगाई राजा नीको भयो वेटी विवाही आधो राज दीनो एक दिन कुंवर वजार को निकरे तहां कुंवर को नाई ने देखा तो विचारो जो मो कों देखेगा तो मार डारेगा तासों याको मारिये ये विचारो जो कि ये सवेरे ही गाव में उडाई कि यह मेरे घर के नाई को वेटा है गांव में शोर भयो नाई को वेटा राजा को जमाई यह वात औचंद राजा ने सुनी नाई के विचारा जो अपराध लागी तासों मेरे ये विचार वुलाये चांडाल और कहो जो तुम गांव के वाहर तोला गरम करि जो कोई पूछे डार दियो आज्ञा दीनी इतने में जमाई आयो राजा को मुजरो कीनो अरु अर्ज की मो लाइक काम हो सो फरमाइये राजा वोलो शहर के वाहर देख आवो कहा होत है ये सुन स्त्री के पास गयो कहा कि राजा यह कही है स्त्री वोलो कि आज शनिश्चर वार है नहाय के जाओ यह नहायो महादेव की पूजा करी देर भई इतने में एक सेठ को जमाई वाहर निकरो वाने जाय पूंछी यह कहा है उस को पकड कडाह में डाल दियो पाछे राजा को जमाई गयो देखे तो यह भयो है तव तो आय राजा सों कही राजा ने कही आप

कौन हो तब कहो मैं राजा को बेटा जैवंत हूं सब हाल कहो तब राजा प्रसन्न भयो नाई को सूली दियो है प्रभावती जो ऐसी बुद्धि हो तो जाउ इतना सुन सोरही ॥

फिर ७३ दिन एक बटोही ने आन कहो कि सेठ का बेटा आय पहुंचो ये सेठ सुनी इनाम दीनो बेटा आयो मुजरा कीनो पिता छाती सों लगायो सब हाल पूछो राजदेव सेठ राजा के पास गयो रत्नादिक सब नजर किये राजा देख बहुत प्रसन्न भयो खिलत दे बिदा कियो घर आय प्रभावती के पास गयो मिलो सब हाल पूछो जब भीतर को चले शुक बोले चिरंजीव कहो मदनसेन राम राम किया कुशल पूछी औरपूछी सारो कहा तब शुक बोलो यह कथा पहर दो की है तो आप सोवो प्रसन्न हो मदनसेन सोया जब प्रभावती जा बैठी मदनसेन आछी तरह भोग किया प्रसन्न भई शुक को पिंजरा मंगायो तब प्रभावती शुक को नमस्कार कीनी कही जो ७२ दिन मेरो धर्म रहो सो तेरे प्रताप सों सो ता समय मदनसेन एक श्लोक बार२ कहा। श्लोक। असारे खलु संसारे सारं सारंगलोचना। तदर्थं धनमिच्छंति तत्यागेन धनेन किम् १। ऐसे स्त्री को बखान करन लागो शुक कहो स्त्री सों अनुराग करना वृथा है। श्लोक। अनुरागो वृथा स्त्रीषु स्त्रीणां गर्वो प्रयेतिच। प्रियोहं सर्वदा तस्या ममैषा सर्वथा प्रिया। १। या भांति बार२ शुक कहन लागो और मदनसेन रस की बात कहे मदनसेन बोलो शुक पहलो श्लोक पढो हतो सो फिर के पढो शुक बोलो अनुराग वृथास्तुव इतनी सुन मदनसेन बोलो जो कहा उपकार है सो हमसों कहो प्रभावती बोली। श्लोक। सुलभा पुरुषा स्वामिन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्यच वाक्यस्य वक्ता

श्रोनाचदुर्लभः ।१। स्त्री एक स्रोक सुनतेही। अवलाचा
मिन् निस्पृहा गुरा वर्जिता। कुटिलाता मस अज्ञा यथा
तो। १। कुर्वंति तावत्प्रथमं प्रयाशि यावन्न जानंति वरं
ज्ञात्वाय मा मनमथ। पास वद्धं ग्रस्यामिषं मान मिवो
समुद्र वीची सुभावासं वचनं संध्या भ्रमेष मद्दन्ते रागा
तार्थाः पुरुषं निरर्थकमनि पीडिताक्तवचित्त्यजंति। ३
जो तू पधारो ता पाछे एक घडी तो विरह भयो ता पाछे ए
ई वह मोको प्रवोधी तव में उन्मत्त भई कछु दीखे नहीं ये
में आवे जो और सों भोग कीजे ये विचार सिंगार कर चल
समय सारो वोली मोकों वुरी लगी मैं ने मार डारी ता
शुक सों पूंछी शुक ने ७२ दिन तक कथा कह दिन विताय दीने
और मेरो धरम राखो शुक के प्रसाद से इज्जत और धरम र
हो ऐसे रही यह कही तो शुक की वडाई कीनी मदन सेन
कहो शुक तुमसो चतुर कोई नहीं तुम्हारे प्रसाद सों मोकों
स्त्री प्राप्त भई यह स्तुति कीनी तव शुक वोले मदनसेन कहो तु
म अपने पितासों मोकों सीख द्यो घर को जाऊं काहे से मैं गंधर्व
हूं ऋषीश्वर के शाप सं सुक भयो हों अरु येहै अज्ञा दिये ते जो
मृत्यु लोक को जाऊं हां प्रभावती को ७२ दिन कहो सो मदन प
र्वत को जाऊं तव मदनसेन हरदत्त सेठ पास गयो पिंजरा लिये
हरदत्त वोलो शुक उदास काहे शुक वोलो आप के पास रहिके
कोई उदास न होगो यह कह के विदा भये पर्वत को गये देह को
डी गंधर्व भये स्त्री पुरुष सुख सों स्वर्ग लोक में भोग करन
लागे इहां मदनसेन और प्रभावती सुख सों आनंद भोग क
रन लागे॥ इतिश्री शुक वहत्तरी कथा समाप्तम्॥
संवत् १९३७